ॐ

किताब मुफीद आम मोसुम व

जगत हितकारनी।

अज तसनीफ

साध अनुपदास

मूलवतन मुल्क मारवाड

जिसको

ग्रन्थकर्ता साधु अनुपदासने

खेमराज श्रीकृष्णदासके
बम्बई
खेतवाड़ी, ७वीं गली खम्बाटा लैन,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालयमें
मुद्रित करवाकर प्रसिध्द किया।
विक्रम संवत् १९६८, शके १८३३
सन् १९१२ - १००० प्रति.

भारत सरकार-काँपी राइट आफिस-रजि. न. एल.-२५१०/६५
न्यू दिल्ली - दिनाँक २५ - ५ - ६५

।। श्री ।।

जगत हितकारनी

इलतमास

यह किताब मैंने फायदा आम के वास्ते मेहनत तमाम और बहुत से रुपये खर्च करके तैयार की है। इस वास्ते सब सज्जनों से यह प्रार्थना है कि इस किताब को तमाम व कमाल व हरूफ ब हरूफ ब गौर तमाम पढ़ें और सोचें, समझें और इन बनियों के जालसे बचें।

।भूमिका।

मैं साधु अनूपदास उस परमात्मा को अनेक धन्यवाद देता हूँ कि, जिसने पहाड़, नदी, नाले, समुद्र आदि अनेक - अनेक आश्चर्ययुक्त इस पृथ्वी को बनाया और मनुष्य, पशु, पक्षी आदि एक से एक विचित्र जीव इसमें उत्पन्न किये। पर उसकी कारीगरी का भेद किसी को मालूम नहीं पड़ा। ऐसी विचित्र सृष्टि में दूसरी विचित्रता क्या देखी कि, सौदागर महाजनान ने ऐसा जाल रच रखा है, कि उसमें जो शख्स फँसता है फिर उसका निकलना मुश्किल हो जाता है। इसलिये मैं दुनिया के हिंदू मुसलमान, फकीर, साधु, संत, महाराजा, राजा, सातों, आठों विलायतों के बादशाह और खासकर दयालु महाराजाधिराज पंचम जार्ज बहादुर की खिदमत में हाथ जोड़कर अर्ज करता हूँ कि जिसको जादूचाला, राक्षसी विद्या या काफिर विद्या और इंद्रजाल कहते हैं, यह महापाप है। इसको पहले रावण ने चलाया था, लोगों की धन दौलत अकाल पड़ा - पड़ा कर अपने काबू में करली थी! फिर राजा हरनाकश, कंस और कारून

बादशाह ने भी इस इन्द्रजाल को चलाकर लोगों को बड़ी तकलीफ दी थी। इन लोगों के पीछे बलराजा और उसके बाद इन बनियों ने इस राक्षसी पाप से काल पड़ाना शुरू किया है। जैसे पहले रावण के वक्त में विभिषण की मदद से शनीश्वर ने इस इन्द्रजाल का पता लगाकर लोगों को आगाह किया था और सब प्रजा को इस जाल से बचने की राह बताई थी, उसी तरह मैंने भी इन सौदागर महाजनान के जाल से बचाने के लिए इस पुस्तक में जो कुछ अर्ज किया है, उसको पढ़कर सब लोग होशियार रहें। कभी इन महाजनान के जाल में न आवें! नहीं तो इनके जाल में फँस जाने से लोगों की बुध्दि भ्रष्ट हो जाती है और लोगों को यह भी पता नहीं लगता कि हमारा नुकसान क्यों हो रहा है और कैसे अच्छा होगा? मैं परम दयालु परमेश्वर तथा प्रजा रक्षक अंगरेज महाराज से फिर भी प्रार्थना पूर्वक कहता हूँ कि आप मुझ गरीब अनुपदास की इस सर्वहितकारिणी प्रार्थना को स्वीकार कर मुझे अनुगृहीत करेंगे।

सर्वहितेच्छु,
साधु अनुपदास।

परमात्मने नमः

हजार - हजार शुक्र, उस ज्योति स्वरूप निरंजन निराकार का है कि जिसने जमीन व आसमान को बनाया और तमाम सृष्टि को पैदा किया, परंतु उसकी कारीगरी का भेद किसी पर जाहिर नहीं हुआ कि क्या भेद है, फिर मेरी जबान से ईश्वर परमात्मा की तारीफ अदा नहीं हो सकती और दूसरा मजमून बतौर समुद्र के है, सो कलम से लिखा जाता है कि जो - २ करतब मैंने इन सौदागर महाजनान के देखे, वोह अजब तरह के नजर आये जिससे मुझ गरीब साध अनुपदास को तमाम जहान के हिंदू- मुसलमान और साध - संत और पण्डित, फकीर और मुल्कों - मुल्कों के राजा -महाराजा और सातों - आठों और सब विलायतों के बादशाह और दीगर अग्रेंज वगैरा की खिदमत में हाथ जोडकर अरज करना लाजिम

आया कि ''जिसको जादूचाला और राक्षस विद्या और काफिर विद्या और इन्द्रजाल कहते हैं वोह एक किस्म का पाप है'' कि जिस तरह से रावण ने चलाया था और मेह और मौत को कब्जे में कर ली थी, पाप के सबब से याने होम करा - २ के बुध्दि भी भ्रष्ट कर दी थी इन्द्रजाल के पाप से और काल वगैरा पड़ा - २ करके लक्ष्मी अपने काबू में करके लंका में ले गया था और उसी तरह से हिरनाकश राजा ने भी चलाया था और उसी तरह से कंस राजा ने भी चलाया था और उसी तरह से कारून बादशाह ने भी चलाया था और रावण, हिरनाकुश, कंस, कारून वगैरा की तरह से बलराजा के बाद से इन सौदागर महाजनान ने भी राक्षस विद्या का पाप चलाया है सो इन बनियों ने भी मेह को और मौत को सहारे करली है और बुध्दि भ्रष्ट करदी है पाप के सबब से कि जिस दिन से इस हिंदुस्तान में काल पड़ाना बलराजा के बाद से शुरू किया है सो इन्होंने भी काल पड़ा

- पड़ा के रावण वगैरा की तरह से लक्ष्मी और धन काबू में कर लिया है और जहाजों में लाद - २ के दरियाओं के पार ले गये हैं जैसे कि रावण लंका में ले गया था उसी तरह से यह बनिये भी दरियाओं के पार ले गये हैं सो यह राक्षसी पाप धन लेने के वास्ते काल पड़ाने का पाप चलाया है सो धन हिंदुस्तान का तो काबू में कर लिया है, परन्तु धन हिंदुस्तान में बहुत था और अलावा इसके दूसरी बादशाहतों में भी बहुत था जिसका सबूत वेद की किताबों में लिखा है कि सतजुग में सोने का ठाट और पाट था और गरीब - गुरबा के घर में सोने - चाँदी के बरतन थे और पग - पग रत्नों की खानें सुनी जाती थीं कि जिसकी कुछ गिनती नहीं हो सकती थी सो राजा -बादशाहों के टोटा किस बात का था? इस सबब से तमाम खलकत को यकीन दिलाया जाता है कि बलराजा के जमाने तक मौजूद होने खानों में सोना - चाँदी वगैरा के सतजुग रहा क्योंकि उस जमाने में

चाँदी - सोने का ठाट और पाट था और धान वगैरा भी बहुत होता था क्योंकि सतजुग में काल वगैरा नहीं पड़ता था इससे धान वगैरा सतजुग में बहुत होता था, जबसे इन महाजनान ने काल पड़ाना शुरू किया है जिस दिन से दिन - २ जमाना बुरा होता जाता है और काल वगैरा यह बनिये लोग नहीं पड़ावें तो सदा सतजुग ही है, परन्तु बलराजा के बाद से जो तरह - २ के रोग और काल वगैरा पड़ाने शुरू किये हैं जब से धन दुनिया का खेंच रहे हैं और सबको निर्धन कर दिया है, बल्कि दिन - २ बुरा होता जाता है सो यह फितूर सौदागरान के राक्षसी पाप का है क्योंकि इन्होंकी दुकानें दूसरी बादशाहतों में पहुँच गई हैं सो अब उनके बाल - बच्चों को गारत करके उनका धन भी काबू में करेंगे, कि जिस तरह से हिन्दुस्तान को गारत कर दिया है उसी तरह से दूसरी बादशाहतों को भी गारत करेंगे और अलावा इसके कि जिन बादशाहों को

महाजनान = बनिये

हिन्दुस्तान में लाना चाहते हैं तो हिन्दुस्थान का लोभ बता - २ के सब बादशाहों को गारत कर देंगे और आप मिले के मिले रहते हैं और हिन्दू - मुसलमानों के बच्चों को दूसरी विलायतों से मरवा देते हैं और अपने बच्चों को बचाये रखते हैं और होले - २ आखीर में सातों - आठों विलायतों को गारत करवा देवेंगे, जैसे कि रावण ने दुनियाँ के गारत करने को जाल चलाया था, कि सब विलायतों में जब थोड़े से आदमी रह जावेंगे जब मेरा चारकुंट में राज हो जावेगा, तो कोई मेरा राज छीन नहीं सकेगा, उसी तरह से इन बनियों ने भी यही सोचकर यह जाल चलाया है और पहले ही सबकी अकल अपने राक्षसी पाप से खराब कर देते हैं, क्योंकि सातों - आठों विलायतों के लोग हिन्दुस्तान के लोभ के वास्ते आपस में लड़ - लड़ के गारत हो जावेंगे जब सातों - आठों और सब विलायतों में आदमी थोड़े रह जावेंगे तो चारकुंट में हमारे बच्चों का राज हो जावेगा तो फिर हमारा

चारकुंट = पृथ्वी चारो दिशा में राज्य करना

राज कोई नहीं छीन सकेगा जब सब विलायतों में आदमी थोड़े रह जावेंगे और यह बनिये यह जानते हैं कि हमारी औलाद ज्यादा रह जावेगी तो फिर हमारा राज कोई नहीं छीन सकेगा, सो तो दुनियाँ में हिन्दुओं में कहते हैं कि ऐसा कलजग आवेगा कि १०० कोस में छोटा सा गावड़ा मिलेगा और मुसलमानों में यह कहते हैं कि १४वीं सदी ऐसा बुरा वक्त आवेगा कि काल वगैरा बहुत होगा और रिजक वगैरा कम होगा सो आदमी को आदमी खाने लगेगा, सो पहले से ही ऐसी -२ बातें दुनियाँ में चला दी हैं सो दुनियाँ में अच्छे -२ बड़े गुणी लोग कहते हैं, सो जैसे दुनियाँ में बुरा होने के पहले से बात चलाई है उसी के मुवाफिक दुनियाँ के नाम का इंद्रजाल का पाप कराते हैं वैसा ही बुरा हो जाता है और यह ऐसी -२ बातें बुरा होने की चलाई तो इन बनियों ने हैं और अगले सती लोगों के सर अपने बचाव के वास्ते रख देते हैं, सो वोह लोग तो हमारे-तुम्हारे मुवाफिक

कोस = दूरी मापने की पुरानी इकाई । कलजग = कलह का युग ।
गावड़ा = छोटा गांव । रिज़क = अनाज, फल, खाने की वस्तु ।

आदमी बन्दा थे क्योंकि रचना तो पैदा करन्ते ने रची है उस पैदा करन्ते ने अपने नाम के वास्ते, क्योंकि वोह तो पैदा करन्ता सब संसार और सब विलायतों के ऊपर दया रखते हैं यह तो काफिरी पाप और इन्द्रजाल का पाप कराने वाले बेईमान पाप कराते हैं जिससे दुनियाँ में बुरा होता है और काफिरी और पाप इन्द्रजाल का पाप दुनियाँ में कई बार चलाया है और दुनियाँ ने दुःख पा - पाकर छोड़ाया है जब दुनियाँ की औलाद बची है और यह कदीमी जाल याने ठेट से बनियों का ही है और बनिये लोगों ने ही चलाया है और रावण, हरनाकश और कंस कारून वगैरा को अपने पाप में से थोड़ा सा सिखा करके इन बनियों ही ने जाल में डाल करके मरा दिये हैं और तमाम कदीमी जाल अपने पास ही रखते हैं और वोह पाप चौड़े नहीं आने देते हैं और इनका जाल पकड़ा नहीं जाता है, इस सबब से दुनियाँ में दुःख रहता जाता है, क्योंकि

कारून = एक बादशाह अरब में हुआ था

कदीमी जाल = आद से राक्षसी पाप । हरनाकश = हिरणाकुश

इनका पाप अलोप है इससे मालूम नहीं हो सकता है और जो मेरे को इन्होंने समामुख कलपाया है जैसे कि रावण ने शनिचर को समामुख कलपाया था और शनिचर को मालूम पड़ी और संसार को वाकिफ किया था, उसी तरह से मेरे को भी समामुख कलपाते हैं जिससे मुझको भी मालूम पड़ी है, जिससे आप लोगों को वाकिफ करता हूँ सो हिन्दुस्थान में रावण, हरनाकुश, कंस, कारून बगैरा ने इन बनियों के शामिल ही जनम पाया था, जब उनको ही खबर नहीं पड़ी तो दूसरी विलायतों के राजा - बादशाहों को क्या खबर पड़ने देंगे और सातों - आठों विलायतों और अंग्रेजों वगैरा के आगे मेरी हाथ जोड़ के अर्ज है कि जब रावण वगैरह को इन बनियों ने खबर नहीं पड़ने दी तो आप लोग तो दूसरी विलायतों के हो, आपको किस तरह से खबर पड़ने देंगे? और मैं इस वास्ते लिखता हूँ कि आप लोग तो सात - आठ विलायतें हो और हिन्दुस्थान एक विलायत है और

शनिचर = शनिचरजी महाराज रामचन्द्रजी के मंत्री थे । अलोप = जिसे देख नही सकते है । समामुख = आमने-सामने ।

यहाँ हिन्दू - मुसलमानों के बच्चे सिवाय इन बनियों के अगर गरीब होकर भी रहेंगे तो जादू से बुध्दि भ्रष्टि करके और आपस में लड़ा करके मार देवेंगे, जब आप लोगों को मालूम होगा कि हिंन्दू - मुसलमान बदमाश हैं और आप लोगों को यह मालूम नहीं कि तमाम संसार की जादू से बनियों ने बुध्दि भ्रष्ट करी है जब भी आप सातों - आठों विलायतों के हाथों से मरवा देंगे, सो आप लोग इन कुलंकियों का जाल छोडाओगे तो आप लोगों की और सबों की औलाद उभरेगी और आपके 'इकबाल, से हिन्दू - मुसलमान की औलाद भी उभरेगी याने सब संसार की और खुद यह बनिये आप लोगों से मिल के मिले रहते हैं और अपने दगा की खबर नहीं पड़ने देते हैं और आखीर में दगा से आप लोगों के बच्चों को भी गारत करेंगे सो इन बनियों ने अपना राज चार कूंट में करने के वास्ते और अपने मतलब के वास्ते यह जाल चलाया है जिससे आप लोगों को हिन्दुस्तान में

कुलंकियों = महापापी । चार कुंट = पूरी पृथ्वी पर -

लाते हैं! सो सातों - आठो विलायतों को आपस में लड़ा - लड़ा कर गारत कर देंगे, फिर यह कुलंकी जब संसार थोड़ा रह जावेगा जब अपना राज करेंगे, जिससे हिन्दुस्तान में दूसरी बादशाहत के लोगों को लाते हैं परन्तु यह जाल इन सौदागर महाजनान ने बलराजा के बाद से चलाया है और दूसरी बादशाहतों को और सातों - आठों और सब विलायतों में राज करने के सबब से, बलराजा के बाद से 'लाने लगे हैं सो उनका भी धन लेने के गरज से और धन का लालच देके, वास्ते राज कराने हिन्दुस्तान में लाते हैं और जब उनका धन ले लेवेंगे फिर उनकी अकल को भी राक्षसी पाप से कैद करके खराब कर देंगे जब खुद ब खुद आपस में लड़कर ही मर जावेंगे, सो ऐसे -२ इन सौदागर -महाजनान ने इस जहांन में जाल चला दिया है और सबसे हिले मिले हैं और रात - दिन गुप्ती पाप कराते हैं जिसकी खबर आप लोगों को अब तक बिलकुल नहीं है; सो आप लोग इस गरीब के

कुंलकी = महापापी, दागी । बलराजा = एक राजा हुआ जिसका इतिहास खत्म कर दिया ।

लिखने पर, गौर फरमाकर और एक दिल होकर इनके राक्षसी पाप को छोडाइये, देखो भाई हिन्दू, मुसलमान, अंग्रेज और सातों - आठों विलायतों के बादशाह सब एक दिल होकर लोभ को छोड़ दो और इन सौदागर महाजनान के जाल की पहचान करो और एक दिल होकर इन्होके राक्षसी पाप को छोडाओ जब तुम्हारे बाल बच्चे बचेंगे, नहीं तो यह सौदागर महाजनान ऐसे हैं कि सबको गारत कर देंगे सो इन्होके ऐसे - ऐसे जाल हैं इस गरज से यह किताब ''जगत हितकारनी, बनाई है कि इन्होके जालों से वाकिफ होकर इनका बन्दोबस्त करो ताकि तमाम लोगों को सुख प्राप्त हो, वरना यह जादूखोरा ऐसे हैं कि सबको आपस में लड़ाकर मार देंगे और धन सातों - आठों बादशाहतों का ले लेवेंगे, क्योंकि पहले जमाने में राजा रावण ने राक्षसी विद्या का पाप चलाया था, उस जमाने में दुनियाँ की थोड़ी - थोड़ी बुध्दि भ्रष्ट हुई थी परन्तु उस जमाने में राजा रावण ने शनिचरजी महाराज को

राक्षस विद्या के पाप से समामुख कलपाया था और तकलीफ दी थी जब शनिचरजी महाराज ने संसार के गारत होने के सबब से विभीषण से इस बात का जिकर किया कि तुम्हारा भाई रावण संसार के नाम का गुप्ती पाप करा रहा है जिससे संसार के लोगों की अकल खराब हो गई है और इसी सबब से तमाम जहान में रोग चाला वगैरा फैले हुए हैं, सो आप मेहरबानी करके इस राक्षसी पाप को अपने भाई रावण से बंद कराओ और जो इस राक्षसी पाप का करना बंद न कराओगे तो रावण के साथ तुम्हारे कुल को भी नुकसान पहुँचाया जावेगा और तकलीफ दी जावेगी, क्योंकि आप रावण के सगे भाई हो और आप लोगों को इनके जालों की अच्छी तरह से वाकिफीयत है, सो बताओ कि कहाँ पर गुप्ती पाप हो रहा है अगरचे आप न बताएँगे तो आयन्दा इसका नतीजा आपके हक में निहायत खराब है, जब शनिचर की विभीषण ने दहशत अंगेज बातों को

समामुख = आमने सामने

सुनकर अपने दिल में विचार किया कि मेरे भाई रावण का जो राक्षसी पाप है वोह शनिचर को कुल मालूम हो गया है, जो इसके बताने में मैने किसी तरह का फरेब रखा तो जरूर मुझको रावण के साथ तकलीफ और नुकसान करा देगा, इस वजह से विभीषण ने अपनी भक्ति का ख्याल करके और ईश्वर और संसार और परमात्मा का ख्याल करके और डर करके अपने भाई रावण का कुल गुप्ती पाप बता दिया, कि जिस कदर रावण कराता था, क्योंकि लंका पेशतर अलोप थी कि जब तक विभीषण ने नहीं बताई थी, परन्तु लंका जब से प्रकट हुई है कि जब से विभीषण ने बताई है, लेकिन जब कि रावण से इस बारे में दरियाफ्त किया गया तो रावण ने अपना राक्षसी पाप, जो कि लंका में रात - दिन कराता था, किसी कदर बताया और किसी कदर नहीं बताया जब शनिचर ने यह देखा कि रावण मेरे से अपने राक्षसी पाप को अलोप रखता है कि जो राक्षसी पाप बाकी रह जावेगा तो हम

फिर पाप कर निकलेंगे और तमाम जहाँन को गारद करके चारकुंट और चौदाभांण में हम अपना राज करेंगे; इस गरज से कुल जाल अपना नहीं बताया कि जो लंका में गुप्ती पाप कराता था, जब शनिचरजी महाराज ने अपने दिल में विचार करके देखा कि जब तक कुल संसार को रावण के राक्षसी पाप की खबर नहीं होगी जब तक राक्षसी पाप छूटना मुश्किल है इस वजह से शनिचर ने रावण के राक्षसी पाप की चरचा कुल जहाँन में कर दिया कि रावण ने राक्षसी पाप के जादू से मेह और मौत को अपने कब्जे में कर रखा है इससे दुनियाँ में दिन - दिन बुरा होता जाता है, इस बात के सुनते ही कुल जहान ने, शनिचर के कहने पर यकीन लाकर एका सब सृष्टि ने किया कि जरूर रावण के घर का राक्षसी पाप है और हम सब लोगों की अकल इसी राक्षसी पाप में कैद हो रहीहै कि जो रावण के राक्षसी पाप को नहीं पहचानते हैं, परन्तु शनिचरजी महराज का जुग - जुग और भौ - भौ

ऐका = संगठन, चौदाभांण = पूरी पृथ्वी पर, मेह = बरसात, चारकुंट = चारो दिशाओं में, भौ-भौ = भव भव

भला हुजीओ कि रावण के राक्षसी पाप को नहीं पहचानते थे, उन्होको वाकिफ करके पहचानवाया, नहीं तो सब लोग अंधों की तरह से थे; और जो रावण ने शनिचरजी को राक्षसी पाप से नहीं कलपाया होता तो रावण जरूर कुलजहान को गारत करके अपना राज कर लेता, परन्तु शनिचरजी महाराज ने अपने ऊपर दुःख पड़ते ही रावण का राक्षसी पाप तमाम जहान में प्रघट कर दिया, जिसके सुनने से सब लोग फौरन समझ गये कि जो लंका में रावण राक्षसी पाप कराता था उसको तमाम खलकत ने एक दिल होकर बिलकुल मिटा दिया, जबसे जहान की औलाद को सुख प्राप्त हुआ है, नहीं तो औलाद दुनिया की नहीं रहती क्योंकि रावण तमाम दुनियाँ को गारत करके सातों - आठों विलायतों को अपने कब्जे में कर लेता और अपना राज करता, जिसका सबूत पुराणों वगैरा से साबित है "बल्कि राक्षसी वेद की किताबें और टीपणा वगैरा चलाये थे और रतनागर सागर के ऊपर

रतनागर सागर = समुन्द्रो के बिच में ।

लंका शहर बसाया था कि जहाँ हजारों कोसों में पानी भरा हुआ पड़ा है'' जिसका हाल पुराणों वगैरा में लिखा है कि रावण ने लंका समुद्र के बीच में आबाद की थी और सुरग - नर्क बनाया था और चौरासी लाख कुण्डियाँ राध लहू की बनाई थी, सो उन कुण्डियों के ऊपर रखेश्वरों के नाम की जिसकी वजह से लंका में कोई नहीं जा सकता था, जो कोई लंका में जाने के वास्ते समुद्र की तरफ जाता तो जादू चाला से डुबो देता और लंका के ऊपर किसी को नहीं जाने देता था और दुनियाँ यह नहीं जानती थी कि रावण लंका में इन्द्रजाल की वजह से नहीं जाने देता है और जो कि सुपना और ग्रहचाला दुनियाँ में जारी हुये हैं यह भी रावण के जमाने से हुये हैं और जो रावण के राक्षसी वेद की किताबें और टीपणा वगैरा दुनियाँ में चला करके सबकी अकलों को खराब कर दिया था, सो यह बात भी वेद की किताबों में लिखी हुई है कि रावण ने राक्षसी वेद की किताबें और टीपणा वगैरा दुनियाँ की अकल

सुपना = स्वपन, ग्रह चाला = तरह तरह के रोग, रखेश्वरो ऋषि मुनी

को फेरने के लिये चलाये थे, जिसका सबूत पुराणों वगैरा से साफ प्रकट होता है परन्तु रावण के जाल मिटाने के वास्ते तमाम दुनियाँ लंका में पहुँचने के वास्ते तैयार हुई, परन्तु दुनियाँ को यह पता नहीं लगा कि लंका में किस तरह से जा सकेंगे? फिर कुछ अरसा गुजरने के बाद यह तजवीज की, कि तमाम सृष्टि के राजा - बादशाह और रैयत वगैरा ने ऐका करके बड़ी भारी फौज बनाई और जोकि राजा रावण के भाई - बेटे, फौज समेत हिन्दुस्तान में रहते थे उनको पकड़ - २ कर पूरा - २ तंग किया जब रावण के भाई विभीषण ने, कि रावण का राक्षसी पाप चलाया हुआ था वह तमाम राजा - बादशाहों और दुनियाँ वगैरा को विभीषण ने बता दिया; देखो! जबकि शनिचर ने रावण के राक्षसी पाप का पता लगा दिया था और वाकिफ किया जब दुनियाँ की औलाद बची है, परन्तु रावण तमाम दुनियाँ को मार के धन अपने काबू में कर लेता तो शनिचर का नाम इस

अरसा = अवधि, ऐका = एकता, रैयत = जनता.

दुनियाँ के ऊपर सिर्फ नेकी करने की वजह से अमर रहा है, कि जो रावण का राक्षसी पाप था उससे दुनियाँ को बचाई, इसी तरह से हरनाकुश ने भी राक्षस विद्या चलाई थी जब भी तमाम दुनियाँ की बुध्दि भ्रष्ट हो गई थी परन्तु उसके जमाने में भी तमाम दुनियाँ ने और राजा – बादशाहों ने एक दिल होकर हरनाकुश के राक्षसी पाप को छोड़ाया जब तमाम दुनियाँ बची, नहीं तो हरनाकुश भी तमाम दुनियाँ को गारत करके धन अपने काबू में कर लेता और हरनाकुश ने भी राक्षस विद्या का सुरग और नरक बनाया था और इसके अलावा चौरासी लाख कुण्डियाँ भी राध लहू की बनाई थीं, सो उन कुण्डियों के ऊपर दुनियाँ के नाम का पाप कराता था इससे दुनियाँ की अकल खराब हो गई थी जबकि हरनाकुश के राक्षसी पाप की, खबर दुनियाँ को नरसिंहजी के कहने से मालूम हुई, जब तमाम संसार ने दिल में विचार करके कहा कि यह जितनी खराबियाँ दुनियाँ में होती हैं

यह कुल हरनाकुश के राक्षसी पाप का फितूर है जब भी तमाम राजा – बादशाहों ने एक दिल होकर हरनाकुश के राक्षसी पाप को छोड़ाया जब तमाम दुनियाँ बची है और जो हरनाकुश का राक्षसी पाप नहीं मिटता तो हरनाकुश भी चारकूंट में और चौदा भांण में अपना राज करता; परन्तु संसार ने हेत करके हरनाकुश के राक्षसी पाप को मिटा दिया इससे दुनियाँ सलामत रही है; उसके बाद कंस राजा ने भी राक्षस विद्या का पाप चलाया था और अलावा इसके राक्षस विद्या के वेद और टीपणा वगैरा चलाया था और राक्षसी पाप का सरग – नरक भी बनाया था और चौरासी लाख कुण्डियाँ भी राध लहू की बनाईं थीं, यह बात दुनियाँ में मशहूर है, परन्तु जब राजा कंस के राक्षसी पाप की खबर पड़ी तब तमाम दुनियाँ के राजा – बादशाहों ने एक दिल होकर कंस राजा के राक्षसी पाप को छोडाया जब तमाम दुञिनयाँ बची है, नहीं तो कंस राजा भी तमाम दुनियाँ को मारके

धन अपने काबू में कर लेता; इसी तरह से कारून बादशाह ने राक्षस विद्या के वेद और किताबें और टीपणा वगैरा दुनियाँ में चलाये थे और राक्षसी पाप का स्वर्ग बनाया था और चौरासी लाख कुण्डियाँ भी बनाईं थी, सो उन कुण्डियों पर चौरासी लाख जीवाजून को कलपाता था; जबकि कारून बादशाह के राक्षसी पाप की खबर पड़ी जब तमाम दुनियाँ और राजा -बादशाहों ने एक दिल होकर कारून बादशाह के राक्षसी पाप को छोडाया जब तमाम दुनियाँ बची है, नहीं तो कारून बादशाह भी तमाम दुनियाँ को मारकर धन अपने काबू में कर लेता सो यह बात दुनियाँ में प्रघट है और जोकि राजा रावण और कारून बादशाह ने राक्षसी पाप चलाया था सो उन्होंके पाप को तमाम जहान ने एक दिल हो करके छोडाया था; जब तमाम दुनियाँ बची थी, वरना औलाद दुनियाँ की नहीं रहती, परन्तु इन चारों शख्सों ने जो राक्षसी पाप चलाया था उनके नाम भी

बदल -२ कर रखे थे, कि जिससे हमारा राक्षसी जाल मालूम नहीं होगा, जिनकी तारीफ मैं नाम के हवाला कलम है कि, जो रावण ने राक्षसी पाप चलाया था उसका नाम 'इन्द्रजाल' रखा था, जिसको शनिश्चरजी महाराज ने तमाम जहान में मशहूर कर दिया था और हरनाकुश राजा ने जो राक्षसी पाप चलाया था उसका नाम 'राक्षस विद्या' रखा जिसको नरसिंहजी ने दुनियाँ में प्रघट किया और कंस राजा ने जो राक्षसी पाप चलाया था उसका नाम 'जादूचाला' रखा कि जिसको श्रीकृष्ण महाराज ने संसार में प्रघट किया और कारून बादशाह ने जो राक्षसी पाप चलाया उसका नाम 'काफिर विद्या' रखा कि जिसको गुरू नानक ने प्रघट किया; याने पाप तो वोह का वही था परन्तु नाम इस वजह से बदल - २ कर रखे थे कि जो एक नाम से ही पाप 'मजकूर' चलाया जावेगा जब तो दुनियाँ समझ जावेगी फिर हमको कौन पाप करने देगा? और

जबकि नाम इस पाप के बदलकर रखेंगे तो हमारा जाल एकाएक जाहिर नहीं हो सकेगा, इससे ऐसे - २ नाम बदलकर रखे थे, परन्तु बलराजा के बाद से इन सौदागर महाजनान ने भी रावण, हरनाकुश वगैरा की तरह से राक्षसी पाप चलाया है परन्तु पाप तो वोह का वही है, लेकिन नाम इन्होंने भी बदलकर रखा है कि जिसको तमाम हिंन्दू - मुसलमान और सब लोग कलुकाल कहते हैं, सो वोह सौदागर महाजनान के घर का राक्षसी पाप है कि जिस तरह से रावण वगैरा ने चलाया था, उसी तरह पर इन सौदागरान का राक्षसी पाप चल रहा है और इन सौदागर महाजनान ने भी रावण की तरह से राक्षसी वेद की किताबें और टीपणा वगैरा दुनियाँ में चलाये हैं कि जो आज दुनियाँ में चल रहे हैं, यह सब इन्द्रजाल है जिसको हिन्दू, मुसलमान, अंग्रेज और सब सृष्टि देख रही है और इन सौदागर महाजनान ने पहले से यह कैसी अकलमन्दी की है जो अगले जमाने के

कुलकाल = कलयुग = राक्षसी युग

सती लोग हुये हैं उनके नाम किताबों में लिखकर जाहिर किये हैं और ऐसा भी लिखा है कि "अब ऐसा जमाना तंग आवेगा कि जिसके घर में एक सेर कांसी रहेगी वोह दौलतमन्द कहलायेगा" सो यह किताबें जिसमें दुनियाँ के बुरा होने का लिखा है वोह इन सौदागरों ने ही राक्षसी जाल की किताबें चलाई हैं और अगले सती लोगों के नाम उन किताबों में लिख दिये हैं, इस वास्ते कि आप प्रघट न हों और यह भी लिखा है कि वोह सेर कांसी भी राजा - बादशाहों के घरों में रहेगी, सो देखो भाई! इस जमाने में तो राजा, बादशाह हाथी, घोड़ा, फौज वगैरा कई किसम के आराम उठाते हैं फिर जबकि सेर भर कांसी रह जाने की नौबत पहुँचेगी उस वक्त में इन राजा - बादशाहों का क्या हाल होगा? सो यह बात काबिल खयाल करने की है कि सेर भर कांसी में से क्या तो अपने खरचे में लायेंगे: और क्या दुनियाँ के कारज करेंगे? और क्या फौज रखेंगे और कहाँ से अच्छा कपड़ा -जरी

व रेशम का पहनेंगे? जब सेर भर कांसी रह जावेगी तो रैयत वगैरा तो सब मर जावेगी! क्योंकि सब काम रुपया - पैसा से होता है, ब्याह - शादी में कपड़ा वगैरह कहाँ से आवेगा और बगैर बलद -गाय के खेती - बाड़ी के काम किस तरह से चलेंगे? और बगैर पैसे के दुनियाँ का कोई काम नहीं चल सकता है और जब रैयत तबाह हो जावेगी तो राजा - बादशाह क्या करेंगे? रैयत बगैर राज ही नहीं है, क्योंकि पैसे बगैर दुनियाँ के कारज चलें ही नहीं और पैसे बगैर रैयत मर ही जावेगी और इन सौदागरान ने काल पड़ा - २ कर धन अपने काबू में कर लिया है, और जो कुछ बाकी रहा है उसको भी काल पड़ा - पड़ा के काबू में कर लेंगे और यह सौदागर धन को जहाज में लाद - २ कर रावण की तरह से दरियावों के पार लिये जाते हैं जैसे कि रावण लंका में ले गया था उसी मुवाफिक यह भी ले जाते हैं, और फिर पहले से दुनियाँ में यह बातें भी इन्होंने चला दी हैं कि सेर

रैयत = प्रजा, कांसी = एक तरह की मिक्स धातु, बलद = बैल

कांसी रहेगी वोह दौलतमंद होगा और दुनियाँ की आँखों देखते धन को ले जाते हैं और दुनियाँ की बुध्दि भ्रष्ट करके ऐसा सुझाते हैं कि अंग्रेज ले जाते हैं और लिये जाते हैं यह बनिये! सो दुनियाँ का तो कुछ दोष नहीं, क्योंकि दुनियाँ की बुध्दि तो इन्होके जादू में इन्होंने कैद कर रखी है और आँखों देखते यह बनिये धन को रेल में व जहाज में लादकर लिये जाते हैं और दुनियाँ की बुध्दि भ्रष्ट होने के सबब से खबर नहीं पड़ती है और इन्होंने कैसी अकलमन्दी की है, कि यह बनिये जब दूसरी विलायत के लोगों को हिन्दुस्तान में लावेंगे तो वह दूसरी विलायत के लोग दुनियाँ से यह बात सुनेंगे कि हिंदुस्तान का पैसा अंग्रेज ले गये, तो फिर वह अंग्रेजों से लडेंगे और असल में यह बनिये अंग्रेजों से लड़ावेंगे, परन्तु आप यह अलग के अलग और न्यारे के न्यारे रहेंगे और सेरकांसी की भी बातें इन बनियों ने ही पहले से चलाई हैं, सो यह तो जाहीर दिखाई देवे है कि जब धन हिन्दुस्तान का

यह बनिये ले जावेंगे तो सेर कांसी ही बाकी रह जावेगी और यह बात सेर कांसी वगैरा की और काल वगैरा की चलाई तो पहले से बनियों ने है और साधु - फकीरों का नाम लगाकर लिख दिये हैं, कि फलाने साधु - फकीर पहले से लिख गये हैं, कि ऐसा - २ बुरा जमाना दुनिया में आवेगा सो अगर साधु - फकीरों को पहले से मालूम होता तो वोह यह भी लिख जाते कि यह बनिये राक्षसी जाल दुनिया का बुरा होने के वास्ते चलायेंगे सो वोह तो बेचारे परमेश्वर की भक्ति करते थे और उसका नाम लेते थे, अपने जीव का भला होने के वास्ते, सो यह बनिये इस जाल को प्रघट और चौड़े न होने के वास्ते अपने सर रावण के मुवाफिक नहीं लेते हैं जैसे रावण अपने सर नहीं लेता था, और सिवाये इसके और भी बात कैसी लिखकर जाहिर की है कि "सूरज हजार किरणों से तपेगा जिसकी गर्मी से धरती लाल सुरख तांबे के रंग हो जावेगी और जमीन माता के

ऊपर पानी जो है वोह इस तरह गर्म होगा कि जिस तरह से कढ़ाई के अंदर तेल उबलता है उस तरह से पानी उबलेगा,'' सो देखो भाई, उस वक्त में इन राजा - बादशाहों का क्या हाल होगा? परंतु अब; लोगों को यह बात निहायत खूबी के साथ सोचनी और समझनी चाहिये और यह जो आग में इन सौदागर - महाजनान ने किताबों के अंदर लिखकर जाहिर की है यह कुल सौदागर - महाजनान की जालसाजियाँ हैं क्योंकि सूरज हजार किरणों से नहीं तपेगा, यह तो तमाम जहान को भूल बताई है, परन्तु यह ऐसा तो जरूर करेंगे कि जमीनमाता को अग्नि का रोग करके बीमार कर देंगे जिसकी वजह से धरती सुरख तांबे के रंग हो जावेगी और पानी भी तेल उबलने के मुआफिक उबलेगा, परंतु यह जादूखोरा सूरज को तो नाहक बदनाम करते हैं और सब संसार के लोगों को भूल बताई है कि तपेगा, मेरा लिखना यह है कि सूरज हरगिज - २ नहीं तपेगा, क्योंकि यह तो अपने मामूली कील पर घूमते हैं

और सूरज - चन्द्रमा तो इस तरह से हैं कि जिस तरह से आदमी के शरीर में ज्योत होती है उसी तरह से जमीन माता के शरीर में सूरज - चंद्रमा की ज्योत है परन्तु इन सौदागर - महाजनान के इन्द्रजाल के पाप से कुल जहान के लोगों की अकल कैसी खराब कर दी है कि जिससे सब लोगों को ऐसा ही मालूम होता है कि यह राक्षसी वेद की किताबें अगले सती लोगों की लिखी हुई हैं जिससे उनको काम में लाते हैं, परन्तु उनको यह बिलकुल मालूम नहीं है कि जितनी किताबें राक्षसी वेद की हैं वोह कुल इन सौदागर - महाजनान की हैं और इनकी चलाई हुई हैं परन्तु नाम उन किताबों में अगले सती लोगों का लिखकर जाहिर किया है जिससे तमाम लोग उन किताबों को पढ़ते हैं, और उन्हींके उपर चलते हैं हालांकि रात - दिन खराब होते जाते हैं तो भी नहीं समझते हैं, कि इन बनियों ने रावण के मुआफिक राक्षसी वेद की किताबें और टीपणा वगैरा

चलाये हैं क्योंकि संसार की बुध्दि राक्षसी पाप में कैद हो रही है; इससे नहीं समझा जाता है, क्योंकि जब रावण वगैरह ने पाप चलाया था तो देवता स्वरूपी जो लोग थे; उनको भी नहीं मालूम होता था, जब शनिश्चर ने वाकिफ किया जब संसार वाकिफ हुआ, इससे मैं हाथ जोड़कर अर्ज करता हूँ कि कुल जहांन के राजा - बादशाह और रैयत एक दिल होकर इन बनियों के राक्षसी पापको छोडाओगे जब तुम्हारे बाल - बच्चे बचेंगे, नहीं तो यह सौदागर महाजन इस परमेश्वर की रचना को गारत करके धन अपने काबू में कर लेंगे और इन बनियों की दुकानें दूसरी विलायतों में पहुँच गई हैं सो दूसरे बादशाहों को हिन्दुस्तान में ला -२ करके हिन्दुस्तान के लोगों को गारत करा देंगे और धन सब बादशाहों का अपने काबू में कर लेंगे और सबको निर्धन कर देंगे, परन्तु इनके जालों की खबर किसी विलायत के राजा -बादशाहओ और अंग्रेज तक को भी नहीं है और इन सौदागरान का

दिल इस तरह पर है! कि जिस तरह से हमने हिंदुस्तान का धन अपने काबू में कर लिया है, उसी तरह पर दूसरी बादशाहतों का धन काबू में कर लेने के वास्ते यह जाल चलाया है, परन्तु यह सौदागर महाजनान जब किसी बादशाह को हिन्दुस्तान में लाना चाहते हैं तो उनको रुपया – पैसा की मदद देते हैं और हिन्दुस्तान के राज करने का लोभ बताते हैं और जब वोह आने के वास्ते तैयार हो जाते हैं तो सौदागर लोग उनको हिन्दुस्तान में ले आते हैं: और राज करा देते हैं तो इस हिन्दुस्तान में वास्ते राज करने के पहले तो मक्कावालों को लाये, तो उन्होंने अरसा तक राज किया बल्कि "मक्कावालों ने अपने राज अहाते में जबरन हिंदुओं को मुसलमान किया जिसकी खबर हिन्दुस्तान के लोगों को बिलकुल नहीं पड़ने दी" जिसकी खास वजह यही है कि उनकी अकल अपने राक्षसी पाप के जादू से इन बनियों ने कैद कर दी थी जिससे खबर नहीं पड़ी और पहले जमाने का सा धन अब मक्का में भी

अरसा = कुछ अवधि

नहीं रहा इस वजह से वहाँ के लोग भी दुःखी हैं परन्तु यह खबर न तो हिन्दुस्तान को ही है! और न मक्कावालों को है! कि इन सौदागरान ने अपने राक्षसी पाप से संसार के लोगों की अकल को खराब करके धन को काबू में कर लिया है जिससे तमाम दुनियाँ दुःखी है! उसके बाद, वास्ते राज कराने के अंग्रेजों को लाये तो मक्कावालों की तरह से अब यह भी राज कर रहे हैं! और जिस तरह से कि मक्कावालों को राज कराने के वास्ते यह सौदागर महाजनान लाये थे उसी तरह से अंग्रेजों को भी लाये हैं और जिस तरह से कि इन सौदागर महाजनान ने मक्कावालों का धन अपने कबजे में कर लिया है उसी तरह से अंग्रेजों का धन भी अपने काबू में कर लेंगे और निर्धन कर देंगे जब रूस के बादशाह से मिलकर अंग्रेजों के बच्चों को मरवा देंगे और अपने मिलने की खबर अंग्रेजों को और अंग्रेजों के बच्चों को भी नहीं पड़ने देंगे और रूस वालों को लाकर हिन्दुस्तान का राज करा देंगे और जब उनका भी

धन काबू में कर लेंगे और रूस वालों को निर्धन कर देंगे फिर और किसी बादशाहत के राजा – बादशाह से जा मिलेंगे और जब उनका भी धन काबू में कर लेंगे और रूस वालों की तरह से उनको भी निर्धन कर देंगे और उनके बच्चों को मरवा देंगे गरज कि सौदागर महाजन अपने राक्षसी पाप से सबकी अकलों को भ्रष्ट करके सातों – आठों बादशाहतों के राजा बादशाहों को हिन्दुस्तान के राज कराने का लोभ दे करके लावेंगे! और उनसे हिन्दुस्तान का राज करावेंगे! और सब बादशाहों को निर्धन कर देंगे और राजा बादशाहों को अपने राक्षसी पाप से यह बनिये बाहर में लड़ाके मरवा देंगे! और अपने जाल की खबर नहीं पड़ने देंगे, क्योंकि इन सौदागरों का जाल रावण की तरह से अलोप हो रहा है कि जिस तरह से रावण ने लंका में चौरासी लाख कुण्डियों का सुरग – नरक बनाया था, उसी तरह से बलराजा के बाद से इन सौदागर महाजनान ने राक्षस विद्या

बाहें = हाथ पाई से

का स्वर्ग – नर्क बनाया है सो वोह सौदागर महाजनान के घर का राक्षसी पाप है और इसी राक्षसी पाप के जादू से कुल जहान के लोगों की अकल फिरी हुई है! कि जैसे रावण के वक्त में सबकी अकल फिर गयी थी परन्तु इतना ख्याल कोई भी साहब नहीं करते कि जब रावण ने राक्षस विद्या चलाई थी और रावण की चोरी सनीचर को मालूम हो गई थी, सो सनीचर के मुँह से सुनते ही रावण के राक्षसी पाप को कुल संसार ने एक दिल होकर फौरन तजा दिया. फिर और नहीं चलने दिया और सनीचर को भी ज्यादा नहीं समझाना पड़ा था, क्योंकि उस जमाने में संसार की अक्ल थोड़ी – २ खराब हुई थी और अब इन सौदागरान के राक्षसी पाप से ऐसी अकल खराब हो गई है कि समझाये से भी नहीं समझते हैं. सो ऐ राजा –बादशाह और रैयत वगैरा मेरी यह अरज है कि इन सौदागर महाजनान के अजहद जाल हैं सो जिस तरह से कि रावण वे राक्षसी पापको सनीचर के कहने से तमाम संसार ने

एक दिल हो करके छोडाया था, उसी तरह से इन सौदागर महाजनान के जाल को कुल संसार के हिन्दू - मुसलमान और अंग्रेज वगैरा एक दिल हो करके छुडाओ, जब तुमको और तुम्हारे बाल - बच्चों को आराम मिलेगा. और जिस बादशाह को, कि हिन्दुस्तान में लाना चाहते हैं तो पहले उनका धन भी राक्षसी विद्या के पाप से खेंच लेते हैं और निर्धन कर देते हैं जब भूखे मरने लगते हैं तो फिर यह सौदागर लोग उनको रुपया - पैसा की मदद दे करके हिन्दुस्तान में हिन्दुस्तान का राज कराने को लाते हैं! इससे वोह भी कुछ ख्याल नहीं करते हैं और भूले हुये और बहके हुये रहते हैं, ऐ सातों - आठों बादशाहतों के हिन्दू - मुसलमान, अंग्रेज मेरी यह अरज है कि सौदागर महाजनान को धन का लोभ बहुत है: कि पैसा - रुपया सब हमारे पास हो जावे तो हम सबके मालिक और सेठ बन बैठें! और अपना राज करें, सो तुम संसार के लोगों अगर हिम्मत करके इन सौदागरान के राक्षसी पाप ना छोड़ाओगे

अजहद = जिसकी कोई सीमा नहीं, खींच लेते = चुरा लेते जमीन के अन्दर से

तो तुम सब संसार के लोग लोभ ही लोभ में गारत हो जाओगे और हिन्दुस्तान तो गारत हो ही गया है और जो थोड़ा बहुत बाकी रहा है सो वोह अब तुम लोगों को लाकर तबाह करा देंगे: सो यह जाल सिर्फ धन लेने के वास्ते और राज करने के वास्ते चलाया है, इससे इस इंद्रजाल के पाप को छुड़ाना चाहिये जब दुनियाँ की औलाद सलामत रहेगी और जिस तरह से कि राजा रावण ने और हरनाकुश ने और कंस और कारून बादशाह ने राक्षसी विद्या का सुराग बनाया था उसी तरह से बलराजा के बाद से इन सौदागर महाजनान ने राक्षसी विद्या का सुरग - नरक बनाया है. सो यह बात सब संसार में मशहूर है कि वहाँ पर राध लहू की कुण्डियाँ हैं और यह भी कहते हैं कि सुरग - नरक है जिसको आम लोग हिन्दू - मुसलमान सुरग - नरक कहते हैं. सो भाई मेरे हो, वहाँ पर कोई सुरग है ना नरक है, यह तो सिर्फ सौदागर महाजनान बनियों के घर का राक्षसी पाप है और सुरग और नरक तो यह जमीन

माता ही हैं और अपने हिन्दू – मुसलमान राक्षसी वेद की किताबें पढ़ते हैं कि जिनमें चौरासी लाख कुण्डियों का हाल और चौरासी लाख जीवाजून का हाल दुःख देने कुलों के लिखा है; सो भाई मेरे हो यह असली वेद नहीं हैं यह तो सौदागर महाजनान के घर का गुप्ती पाप का बिखान है और जो टीपणा ब्राह्मण लोग बाँचते हैं वोह भी इन सौदागर महाजनान के घर के चलाये हुये हैं क्योंकि यह राक्षसी वेद के टीपणें हैं असली वेद के टीपणें नहीं हैं, सो यह बात वेद की किताबों से साबित होती है कि रावण ने राक्षसी वेद और किताबें राक्षसी वेद की और गीरह चालों के टीपणा वगैरा दुनियाँ में चलाये थे, उसी तरह पर बलराजा के बाद से इन सौदागर महाजनान ने राक्षसी वेद की किताबें और टीपणा वगैरा चलाये हैं, सो इस बात का ख्याल करना चाहिये कि चलाये तो बलराजा के बाद से हैं परन्तु किसी – किसी किताब में ऐसा लिखकर जाहिर किया है कि यह किताबें जमीन व आसमान से पहले की

ग्रह चालों = तरह तरह के रोग बिमारीया, टीपना = पंचाग

बनाई हुई हैं याने (मन्सासागर) किताब पहले की बनाई हुई है और चलाई हुई है सो यह बात काबिल गौर करने की है कि "जब रचना ही नहीं थी तो लिखने - पढ़ने वाला कौन था? सो ऐ भाइयों, यह रचना तो कदीम से ही है और किताबों के बनाने वाले भी कदीम से हैं, क्योंकि जिन किताबों को जमीन - आसमान के पहले की बताते हैं सो वोह पहले की नहीं हैं यह तो इन सौदागर महाजनान के घर का जाल है सो तुम संसार के लोगों अपनी आँखों से ही देख रहे हो, क्योंकि रावण ने तो दुनियाँ के पीछे (९) ही गीरह लगाये थे, परन्तु इन सौदागर महाजनान ने तो इस कदर ग्रह लगाये हैं कि जिसकी कुछ भी गिनती नहीं हो सकती, सो तुम तमाम जहान के लोग अपनी आँखों से देख रहे हो और कानों से सुन रहे हो कि टीपणों में ग्रह चालों का पार ही नहीं है क्योंकि हर साल रोगचालों का और ग्रहचालों का और डाडचालों का याने टीड का आना और चूहा याने ऊँदरों का

कदीम = आद अनादि

ज्यादा होना याने ऊँदरा, साँप, बिच्छू वगैरा की लाखों जीवाजून जमीन के पेट में पैदा होते हैं कि जिस तरह से आदमी के पेट में किसी किसम की बीमारी से सैकड़ों तरह के कीड़े पड़ जाते हैं सो भाई मेरे हो, जिस तरह से कि आदमी के पेट में रोग बीमारी के सबब से कीड़े पड़ जाते हैं इसी तरह से जमीन माता के पेट में रोगचाले की वजह से सैकड़ों तरह के कीड़े पड़ जाते हैं, यह हाल टीपणों के अन्दर हर साल लिखा हुआ आता है कि फलाने साल फलाने किसम की बीमारी शुरू होगी या काल वगैरा पड़ेगा, सो ऐ संसार के लोगों जबकि साल गुजरने के बाद दूसरे बरस आते हैं तो ब्रहिमन लोग काल वगैरा के पड़ने के बारे में तमाम जहान के लोगों को साफ दिल से सुनाते फिरते हैं, परन्तु ब्राह्मण लोग को तो सुनाने की वजह से कुछ दोष नहीं, परन्तु सौदागर महाजनान ने कि जो चौरासी लाख कुण्डियों का स्वर्ग – नर्क बनाया है वहाँ पर जमीन माता के नाम का पाप कराते हैं जब तो जमीन माता को लग जाता है;

टीड = टीड्डीरोग, साल = वर्ष

इस वजह से जमीन माता के पेट में कीड़े पड़ जाते हैं और जबकि जीवाजून और आदमियों के नाम का पाप कराते हैं तो पाप होने के सबब से आदमियों को हर तरह की अंग पीड़ा पैदा हो जाती है गरज कि दूसरी जीवाजून के नामका पाप कराते हैं तो पाप होने की वजह से आदमियों की तरह से दूसरी जीवाजून भी बीमारी के सबब से तरह - २ की अंग पीड़ा पाती है और यह बनिये ऐसा भी करते हैं कि जब किसी के नाम का बाबत मरने के ज्यादा पाप कराते हैं तो संसार में मरी भी पड़ जाती है और यह बेईमान ऐसा भी करते हैं कि राजा - बादशाहों के नाम का पाप होम करावें तो राजा - बादशाह कच्ची उम्र में मर भी जाते हैं; उमर पाकर मरें तो कुछ सोच नहीं पर कच्ची उम्र में मर जावें तो टीपणों के अन्दर सुनाते ही हैं कि अबके राजा - बादशाहों पर मार है तो फिर उस राजा - बादशाहों के नाम का होम पाप चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर करावें तो उस साल राजा - बादशाह मर जाते हैं, सो पहले टीपणों को सुनाते हैं और

फिर चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर पाप कराते हैं जिससे तरह - २ की बीमारियाँ हो जाती हैं जिसका हाल टीपणों के अन्दर साल ब साल बजबानी ब्राह्मणान से सुनते ही हो कि जो आये बरस टीपणों के अन्दर काल पड़ने के बाबत और रोगचाला फैलने के बारे में और गायें, घोड़ा, ऊँट वगैरा पर भार होने के बारे में भी लिखते हैं, और यह भी लिखते हैं कि फलाने बरस में तलवार चलने का जोग है क्योंकि टीपणों में यह बात लिखी हैं, सो जब तलवार चलने के नामका पाप होम कराते हैं तो तलवार चल जाती है परन्तु इन सौदागर महाजनान ने तमाम जहान के लोगों की अकल अपने राक्षसी पाप से ऐसी कैद कर दी है कि इनके जालों को सब साहबान सर आँखों से काम में लाते हैं और 'मुलाहजा' फरमाते हैं जब भी इस 'बदहुनर' के बारे में ऐसी कोशिश नहीं करते हैं कि जिससे राक्षसी पाप इन सौदागर महाजनान का संसार से दूर हो जावे तो कैसी उमदा बात है, क्योंकि यह सौदागर

मुलाहजा = सुनने-सुनानेका

महाजन जिस साल में तकरार फिसाद होने सब संसार के पाप करावें तो दुनियाँ की अकल फिरने के सबब से आपस में लड़ाई करते हैं और फिर उस तनाजे से भाई – २ आपस में लड़कर मर जाते हैं. सो यह हाल सब जानते ही हो और प्रघट है कि हम – तुम में ऐसे –२ हेत इरादे रहे हैं कि एक – दूसरे को देख करके नाराज होते हैं बल्कि रंज व गम में गिरफ्तार हो जाते हैं और जहाँ तक की मौका मिलता है, एक – दूसरे को जमने नहीं देता है और गरीबों – अमीरों और राजा –बादशाहों में ऐसा खार – अेंखार है कि भाई – भाई आपस में यह चाहते हैं कि मेरा बड़ा भाई मर जावे तो इसका माल भी मेरे हाथ आ जावे और छोटे भाई को बड़ा भाई नहीं चाहता है कि यह मर जावे तो सब माल – धन मेरे हाथ आ जावे. गरज कि जितने भाई होवे आपस में एक – दूसरे का यह चाहते हैं. और राजा लोग यह चाहते हैं कि भाई – बेटों और उमरावों वगैरा को गाल दूँ तो सब मुल्क की पैदायश मेरे हाँथ आ जावे,

परन्तु यह बुध्दि फिरने का सबब है कि राक्षसी पाप से बुध्दि फेर देते हैं जब ऐसा ही सूझता है, परन्तु यह राजा बादशाहों की भूल है कि जब भाई बेटे सरायत गल जावेंगे तो राजा लोगों को भी कौन राज करने देंगे? परन्तु बुध्दि फिरने से सूझता नहीं है. सो ऐसे - ऐसे खार - अेंखार इस जमाने में रह गये है कि ऐसा हाल और किसी जमाने में नहीं हुआ था कि जो आज हम और तुम और सब संसार अपनी - २ आंखों से देख रहे हो, कि उस परमेश्वर के घर में तो सिंघ और बकरी सामिलचरी हैं ऐसा संप और हेत इरादा था. सो जिस दिन से कि राक्षसी विद्या का पाप दुनियाँ के नाम से कराते हैं, उस दिन दुनियाँ की अकल लछामान हो जाती है सो यह टीपणें राक्षस विद्या के हैं, कि जिस तरह से रावण ने राक्षस विद्या के टीपणें चलाये थे, इसी तरह पर इन बनियों ने भी राक्षस विद्या के टीपणें चलाये हैं और ब्राह्मणों को मराने के वास्ते पकड़ा दिये हैं, परन्तु ब्राह्मणों को तो इनके जालों की खबर नहीं कि

अैंखार = अहंकार, अमरोवा = राज दरबार में एक पद होता है, लछामान = गायब

टीपणें बनियों के चलाये हुये हैं, सो इन बनियों ने टीपणों के अंदर यह कैसी चालाकी की है कि ब्राह्मणों के बुजुर्गों के नाम टीपणों के अन्दर लिखकरके प्रघट किये हैं, इससे ब्राह्मण यह जानते हैं कि यह टीपणें हमारे हैं, सो यह ब्राह्मणों की भूल है, क्योंकि यह टीपणें राक्षसी वेद के बनियों के बनाये हुये हैं और चलाये हुये हैं, कि जो टीपणों को ब्राह्मण लोग आज बाँच रहे हैं, परन्तु इन महाजनान ने यह अकलमदी की है कि जो राजा बादशाह टीपणों का हाल दरियाफ्त करेंगे तो ब्राह्मणों के बच्चे मारे जावेंगे, लेकिन ब्राह्मण लोग इन टीपणों का बिलकुल ख्याल नहीं करते कि इन टीपणों में ग्रह गोता तो राक्षसी वेद के मौजिब हैं, सो इस बात को बिलकुल नहीं सोचते हैं कि टीपणें हमको किसी ने राक्षसी वेद के तो नहीं पकड़ा दिये हैं? क्योंकि रावण ने छल करके राक्षसी पाप के टीपणें रखेश्वरों को पकड़ा दिये थे, सो उसी तरह से छल करके जाल के टीपणें हमारे बच्चे गारत करने के वास्ते तो नहीं पकड़ा

रखेखरों = ऋषी मुनी, मोजिब = मौजूदा

दिये हैं! सो तो बिलकुल नहीं समझते हैं; सो यह अकल फिरने का सबब है क्योंकि बुध्दि को इन्होंने राक्षसी पाप से ऐसी खराब कर दी है कि कलम से लिखा नहीं जाता, बल्कि ब्राह्मणों को तो हमेशा ऐसा ही सूझता है कि यह जो टीपणें हैं कि जिनको रोज मर्रा बाँचते फिरते हैं यह हमारे घर के हैं. परन्तु यह नहीं जानते कि इन सौदागर महाजनान ने जालसाजी करके राक्षसी पाप के टीपणें बना करके हम ब्राह्मणों को पकड़ा दिये हैं कि जैसे रावण ने जालसाजी करके रखेश्वरों के हाँथों में राक्षसी वेद के टीपणें पकड़ा दिये थे. यह हाल इस तरह से है कि रावण का दिल चकवे राज करने और कुल पृथ्वी पर राज करने का था, इसी तरह से इन महाजनान ने भी बलराजा के बाद से जालसाजी करके ब्राह्मणों के बच्चे मराने के वास्ते राक्षस विद्या के टीपणें पकड़ा दिये हैं और इनका भी मन चकवे राज करने का है. सो यह हाल इस तरह से है कि जब अकल खराब हो जाती है जब ऐसा ही सूझता है, परन्तु

मर्रा = रोज का रोज

यह भी गौर करने की बात है कि जो ब्राह्मण लोग टीपणों को इस जमाने में घर -२ बाँचते फिरते हैं, परन्तु बाँचने से कौन सा काल और कौन सा रोग वगैरा और कौन सी बातें होती हैं? और टीपणों में जो कहते हैं कि फलाने दिन तमाम साओ देश में मेह का जोग है तो उस दिन जमीनमाता के नाम का पाप उन चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर बंद कर लेते हैं, तो 'बिरखा' तमाम दुनियाँ - जहान में हो जाति है और जो यह महाजन लोग यह चाहें कि मेह थोड़ा बरसने देवें तो उसी वक्त जमीन माता के नाम का पाप करना शुरू कर देते हैं तो बरसते - २ मेह बंद हो जाता है, इसकी ऐसी मिसाल है कि जैसे आदमी खाना खाता होवे और खाते - २ उसके पेट में बहुत सख्त दर्द - दुःख पैदा हो जावे, तो उसी वक्त वोह उस दर्द की वजह से खाना - पीना बंद हो जावे, उसी तरह से जमीन माता को भी जादू से रोग कर देते हैं तो मेह बरसते - २ बंद हो जाता है, याने जमीन माता

बिरखा = बरसाद

पानी पीते - पीते रोग के सबब से बंद हो जाती है. क्योंकि जमीन की खुराक पानी है और जो टीपणों में यह लिखा हुआ है, वोह लिखते हैं कि फलानी जगह मेह होगा और फलानी जगह मेह नहीं होगा, याने फलाना खण्ड खाली रहेगा, तो जिस तरफ का खण्ड खाली रहता है उस तरफ की जमीन के नाम का पाप कराया जाता है और जिस खण्ड के अन्दर मेह होने का लिखते हैं और उस खण्ड की जमीन के नाम का पाप छोड़ देते हैं तो वहाँ मेह बरसता है, कि जैसे आदमी के शरीर में एक पासे की तरफ में दर्द हो जावे और दूसरी तरफ का पासा अच्छा रहे या एक हाँथ या पाँव या सर या पेट या पीठ में किसी तरह का दर्द या रोग हो जावे और दूसरा हाँथ, पाँव या सर या पीठ अच्छी होवे. इसी तरह से जमीन माता के भी देह और शरीर हैं; और जिस तरह से कि आदमी के शरीर में रोग हो जावे उसी तरह से जमीन माता के शरीर में जादू चाले से यह बनिये महाजन जमीन के नाम का

मेह = वर्षा, पासे = पासवाडा

होम याने पाप कराते हैं और रोग व बीमारी पैदा कर देते हैं तो जमीनमाता भी बीमार हो जाती हैं, इससे कहीं बरसता है और कहीं नहीं बरसता है क्योंकि जिस तरह से आदमी जिन्दा दिल है उसी तरह से जमीन माता भी जिन्दा हैं और टीपणों में यह लिखते हैं कि, अबके बरस पवन ज्यादा चलेगा तो जमीन माता को जादू से दमका रोग कर देते हैं तो इन महाजनान की इससे यह गरज है कि धान रीजक वगैरा कम होवे तो इनके घर में फायदा पड़ता है, तो पवन का रोग इस तरह से है कि जैसे आदमी को दम का रोग हो जाता है और जो टीपणों में यह लिख देते हैं कि अबके बरस अग्नि चाला बहुत होगा तो उस बरस जमीन के नाम का पाप कराके गरमी का रोग कर देते हैं, जैसे आदमी के पेट में गर्मी और आग पैदा हो जाती है और कहीं - २ गर्मी का जादू से ज्यादा रोग करते हैं तो बहुत से गाँव जल जाते हैं और जंगल व पहाड़ों में धान, घास, झाड़ वनस्पति वगैरा

रिजक = मेरा फल खने पिने की वस्तुमे

खुद – ब – खुद जल जाते हैं और मैं कहाँ तक लिखूँ आप लोग गौर करो तो बहुत से रोग इन महाजनान ने जमीनमाता को जादू से कर रखे हैं कि जिससे पैदावार धान वगैरा की नहीं होती है और इन्होंने बेशुमार रोग जमीनमाता को कर दिये हैं जिससे धान वगैरा नहीं होता है और मैंने तो एक – दो बातें आप लोगों को वाकिफ करने को लिखी हैं और जैसा कि सतजुग में रीजक होता था वैसा अब नहीं होता है, क्योंकि जमीन माता के शरीर में बारोमास ही जादू से रोग रखते हैं इससे सतजुग के मुवाफिक रीजक नहीं होता है जिससे कुल दुनियाँ दुःखी है और जो टीपणों में यह लिखते हैं कि अब के बरस आदमियों में बीमारी कम है तो उस बरस संसार के नाम का पाप थोड़ा कम करते हैं और जो टीपणों में यह लिखते हैं कि अबके बरस जानवरों में याने घोड़ा, ऊँट, गाय, भैंस व बकरी वगैरा में बीमारी कम है तो उस बरस जानवरों के नाम का पाप थोड़ा कम करते हैं तो जानवर बेचारे फलते – फूलते हैं और

सतजुग = सतयुग

टीपणों में यह भी लिखते हैं कि गायें, भैस, भेड़ व बकरी वगैरा में रोग ज्यादा हैं तो उस बरस उनके नाम का पाप ज्यादा करावें तो यह बनिये महाजन बेईमान कैसी चालाकी करते हैं कि चार - पाँच बरस पेशतर घीरत खरीद - २ कर रखते हैं और फिर जानवरों में जादू से मरी डाल करके घीरत महँगा करके बेचते हैं. सो पहले से तुम सब संसार को टीपणों में सुनाते ही हैं कि घीरत, रुई वगैरा खाने - पीने की चीज वगैरा महँगी होगी, गरज इनकी यह है कि हर एक तरह से छल करके पैसा संसार में से खींच लेवें, सो यह बनिये ऐसे - २ पाप कराके चालाकी करते हैं. इस सबब से मैंने एक - एक बात को सौ - सौ जगह लिखी है, परन्तु इन बनियों ने कई लोगों के दिलों में जादू से मेरे को पागल सुझाते हैं सो लोगों का तो कुछ दोष नहीं, क्योंकि जादू से कुछ का कुछ सुझा देते हैं और मैं तो संसार के बच्चे उभरने के वास्ते आप लोगों को वाकिफ करता हूँ और खबरदार करता हूँ कि जो ब्राह्मण लोग टीपणें इस जमाने में घर-२ बाँचते फिरते हैं परन्तु

बाँचने से कौन सा काल और कौन सा रोग वगैरा और कौन सी बातें होती हैं और टीपणों के बाँचने से कौन सी मरी वगैरा पड़ती है? लेकिल यह टीपणें परवाने के तौर पर संसार के लोगों को छः - २ महीने पहले से लोगों का नुकसान पहुँचाने के लिये कानो - कान सुना देते हैं और दिन मिती इन टीपणों में भी लिखी हुई है, मगर जिस वक्त कि चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर पाप कराते हैं जब यह टीपणें सच्चे हो जाते हैं और जो कि चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर जमीन के नाम का पापकरावें तो अनेक तरह की बीमारी जमीन के शरीर में हो जाती हैं और संसार के नाम का पाप करावें तो आदमियों को बीमारी हो जाती है और जो संसार के नाम का ज्यादा पाप करावें तो मरी भी पड़ जाती है, उसी तरह से अनबोले यानी बेज़ुबान घोड़ा, ऊँट, गायें वगैरा के नाम का पाप करावें तो उनको रोग पैदा हो जाता है और जो उनके नाम का ज्यादा पाप करावें तो बेज़ुबानों के ऊपर भी मरी

मरी = मौत, मेह जोग - बारिश संभावना।

पड़ जाती है. सो टीपणा सुनाने से तो कुछ भी नहीं होता है, वो जब चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर पाप कराते हैं तब संसार का बुरा होता है इस तरह से पापकरा - कराके इन टीपणों को यह महाजन लोग सच्चा करते हैं; इससे ऐ ब्राह्मण लोगों, साध अनोपदास की हाथ जोड़कर अरज है कि यह टीपणें बनियों के बनियों को वापस दे दो और राज दरबार में यह कहना कि यह टीपणें राक्षस विद्या के रावण के तौर पर इन बनियों ने हमारे बुजुर्गों को किस रीत से पकड़ा दिये हैं और हम लोग तो भूले हुये हैं क्योंकि हमारे बुजुर्गों का नाम टीपणों के अन्दर लिखा हुआ है, इससे इन टीपणों को हम अपना जानते हैं, क्योंकि रावण ने हजारों तरह के जाल करके राक्षसी वेद के टीपणें वगैरा रखेश्वरों के हाथों में पकड़ा दिये थे तो रखेश्वर लोग ऐसे - २ सती थे जैसे शिवजी और ब्रह्माजी और रामचंद्रजी सरीखे और रखेश्वर वगैरा ऐसे - २ लोग रावण के इन्द्रजाल के पाप में भूल गये थे, तो इस वक्त के

आदमियों की तो क्या चलाई! जब ऐसे - २ सती लोगों को भी खबर नहीं पड़ी थी कि इन्द्रजाल में हमारी बुध्दि कैद है, तो आजकल के जमाने के लोग किस तरह से इस इन्द्रजाल का हाल मालूम कर सकते हैं. रावण ने शनिश्चर को समामुख कलपाया जब रावण के जाल की खबर पड़ी तो शनिश्चरजी ने सब दुनिया को वाकिफ कर दिया जब सब दुनिया को और रखेश्वरों को खबर पड़ी सो तमाम बातें रावण के इन्द्रजाल की अगले सती लोग वेद शास्त्र में लिख गये हैं और दुनियाँ मे मुँह जबानी भी कहते हैं कि रावण ने इस - २ तरह से इन्द्रजाल चलाया था, सो मेरे को भी इन बनियों ने सनीचरजी की तरह से समामुख कलपाया है, इस वास्ते मैं तमाम संसार को वाकिफ करता हूँ और जब मुझको समामुख नहीं कलपाया था तो मुझको भी तुम्हारी तरह से कुछ खबर इस इन्द्रजाल के जादू की नहीं थी, सो यह जाल सब संसार मिलकर छोडाओ तो तुम्हारे सब संसार की औलाद उभरेगी, नहीं तो

यह बनिये अपने लोभ और धन के वास्ते सब दुनिया को गारत कर देंगे इस वास्ते तरह - २ के छल करके राक्षस विद्या के टीपणें हम ब्रह्मणों को पकड़ा दिये हैं. सो ऐ भाइयों, इन बनियों के तो अनेक तरह के जाल हैं कि जिसका अन्दाज कुछ नहीं हो सकता, क्योंकि इन बनियों ने इस तरह के फरेब करके राक्षसी वेद के टीपणें ब्राह्मणों को पकड़ा दिये हैं सो यह टीपणें सिर्फ ब्राह्मणों के कुल और औलाद मराने को पकड़ा दिये हैं और आप अलाहदा के अलाहदा रह गये हैं क्योंकि जो टीपणें सतजुग में थे उनमें दिन मिती याद रहने के वास्ते लिखी हुई थी, "नेम धरम" पुण्य करने के वास्ते थे सो असली टीपणें तो इन बनियों ने दबा लिये हैं कि जिस तरह से रावण वगैरा ने दबा लिये थे और अपने जाली टीपणें चला दिये थे, उसी तरह से इन बनियों ने भी बलराजा के बाद से राक्षसी पाप को चला करके रावण के तौर पर इन बनियों ने असली टीपणें तो दबा लिये हैं और अपने तौर पर

जाल के टीपणें रावण की तरह से चला दिये हैं, मगर दिन व मिती इन टीपणों में भी याद रहने के वास्ते लिख दी हैं. और ग्रहचाला और रोगचाला व माँदगी वगैरा के बारे में लिखा है; और ऐसा भी लिखा है कि कलजुग इस तरह का आवेगा कि ''बहन व भाई आपस में हराम काम करेंगे'' क्योंकि यह बनिये जादू से बुध्दि भ्रष्ट कर देवें तो आदमियों की बुध्दि जानवरों के मुवाफिक हो जावे, फिर आदमी भी बहन - बेटी को नहीं समझे लेकिन जिस तरह से संसार में भूल पड़ती जावेगी जब यह महाजन ऐसी बुध्दि भ्रष्ट करेंगे, जब जानवरों के मुवाफिक बहन - बेटी से हराम करने लगेंगे; सो अब इस जाल की खबर पड़ गई है सो सब संसार मिलकर इस जाल को छोड़ाओ, नहीं तो इन महाजनान ने जिस तरह से टीपणों में लिखा है तो वैसे ही यह बनिये बुध्दि भ्रष्ट करके कर दिखावेंगे, क्योंकि ''तुम ज्योतिष के भरोसे भूले हो'' और यह राक्षसी जाल है सो यह टीपणें तो राज के परवाना मोजिब इस तमाम

दुनिया में फिर रहे हैं, कि जिस तरह से नेकी व बदी के बारे में ''बाबत तलबी फरीकैन के समन मजकूरे वाल राज से जाते हैं'' उसी तरह से इन सौदागर महाजनान के राक्षस विद्या के टीपणें दुनियाँ में फिर रहे हैं और अलावा इसके चौरासी लाख कुण्डियाँ भी राध लहू की बनाई हैं, सो उन कुण्डियों पर चौरासी लाख जीवाजून को दुनियाँ के नाम से कलपाते हैं कि जिस तरह से इन टीपणों में बीमारी और मिरगी और काल का हाल दरबारे पड़ने के लिखा है सो पड़ जावे, सो जमीन माता के नाम से जीवाजून कलपाते हैं तो काल भी दुनियाँ में पड़ जाता है और ग्रहण भी दुनियाँ में पड़ जाता है और जिस तरह से कि रावण ने सूरज - चंद्रमा को बाँधा था, सो इसका हाल वेद और किताबों व पुराणों वगैरा में लिखा है परन्तु दुनियाँ यह कहती है कि रावण ने सूरज - चन्द्रमा को बाँधकर अन्दाज देखा था कि जमीन के नाम से पाप किया जाता है वोह जमीन को लगता है कि नहीं लगता है इस

बाबत तलबी फरीकैन के समन मजकूरेवाला -राजा के फरमान को प्रं

वजह से बतौर तजरुबे के रावण ने दो चार मरतबा ग्रहण भी डालकर देखा था, सो वोह पड़ गया था, इससे जमीन को पाप लग गया था; सो ग्रहण का पड़ना दुनियाँ में रावण ने चलाया था सो यह बात दुरस्त है, सो रावण के वक्त में तो रावण ने दो चार बार ही ग्रहण पड़ाया था. रावण ने सूरज – चन्द्रमा को दो – चार बार ही बाँधकर ग्रहण डाला था जिससे दुनियाँ में यह बात प्रगट है कि रावण ऐसा था कि सूरज – चन्द्रमा को पवन और पानी को भी बाँध लेता था ऐसा काम उसने किया था, जिससे उसकी यह बात मशहूर चली आती है परन्तु यह बनिये बेईमान बारह महीने में दो – तीन दफे ग्रहण पड़ा देते हैं, सो तुम सब संसार टीपणों में सुनते ही हो, सो यह बात दुरस्त है कि जो जमीन के नाम का पाप किया जाता है वह जमीन को लग जाता है, जब उन्होंने अपने दिल में यह ख्याल किया और परमेश्वर से डरा कि जमीन माता के आसरे तो कुल सृष्टि और जहान

बसता है और हम भी जमीन के आसरे से ही पलते हैं, इससे जमीन के नाम का पाप नहीं कराना चाहिये, क्योंकि जमीन माता तो सब चीजों की पालने वाली है कि जो चीजें जमीन के ऊपर होती हैं और हैं और जमीन के ऊपर राजा - बादशाह और तमाम जहान और चौपाये, पखेरू वगैरा रहते हैं, अगरचे उन्होको हमारे इस राक्षसी पाप की खबर पड़ गई तो मुझको मय औलाद के गारत करा देंगे. इस बात को विभीषण ने अपने दिल में सोचा और सोच विचारकर अपने बड़े भाई रावण से कहा कि जमीन माता के नाम का पाप नही कराना चाहिए, क्योंकि जमीन माता के ऊपर कुल जहान के लोग बसते हैं; अगर तुम्हारे राक्षसी पाप की खबर दुनियाँ को पड़ गई कि रावण जमीन के नाम का पाप कराता है तो तमाम जहान बगैर एक दिल हुए अपनी औलाद को ही गारत कर देंगे. सो इस बात का जिकर विभीषण ने अपने भाई रावण से करके कहा कि तुम पाप करना

छोड़ दो, परन्तु रावण ने अपने भाई विभीषण का कहा न माना और राक्षसी पाप कराता रहा लेकिन विभीषण अपनी भक्ति की वजह से संसार के लोगों से बहुत डरा और डर की वजह से अपने भाई रावण को छोड़कर एक तरफ को बचा, सो अपने भाई रावण के राक्षसी पाप से बचकर अपने कुल का नाम सलामत रखा. सो यह बात वेद और पुराणों में लिखी है कि विभीषण अपनी भक्ति से भक्त था और रावण व विभीषण जो आपस में मिलकर जमीनमाता के नाम का पाप कराते तो संसार के लोगों को जो खबर पड़ती कि विभीषण भी रावण के साथ पाप करा रहा है परन्तु विभीषण तो पाप करने से बचा हुआ था इससे बच गया, अगर रावण के शामिल होता तो विभीषण की भी जान औलाद समेत निकाल डालते लेकिन विभीषण संसार का और अपनी भक्ति का डर करके अलहदा रहा और नेकी की वजह से अपना नाम सलामत रखा, परन्तु रावण जमीनमाता के नाम का पाप कराता था

इससे जमीनमाता दुबली हो गई थी, फिर उसके शरीर में चरबी कहाँ से रहती, लेकिन जमीन के शरीर में चर्बी इन चीजों को कहते हैं कि जिनको भी जमाने में चाँदी व सोने की खानें बोलते हैं वो चरबी है, परन्तु रावण के वक्त में तो चाँदी – सोने की खाने मौजूद थीं, क्योंकि रावण जमीनमाता के नाम का पाप थोड़ा कराता था इससे जमीनमाता रावण के जमाने में दुबली नहीं हुई थी लेकिन रावण दुनियाँ के नाम का पाप अलबत्ता कराता था सो खाश वजह रावण के जाल चलाने की यह थी कि जब संसार के लोग थोड़े से रहेंगे और अकल खराब हो जावेगी तो हम अपना राज चारकुंट और चौदा भांण में अच्छी तरह से करेंगे, इससे साफ जाहिर होता है कि दुनियाँ के नाम का पाप रावण कराता था, परन्तु जिस वक्त की रावण के राक्षसी विद्या की खबर दुनियाँ को हुई कि रावण तमाम दुनियाँ को अपने राक्षसी पाप से गारत करना चाहता है जब तमाम दुनियाँ ने एक दिल होकर

रावण के राक्षसी पाप को मिटा दिया बल्कि रावण पाप न छोड़ने की वजह से ईमानहार हुआ, जब खुद अपनी औलाद को तमाम जहान के हाथों से अपने साथ ही मरा दी. सो भाई मेरे, यह बात काबिल गौर करने की है कि राज तेज तो धरम और नेकी का है परन्तु नेकी का छोड़ना अच्छा नहीं क्योंकि रावण ने दुनियाँ की अकल अपने राक्षसी पाप से थोड़ी खराब की थी सो कुल जहान के राजा - बादशाह व रैयत वगैरह और साधु - फकीरों ने एका करके फौरन रावण के राक्षसी विद्या को छुड़ा दी. सो जल्दी पाप छूटने की वजह यह थी कि सृष्टि ने अपनी औलाद की तरफ देखा कि अभी तो रावण ने अपने राक्षसी पाप से थोड़ी - २ अकल खराब की है और ज्यादा पाप करायेगा तो कुल सृष्टि की औलाद को गारत करा देगा, इससे रावण के राक्षसी पाप छोड़ाने का अभी से बन्दोबस्त करना वााजिब है ताकि जोर न पकड़ने पावे

और जो जोर पकड़ गया तो फिर पाप का छूटना मुश्किल है, जब तमाम जहान ने एक दिल होकर रावण के राक्षसी पाप को छोड़ाया जब जहान की औलाद को सुख प्राप्त हुआ. अलावा इसके दुनियाँ यह कहती है कि सूरज - चंद्रमा रावण के रसोड़े को तपाता था,' 'यह बात खिलाफ है क्योंकि दुनियाँ की अकल ऐसी खराब कर दी है कि झूठी बात जो कोई जमीन के परदे पर कहता है उसको यकीन से सच्चा मान लेते हैं जिसकी वजह यह है कि सब संसार के लोगों की अकल राक्षसी पाप से भ्रष्ट करदी है जिससे झूठी बात को भी सच्चा मान लेते हैं, देखो भाई कि सूरज - चंद्रमा कौन सा आदमी थे कि जो रावण के रसोड़े को तपते थे? सो यह बात तो इस तरह से है कि जिस तरह से अपनी देह के अंदर रोशनी होती है उसी तरह से जमीनमाता की देह में भी सूरज - चंद्रमा कुब्वत के सबब से रोशनी रखते हैं, सो यह बात इस तरह से है कि जमीन के पेट में अग्नि का रोग

कुब्वत = अर्थ

जादू से कर देवे तो पहाड़ या और कोई जगह अपने आप ही जलने लग जावे, सो वह जगह अग्नि के रोग की वजह से ऐसी तपती है कि जो चाहो तो खाना वगैरा उस जगह पकालो और यह अग्नि का रोग ऐसा है कि जैसे आदमी के पेट में या बदन में गर्मी की आग उठ जावे, इसी तरह से जमीन को भी गर्मी वगैरह का रोग कर देते हैं और अपना जाल प्रगट न होने के लिये ऐसी - २ बातें प्रगट कर देते हैं कि सूरज रावण का रसोड़ा तपाता था और असल में जमीनमाता को यह रोग अग्नि का कर देते हैं और दुनिया की बुध्दि भ्रष्ट कर देते हैं जिससे जमीनमाता के रोगों को समझते ही नहीं. जादू से जमीनमाता को फाड़ भी देवें जब भी नहीं समझें और यह नहीं जानते कि जमीनमाता का भी हमारे मुवाफिक जिन्दा शरीर है जो यह फटती है तो इसको भी बहुत दर्द होता है और 'बाजइत्तफाक' नादुरुस्त होने से तबियत गर्मी वगैरा के सबब से ऐसी कुम्हला जाती

है जो खाना - पीना भी नहीं खाया जाता है, बल्कि पेट में बीमारी के सबब से हजारों तरह के कीड़े पैदा हो जाते हैं, तो फिर कैसी तबियत हैरान रहती है; तो इसी तरह से जमीनमाता के नाम का पाप चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर सर्द - गर्म का रोग करावे तो मकान व किला वगैरा की दीवारें जलने को लग जावें, सो इन बातों को तो दुनियाँ जादू चाले के पाप से भूली हुई है क्योंकि यह बनिये लोग अपने राक्षसी पाप से इस बात को जाहिर नहीं होने देते है, परन्तु यह बात इस तरह से है कि जब जमीन के नाम का पाप कराते हैं तब अग्नि अपने आप लग जाती है और ऐसा भी होता है कि यह जो बनिये जादू के जोर से सूरज - चन्द्रमा को नीचे उतारना चाहें तो उतार भी सकते हैं और अगले लोगों ने राक्षस विद्या वालों को अच्छी तरह से हाथ दिखाये है कि उनकी औलाद को गारत कर दिया था, इस सबब से यह बनिये डरते हैं कि जो हमारा जाल लोगों को मालूम हो गया

तो हमको भी मय औलाद के संसार के लोग मार डालेंगे, जिससे डरते हुये सूरज - चन्द्रमा को नीचे नहीं उतारते हैं; क्योंकि अगले लोगों को जिन - २ ने जाल चलाया था उनको अच्छी तरह से सजा मिल चुकी है और अलबत्ता लोगों को भूल में डालके और कोई देवता - फकीरों की करामात का नाम लगाकर तो कभी उतारेंगे और अपना जाल प्रघट न होने के वास्ते पहले से करामात वगैरा का नाम मशहूर कर देते हैं, जैसे कि 'शम्सतबरेज' फकीर का हाल लोग बयान करते हैं कि जब उसके बदन की खाल उसने अपने हाँथ से उतार दी थी तो अन्दर से कोरा माँस उसके बदन का निकल आया, तो उसको संसार में कोई अपने पास नहीं आने देता था. जब वोह कसाई से माँस लाया और वो टुकड़ा माँस का सेकने के वास्ते सूरज को नीचे उतार लिया और वो माँस सूरज की गरमी से सेंक कर खाया तो तमाम दुनियाँ जलने लगी; सो यह बात बिलकुल गलत है क्योंकि

शम्सतबरज = एक मुस्लिम फकीर

जो वो फकीर गोस्त का टुकड़ा सूरज की गर्मी से सेकता तो उसके बदन की खाल उतरी हुई थी और बदन का कोरा माँस निकला हुआ था, तो वो फकीर सूरज की अग्नि से आप भी जल भुन जाता, तो वोह आप किस तरह से बच गया और ऐसा मालिक भी नहीं है कि जो एक आदमी के वास्ते सब दुनियाँ को जला देवे, यह बात किस तरह से समझ में आवे और अलावा इसके अपने हाँथ से खोली की तरह से अपनी खाल उतारके उस फकीर ने डाल दी बताते हैं सो यह भी बात भी समझ में नहीं आती है सो भाइयों गौर करो! कि खोली की तरह से खाल किस तरह आदमी अपने हाँथ से उतार सकता है ? यह बात सिर्फ राक्षसी जाल की है और मालिक ने तो यह खाल खोली की तरह से उतरने के लायक तो बनाई भी नहीं है, सो ऐसी – ऐसी बातें और किस्सा पहले से चला दिये हैं और ऐसी – २ बातें जतियों के नाम से सुनाते हैं कि जती लोग तारे और चंद्रमा को उतार लेते हैं

और बड़े करामाती हैं, सो यह बात इस तरह से है कि जब तारे उतारे तो जैसे आदमी का जीव बिखरने लगता होवे, जब ऐसा रोग दुःख जमीनमाता को तारे उतरने से होता है, और सूरज - चन्द्रमा को जो उतारे तो जमीनमाता को यह ऐसा रोग है कि जैसे जीव घबराके भूला हुआ हो जाता है. जब सूरज - चन्द्रमा को उतारें तो ऐसे - २ रोग व दुःख जमीनमाता के जीव को हो जावे, जो यह बनिये सूरज - चन्द्रमा को नीचे उतारें तो ऐसा - २ दुःख हो जावे और बातें जाल की ऐसी चलाई हैं कि करामात से तारे, चन्द्रमा, सूरज वगैरा उतारते हैं और फकीरों को भी ऐसा ही सुझा देते हैं कि हम बडे करामाती हैं और ऐसे ही संसार को सुझा देते हैं कि यह फकीर - साधु लोग बड़े करामाती हैं और जैसे रावण वगैरा ने रखेश्वरों को और संसार को करामात के भरोसे भुलाये थे, इसी तरह से यह बनिये भी भुला रहे हैं, सो मैं आप लोगों को वाकिफ करता हूँ कि जब दुनियाँ भूल में पड़ जावे तो यह बनिये

बेईमान जादू से सूरज – चन्द्रमा को नीचे उतारने लग जावेंगे, सो इनका मतलब यही है कि बड़े लोग सब उजड़ जावें तो सब संसार में हमारा राज हो जावे, सो दुनियाँ में भी यह बात कहते हैं कि दिल्ली फकीरों जोगी अब हुई है सो बगैर पैसा के लोग फकीर ही हो गये हैं और हौले – हौले, सातों – आठों विलायतों को फकीरों जोगी याने जैसे दिल्ली हिन्दुस्तान की विलायत को कर दिया है, ऐसे ही कर देंगे और सब दुनियाँ करामात के भरोसे भूली हुई है और असल में इन महाजनान का यह जादू का जाल है और जादू की करामात चलाई है और दुनियाँ में यह कहते हैं कि फकीरों ही ने बद्दुआ दी है जो बादशाहों का राज जाता रहा है और असल में तो राज इन महाजनान के जादू से डूबा है और फकीरों की भी बुध्दि भ्रष्ट करके उनके मुँह से जादू से कुछ की कुछ बद्दुआ कहवाकर, फिर जादू से राजा बादशाहों के नाम का होम कराके उनकी बुध्दि भ्रष्ट करके, आपस में लड़ा करके मरा देते हैं या

और कोई विगन करके और जब राजा बादशाहों की बुध्दि भ्रष्ट कर देते हैं तो वो फकीरों से करामातें पूँछने लगते हैं, और यह नहीं समझते कि करामात क्या चीज होती है? क्योंकि उनकी बुध्दि तो जादू से भ्रष्ट कर देते हैं, इससे वह करामात पूँछने लग जाते हैं और जो फकीर साधू बद्दुआ नहीं देवें तो भी यह बनिये महाजन जादू से गारत कर देते हैं, परन्तु फकीरों की बद्दुआ का तो एक रावण के मुआफिक बहाना चलाया है जैसे रावण ने जादू से फकीरों की करामात चलाई थी और कई फकीरों के मुँह से कहवाकर जादू से कई राजा बादशाहों को डुबा दिये थे, और रामचंद्रजी महाराज के ऊपर भी जादू से ग्रह करके रावण ने वनवास दिला दिया था, उसी तरह से अब इन बनियों ने फकीरों की करामात का जाल जादू से चलाया है चाहे फकीर कुछ भी नही कहें सो यह बातें कोई -२ पोथियों वगैरा में लिखीं हैं, सो तुम संसार के किसी - किसी लोगों ने देखा ही होगा,

नहीं तो पोथियों की तलाश करके देख लो कि यह लिखा होगा कि फलाने राजा का राज इतने बरस रहेगा और फलाने बादशाह का राज इतनी मुद्दत तक रहेगा और अंग्रेजों का भी कहते हैं कि इतने बरस रहेगा सो यह पोथियाँ कोई – २ हिंदू – मुसलमानों के घरों में प्रगट भी हैं और किसी – २ ने देखी भी होंगी और हिंदुओं की पोथियों में तो हिंदुओं के फकीरों के नाम हैं और मुसलमानों की किताबों में मुसलमानों के फकीरों के नाम लिख दिया है और बनाकर इन बनियों बेईमानों ने चलाई है और आप प्रगट न होने के वास्ते अपना नाम पोथियों में नहीं लिखा है, क्योंकि कोई पर विलायत के जब यहाँ आवेंगे तो हिंदू – मुसलमानों के बच्चे मारे जावेंगे और हमको कोई नहीं पूछेगा, तो यह बनिये खुद बच जावेंगे अपने बचने के वास्ते ऐसा काम किया है कि पोथियों में दूसरों के नाम लिख दिये हैं और दूसरी विलायत के आने वालों की भी बुध्दि भ्रष्ट कर देते हैं कि वो फिर दरियाफ्त

नहीं करते कि किताबों में लिखा होने से संसार का बुरा थोड़ा ही होता है, टीपणें पोथियों के बाचने से संसार का कुछ बुरा नहीं होता है यह तो जब होम कराके चौरासी लाख कुण्डियों पर, जो अलोप बनाई हैं उन पर पाप कराते हैं तब संसार का बुरा होता है और पोथियाँ और टीपणें भी सच्चे हो जाते हैं और दूसरी विलायत के आने वालों की ऐसी बुध्दि भ्रष्ट कर देते हैं कि उनको यह मालूम नहीं होता कि जो चोर जाल चलाते हैं जब तक उनका बन्दोबस्त नहीं होगा और वो चोर नहीं पकड़े जावेंगे तो हमको भी और दूसरी विलायतों को भी गारत कर देंगे. ऐसे उनको यह बनिये सोचने नहीं देते हैं और अच्छे भले आदमी सती बनके मिल जाते हैंऔर वोह यह नहीं सोंचे कि यही हमारे और कुल संसार के बच्चों के बेईमान बनिये काल हैं और वोह दूसरी विलायत वाले यह नहीं सोचते हैं कि इन बनिये बेईमानों ने ही दुनियाँ में बुरा होने की पोथियाँ और टीपणें वगैरह चलाये हैं; सतजुग में जो धरम का

वेद था वह तो इन बनियों ने अपने काबू में कर लिया है और जाल का चला दिया है, जैसे कि रावण ने असली किताबें वेद की दबा ली थीं और राक्ष्सी वेद की चला दी थी उसी तरह इन बनियों ने भी अपना जाल रावण वगैरा के मुआफिक चलाया है और पहले से संसार का बुरा होने के वास्ते इन महाजनान ने ऐसी - २ बातें चलाई हैं. सो कहने से तो कुछ नहीं होता है परन्तु पहले जैसा कहते हैं फिर वैसा ही पाप चौरासी लाख कुण्डियों पर कराते जाते हैं तो फिर वैसा ही होता जाता है और दुनियाँ में इन महाजनान ने ही ऐसी - २ बातें चलाई हैं कि सूरज सैस किरण से तपेगा जिसकी गर्मी से जमीन माता सुर्ख ताँबे के रंग हो जावेगी और जो कि जमीन के ऊपर पानी है वह इस तरह से गर्म होगा कि जिस तरह से कढ़ाई के अन्दर तेल उनटता है, इस तरह से पानी उनटेगा. सो देखो भाई, दुनियाँ को भुलाने के वास्ते यह कैसी बातें पहले से चलाकर जाहिर की हैं कि सूरज तपेगा, सो यह बात

सैस किरण = सेकडो किरणें, उनटता = उबलता

बिलकुल खिलाफ है और हम तुम लोगों को भूल बताई है क्योंकि जब तमाम जहान के लोग इस जाल में पड़े होंगे तो हमारे पाप की पहचान नहीं कर सकेंगे, इस सबब से ऐसी - २ बातें तरह - २ की पहले से जाहिर कर दी हैं कि जिन बातों का हम तुम अपनी जबान से बिखान कर रहे हैं, सो यह बात इस तरह से नहीं है यह तो इस तरह से है कि जैसे अपने शरीर के अन्दर बीमारी के सबब से विष काँटा वगैरा निकलता है तो जहर निकलते के वक्त किस कदर दर्द होता है कि जिसकी गर्मी की वजह से कुल शरीर में तरह - २ की तकलीफें पैदा हो जाती हैं और मगज भी जलने लगता है, जब उसका ईलाज किया जाता है और कोई दवा इत्तफाक से मुआफिक आ जाती है तो फौरन तबियत को आराम हो जाता है, मगर बलराजा के बाद से इन सौदागर महाजनान ने इन्द्रजाल के पाप से जमीन को बीमार करके ऐसा कमजोर कर दिया है कि चरबी तक गल गयी है. सो ऐसे - २ रोग तो जमीन माता को जाहिर

विष कांटा = जहरीला कांटा

ही है कि जिनको सब जहान के लोग अपनी – २ आँखों से देख रहे हैं कि जहाँ पर ज्वालामुखी पहाड़ है उस पर्वत में आग लगी हुई रहती है और जो कि दूसरे पहाड़ हैं वो जमीन माता के शरीर के हाड़ हैं, सो इसी तरह से ज्वालामुखी पहाड़ भी जमीनमाता के शरीर की हाड़ हैं और जो कि ज्वालामुखी पहाड़ में आग लगी रहती है वह जादू चाले का रोग है जिसको हिन्दू – मुसलमान, अंग्रेज वगैरा देख रहे हैं और सुनते भी हैं, सो यह बात इस तरह से है कि जब किसी के पैर में कीड़ीनगरा हो जाता है और कीड़ीनगरे के सबब से उसके शरीर का हाड़ – मांस वगैरा गल करके गिरने लगता है तो उसके शरीर में गर्मी के सबब से कैसी – कैसी जलन पड़ने लगती है? तो इसी तरह से जमीन माता के शरीर में जादू चाले का रोग है जिससे जमीन माता बहुत दुःख पा रही है, क्योंकि जमीन माता भी जीवता जीव हैं और फिर कहीं – कहीं पर तपते कुण्ड बनाये हैं सो वोह भी जादूचाले का रोग है, सो जिस तरह से कि लहू का

राध बनता है तो फिर उस राध से कैसा भारी दुःख और दर्द और जलन हो जाती है और इस तरह से इन सौदागर - महाजनान ने कई - २ तरह के रोग राक्षस विद्या के पाप से जमीन माता को बलराजा के बाद से शरद - गरम का रोग करते हैं, परन्तु संसार के लोग अभी तक परचों के भरोसे भूले हुये हैं. हालांकि ऐसे - २ भारी रोग हैं कि जिनका कुछ हिसाब भी नहीं हो सकता है, बलके रत्नाकर सागर को भी देखिये कि उसको कैसा भारी रोग किया है कि जो तमाम जल समुद्र का जल खारा जहर कर दिया है और दुनियाँ के भुलाने के वास्ते यह कैसा जाल चलाया है कि समुद्र में जो जल खारा हो गया है वह रामचंद्रजी महाराज के श्राप से हुआ है. सो देखो भाई, किया तो इन सौदागर महाजनान ने है और नाम रामचंद्रजी महाराज का बदनाम करते हैं कि उन्होंने किया है, यह बात बिलकुल खिलाफ है क्योंकि जल तो बड़ा है ओर 'तीरनतारन' है और रामचंद्रजी की पैदायश तो इसी तरह से है कि

जिस तरह से हम और तुम और सब जहान के लोग पैदा हुए हैं, इसी तरह से जल की पैदाइस रामचंद्रजी भी हैं और जल तो दीनदयाल है और जगत को तारने वाला है और कुल जल की ही माया है; क्योंकि जल को श्राप नहीं लगता है, परन्तु जल के खारा होने का यह सबब है कि सौदागर महाजनान जमीनमाता के नाम का राक्षसी पाप कराते हैं जिससे जमीन माता के शरीर का हाजमा बिगड़ गया है, इससे जल खारा हो गया है और जिसको कि तुम जहान के लोग रत्नाकर सागर और समुद्र - २ कहते हो वह जमीनमाता की ओझड़ी है और जिनको कि नदियाँ बोलते हैं वोह जमीनमाता के शरीर की आंतड़ियाँ हैं और जो कि छोटे - बड़े नाले दिखाई देते हैं वोह जमीन माता के शरीर की नाड़े हैं, जिस तरह से अपने शरीर में जिस कदर चीजें याने नाड़े वगैरह हैं इसी तरह से जमीनमाता के शरीर में भी कुल चीजें नाड़े वगैरह हैं और जब

कि हम तुम लोग पानी पीते हैं तो आतों और नाड़ों के अन्दर होकर ओझड़ी में पहुँचता है; इसी तरह से इस बात को भी समझना चाहिये कि जब मेह बरसता है तब जमीन माता पानी पीती है, तब वोह बरसात का पानी नदियों के रास्ते होकर रत्नागर सागर में पहुँचता है, सो सब दुनियाँ देखती है कि रत्नागर सागर का जल खारा किया है और बलराजा के बाद से ही इन बनियों ने इन्द्रजाल का पाप चलाया है जिससे रत्नागर सागर का जल खारा जहर हो गया है, जिसकी खास वजह यह है कि जब हम तुम खाना खाते हैं और हजम नहीं होता है और तब पेट में दर्द हो जाता है, तो उस वक्त में कैसी सख्ती उठानी पड़ती है और मारे तकलीफ के कुछ नहीं सुहाता है तो उसी तरह से जमीन का भी हाजमा बिगड़ गया है जिससे रत्नाकर सागर का जल खारा हो गया है और सिवाय इसके और किसी - २ के शरीर में बीमारी के सबब से ऐसा भी हो जाता है कि जो खाना बिलकुल हजम नहीं

होता है, बल्के खाना पेट में फूल जाता है तो फिर उसके पेट में किस बला का दर्द होता है कि जो बयान नहीं किया जाता है; सो वोह भी इन्द्रजाल के पाप से होता है और यह सौदागर महाजन इन्द्रजाल के पाप से सर्द व गर्म का भी रोग कर देते हैं जब रत्नाकर सागर दिन भर और रात भर में दो तीन मर्तबा चढ़ाई करता है तो भी दुनियाँ के लोग नहीं समझते हैं कि यह जमीन माता को आफरे की बीमारी का रोग किया है और पहले जमाने के आदमी देवता स्वरूपी थे कि जिनकी अकल को रावण ने राक्षस विद्या के पाप से कैद कर दी थी, इससे दुनियाँ स्वर्ग को भूल गई थी और रावण ने तो स्वर्ग का राज ही ले लिया था, क्योंकि रावण स्वर्ग में ही रहता था. सो सबूत वेद व पुराणों में लिखा है कि रावण ने स्वर्ग का राज ले लिया था, परन्तु स्वर्ग और नर्क तो यह जमीन माता ही है जो कि जो कुल जहान के लोगों को पालने वाली है, मगर रावण ने तो जमीनमाता की पहचानअपने राक्षसी पाप से दुनियाँ को

भुलाई थी, क्योंकि रावण जमीन माता को हर तरह का रोग कराता था और दुनियाँ को नहीं मालूम होने देता था और रावण के राक्षसी पाप को ही दुनियाँ स्वर्ग जानती थी और जमीन की पहचान बिलकुल भुला दी थी, क्योंकि रावण ने चौरासी लाख कुण्डियाँ राध लहू की बनाई थीं, उसको स्वर्ग जानते थे और जमीन की पहचान बिलकुल भुला दी थी कि जो रावण जमीन माता को राक्षस विद्या के जुल्म से फाड़ भी देता था तो दुनियाँ यह नहीं जानती थी कि जमीन माता रावण के राक्षसी पाप से फटती है बल्कि यह जानते थे कि परमेश्वर की कुदरत है और यह ख्याल नहीं करते थे कि यह जमीन जो फटती है यह राक्षसी पाप के जादू से फटती है, इससे जमीन माता काँपती है और इसी वजह से जमीन माता के शरीर में दर्द होता है, लेकिन जमीन के शरीर की पहचान तो दुनियाँ के लोगों को इस गरज से भुला दी थी कि जो जमीनमाता को तरह - २ का रोग करूँगा तो

जहान के लोगों को मेरा राक्षसी पाप का करना मालूम नहीं होगा, तो सब जहान को गारत करके अपना राज करूँगा और जो मैं दुनियाँ के नाम का पाप न करूँगा तो दुनियाँ को मेरे राक्षसी पाप की खबर पड़ जावेगी तो मेरी औलाद को ही मार देंगे. इससे रावण ने राक्षस विद्या का पाप चला करके संसार के लोगों की अक्ल को पहले से खराब कर दी थी, इससे जमीन की पहचान संसार के लोगों को बिलकुल नहीं थी, सिर्फ जमीन की पहचान रावण की ही औलाद जानती थी, सो अगले जमाने के लोग वेद किताबो में और पुराणों में इन बातों को लिख गये हैं क्योंकि जमीन माता की पहचान तमाम दुनियाँ को रावण ने भुला दी थी, सो जमीन को तो जिस तरह से हम और तुम जानते हैं उसी तरह से वोह भी जानते थे, परन्तु राक्षस विद्या के पाप से जमीनमाता को रोग कराता था, जिसकी मालूम तक नहीं पड़ी थी. अगरचे दुनियाँ को खबर पड़ जाती तो दुनियाँ रावण की औलाद की औद को ही

निकाल देती, क्योंकि जमीन के सहारे तो कुल जहान पलता है, क्योंकि जमीन माता का शरीर तो एक हैं. सो भाई मेरे हो, जब के जमीन के शरीर में दर्द होगा तो उस वक्त तमाम सृष्टि कहाँ रहेगी, ऐसा ख्याल करके संसार ने ऐक दिल होके रावण की औलाद को ही मार दिया, उस हालत मे राक्षस विद्या का पाप संसार से मिटा था क्योंकि जिस कदर पाप होता था, बिलकुल तजा दिया.हालांकि पहले जमाने के राजा बादशाहों को शनिचरजी महाराज ने राक्षसी पाप से वाकिफ करके कहा कि यह जो जमीन माता को तरह-२ की तकलीफें होती हैं जिसके हाल से मैं तुम सब लोगों को वाकिफ करता हूँ क्योंकि रावण राक्षस विद्या के पाप से मुझको भी दुख देता हैं और जमीन माता के भी नाम का पाप कराता हैं इससे मैं आपको वाकिफ करता हूँ कि रावण ने संसार के लोगो को स्वर्ग ही भुला दिया था और रावण जमीन को हर किसम का रोग कराता था और हवा वगैरा

बहुत चलाता था परन्तु दुनिया बिल्कुल नहीं समझती थी कि यह राक्षसी पाप है क्योंकि जब किसी आदमी को दम का रोग होता है तो फिर उसके शरीर में बिल्कुल हवा नहीं समाती जिस तरह से कि आदमी के पेट में दम की बीमारी से सांस नही समाता है, क्योंकि हवा है वोह तो दम है कि जब आदमी को दम की बीमारी हो जाती है तो बीमारी के सबब से आदमी किस कदर दुःख पाता है कि जो मरने के लायक हो जाता है तो ऐसे - २ रोग रावण राक्षस विद्या से कराता था जिससे अगले जमाने के सती लोगों को भी मालूम नही होने देता था, क्योंकि ज्यादा हवा जो चलती है वोह जमीन माता को दम का रोग है परन्तु दुनिया तो भी नही समझती थी कि जमीन माता को दम का रोग हो गया है क्योंकि दुनिया को भुला रखा था जिससे दुनिया यह नहीं समझती थी, कि जमीनमाता बीमार है या अच्छी है और हवा वगैरह जो ज्यादा चलती थी झांड दरखत वगैरह भी

टूट जाते थे और फल - फूल गिरने लगते थे, तो भी नहीं समझते थे कि जमीनमाता को जादू से रोग कर दिया है. क्योंकि दुनियाँ की बुद्धि खुद जादू के पाप से फिरी हुई थी, यह तो समझते थे कि जमीन के पेट में हम सब संसार बसते हैं परन्तु जमीनमाता के दुःख बीमारी से कोई वाकिफ नहीं था क्योंकि रावण जादू से तरह - २ के रोग कराके धान घास वगैरा का नुकसान कराता था, तो यह समझते कि नहीं मालूम कि जमीन को क्या हुआ है? और जब दुनियाँ जमीनमाता की बीमारियों को नहीं समझती थी, तो इससे कहा जाता था कि दुनियाँ स्वर्ग भूल गई थी. स्वर्ग नाम सुख व आराम का है और जमीन के सिवाय दूसरा स्वर्ग कोई नहीं है, इसी तरह से रावण जमीनमाता को दम का रोग कराता था, जिसका हाल अगले जमाने के सती लोग वेद और शास्त्र में लिख गए हैं कि हमको यह खबर नहीं थी कि 'हमारी बुद्धि जादू से कैद है या नहीं'? सो उसी तरह से इस वक्त में ऐसी ज्यादा और

जोर की हवा चलती है वह जमीनमाता को दम का रोग है, लेकिल जब की थोड़ी - २ हवा चलती है जब यह जानना कि आदमियों और जानवरों को सुख प्राप्त हुआ है, जब यह जानना कि जमीन माता सीधा साँस लेती है, और दुनियाँ यह जो कहती है 'रावण सूरज - चंद्रमा को ग्रहण कराता था, सो दुनियाँ ग्रहण - २ करती थी, परन्तु यह नहीं समझते थे कि यह जमीन माता को दर्द होता है. सो ऐसे - २ जाल राक्षस विद्या के चलाने वाले अगले सती लोगों को भी मालूम नहीं होने देते थे, सो इसका सबूत वेद और पुराणों में लिखा है कि अगले जमाने के लोग ऐसे भक्त थे कि परमेश्वर का ही भजन करते थे और बुरे कामों से बचते थे, याने उनके पास होकर के नहीं निकलते थे और अपनी चीज को अपनी जानते थे और पराई चीज को पराई जानते थे और दया - धरम में ही रहते थे, सो ऐसे -२ सती लोगों को जमीन के शरीर की पहचान भुला दी थी, सो इस जमाने में इन सौदागर महाजनान ने अपने इंद्रजाल के

पाप से सबकी अकल को खराब कर दी है जिससे भाई - २ में एका नहीं है बलके ना इत्तफाकी का हौसला बढ़ गया है, सो यह सौदागरांन का जाल है सो जिस तरह से कि दुनिया रावण के राक्षसी पाप को स्वर्ग जानती थी उसी तरह से अब बनियों के राक्षसी पाप को दुनियाँ स्वर्ग जानती है, कि जो बनियों ने रावण की तरह से चौरासी लाख कुण्डियाँ राध लहू की किसी समुद्र के दरम्यान में पाप करके संसार को गारत करने के लिए बनाई हैं. सो जिस तरह से कि तमाम दुनियाँ रावण के जाल की माला फेरती थी, उसी तरह पर अब इन बनियों के स्वर्ग की माला तमाम दुनियाँ फेर रही है, सो जिस तरह से कि रावण का राक्षसी जाल था उसी तरह पर इन सौदागरान का राक्षसी जाल है मगर रावण के जमाने में तो रावण के राक्षसी पाप को सनीचरजी महाराज ने सारे जहान में प्रघट किया था और वोह जात के तेली थे जिसको गरीब शख्स देखकर राक्षस विद्या के पाप में कैद कर दिया था,

और रावण अपने पाप की खबर नहीं पड़ने देता था मगर जबकि रावण के गुप्ती पाप की खबर पड़ी जब सनीचरजी महाराज ने तमाम राजा बादशाहों को और रैयत वगैरह को वाकिफ किया तो उन लोगों ने एक दिल होकर रावण के राक्षसी पाप को छोड़ाया, लेकिन अगले जमाने के लोग ऐसे नेक व सती थे कि उन्होंने उस बात को फौरन कबूल कर लिया और दिल में विचार करके यह कहने लगे कि अगर हम संसार के लोगों ने एक दिल हो करके इस राक्षसी पाप को ना तजाया तो रावण कुल जहान को जरूर गारत कर देगा; तब कुल जहान ने इस बात का ख्याल करके और सनीचरजी के कहने को कबूल करके रावण के राक्षसी पाप को मिटा दिया और सनीचर की मनशाये दिली को अपने सर आँखों पर रखा और यह बात अरज किया, कि हम लोगों को रावण ने अपने राक्षसी पाप से अन्धों की तरह से कर दिया था कि जो जमीन के शरीर की पहचान तक

भुला दी थी, परन्तु रावण ने सनीचर को अपने राक्षसी पाप से दुःखी किया था, जब रावण के राक्षसी पाप की खबर पड़ी अगरचे रावण ने अपने राक्षसी पाप से सनीचर को नहीं कलपाया होता तो हरगिज रावण का राक्षसी पाप नहीं मालूम होता, मगर सनीचर को कलपाया जब रावण की चोरी संसार में प्रकट हुई; तब तो प्रगट होते ही संसार ने रावण के राक्षसी पाप को छोड़ाया, गरज कि रावण की तरह से इन सौदागर महाजनान का भी राक्षसी पाप हो रहा है जिससे तमाम जहान के लोगों की अकल फिरी हुई है कि अपनी चीज को अपनी और पराई चीज को पराई नहीं जानते हैं, परन्तु इन सौदागरान ने रावण की तरह से मुझ गरीब (अनोपदास) को अपने राक्षसी पाप से कलपाया है इससे इन सौदागरान का राक्षसी पाप मालूम हुआ है, क्योंकि यह महाजन रावण की तरह से राक्षसी पाप कर रहे हैं और जिस तरह से सनीचर जात का तेली था उसी तरह से मैं जात का चाकर हूँ

सो मुझ गरीब को इन सौदागर महाजनान ने अपने राक्षसी पाप से कलपाया है और अमीर लोगों को तो मारे डरके समामुख नहीं कलपाते हैं, लेकिन यह बनिये अपने राक्षसी पाप से गारत तो सबको कर रहे हैं, परन्तु अपने राक्षसी पाप से दुखी तो बगैर जबान वालों को और गरीब आदमियों को ही करते हैं, इसलिए मैं गरीब साधु तमाम जहान के लोगों को इन बनियों के राक्षसी पाप से वाकिफ करता हूँ कि इन बनियों के अनेक तरह के छल हैं और फरेब हैं कि जैसे रावण के अनेक तरह के छल और फरेब थे, उसी तरह से इन सौदागरान के भी है, सो जिस तरह से कि रावण के वक्त में सनीचर के कहने से तमाम जहान ने एक दिल होकर रावण के राक्षसी पाप को छोड़ाया था, उसी तरह अब इन सौदागरन के राक्षसी पाप को भी तमाम जहान के लोग एक दिल होकर मुझ साध के कहने से छोड़ाओ तो इन बनियों के जाल से सबको सुख प्राप्त होवे, क्योंकि इन सौदागरान के

जाल से तमाम जहान के चौपाये व पंखेरू और मय आदमियों के तकलीफ पाते हैं, इसी तरह से जमीन माता भी इन्द्रजाल के पाप से बीमारियाँ पा रही हैं कि जिस तरह से आदमी को बीमारी होती है और वोह बीमारी के सबब से दुबला हो जाता है और चरबी गल जाती है और खून सूख जाता है, उसी तरह से जमीन माता भी राक्षस विद्या के पाप से बीमारी के सबब से दुबली हो गई हैं, क्योंकि गोस्त और चरबी वगैरा गल गई है जिसकी वजह यह है कि जमीन माता सिर्फ जल का ही आहार करती हैं सो अब जमीन माता के पेट भरने के काबिल जल नहीं बरसता है इससे दुखी हैं क्योंकि जैसे मेह बरसता है तब जमीनमाता जल को पीती हैं, जब मेवा मिष्ठान रिजक वनस्पति वगैरा अच्छी तरह से होती है, जब सब जीवाजून पलती है; इसी तरह से आदमी भी रिजक वगैरा खा - पीकर पलते हैं; मगर जमीनमाता कौन सा पाप करती है जिससे अब पहले का सा रिजक वगैरह नहीं

होता है? क्योंकि जमीन माता तो ऐसी सती है कि सिर्फ जल का ही आहार करती है, कि जमीन माता जल का आहार जब करती है कि जब जल बरसता है,सो सब जहान के लोग अपनी - २ आँखों से देखते ही हैं कुछ मेरे कहने की जरूरत ही नहीं है और यह बनिये जब कि जमीन माता के नाम का पाप कराते हैं तब जमीन माता बीमार हो जाती है, सो जिस तरह से कि आदमी बीमारी के सबब से खाने - पीने का आहार वगैरा कम करता है, सो जब कि मेह कम बरसता है तब दुनियाँ अपने मुँह से काल - २ कहती है, परन्तु यह बनिये जमीन माता के नाम का पाप कराते हैं जिससे जमीन माता बीमार हो जाती है और जिस तरह से कि मालिक ने आदमी के शरीर में गोस्त, हड्डी चरबी वगैरह बनाई है उसी तरह से जमीन माता के शरीर में गोस्त,चरबी, हड्डी वगैरा बनाई है, लेकिन ये जो पहाड़ है वोह जमीन माता के शरीर के हाड़ हैं और जो कि मिट्टी है वह जमीनमाता के शरीर का गोस्त है,

और जो कि चाँदी – सोने की खानें हैं वो जमीन के शरीर की चर्बी है, परन्तु इन सौदागर महाजनान ने बलराजा के बाद से राक्षसी पाप चलाया है और बलराजा के बाद से ही काल पड़ाने लगे हैं और जब काल पड़ता है तब जमीनमाता बीमार होती है जो बीमारी के सबब से दुबली हो गई है, जिससे जमीनमाता के शरीर की चर्बी गल गयी है जिससे जमीनमाता बिल्कुल दुबली हो गयी है और जिस तरह से कि आदमी बीमार होता है और उसके शरीर की हड्डी, गोस्त और चर्बी वगैरा बीमारी के सबब से गल जाती है तो बीमारी की वजह से ना ताकती भी हो जाती है, तो इसी तरह से अब जमीनमाता भी बीमारी के सबब से ना ताकत हो गई है और चर्बी वगैरा गल गई है और जो कि धातु की खानें सुनी जाती थीं वोह जमीन माता के शरीर की चर्बी थी, जिनको चाँदी – सोने की खानें बोलते हैं वे ना तो अंग्रेजों की विलायत में मौजूद हैं और ना दूसरी विलायतों में हैं, इसी तरह पर अब इन बनियों के

जाल की वजह से सातों – आठों विलायतों के अन्दर चाँदी – सोने की खानें नहीं हैं और जो कहीं पर हैं भी तो पहले जमाने के बराबर धन नहीं निकलता है बलके ज्यादा लागत के सबब से नुकसान उठाना पड़ता है, क्योंकि पहले जमाने में एक रुपया खर्च किया जाता तो कई रुपयों का माल निकलता था और अब एक रुपया खर्च किया जाता है तो लागत के दाम भी वसूल नहीं होते हैं सो यह वजह इंद्रजाल की है जिससे चाँदी – सोने की खानें नहीं हैं और अलोप हो गई हैं और यह सातों – आठों विलायतें इस जमीन माता के पेट में आबाद हैं परन्तु जमीन के ना ताकत होने का भी सबब है कि इन सौदागर – महाजनान का राक्षसी पाप चल रहा है जिससे चाँदी – सोने की खानें'' आकाश – पाताल'' में भी नहीं रही हैं, क्योंकि जब आदमी बीमार होता है और बीमारी के सबब से उसका कुल शरीर दुबला हो जाता है परन्तु जिसको बीमारी होती है उसके शरीर की

चर्बी गल जाती है तो फिर उसके शरीर में ताकत कहाँ से रहती है, बल्कि इस काबिल हो जाता है कि दूसरे शख्स की भी आस रखता है. सो अब इसी तरह से जमीन माता भी राक्षस विद्या के पाप से दुबली हो गई है परन्तु इन सौदागर महाजनान ने बलराजा के बाद से राक्षस विद्या का पाप चलाया है, जबसे जमीन माता के नाम का पाप कराते है सो जबकि जमीनमाता के नाम का पाप ज्यादा कराते हैं तो काल भी पड़ जाता है और ग्रहण भी पड़ जाता है, क्योंकि पाप से जमीन माता दुःख पाती है, इससे जमीन के ऊपर धान वगैरा नहीं होता है, जब दुनियाँ भूखे मरने लगती है और पहले जमाने में जमीन माता दुःख नहीं पाती थी तो मेवा मिष्ठान रिजक वनस्पति वगैरा बहुत होती थी, कि जिसकी वजह से गरीब - गुरबा जग कर लेते थे, परन्तु पहले जमाने का सा धान अब नहीं होता है और न अब पहले जमाने का सा बिकता है, जिसकी खास वजह यह है कि जमीनमाता बीमारी के सबब से पानी कम

पीती है जिससे मेवा मिष्ठान वगैरा कम होता है और जैसे कि झाड़ दरखत पहले जमाने में होते थे, वैसे अब नहीं होते हैं, क्योंकि जमीन माता अच्छी तरह से पानी नहीं पीती है इससे अब दरखत भी लम्बे और चौड़े नहीं होते हैं मगर अपने बुजुर्गों के देखने में तो रिजक और वनस्पति वगैरा इस कदर होती थी और अलावा इसके बलराजा के जमाने में तो बगैर खेती किये और बगैर बोये इस कदर धान होता था कि जिसका कुछ अंदाज नहीं हो सकता था, तो पहले जमाने के गरीब लोग वगैरा भी जगकर लेते थे तो भी कर्जदार नहीं होते थे. सो इसका सबूत वेद और पुराणों में साबित है, परन्तु इस जमाने के तो राजा - बादशाह एक रजवाड़े की रैयत को भी खाना नहीं खिला सकते हैं, सो यह हाल सब तुम अपनी - २ आँखों से देख रहे हो कि अब ऐसा जमाना आ गया है कि सिवाय खार - अेंखार के और कुछ नहीं सूझता है क्योंकि

पहले जमाने में इस कदर रिजक होता था, तो पहले जमाने में हर एक जात का आदमी जग कर लेता था तो उस जमाने के राजा बादशाह भी जग कर लेते थे तो कौन सी अचरज की बात थी? परन्तु बलराजा के बाद से इन बनियों ने इंद्रजाल का पाप चलाया है जिससे जमीन माता दुःख पा रही है और जबकि जमीनमाता पेट भरके पानी पीती थी तो रिजक भी बहुत होता था, सो इन बातों का सबूत वेद और पुराणों में लिखा है मगर हम तुम लोग इंद्रजाल के पाप से अंधों के मुआफिक हैं और अपने पेट में जो कीड़े हैं सो वह अपने पेट में कौन सी खेती करते हैं परंतु जब हम तुम लोग खाना खाते हैं तब वह भी अपना पेट भर लेते हैं; इसी तरह से हम तुम और तमाम जीवाजून जमीनमाता के पेट में कीड़ों की तरह से हैं; लेकिन जमीन माता इस कदर बड़ी हैं कि जिसका कुछ अंदाज नहीं हो सकता है, फिर इसके पेट में किस बात का टोटा था, मगर

बलराजा के बाद से इन सौदागर महाजनान ने इन्द्रजाल का पाप करना शुरू किया है जिससे दुनियाँ का बुरा होता है, लेकिन रावण के पहले इन्द्रजाल का पाप नहीं होता था और न पहले कोई राक्षसी पाप को समझता था, परन्तु राक्षसी पाप रावण के वक्त से ही शुरू हुआ है क्योंकि रावण ने दो चार मर्तबा ग्रहण डालकर अंदाज देखा था, परन्तु यह बनिये लोग अपने राक्षसी पाप से साल - ब - साल ग्रहण डालते हैं कि जो टीपणों के अन्दर हमेशा ग्रहण पड़ने का हाल लिखा हुआ आता है, सो यह टीपणें बनियों के चलाये हुए हैं कि जिस तरह से रावण ने चलाये थे, सो यह हाल सब संसार के लोग अपनी - २ आँखों से देख रहे हैं परन्तु ग्रहण पड़ने से जमीनमाता निहायत दर्जे का दुःख पाती है इससे कोई चीज जमीनमाता के ऊपर उम्दा तौर पर नहीं होती है, क्योंकि पहले जमाने में आदमी खेती बाड़ी वगैरा नहीं करते थे तो बगैर खेती के किये हुए के ही धान वगैरा पैदा

होता था, परन्तु खेती – बाड़ी का पाप भी बलराजा के बाद से ही हुआ है कि जिस दिन से इन्होंने काल पड़ाना शुरू किया है; अगरचे जमीनमाता पेट भर के पानी पी लेवे और सौदागर महाजनान को खबर पड़ जावे तो यह बनिये जमीनमाता को बदहजमी का रोग जादू से करके फल – फूल वगैरा गला देते हैं जिसकी वजह से फिर चीजें वगैरा होवे ही नहीं, क्योंकि कुल जहान की अकल इन सौदागर महाजनान ने अपने राक्षसी पाप से खराब कर दी है, चाहे बारिश अच्छी तरह से नहीं हुई होवे तो भी दुनिया के लोग यह कहने लगते हैं कि बारिश बहुत हुई है, इससे फल फूल वगैरा गल गये हैं और इन्द्रजाल के पाप से जानवरों को भी यह बनिये ज्यादा सजा देते हैं और चौरासी लाख जीवाजून को हद से ज्यादा सजा देते हैं जिससे बुरा होता है, क्योंकि यह बनिये जादू से चौरासी लाख जीवाजून को मारते हैं जिसका पाप बहुत होता है और खेती बाड़ी में तो जीवड़ों को थोड़ा कलपाते हैं और इन्द्रजाल

के पाप में जीवड़ों को ज्यादा दुःख देते हैं, इससे ज्यादा पाप का नाम जादू कहते हैं, इससे इन बनियों का नाम 'जादू खोरा' रख दिया है क्योंकि यह जादूखोरा जमीन के नाम का पाप कराके जमीन में भी आग लगा देते हैं, जिससे करोड़ों जीव जल जाते हैं जिससे बुरा भी जल्दी होता है और यह जादूखोरा लोग संसार के लोगों को बहका करके ऐसा सुझाते हैं कि तुम उल्लू जानवर को मारके और उसकी दवा बनाकर जिसकी आँख में डालोगे या दूसरे के औरत के कपड़े में लगा दोगे तो वह तुम्हारे कहने में हो जावेगी. सो भाई मेरे हो,जादू कोई चीज नहीं है, यह तो राक्षसी विद्या का पाप चलाया है जिसका कुछ अन्दाज नहीं हो सकता है, अगरचे दुनियाँ इस पाप का हिसाब करे तो इसकी गिनती भी नहीं हो सकती है क्योंकि राक्षसी पाप बहुत हो रहा है सो इस बात को जरूर समझना चाहिए कि इन बनियों ने किस तरह के पाप चलाये हैं, कि जो कोई भी साहब ख्याल नहीं करते कि इन

बनियों ने राक्षसी पाप से सबकी अकल खराब कर दी है जिससे दया धरम ही नहीं जानते हैं बलके संसार के ही हाथों से बहुत पाप करा रहे हैं और जो कि देवता हुए हैं सो उन्होंने मालिक की भक्ति की है, इससे उनकी समाधि का पूजना तो दुरस्त है परन्तु समाधि को तो नहीं पूजते हैं और उनकी समाधियों पर उनके नाम से अपने हाथों से जानवरों को मारते हैं, सो धरम की पूजन तो नहीं करते हैं और जीवड़ों को मारने लगते हैं, सो संसार को तो कुछ दोष नहीं है क्योंकि उनकी बुद्धि तो जादू से कैद है इससे दया धरम भूल गये हैं; सो जिन – २ रजवाड़ों में देवताओं के ऊपर जीव मराने शुरू किये हैं और जब संसार में भूल पड़ जावेगी जब तो सब दुनियाँ को जादू से बीमार करके व देवताओं को सुझा – २ के जितने संसार में हिंदू – मुसलमान और अंग्रेज वगैरा के कुल में भक्त लोग हुए हैं, सो देवता स्वरूपी लोग भक्त ही होते है, चुनांचे सबकी समाधियों पर जीव मराना शुरू करा देंगे. इसी तरह से जैसे कि अब

जिन – २ रजवाड़ों में देवताओं पर जीव मराते हैं और संसार को जादू से खबर भी नहीं पड़ने देंगे, सो यह बनिये पहले तो अपने राक्षसी पाप से संसार के लोगों को बीमार कर देते हैं और फिर ऐसा सुझा देते हैं कि देवताओं ने बीमार किया है, सो देवता जानवर को चाहता है सो देवता के नाम का देवता के ऊपर बकरा चढ़ाओ तब तुमको आराम होगा, सो वह बीमार आदमी अपनी बीमारी के सबब से और डरकी वजह से अपनी जिन्दगी के खातिर चढ़ा देते हैं, सो वो तो बनियों के राक्षसी पाप से भूले हुए हैं जिससे जैसा कि सुझाते हैं वैसा ही करने को लग जाते हैं सो बीमार आदमी के नाम का पाप करना छोड़ देते हैं जब वह अच्छा हो जाता है सो इन लोगों की बुध्दि इन बनियों नें अपने राक्षसी पाप से ऐसी खराब कर दी है जिससे ऐसा ही सूझता है कि जो भक्त होता है उसको भी ऐसा ही राक्षसी पाप से करते हैं कि जिससे उनको भी खबर नहीं होने देते हैं कि पाप का कराना बुरा या भला है सो ऐ संसार के लोगों,

पाप का कराना तो बुरा ही है सो किसी जानवर को या दूसरे जीवाजून को मत सताओ बलके दूसरे शख्स को मारते हुए देखो तो मत मारने दो; जिस तरह से कि जानवरों और दूसरी जीवाजून की जान है उसी तरह से सबके शरीर में भी जान है, सो जीवाजून की जान तुम्हारी कोशिश करने से बच सके तो बचाओ क्योंकि नेकी का दर्जा है वह अच्छा ही है, मगर यह बनिये अपने राक्षसी पाप से साधू – फकीरों को भी ऐसा ही सुझा देते हैं कि समाधि के ऊपर बकरा चढ़ाना दुरस्त बात है, अगरचे वो दया भी करें तो राक्षसी पाप के जादू से उसको दया भी नहीं करने देते हैं तो उसको दया भी नहीं आवे और वैसा ही कहने को लग जावे और जब यह बनिये राक्षसी पाप से साधु – फकीर को बीमार कर देते हैं और उनके घट में देवताओं का छल सुझा देते हैं तो वह भी जानवरों को अपने हाथ से मारने को लग जाते हैं और जब अच्छे हो जाते हैं तो फिर परचों के भरोसे यह कहने लग जाते हैं कि देवी

देवता सच्चा है और मैं झूठा हूँ और यह नहीं समझते है कि यह रावण के मुवाफिक राक्षसी पाप का करतब है और यह महाजन लोग पहले तो उसके नाम का पाप चौरासी लाख कुण्डियों पर कराके उसको बीमार कर देते हैं और उसके घरवालों को या खुद उस बीमार को जादू से ऐसा सुझा देते हैं कि देवता ने बीमार कर दिया है सो देवता जीव माँगता है जादू से ऐसी बुध्दि फेर देते हैं और जब यह समझते हैं कि अब तो बीमार के घर जीव याने बकरा – पाड़ा वगैरा देवता के नाम से मार दिया गया है, जब उस बीमार के नाम का पाप कराना उन चौरासी लाख कुण्डियों पर से छोड़ देते हैं तो फिर वह बीमार अच्छा हो जाता है; इससे देवताओं के परचों को सच्चा जानते हैं मगर उनको यह खबर नहीं है कि रावण की तरह से इन बनियों ने भी राक्षस विद्या का पाप चलाया है, अगरचे इन बनियों के राक्षसी पाप की खबर दुनियाँ को पड़ जाती तो दुनियाँ फौरन इनके जाल को छुड़ा देती, परन्तु संसार को अब तक इनके जाल की

खबर नहीं है इससे दुनियाँ के लोग अपने हाथों से करोड़ों जानवरों को देवताओं के ऊपर मारते हैं और अलावा इसके संसार के अंदर हैजा की बीमारी में करोड़ों शख्सों को मार देते हैं और राजा - बादशाहों के हाथों से करोड़ों जानवरों को मरवा देते हैं जब करोड़ों पाड़ा - बकरों के चमड़ों की चीरे करवा - २ के दरखतों की मुलायम डालियों में बाँध - २ के लटका देते हैं और जो संसार उनके चमड़ों की चीरे ना करे तो बेचारे संसार को जादू से बीमार करके ऐसा सुझा देते हैं कि तुम खालों को चीरकर झाड़ो और दरखतों के ऊपर खाल की चीरे बाँधो, जब बाँधते हैं और जो नहीं बाँधे तो उनको यह सुझाते हैं कि देवता ने बकरा - पाड़ा नहीं माना इससे उसको जादू से बीमार ही रखते हैं, सो जबकि वह चमड़े की चीरें सूख जाती हैं तब दरख्तों को तकलीफ होती है, क्योंकि जिस तरह से अपने शरीर में जान है उसी तरह से इन दरख्तों के अंदर भी जान है जिससे दरखत ''सरसब्ज''

रहते हैं सो यह दरख्त तो ऐसे सती हैं कि अपने को फल – फूल खिलाते हैं और आप धूप में खड़े रहते हैं और दूसरे पर छाया करते हैं और उनकी लकड़ियों को अपन लोग जलाने के काम लाते हैं और जो कि वनस्पति है वह तमाम जहान के लिए रिजक है क्योंकि तमाम इससे परवरिश पाते हैं सो सबको ही मालूम होता है और मैं जो आप लोगों को बार – बार लिखकर के दर्शाता हूँ सो सिर्फ इस गरज से दर्शाता हूँ कि तुम संसार के लोगों की बुध्दि इन बनियों के राक्षसी पाप से भ्रष्ट हो रही है, इससे दूसरे जीवों की पहचान तो क्या तुमको अपने शरीर की ही पहचान नहीं रही है, क्योंकि इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से वनस्पति सी चीजों को ही भूत पलीत बना रखा है और दुनियाँ के हाँथों से उन दरखतों के अंदर कीलें तक गड़वा देते हैं. सो यह दुनियाँ की भूल है क्योंकि दरखतों के अंदर न तो भूत है और न पलीत, खवीस वगैरा है, यह तो सिर्फ सौदागर महाजनान की

सरसब्ज = हरे भरे, सुखी

जालसाजी है क्योंकि अपने लोगों की बुध्दि भ्रष्ट कर दी है इससे ऐसा ही सूझता है, बल्कि यहाँ तक तो इनका जाल है कि नींद के अंदर सपना वगैरा होता है जैसे कि नींद में मरे हुए का सपना सूझ जाता है, उसी तरह जादू से मरे हुए का जागता सुपना किसी - २ को कर देते हैं और फिर उसी के घट में ऐसा सुझा देते हैं कि मेरे को भूत मिला है और देखा है और जिसको सपना कराते हैं फिर उसको जादू से बीमार कर देते हैं और बीमार करके उसको यह सुझा देते हैं कि मेरे को फलाने दरख्त के नीचे या और किसी जगह भूत लग गया है जिससे मैं बीमार हो गया हूँ और साधु - फकीर संसार में से भी किसी को ऐसा ही सुझा देते हैं कि इसको भूत लग गया है, सो मैं इस भूत को झाड़ा देकर निकाल सकता हूँ, और वह झाड़ा देने वाला बकरा वगैरा मंगावे और यह कहे कि भूत - खबीस बकरा माँगता है, नहीं तो भूत ऐसा जबरदस्त है कि इस बीमार का जीव ले जावेगा; इस बीमार

के ऊपर बकरा फेर के मारो, सो इस बकरे का जीव तो भूत ले जावेगा और यह बीमार बच जावेगा, तो फिर उस बकरे को मार देते हैं और वह झाड़ा देनेवाला कहता है कि मैं भूत को झाड़ में कील दूँगा तो भूत फिर इसको नहीं लगेगा. जब उस झाड़ा देने वाले को जादू से ऐसा सुझा देते हैं कि वह यह कहता है कि मैने भूत को पकड़ लिया है और झाड़ में कीलूँगा और जिन - २ रजवाड़ों में यह भूत - पलीत का पाप चलाया है वहाँ हजारों दरख्तों में लोहे की कीलें गड़वा देते हैं और न कोई भूत है और न पलीत - खबीस, डाकन वगैरा हैं, फक्त यह तो बनियों का राक्षसी पाप है और दरख्तों में जो कीलें गड़वाते हैं सो यह दरख्त तो बेचारे बड़े सती हैं मगर कीलें गाड़ - २ कर नाहक तकलीफें देते हैं और बकरे वगैरा जो देवता और भूतों का बहाना करके हजारों जीवड़ों को मारते हैं तो नाहक बेचारों को संसार के हाथों से जीव मरा करके तकलीफें देते हैं और जादू से संसार को बीमार कर - २

भूतों का और देवताओं का सुझा-२ के करोंड़ों जीवड़ों को देवताओं और भूतों और पलीतों के नाम से मरा देते हैं. सो तुम संसार के लोगों तलाश करके देखलो कि जिन-२ रजवाडों में ऐसा पाप चला है सो संसार को तो कुछ दोष नहीं है, क्योंकि उन बेचारों को तो जादू से बीमार करके भूत पलीत और देवताओं का सुझा देते हैं तो लोग डर के ऐसे काम करने लग जाते हैं सो संसार को तो मालूम नहीं है कि यह जादू है वोह तो भूत-पलीत ही समझते हैं क्योंकि भूतों और देवताओं के भरोसे भूले हैं और जिसको जादू से मारना चाहे तो फिर वो चाहे कितने ही जीव मारे उसको कच्ची उमर में मार ही देते हैं भूत-पलीत और देवताओं का बहाना करके, जो तुम संसार के लोगों तलाश करो तो यह पाप तो इन महाजनान का प्रगट है और संसार के हाथों से बुद्धि फेर के पाप कराते हैं सो इन्होंने संसार में बुरा होने के वास्ते अनबोलों के ऊपर ऐसा जुलम चलाया है, सो ऐसे -२ पाप देखते जाओ और छोड़ाते जाओ

और इनका गुप्ती पाप छोड़ाओगे जब ऐसे फेल दुनिया में नहीं होंगे, देखते पाप को जो भूत पलीत और देवताओं वगैरा के नाम से जीव मारते हैं उसको तो हर कोई छोड़ा देगा, परन्तु इनका गुप्ती पाप छूटना चाहिए जब दुनिया से यह फेल छूटेंगे; जब तक गुप्ती पाप नहीं छूटेगा तब तक संसार को भूत-पलीत का बहाना करके जादू से बीमार करते रहेंगे और संसार भूल करके डर की वजह से देवताओं और भूतों और पलीतों के नाम से अनबोलों को मारते रहेंगे और भाई मेरे हो गुप्ती पाप वोह है कि जहाँ इन महाजनान ने चौरासी लाख कुण्डिया राध और लहू की बनाई हैं और तुम सब संसार कहते हो कि वहाँ पर स्वर्ग और नरक है और नारगी डालते हैं, सो वहाँ पर तमाम पाप बनियों के कुल के हाथों से होता हैं. सो वो तो ऐसा पाप है कि जैसा रावण ने दरियाओं पार अलोप पाप चलाया था, उसी तरह से इन महाजनान ने गुप्ती पाप चलाया है सो वो तो

महाजनान की जात को ही मालूम है और वहाँ पर इनकी जात के सेठ महाजन ही जाते हैं और उसी गुप्ती पाप से देवताओं और भूत और पलीतों का दुनियाँ में फैल चलाया है और उसी फैल से देवताओं और भूतों व पलीतों का बहाना कर-२ के करोड़ों जीव मराते हैं उसका सारा मतलब यह है कि ना तो भूत है और ना कोई पलीत है, यह तो फक्त इन महाजनान का राक्षसी पाप है और राक्षसी पाप से ही नींद के अन्दर और जागते में सपने करा देते हैं और कुछ का कुछ सुझाते हैं. सो यह सपने राक्षसी पाप से ही होते हैं और इसी तरह से रात-दिन में जागते सपने करा देते हैं, सो जिस तरह से रावण राक्षसी विद्या के पाप से कई-२ किसम के सपने सुझाता था उसी तरह से अब यह बनिये भी कई किसम के सपने सुझा देते हैं कि जो मरे हुए मुरदें सपने में नजर आते हैं सो भाई मेरे हो, मरे हुए तो नहीं आते है यह तो राक्षसी पाप से ऐसा सुझा देते हैं कि जिस तरह से

बाजीगर लोग ठीकरी का रूपया पैसा करके दिखा देते हैं, ऐसे यह बनिये भी राक्षसी पाप से भूत पलीत वगैरा सुझा देते हैं, परन्तु भूत पलीत वगैरा जो सुझाते हैं वो सब जाल है और कुछ भी नहीं है, क्योंकि "पाप को ताकत है कि जो चाहे सो ही कर सकता है" और ऐसा बुरा गुप्ती पाप कराते हैं कि जिसके नाम का गुप्ती पाप करावे तो उसीका बुरा हो जावे और सब विलायतों के नाम का पाप करावे तो सब विलायतों का बुरा हो जावे. सो पाप जो संसार के नाम का कराते है सो पाप तो लग जाता है मगर करने वाले बेईमान काफिर हैं क्योंकि बेचारों अनबोलों को कलपाते हैं और दुनिया में जादू-२ जो करते हैं और इन्द्रजाल जो कहते हैं और राक्षस विद्या और काफिर विद्या कहते हैं सो पाप तो एक का एक है परंतु दुनिया के ना समझने के वास्ते नाम अलग-२ लिख दिये हैं, सो यह चतुराई दुनियाँ के ना समझने के वास्ते की है मगर दुनिया यह ख्याल नहीं करती है कि पहले रावण,

हरनाकुश, कंश, कारून वगैरा ने राक्षस विद्या का पाप चलाया था जब वोह भी इन बनियों की तरह से कुछ का कुछ सुझाते थे सो यह बात दुनिया में प्रगट है कि यह बातें राक्षसी विद्या से सुझाते थे लेकिन यह बनिये तो रावण वगैरा से भी ज्यादा कुछ का कुछ सुझाते हैं सो इस बात का ख्याल किसी को भी नहीं होने देते हैं, पेशतर मैं भी संसार की तरह से भूला हुआ था क्योंकि मुझको राक्षसी पाप से जब तक कि इन बनियों ने दुखी नहीं किया था, जब तक मेरे को कुछ खबर नहीं थी और अब तो जो कुछ मेरे ऊपर हो चुकी है वोह बीती हुई लिखता हूँ और मुझको तो इन सौदागरान ने तरह२ की जालसाजियाँ दिखलाई हैं, इससे मैं बार-२ लिखकर तुम भूले हुए शख्सों को खबरदार करता हूँ क्योंकि इन बनियों ने फक्त दुनिया के नाम का पाप ही चलाया है और पाप से ही बुरा करते हैं सो मुझको इनका पाप मालूम हो गया है जिससे में आप लोगों को वाकिफ करता हूँ

और लिखता हूँ और तुम सब संसार अपनी-२ आँखों से देख रहे हो कि कैसा जुलम चलाया है ? सो जिन-२ रजवाडों में ऐसा पाप चलाया है सो सब संसार दरियाफत करके देखलो कि इन बनियों ने बुढ्ढे आदमियों और औरतों पर कैसा जुलम किया है कि उन्होंको डाकी-डाकन बनाये हैं जिसका हाल तुम संसार के लोगों जरा दिल लगाकर सुनो कि जो छोटा गाँव है उसमें सौ पचास डाकनियाँ बनाई हैं और जो कि उससे बड़ा शहर है वहाँ पर बहुत-सी डाकनियाँ बनाई हैं, परन्तु जो कि बुढ्ढे मरद -औरतें हैं तो वो तीरथ समान हैं सो वेद और पुराणों में भी लिखा है और दुनिया में भी जानते हैं कि जो बुजर्ग होता है वोह तीरथ के मानिन्द है, मगर इनके सर बदनामी दे दी है परन्तु यह बनिये ऐसे हैं कि तीरथ स्वरूपी आदमियों को संसार के हाथों से मरवा देते हैं और तरह-२ की बीमारियाँ भी राक्षस विद्या के पाप से करते हैं और संसार के दिल में डाकी-डाकनियों

मानिन्द = बराबर, तरह.

का सुझाते हैं और जो कि ड़ाकी-ड़ाकनियाँ बनाई हैं उनके दिल में भी ऐसा सुझा देते हैं, जिससे वोह भी ऐसा कहने को लग जाते हैं कि हम ड़ाकन -डाकी ही हैं, सो इस वजह से ऐसी-२ बातें कहने को लग जाते हैं कि उनकी अकल इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से ऐसी खराब कर दी है, मगर यह बात काबिल ख्याल करने के है कि एक शख्स बहुत फासले पर या कुछ नजदीक बैठा है तो उसका दिल वो किस तरह से खा सकता है? क्योंकि जब खाना सामने रखा हुआ है तो बगैर हाथ उठाये हुए के किस तरहसे खा सकता है? परन्तु खाना तो उसी हालत में खाया जावेगा कि जब हाथ उठाकर मुँह में 'लुकमा' देगा, मगर दिल के चलाने से खाना नहीं खा सकता है, सो यह बनिये तो पाप कराना समझते हैं कि जो गरीब आदमियों को दुखी करेंगे तो आपस में लड़कर खुद ही मर जावेंगे. सो इन बनियों ने ऐसा राक्षसी पाप चलाया है सो यह पाप रिजक खाने के वास्ते चलाया है कि इस

लुकमा = निवाला

राक्षसी पाप से कुल संसार का धन अपने काबू में कर लेवेंगे, इस ख्याल से इन्द्रजाल का पाप चलाया है सो इन बनियों ने धन कुल जहान का काबू में कर लिया है, सो संसार के लोगों को यह बनिये अपने राक्षसी पाप से बीमार कर देते हैं और फिर उनके मुँह से यह कहलाते हैं कि मुझको डाकन लग गई है, सो जबकि उस बीमारी से मर जावे तो फिर कहने को लगते हैं कि डाकनियों ने खा लिया है और अब तो जिस दिन से अंग्रेज हिन्दुस्तान में आये हैं जब से डाकनियों के बहाने से जरा कम मारते हैं और डाकनियों का जलाना-मारना भी थोड़ा बंद किया है, मगर डाकनियों के बहाने से नहीं मारे तो और ही संसार के नाम का जादू से तरह-२ का पाप कराके और बीमार कर-२ के कच्ची उमर में मारते हैं और किसी-२ को चोरी छाने जादू से बीमार करके अब भी डाकनियों का सुझाते हैं तो अब अंग्रेजों से डरते हुये गरीब आदमी चोरी-छाने अब भी डाकनियों की बातें करते हैं और

चौरी-छाने इस वास्ते करते हैं कि हमारा जाल मालूम हो जावेगा और अंग्रेज हमारा जाल समझ जावेंगे तो हमारा जाल छोड़ा देंगे जिससे डाकनियों का जलाना मारना अब बंद किया है. और रावण ने दुनिया के पीछे कई ग्रह लगाये थे कि जिससे कई गरीबों को संसार के हाथों से संसार में बुरा होने के वास्ते दुख दिलाता था, उसी तरह से यह महाजन भी बेचारे गरीब बुढ्ढे आदमियों को और बुढ्ढी औरतों को संसार में बुरा होने के वास्ते ड्राकन ड्राकी बनाकर मराते हैं उसी तरह से यह भी वैसे ही गरीब हैं, सो संसार के लोग अच्छी तरह से इस बात को सोचो कि रावण जो राक्षसी पाप से बीमार कर देता था और किसी-२ को मार भी देता था सो जबकि दुनिया को खबर पड़ी जब दुनिया ने रावण को मय उसके कुल के मार दिया, सो भाई जबकि राक्षस विद्या से मेह और मौत को सहारे कर लेते हैं तो फिर राक्षसी पाप के चलाने वाले जो चाहे वहीं कर सकते हैं, सो जब कि संसार इसके तजाने

का बन्दोबस्त ना करे जब तो जीने का भी धर्म नहीं है, क्योंकि मालिक ने तो सब ही को पूरी उमर दी है सो कदीम और ठेट से बुजुर्ग याने बुढ्ढे जईफ होकर मरते हैं परन्तु इन बनियों ने रावण की तरह से संसार के लोगों की मौत को काबू में कर लिया है लेकिन "पहले जमाने में बाप से पहले बेटा नहीं मरता था" और अब बाप से पहले बेटा मर जाता है, सो अब और पहले क्या मालिक और था! जो अब ऐसा हो जाता है और पहले ऐसा नहीं होता था परन्तु मालिक तो वोह का वहीं है सो ऐसे -२ पाप तो इन बनियों ने जाहिर चलाये हैं जिस को तमाम जहान के लोग अपनी आँखों से देख रहे हैं और अगले जमाने के लोग तो ऐसे सती हुए हैं कि वो सिवाय नेकी के दूसरी बात ही नहीं जानते थे जिनकी तारीफें यह हैं कि वो जनम से ही मालिक की भक्ति करते थे जिससे वो सख्स देवता स्वरूपी कहलाये हैं, परन्तु इस जमाने के लोग उन देवता स्वरूपियों के नाम से

उनकी समाधियों पर बकरा-पाड़ा वगैरा चढ़ाते हैं, ऐसे-ऐसे पाप से अगले-२ लोगों का नाम भी डुबोते हैं सो यह पाप नही करना चाहिए, अगरचे उन्होंकी समाधियों को मानो तो धरम है सो धरम पुण्य करो या उनके नाम से मीठे भोजन करके खिलाओ या अपने बाल -बच्चों को खिलाओ, इसी तरह अगर तुम्हारे कुल में कोई भक्त हुआ होवे तो तुम लोग उनके नाम से धरम-पुण्य करो या ब्राह्मण साधु वगैरा को खिलाओ या अपने घर के बच्चों को भक्त लोगों के नाम से खिलाओ और जानवरों को मत सताओ, क्योंकि इन बनियों ने तुम्हारी अकल को अपने राक्षसी पाप से खराब कर दी है इससे तुम लोग पाप करते हो कि जो भक्तों के नाम से जानवरों को मारते हो, जिससे दुनिया की अकल दिन-रात खराब होती जाती है मगर इन बनियों ने तो अपना मतलब समझकर यह राक्षसी पाप चलाया है और इससे ही संसार के लोगों की अकल भ्रष्ट कर दी है जिससे तुम

लोगों को पाप करना ही धरम सूझता है, अगर कोई शख्स जानवर के मारने से मना करे तो मरने व मारने को तैयार हो जाते हैं और जो नेकी की बात बताए तो उसको नहीं करते हैं कि जिससे भला होवे और परमेश्वर भी खुश होवे, सो ऐसे-२ काम करने को तो जीव नहीं चाहता है और पाप की बातों के लिए जीव चाहता है, जिसकी वजह यह है कि बनियों ने अपने राक्षसी पाप से सभी की अकल खराब कर दी है जिससे नेकी और बदी को नहीं समझते हैं और इसी पाप की वजह से ही गरीब अमीर बे-औलाद रह जाते हैं. सो जो बे-औलाद रह जाते हैं वोह राक्षस विद्या के पाप से बे-औलाद रह जाते हैं, क्योंकि मालिक ने तो सभी को औलाद दी हैं क्योंकि सतजग में कोई बे-औलाद नहीं रहता था और सबके औलाद होती थी और अब जो बे-औलाद रह जाते हैं और उनके औलाद नहीं होती हैं, सो यह बनियों का राक्षसी पाप है कि जिस मरद औरत के नाम का पाप कराते हैं

और जिसके बच्चा नहीं होता है और किसी-२ को ऐसा भी सुझाते हैं कि भैरू के नामका या देवी के नाम का बकरा और भैसा वगैरा चढ़ाओगे जब तुम्हारे बेटा होगा, सो जबकि उनके नाम का बकरा या भैंसा वगैरा मार देवें तो फिर; उनके बेटा हो जाता है सो जब बनिये उनके नाम का पाप कराना छोड़ देते हैं जब बेटा हो जाता है और जो पाप करना नहीं छोड़े तो नही होता है अगरचे हो जावे जब तो संसार के लोग ऐसा कहने को लग जाते हैं कि हमने देवी वगैरा के नाम का बकरा वगैरा चढ़ाया था सो देवी वगैरा ने बेटा दिया है और जो बकरा चढ़ानेसे भी नहीं होवे तो यह कहने को लग जाते हैं कि परमेश्वर ने मेरी किस्मत में औलाद नहीं दी है इससे नहीं होती है सो यह संसार की भूल है क्योंकि परमेश्वर ने तो सबको औलाद दी हैं मगर बनियों के राक्षसी पाप से नहीं होती हैं और जिस के नाम का पाप नहीं कराते हैं उसके औलादें हो जाती हैं परंतु संसार के लोगों की अकल तो ऐसी फेर दी है

कि जो समझाने से भी नहीं समझते हैं क्योंकि पाप करने से तो औलाद मर जाती है, सो तुम पाप करते हो और पाप को ही धरम समझते हो सो भाई मेरे हो, देवताओं के ऊपर तो बकरा चढ़ाने से नुकसान पहुंचता हैं क्योंकि वो तो भगत हुए हैं जिनके ऊपर तुम बकरा चढ़ा देते हो सो उनके ऊपर तो पाप करना बुरा है, क्योंकि उनके नाम का धरम-पुण्य करना चाहिए वो अच्छी बात है और जिस तरह से रावण ने राक्षसी विद्या के ग्रह चला-२ के लगा दिये थे और देवताओं के ऊपर हाड़ वगैरा गिरवा देता था, परन्तु दुनिया को अपने राक्षसी पाप से ऐसा सुझा देता था कि देवताओं ने रोग वगैरा किया हैं सो ऐसा बहाना करके रावण दुनिया के हाथ से हाड़ वगैरा गिरवाता था, सो रावण ने तो थोड़ा ही पाप चलाया था और इन बनियों ने तो इतना पाप करना शुरू किया है कि जहान के हाथों से देवताओं के ऊपर जानवरों को मरवा देते हैं और हाड़ों को डाल देते हैं सो हम तुम सब ही जानते हैं कि अपने हाथों से हम

और तुम देवताओं के ऊपर हाड़ और खून डाल देते हैं सो इस-२ तरह के पाप तो जाहीर संसार के हाथों से करवाते हैं और गुप्ती पाप यह बनिये दरियावों के ऊपर कराते हैं और उसी गुप्ती पाप से दुनिया की बुद्धि भ्रष्ट हुई है कि जिससे लोग देवताओं के ऊपर जीव मार-२ के हाड़ डालते हैं और उसी पाप से देवताओं के बहाने से भूतों को नचाते हैं और सुझाते हैं देवताओं का और उसी पाप से दुनिया में यह विघ्न तरह-२ के चले हैं जिसकी गिनती भी नहीं हो सकती है, जब तक संसार में से यह विघ्न दूर नहीं होंगे और वो गुप्ती पाप जहां पर होता है वहाँ पर सिवाय बनियों के और कोई भी नहीं जा सकताहै इससे इनका जाल मालूम नहीं हो सकता है सो संसार के लोग एक दिल होकर इनके राक्षसी पाप को छोड़ाओ जब संसार का भला होगा और सब संसार की औलादें उभरेगी, क्योंकि पहले जमाने में चाँदी-सोने का ठाट और पाट था और अब नहीं है सो वो पैसा कहाँ गया? क्योंकि

जमीन तो वहां की वही है क्योंकि पैसा ना तो गलाया जाता है और ना खाया जाता है, वो तो सिर्फ खर्च करने के काम में लिया जाता है; सो तुम सब ही जानते हो कि पहले जमाने में धन बहुत था और सोने-चाँदी की खानें थी, सो इन सौदागर महाजनान ने राक्षसी पाप से खानों को गुम कर दी हैं और यह खानें जो हैं वोह जमीन माता के शरीर की चरबी है परंतु यह बनिये जमीन माता के नाम का पाप कराते हैं जिससे चरबी गल गई है, सो इस बात का तुम लोगों को जरूर ख्याल करना चाहिए कि हर एक मुलक में चाँदी - सोने की खानें थी वोह कहाँ गई? बल्कि सब चीजों की तेजी हो गई है और जिनको कि हीरा और पन्ना की खानें कहते हैं वो पत्थर हैं, मगर हरा पत्थर था तो वो हरा हीरा था और नीला पत्थर था वो नीला हीरा था और सफेद पत्थर था वो सफेद हीरा था और लाल पत्थर था वो लाल हीरा था और पीला पत्थर था तो पीला हीरा था, क्योंकि यह पत्थर हैं

जो जमीन माता के हाड़ हैं; तो अगले जमाने में जब काल नहीं पड़ते थे जब जमीन माता का शरीर निरोगी था तो हाड़ों में रोशनी थी; परन्तु यह बनिये लोग जिस दिन से काल पड़ाने लगे हैं और तरह-२ के रोग जमीन माता को कर दिये हैं; सो बीमारी के सबब से सब चीजों की शकल बिगड़ गई है जिस तरह से कि आदमी बहुत बीमार होता है और बीमारी से उसके शरीर का खून सूख जाता है और गोस्त गल जाता है और हाड़ भी बदशकल हो जाते हैं और बीमारी के सबब से आदमी का रूप भी तमाम जाता रहता है, उसी तरह से जमीन माता को जादू से रोग कराके बीमारी से इन महाजनान ने रूप गुमा दिया है इससे पत्थरों की खानों का याने पहाड़ों का रूप जाता रहा है सो हीरे-पन्नों की भी रोशनी चली गई है सो इसी तरह जब कि आदमी बीमारी के सबब से कमजोर हो जाता है तो उसके भी शरीर की रोशनी निकल जाती है, इसी तरह से जमीन माता के शरीर में भी बीमारी के

आवेगा जब अनाज के दाने गिनती से बिकेंगे.'' सो पहले से यह बाते संसार में चलादी हैं कि पानी भी तुल कर बिकेगा और दरखत एक हाथ का होगा और आदमी चार बालिस्त का होगा और जिसके घर में एक सेर कांसी या लोहा होगा वोह दुनिया में दौलतमन्द कहलावेगा, सो यह दुनियाँ में कैसी भूलें बताई हैं और इस जमाने के लोग गीता को बहुत मानत हैं कि जिसमें यह लिखा है कि ''अर्जुन को श्रीकृष्णजी महाराज ने मुँह के अन्दर तीन लोक दिखाये थे,'' सो यह बात भी दुनिया के भुलाने के वास्ते झूठी चलाई है और किताबें भी दुनिया में झूठ की चलादी हैं कि जमीन माता श्रीकृष्ण महाराज के पास गाय का रूप बनाकर आई थी और कहती थी कि मैं पूरी दुखी हूँ. सो देखो भाई, ख्याल करने की बात है कि सूरत किसी की भी नहीं बदलती थी क्योंकि जो जानवर है वो जानवर रहता है और जो आदमी है वो आदमी रहता है, क्योंकि जिसका शरीर मालिक ने जैसा-२ बनाया है

वैसा ही रहता है, जीवे या मरे सूरत किसी की नहीं बदलती है; फिर जमीन माता ने गाय का स्वरूप किस तरह से किया होगा? सिर्फ यह तो दुनिया के भुलाने के वास्ते झूठी बात चलाई है क्योंकि कृष्णजी महाराज अपनी तरह से जमीन के पेट में एक किसम का जीव होकर गुजरे हैं कि जिस तरह से अब हम और तुम जमीन के पेट में कीड़े बसते हैं, परन्तु उन्होंने भक्ति की है और दुनिया के साथ नेकी की है जिससे देवता स्वरूपी कहलाये हैं और पहले जमाने में गौतम ऋषि हुए थे. सो वो परमेश्वर के भक्त थे और दुनिया यह कहती है कि जिस वक्त मुरगा आवाज देता था उस वक्त गौतम ऋषिजी गंगा पर अशनान के वास्ते जाते थे और गौतम ऋषि की औरत अहिल्या बहुत खूबसूरत थी, सो इन्द्र महाराज अहिल्या के साथ हराम करने का ख्याल रखते थे; जब एक रोज गौतम ऋषि जी मुरगे की आवाज सुनकर गंगा पर अशनान के वास्ते गये, परन्तु

मुवाफिक कर दिया है कि बिलकुल नहीं समझने देते हैं और बनिये तो इस बात से वेकिफ हैं; और पहले जमाने में चाँदी-सोने की खानें थी, जिसकी वजह यह है कि पहले जमाने में जमीन माता ताजा थी इससे खानें भी मौजूद थी और अब पाप के सबब से खानें गल गई हैं और अब जमीन माता जादू के पाप से दुबली हो गई है, सो इसका हिसाब इन महाजनान को अच्छी तरह से मालूम है कि पहले जमाने में जमीन माता ताजा थी और अब इतनी दुबली हो गई है, सो इन महाजनान को जमीन माता के दुबली होने का सब हिसाब मालूम है क्योंकि दुनिया की अकल तो इन बनियों ने राक्षसी पाप से खराब कर दी है, जैसे रावण ने दुनिया की बुद्धि भ्रष्टकर दी थी जिससे संसार को जमीन माता की पहचान नहीं रही थी परन्तु अब इन बनियों के कुल को तो जमीन माता का सब हिसाब मालूम है कि जमीन माता इतने विसवा दुखी हैं और दुबली हुई हैं जैसे रावण के कुल को जमीन

माता का सब हाल मालूम था, सो इन बातों का हिसाब बनियों के घरों में सबों को मालूम है और जो की राक्षसी वेद और राक्षसी वेद की किताबें और टीपणा वगैरा हैं वो सब बनियों के घर के चलाये हुए हैं. सो इस वेद को और किताबों को काम में लाकर सब दुनिया भूल गई है, सो यह सब बाते मैं गरीब अनोपदास अपनी बीती हुई लिखता हूँ और सारी दुनिया भी जानती है कि वेद वगैरा मालिक के बनाये हुए और उनके ही चलाए हुए हैं, क्योंकि मालिक की तो कुदरत ही और है क्योंकि मालिक तो कोई किताब पोथी नहीं लिखता है यह तो आदमियों की ही बनाई हुई हैं मालिक की तो फक्त सब में रोशनी है; परन्तु इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से संसार के लोगों की बुद्धि भ्रष्ट कर दी है जिससे एक-दूसरे से मोहब्बत नहीं है बल्कि नाइत्तफाकी से देख रहे हैं इससे जिन्दा रहने का भी धरम नहीं है और पुराणों में और किताबों में ऐसा लिखा है कि ''कलजग

कलजग = बलिस्त

आवेगा जब अनाज के दाने गिनती से बिकेंगे.'' सो पहले से यह बातें संसार में चलादी हैं कि पानी भी तुल कर बिकेगा और दरखत एक हाथ का होगा और आदमी चार बालिस्त का होगा और जिसके घर में एक सेर कांसी या लोहा होगा वो दुनिया में दौलतमन्द कहलावेगा, सो यह दुनियाँ में कैसी भूल बताई है और इस जमाने के लोग गीता को बहुत मानते हैं कि जिसमें यह लिखा है कि ''अर्जुन को श्री कृष्णजी महाराज ने मुँह के अन्दर तीन लोक दिखाये थे,'' सो यह बात भी दुनिया के भुलाने के वास्ते झूठी चालई है और किताबें भी दुनिया में झूठ की चलादी हैं कि जमीन माता श्रीकृष्ण महाराज के पास गाय का रूप बनाकर आई थी और कहती थी कि मैं पूरी दुखी हूँ. सो देखो भाई, ख्याल करने की बात है कि सूरत किसी की भी नहीं बदलती है क्योंकि जो जानवर है वोह जानवर रहता है और जो आदमी है वोह आदमी रहता है, क्योंकि जिसका शरीर मालिक ने जैसा-२ बनाया है

वैसा ही रहता है, जीवे या मरे सूरत किसी की नहीं बदलती है; फिर जमीन माता ने गाय का स्वरूप किस तरह से किया होगा? सिर्फ यह तो दुनिया के भुलाने के वास्ते झूठी बात चलाई है क्योंकि कृष्णाजी महाराज अपनी तरह से जमीन के पेट में एक किसम का जीव होकर गुजरे हैं कि जिस तरह से अब हम और तुम जमीन के पेट में कीड़े बसते हैं, परन्तु उन्होंने भक्ति की है और दुनिया के साथ नेकी की है जिससे देवता स्वरूपी कहलाये हैं और पहले जमाने में गौतम ऋषि हुए थे. सो वो परमेश्वर के भक्त थे, और दुनिया यह कहती है कि जिस वक्त मुरगा आवाज देता था, उस वक्त गौतम ऋषि गंगा पर अशनान के वास्ते जाते थे और गौतम ऋषि की औरत अहिल्या बहुत खूबसूरत थी, सो इन्द्र महाराज अहिल्या के साथ हराम करने का ख्याल रखते थे; जब एक रोज गौतम ऋषिजी मुरगे की आवाज सुनकर गंगा पर अशनान के वास्ते गये, परंतु

उस दिन इन्द्र महाराज ने मुरगे को यह कह दिया था कि आज तू आधी रात को बोलना, तो जब मुर्गा आधी रात को बोला तो गौतम ऋषिजी गंगा पर अशनान के वास्ते चले गये और उनके जाने के बाद इन्द्र महाराज उनकी औरत अहिल्या से हराम करने को आए और चन्द्रमा को पहरे पर खड़ा किया था; जब गौतम ऋषिजी गंगा पर पहुँचे तो गंगा ने गौतम ऋषिजी से यह कहा कि तुम इसी वक्त अपने घर को वापिस चले जाओ, क्योंकि तुम्हारे घर में कोई छल है. जब गंगा के कहने से उसी वक्त गौतम ऋषि बगैर अशनान किये अपने घर को चले आये और आकर देखा तो घर में छल ही था और इन्द्र महाराज मौजूद हैं और चन्द्रमा पहरे पर खड़ा है, जब कहते हैं कि गौतम ऋषि ने बहुत गुस्सा किया और चंद्रमा को श्राप दिया और अपनी धोती के फटकारे से छाटे दिये कि उन छाँटों से चंद्रमा में काले दाग पड़ गये और अपनी

औरत अहिल्या को यह श्राप दिया कि तू पत्थर की होकर गंगा पर जा पड़ना. सो संसार में कहते हैं कि वो औरत श्राप देते ही पत्थर की होके गंगा के तीर पर जा पड़ी, बहुत दिनों तक वहीं पड़ी रही और जिस वक्त रामचन्द्रजी महाराज जनक राजा के यहाँ जग में आए तो उन्होंने उसी पत्थर के ऊपर जो पत्थर की अहिल्या हो गई थी, अपनी जोड़ी जूते की झाड़ी तो वो फिर अपनी असली सूरत पर औरत बन गई. भला गौर करने की जगह है कि आदमी पत्थर क्यों कर हो सकता है और फिर पत्थर से आदमी कैसे हो सकता है? तुम संसार के लोग इस बात को दिल से ख्याल करो कि इस झूठ का कहाँ ठिकाना है? मैं कहाँ तक इस झूठ का हाल लिखूं? झूठ तो दुनियाँ में बहुत है और लिखने वाला मैं एक कहाँ तक लिख सकता हूँ, मैं तो कोई -२ बात तुम संसार के लोगों को, आँखे तुम्हारी खोलने के वास्ते लिखता हूँ सो तुम सब संसार के लोग इन्साफ की आँखों से

देखो कि जो मैं लिखता हूँ यह सच मालूम होता है या यह अगली बातें! जैसे गौतम ऋषिजी की और इन्द्र महाराज की हैं यह सच मालूम होती हैं. अब जरा इस बात को सुनो तो सही कि गौतम ऋषि ने इन्द्र महाराज को श्राप दिया सो वो कोढ़ी हो गये और उनके बदन में सुराख और बंग हो गये और कहते हैं कि गौतम ऋषि ने चन्द्रमा को श्राप दिया और उनकी धोती के छाँटो से चन्द्रमा में काले दाग पड़ गये और रामचन्द्रजी के जूते झाड़ने से पत्थर से फिर औरत हो गई और गंगाजी गौतम ऋषि को मुँह से बोली कि तुम अपने घर वापस चले जाओ. तो गौर करो कि आदमी को मालिक ने अकल समझने के वास्ते दी है सो तुम सब संसार के लोग अपनी अकल से समझो कि गंगा जो है वोह तो जल है, जल मुँह से कब बोल सकता है? और चन्द्रमा जो है ज्योति स्वरूप है वोह ऐसे खोटे कामों के ऊपर पहरा क्यों देते? और गंगा का मान और बुर्जुगी

इस वास्ते है कि वहाँ पर साधु फकीर और अच्छे लोग तपे हैं जिससे इस नदी का नाम प्रगट है, नहीं तो जैसे और नदी हैं वैसे गंगा भी एक नदी है और जो कोई यह ख्याल करे कि गंगा का पानी नहीं बिगड़ता है और कीड़े वगैरा नहीं पड़ते हैं और दूसरी नदियों का पानी खराब हो जाता है और कीड़े वगैरा पड़ जाते हैं इससे गंगा में यह बात ज्यादा है, सो भाई मेरे हो इसका सबब यह है कि इन महाजनान ने गंगा के नाम का पाप करके अभी तक रोग नहीं किया है जिससे यह पानी नहीं बिगड़ता है और दूसरी तमाम नदियों के नाम का पाप करके रोग कर दिये हैं जिससे उन नदियों के पानी में कीड़े पड़ जाते हैं और पानी खराब हो जाता है, सो जिस दिन गंगा के नाम का पाप करके गंगा को रोग कराया, उस दिन इसका पानी भी खराब हो जावेगा, इसी तरह से यह बात पेशतर से ही प्रगट कर दी है कि गंगाजी अलोप हो जावेगी और इसका

महातम कम पड़ जावेगा. सो भाई मेरे हो, अलोप हो जाना और महातम और मान कम हो जाना गंगा का यह ही है कि यह बनिये महाजन लोग गंगा के नाम का पाप करना शुरू करके इसको रोग करा देंगे तो उस पाप के होने से गंगा के पानी में यह बात जो अब है, नहीं रहेगी; और इसके पानी में कीड़े वगैरा पड़ने को लग जावेंगे तो फिर संसार के लोगों के दिल में गंगा का मान और महातम कम हो जावेगा और दुनिया खुद ही कहने लगेगी कि अब गंगा अलोप हो गई और इसका महातम कम हो गया है जिससे पानी खराब होकर कीड़े वगैरा पड़ने लगे हैं और ख्याल करो कि जल तो सदा निरमला है परन्तु इन बनिये बेईमानों ने जगह-२ जादू से रोग करके जमीन माता को बीमार कर दी है और जो कि मेह बरसता है उसको दुनिया इन्द्र कहती है, सो इन्द्र महाराज तो तिरन-तारन और दीनदयाल हैं परंतु इन बनियों ने यह कैसा झूठ का जाल चलाया है

कि जल कोई आदमी नहीं है कि जो अहिल्या से हराम करने को आया होगा, क्योंकि जल तो दीन दयाल है और जमीन –आसमान सब जल की ही माया हैं और सब जीवाजून जल की ही माया हैं, क्योंकि परमेश्वर भी जल ही है और हम तुम सब दुनिया जल की ही माया हैं और जल की ही पैदायश हैं, सो जल कोई आदमी थोड़ा ही है! जल तो बरसता है सो हम और तुम सब ही देखते हैं, सो जब कि जल जमीन माता पीती है जब जल बरसता है सो सब ही देखते हैं और जो कि संसार ने गौतम ऋषि की औरत को पाप लगाया है वोह बनियों का जाल है जिससे संसार के लोग ऐसा कलमा कहते हैं क्योंकि जल कोई आदमी थोड़ा ही है जो गौतम ऋषि की औरत से हराम करता? यह बनियों का गुप्ती पाप है. सो सब तुम हिन्दू-मुसलमान और अंग्रेज समझो और ख्याल करो कि पहले रावण ने राक्षसी पाप चलाकर के राक्षसी वेद और राक्षसी वेद की किताबें और टीपणा वगैरा

संसार के भुलाने के वास्ते चला दिये थे, उसी तरह से इन बनियों ने चला दिये हैं और जो कि दुनियां भूली हुई है सो इस तरह से तो नहीं भूली हुई है परन्तु चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपरनारगी बनाई हैं वहाँ पर पाप कराते हैं जब दुनिया की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और दुनिया यह जो कहती है कि चन्द्रमा, गौतम ऋषि के घर इन्द्र महाराज के पहरे पर खड़ा हुआ; सो यह बात खिलाफ अकल के है क्योंकि चन्द्रमा बुरे काम के पहरे पर नहीं खड़ा हो सकता और सूरज-चन्द्रमा कोई आदमी थोड़ा ही हैं जो पहरे पर खड़े रहें, क्योंकि सूरज-चन्द्रमा तो मालिक ने जमीन माता के शरीर में ज्योत बनाई है सो यह जमीन माता के शरीर में रोशनी है कि जिस तरह से आदमी के शरीर में रोशनी है उसी तरह जमीन माता के शरीर में सूरज-चन्द्रमा की रोशनी है और संसार के लोग यह जो कहते हैं कि अहिल्या अपने 'सामिन्द' की बद्दुआ से पत्थर की बनके गंगा की तीर पर जा पड़ी थी और

फिर पत्थर से औरत होकर आसमान पर चली गई थी, सो यह बातें बिलकुल झूठ हैं और ख्याल करने के लायक है कि औरत पत्थर नहीं बन सकती और न आसमान पर जा सकती है, यह तो बनियों ने दुनिया के भुलाने के वास्ते राक्षसी पाप चलाया है और जो यह गौतम ऋषि और इन्द्र महाराज वगैरा का हाल और भी अनेक तरह की झूठी बातें दुनिया में प्रगट की हैं सो यह बातें तमाम 'तुलसीकृत रामायण' में, कि जो तुलसीदास ने बनाई है और भागवत् में लिखा हुआ है और 'औतार चरित्र' में भी लिखा हुआ है; सो तुम सब संसार के लोगों ने इन किताबों में यह बातें लिखी हुई देखी होगी और अगर नहीं देखी हो तो देख लो कि ऐसे-२ अनेक तरह के किस्से, एक इन किताबों में क्या और सैंकड़ों किताबों में लिखे हुए होंगे, सो तुम संसार के लोग देख लो कि इस झूठ का कुछ पार नहीं है, हजारों बातें झूठी राक्षसी वेद की किताबों में लिख दी हैं और दुनिया अन्धी उन किताबों में

लिखी हुई बातों को सच्ची जान-२ कर मानती है; क्योंकि दुनिया की बुद्धि तो राक्षसी पाप से कैद है सो झूठ ही सच्चा मालूम होता है और इस बात को ख्याल नहीं करते कि यह बातें, जो उन किताबों में लिखी हुई हैं यह समझ में भी आती हैं या नहीं आती हैं और झूठ हैं या सच हैं? और ऐसे-२ झूठे किस्से इन महाजनान ने किताबों में लिख-२ कर अगले सती लोग जो हुए हैं उनके नाम से यह किताबें राक्षसी वेद की दुनिया का बुरा होने के वास्ते चला दी हैं, कि जिससे हमारा जाल दुनिया में प्रगट नहीं होवे और दुनिया उन किताबों को अगले सती लोगों का नाम लिखा होने से मानते चले जाते हैं और दुनिया यह नहीं देखती कि यह बातें जो इन किताबों में लिखी हैं यह सच हैं या झूठ हैं और यह बातें हुई हैं या नहीं हुई हैं! और इन बनियों ने असली धरम के वेद की किताबें तो सब छुपा दी हैं, कि जिनमें धर्म-पुण्य की बातें और कुल काम धरम चलने के लिखे थे और

राक्षसी वेद की किताबें झूठी चला दी हैं, सो राक्षसी वेद की किताबों में ही इन महाजनान ने यह चालाकी की हैं कि उन किताबों में अव्वल नाम परमेश्वर का और कोई-२ बात सच्ची लिख दी है कि जिससे दुनियाँ उन किताबों को राक्षसी वेद की और झूठी ना समझे, यह चतुराई की है और बाकी तो तमाम झूठी बातें और राक्षसी जाल की दुनिया को डुबोने के वास्ते इन किताबों में लिखी हुई हैं, सो दुनिया असली धरम के वेद की किताबों को तो तलाश नहीं करती है और इन राक्षसी जाल की किताबों को पढ़-२ कर डूबते चले जाते हैं; सो किताबों के पढ़ने से तो कुछ नहीं होता है, परन्तु इन किताबों में और टीपणों में संसार का बुरा होने का हाल लिखा है, सो जैसे यह महाजन लोग उन किताबों के लिखे मौजिब होम-पाप संसार का बुरा होने के वास्ते कराते हैं वैसे ही डूबते जाते हैं. सो मैं गरीब साधु कुल संसार का भला होने के वास्ते लिखता हूँ कि असली धरम के वेद की किताबों को

देखो कि उनमें क्या लिखा है और धरम पे चलो और राक्षसी जाल को मिटाओ और राक्षस विद्या के जाल से निकलो, जो तुम्हारे सब संसार की औलाद उभरे; और यह राक्षसी जाल की किताबें ऐसी हैं जैसे कि रावण ने संसार का बुरा होने के वास्ते चलाई थी और रावण ने भी किताबों में अगले सती लोगों का और रखेश्वरों के नाम की, जो रावण से पेशतर हुए थे उनके नाम उन किताबों में लिख दिए थे कि जिससे रावण का नाम चौड़े न होवे और संसार में लोग अब तक इस बात को कहते हैं और खुद जानते हैं कि रावण कोई बात अपने सर नहीं लेता था, उसी तरह से इन सौदागर महाजनान ने भी इन राक्षसी जाल की किताबों में अपना नाम नहीं लिखा है कि जिससे इनका नाम संसार में चौड़े न आवे; इस वास्ते अगले सती लोगों का नाम इन बनियों ने लिख दिये हैं और रावण ने असली धरम पुण्य के वेद की किताबें छुपाई थी सो रावण के वक्त में तो रामचन्द्रजी

सरीखे और कंश के जमाने में श्री कृष्णजी सरीखे लोगों ने इस राक्षसी जाल की किताबों को और टीपनों को पानी में डुबा दिये और गला दिये और दुनिया में से इन किताबों का नाम मिटा दिया और असली धरम-पुण्य के वेद की किताबें दुनियाँ में चलाई हैं जब दुनिया समझी और दुनिया की आँखें खुली जब संसार की औलाद उनके राक्षसी पाप से बची थी; सो अब भी ऐसा ही राक्षसी जाल और राक्षसी जाल की किताबें इन सौदागर महाजनान ने भी रावण की तरह से दुनिया का बुरा होने के वास्ते दुनियाँ में चलाई हैं, सो इस वास्ते मैं गरीब साधु इस जाल से संसार को वाकिफ करता हूँ कि असली धरम के वेद की किताबों पर चलो और देखो और ऐसे-२ जाल भागवत् के (१०) दसवें हिस्से में लिखे हैं, कि श्री कृष्ण महाराज के जमाने में नौ नन्द और नौ उपनन्द रहते थे, सो एक नौ नन्द के घर में नौ लाख गायें थी और एक नौ उपनन्द के घर में सवा करोड़ गायें थी, तो वोह गायें हमेशा गोवर्धन

पर्वत पर चरने के वास्ते जाया करती थीं, सो कुल एक करोड़ चौतीस लाख हुई सो भाई मेरे हो, जरा दिल से ख्याल करो कि इस कदर गायें गोवर्धन पर्वत पर किस तरह से रहीं होंगी, क्योंकि गोवर्धन पर्वत कुछ जमीन थोड़ा ही है, वोह तो पहाड़ के मौजिब पहाड़ है; और अलावा इसके यह जो संसार के लोग कहते हैं कि बृज के लोगों से इन्द्र महाराज ने तकरार की थी, जब इन्द्र महाराज ने गुस्से होकर बारह मेघ माल से चढ़ाई की और कहा कि अब मैं बृज को जल से डुबो दूँगा, सो इस हाल की खबर श्रीकृष्ण महाराज को पड़ी, जब श्रीकृष्ण महाराज ने अपने हाथ के नाखून पर, पहाड़ को उठा करके बृज के ऊपर छाया किया और बृज को नहीं डूबने दिया, सो यह बात भी झूठी हैं और ख्याल करनेके काबिल हैं क्योंकि पहाड़ किसी से नहीं उठ सकता है क्योंकि पहाड़ क्या एक सेर, दो सेर का या मण, दो मण का था जो उठा लिया होगा? यह बातें इन सौदागर महाजनान के राक्षसी पाप की हैं,

सो अब तुम संसार के लोगों इन बातों का ख्याल करके होशियार होके और इन बनियों के पाप को छोड़ाओगे जब तुमको और तुम्हारे बाल बच्चों को सुख प्राप्त होगा, नहीं तो यह बनिये सबको, अपने राक्षसी पाप से बिना मौत मार देंगे. और संसार के लोग यह जो कहते हैं कि रामचंद्रजी महाराज लंका में गये और रावण से लड़े जब लक्ष्मणजी के बाण लगा तो बाण के लगते ही लक्ष्मणजी बेहोश हो गये और मर गये, जब हनुमान जी को संजीवनी बूटी लेने को भेजा तो हनुमान जी को संजीवनी बूटी कहीं नहीं मिली, जब पहाड़ को ही उठाकर ला रहे थे परन्तु रास्ते के अन्दर रामचन्द्रजी के भाई भरतजी खड़े हुए थे सो उन्होंने अपने दिल में यह विचार किया कि कोई दुश्मन मेरे भाइयों के उपर डालने को पहाड़ उठाकर लिए जाता है और मेरे भाइयों पर और मेरे भाइयों की फौज पर डालेगा, तो मेरे भाइयों की तमाम फौज और मेरे भाई दबके मर जावेंगे, इस बात का ख्याल करके

भरतजी ने हनुमान को बाण मारा तो उस बाण के लगते ही हनुमान नीचे आ पड़ा, जब हनुमान को भरतजी ने पहचाना और पहचान कर बहुत फिकर किया कि मैंने तो अपने घर के ही आदमी को तीर मार दिया, जब हनुमान को भरतजी ने अपने बाण के ऊपर पहाड़ समेत बिठाकर अपने भाई रामचंद्रजी के पास पहुँचा दिया. सो भाई मेरे हो, बाण कोई घोड़ा था या गाड़ी थी जो उसके ऊपर लादकर पहुंचा दिया? और पहाड़ क्या एक सेर, दो सेर या मण, दो मण का था जो बाण के ऊपर लादकर पहुँचा दिया? सो भाई मेरे, अव्वल ऐसी बात का ख्याल करो कि जो बाण के ऊपर कील होती है तो उसमें भी पैसा भर बोझ होता है; सो जब कि वो पैसे भर बोझ नहीं जा सकता है तो पहाड़ वगैरा किस तरह से जा सकता है? सो ऐसी-२ बातें कुल झूठी हैं और दुनिया अन्धों के मुवाफिक है कि जो कोई शख्स फरेब की बातें कहता है उसको भी सच्चा जान लेते हैं, क्योंकि दुनिया की बुद्धि

भ्रष्ट हो रही है इससे बिलकुल ख्याल नहीं करते और यह तमाम किस्सा रामायण में लिखे हुए मौजूद हैं सो देखलो, बल्कि झूठ की किताबें हिन्दू -मुसलमानों के घरों में हैं वो सब बनियों के घर की चलाई हुई हैं परन्तु जितनी किताबें बनियों ने चलाई हैं उसका कुछ अन्दाज भी नहीं है और अपने हिन्दू-मुलसमानों के हाथों में पकड़ा दी हैं और आप अलाहदा के अलाहदा रह गये हैं कि जब कोई झूठ की किताबों का हाल दरियाफ्त करेगा तो हम बनियों से तो कोई भी दरियाफ्त नहीं करेगा, तो इस वजह से हिन्दुओं के और मुसलमानों के और अंग्रेजों के बच्चे और औलाद मारी जावेगी और हम तो बचे के बचे रहेंगे परंतु, अपने हिन्दू-मुसलमान और अंग्रेज वगैरा के बुजुर्ग तो भक्त हो गुजरे हैं और मालिक की भक्ति करते थे इससे भक्त लोग अब तक मशहूर हैं और जो किताबें कि झूठ की हैं वोह बनियों की चलाई हुई हैं और इन बनियों ने ही हम सब हिन्दू-मुसलमानों

के घरों में और अंग्रेजों के घरों में छल करके दे दी हैं. सो इससे तीन लोक के बच्चे मारे जावेंगे, क्योंकि इस हाल को बनियों से कोई भी दरियाफ्त नहीं करेगा; देखो इन बनियों ने कुल जहान का पैसा ले लिया है और जो थोड़ा बहुत रहा है, वोह अब जादू के जोर से ले लेवेंगे जब कुल बनिये समुद्र पार चले जावेंगे सो इस बात का बंदोबस्त बहोत जल्दी करना चाहिए, जिससे तमाम जहान को आराम मिले, इससे मुझ गरीब के लिखने पर गौर फरमाकर जल्द बंदोबस्त करो जिससे तुम्हारी कुल, इस इन्द्रजाल से बचे तो सुख प्राप्त होवे, क्योंकि इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से धन दुनिया का धन काबू में कर लिया है कि इन बनियों को धन का लोभ बहुत है कि कुल जहान का धन हमारे पास हो जावे तो फिर हम अपना राज करें; सो यह बनिये अपने राक्षसी पाप से भूल ही भूल में बुद्धि भ्रष्ट करके सातों-आठों विलायतों के बच्चों को गारत कर देंगे, जब संसार की औलाद को निहायत दुख

देंगे और पता भी नहीं लगने देंगे बल्कि यह बनिये अपने राक्षसी पाप से ऐसा सुझा देंगे कि जो आपस में ही लड़कर मरने लगेंगे और जब हिन्दू तो यह जानेंगे कि हमको मुसलमानों ने गारत किया है और मुसलमान यह जानेंगे कि हमको हिन्दुओं ने गारत किया है और दूसरी बादशाहत के लोग अंग्रेजों को गारत करेंगे, जब अंग्रेज यह जानेंगे कि हमको दूसरी बादशाहत के लोगों ने गारत किया है. सो ऐ संसार के लोगों, इस राक्षस विद्या के पाप को बहोत जल्द छोड़ाओगे तो संसार की औलाद को सुख मिलेगा, नहीं तो यह बनिये राक्षसी पाप से सबकी अकल को खराब करके और आपस में लड़ा करके दगा से मार देंगे और खुद अलाहदा के अलाहदा रह जावेंगे क्योंकि यह सबसे हिले-मिले रहते हैं, इससे इन्होंका दगा करना मालूम नहीं होता है और इन्होंको सिर्फ पैसे का लालच है, क्योंकि जब बड़े-२ लोग गारत हो जावेंगे और थोड़े-से रह जावेंगे तो वे

लोग पैसे की वजह से हमारी ही खुशामद रखेंगे और फिर हमारे ही नौकर रहेंगे, फिर जो कोई यह चाहे कि हम दौलतमंद हो जावेंगे तो फिर कभी हरगित-२ हम बनियों से ज्यादा दौलतमंद नहीं होंगे, चाहे जमीन के ऊपर ही सर मार-२ कर क्यों न मर जावें, परन्तु सौदागर महाजनान की बराबरी हरगित नहीं कर सकेंगे; क्योंकि हमारे पास जब कुल जहान का असली पैसा है या होगा और हिन्दू-मुसलमानों के पास नहीं है और न अंग्रेजों के पास है और न होगा तो फिर हिन्दू और मुसलमान और अंग्रेज और सातो-आठो विलायतों की रैयत हमारी बराबरी नहीं कर सकेंगी, परन्तु यह बनिये तीन हिस्से से ज्यादा अपने राक्षसी पाप से कुल जहान के बच्चे गारत कर देंगे, जब एक हिस्से से कम आदमियों को देख के ज्यादा अपना जोर-शोर दिखावेंगे और जब तक कि हिन्दू-मुसलमान और अंग्रेज और सातो-आठो विलायतोंके लोग गारत न हो जावेंगे

जब तक तो यह बनिये राक्षसी पाप के करने वाले गरीब होकर रहेंगे और जब कुल दुनिया गारत हो जावेगी, जब यह बनिये अपने राक्षसी पाप से तमाम जहान की अकल फेरकर इस कदर जोर-शोर फैलावेंगे कि जिस तरह से राजा रावण ने राक्षस विद्या का पाप चलाया था और यह समझा था कि मैं अपनी औलाद समेत जबरदस्त रहूँगा, तो फिर हमारा ही राज-पाट हो जावेगा, सो इन बनियों ने ही ऐसा ख्याल करके राक्षस विद्या का पाप चलाया है कि जिस तरह से रावण ने राक्षस विद्या का गुप्ती पाप चलाया था, इस वह कुल जहान ने एका करके रावण की औलाद सम्मेत रावण को मार दिया, सो इस बात का ख्याल तो बनियों ने बिलकुल नहीं किया कि जो कोई शख्स राक्षसी पाप चलाता है और उसके पाप चलाने की खबर संसार को पड़ जाती है तो संसार के लोग राक्षसी पाप चलाने वाले को मय कुल और औलाद के गारत कर देते हैं कि जैसे रावण के राक्षसी पाप को संसार ने रावण को गारत करके छोड़ाया है,

के घरों में और अंग्रेजों के घरों में छल करके दे दी है. सो इससे तीन लोक के बच्चे मारे जावेंगे, क्योंकि इस हाल को बनियों से कोई भी दरियाफ्त नहीं करेगा; देखो इन बनियों ने कुल जहान का पैसा ले लिया है और जो थोडा बहुत रहा है वोह अब जादू के जोर से ले लेवेंगे जब कुल बनिये समुद्र पार चले जावेंगे सो इस बात का बंदोबस्त बहोत जल्दी करना चाहिए जिससे तमाम जहान को आराम मिले, इससे मुझ गरीब के लिखने पर गौर फरमाकर जल्द बन्दोबस्त करो जिससे तुम्हारी कुल इस इन्द्रजाल से बचे तो सुख प्राप्त होवे, क्योंकि इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से धन दुनिया का काबू में कर लिया है कि इन बनियों को धन का लोभ बहुत है कि कुल जहान का धन हमारे पास हो जावे तो फिर हम अपना राज करें; सो यह बनिये अपने राक्षसी पाप से भूल ही भूल में बुद्धि भ्रष्ट करके सातों - आठों विलायतों के बच्चों को गारत कर देंगे, जब संसार की औलाद को निहायत दुख

देंगे और पता भी नहीं लगने देंगे बलके यह बनिये अपने राक्षसी पाप से ऐसा सुझा देंगे कि जो आपस में ही लड़कर मरने लगेंगे और जब हिन्दू तो यह जानेंगे कि हमको मुसलमानों ने गारत किया है और मुसलमान यह जानेंगे कि हमको हिन्दुओं ने गारत किया है और दूसरी बादशाहत के लोग अंग्रेजों को गारत करेंगे, जब अंग्रेज यह जानेंगे कि हमको दूसरी बादशाहत के लोगों ने गारत किया है. सो ऐ संसार के लोगों, इस राक्षस विद्या के पाप को बहुत जल्द छोडाओगे तो संसार की औलाद को सुख मिलेगा, नहीं तो यह बनिये राक्षसी पाप से सबकी अकल को खराब करके और आपस में लड़ा करके दगा से मार देंगे और खुद अलाहदा के अलाहदा रह जावेंगे क्योंकि यह सबसे हिले-मिले रहते हैं, इससे इन्होंका दगा करना मालूम नही होता है और इन्होंको सिर्फ पैसे का लालच है, क्योंकि जब बड़े-२ लोग गारत हो जावेंगे और थोड़े-से रह जावेंगे तो वोह

बनियों ने जाल चलाया था और राजा बादशाहों को इनके जालों की खबर पड़ी थी उस वक्त तो बादशाह इन बनियों को बनियों की औलाद समेत रावण की तरह से गारत किया चाहते थे, परन्तु इन बनियों ने ऐसी अकलमंदी की, कि कुल बनिये बादशाह के सामने यह अरज करने लगे कि बेशक हमसे कसूर हुआ; सो हाथों पाँव पड़के और तरह-२ की कसमें खाकर विभीषण की तरह से अपनी औलाद को बचा लिया और कुछ दिनों तक फिर राक्षसी पाप नहीं कराया. सो भाई मेरे हो विभीषण तो सच्चा भक्त था, इससे विभीषण ने अपने कुल में राक्षसी पाप नहीं चलने दिया, परन्तु इन बनियों ने तो फिर चला दिया और पहले इन बनियों को बादशाह ने इस गरज से नहीं मारा था कि इन्होंने हाथों पाँव पड़के माफी चाही थी और यह वादा कर लिया था कि कभी राक्षसी पाप नहीं करावेंगे; सो बादशाह ने इन बनियों का ऐतबार करके छोड़ दिया था

जिसकी वजह यह है, कि संसार के आधे लोगों ने तो यह कहा कि इन काफिरों को मार दो और संसार के आधे लोगों ने यह कहा कि मत मारो, कि यह बनिये अपने कसूर की माफी चाहते हैं और आयन्दा नहीं करेंगे जबकि बादशाह ने संसार का दिल ऐसा देखा कि इन बनियों को मत मारो और कसूर को माफ कर दो, चुनांचे बादशाह ने दिल में ऐसा ख्याल करके समझा कि यह अब राक्षसी पाप नहीं करेंगे क्योंकि अव्वल तो अपने कसूर की माफी माँगते हैं और आयन्दा नहीं करावेंगे. क्योंकि गाये और सुअर की कसमें खाते हैं सो अब ईमान को नहीं हारेंगे, ऐसा विचार करके बादशाह ने आधे संसार की राय मानकर छोड़ दिया परन्तु बादशाह यह नहीं जानते थे कि यह बनिये ईमान हार कर और परमेश्वर को भूलकर यह फिर अपना राक्षसी पाप चलावेंगे, अगर ऐसा मालूम होता कि यह बेईमान हो जाता है और धरम पर

कायम नहीं है, तो इन बनियों को हरगिज-२ जिन्दा नहीं रहने देते और संसार में से इन बनियों का नाम ही निकाल देते. सो यह बातें जाल की कुल जहान में मशहूर हैं बलके वेद की किताबों और पुराणों में लिखी हुई हैं कि जब तक हमारे और तुम्हारे बच्चे जिन्दा रहेंगे जब तक हम तुम्हारी रैयत होकर रहेंगे सो इस तरह के जाल और फरेब करके बचे थे परन्तु राजा -बादशाह ने ऐसा ख्याल नहीं किया, कि जो शख्स खेती बाड़ी करते हैं वोह सब हमारी रैयत हैं परन्तु यह बनिये लोग हमारी रैयत क्यों कर हो गये? क्योंकि इनके तो अनेक तरह के जाल हैं क्योंकि जब हम काफिरों को छोड़ देंगे तो यह बनिये हमारे गुजरने के बाद फिर काफिरी पाप चला करके हमारे बाल-बच्चों को और रैयत के बाल बच्चों को गारत कर देंगे, सो तो राजा बादशाहों ने बिलकुल नहीं सोचा. सो देखो भाई यह नहीं सोचने का ही सबब है कि सिवाय इन बनियों के और किसी

जात के घर में पैसा नहीं है और इन बनियों ने कुल जहान का धन राक्षसी पाप से दरियावों के किनारे खेंच लिया है और जो कि जाहिरी धन है वो बेईमानी से, और कपट से संसार का लिया है वो छुपा रक्खा है; और यह बनिये संसार के देखने के वास्ते गरीब होकर रहते हैं और दुनिया से डरते भी हैं कि जो दुनिया को हमारे जाल की खबर पड़ गई तो हमारा धन छीन कर और बाँट के सभों के घरों में पहले का सा धन कर देंगे तो फिर सतजग हो जावेगा, परन्तु सतजग इसको कहते हैं कि जिस किसी के घर में रूपया-पैसा और अनाज वगैरा का सुख होवे और किसी चीज की भूख न होवे, परन्तु इन बेईमानों के दिल में ऐसा इरादा रहता है कि सभों के घर का पैसा-रूपया हम ले लेवें. सो हिन्दुस्तान का पैसा तो ले लिया है, सो धन लेने की ही गरज से इन बनियों की दुकानें दूसरी बादशाहतों में भी पहुंच गई हैं सो उनको हिन्दुस्तान के राज कराने का लोभ

देकर और रूपया वगैरा की मदद देकर के लाना चाहते हैं और हिन्दू-मुसलमान के बच्चों को मरवाना चाहते हैं और रहे सहे धन को लेना चाहते हैं, सो दूसरे मुल्क के राजा बादशाह को राज कराने को लाते हैं, सो उनको यह तो खबर नहीं है कि जिस तरह से हिन्दुस्तान का पैसा ले लिया है उसी तरह से हमारे मुल्क का भी लिया चाहते हैं इस वास्ते हमको भी हिन्दुस्तान में लिये जाते हैं. अगर विलायत के लोगों को ऐसा मालूम होवे कि जैसे हिन्दुस्तान को तबाह किया है उसी तरह से हमारे मुल्क को तबाह किया चाहते हैं, सो इस बात का हाल विलायत के लोगों को मालूम हो जावे तो रावण की तरह से इन सौदागरान को भी गारत कर देवें, परन्तु इनके जाल की खबर नहीं पड़ी और मैं इस गरज से आप लोगों की खिदमत में लिख करके अर्ज करता हूँ कि आप सब साहब हिन्दू-मुसलमान और अंग्रेज वगैरा और सातो-आठो विलायत एक

दिल होकर इन काफिरों की काफिर विद्या को संसार में जाहिर करो और छोड़ाओ तो तुम्हारे बाल-बच्चों को हर तरह से आराम मिले, नहीं तो यह काफिर लोग ऐसे हैं कि सभों को भूल ही भूल में गारत कर देंगे कि जो फिर तुमको इनके जालों का पता भी नहीं लगेगा; सो तुमको अगर तुम्हारे बच्चे प्यारे मालूम होते हैं तो अपने बच्चे बचने के खातिर इन बनियों के काफिरी जाल का बन्दोबस्त करो और इन बनियों के जाल की खबर सातो-आठो विलायतों को दो, ताकि अपना भला होवे, नहीं तो यह बनिये तमाम जहान को गारत कर देवेंगे कि जिस तरह से हरनाकुश राजा ने और रावण ने और कारून बादशाह ने राक्षसी पाप चला करके तीनों लोकों की बुद्धि भ्रष्ट कर दी थी, सो तीन -लोक सातो -आठो विलायत के हिन्दू-मुसलमान और अंग्रेजों को और जिस कदर जमीन के पड़दे पर आदमी हैं उनको कहते हैं, सो जबकि रावण ने और हरनाकुश राजा ने

राक्षसी पाप चलाया था तो सातों-आठों बादशाहतों के लोगों ने रावण के राक्षसी पाप को मिटा दिया, जब कुल संसार की औलाद सलामत रही. उसी तरह से अब भी सातों-आठों विलायतों के लोग एका करके इन बनियों के जाल को छोड़ाओ जब फिर संसार की औलाद को सुख प्राप्त होगा, नहीं तो यह सातों-आठों विलायतों के लोगों को जिस तरह से अपने दिल के अन्दर मुनासिब समझेंगे, रखेंगे; ऐसा ख्याल करके इन बनियों ने राक्षस विद्या का पाप चलाया है. इसको देखो कि इस वक्त में तो दुनियाँ ज्यादा है और दुनियाँ से बनियों की जात थोड़ी है सो इन बनियों ने यह सोच रक्खा है कि जब संसार के अन्दर राजा बादशाह मय रैयत के थोड़े रह जावेंगे जब यह बनिये अपना राज करेंगे, सो जबकि राजा - बादशाह और रैयत संसार की इन बनियों से ज्यादा है जब तक तो यह बनिये अपने दिन में दहशत रखते हैं और जबकि संसार कम हो गया

तो फिर यह बनिये फौरन ही अपना राज कर लेवेंगे, इस गर्ज से इन्होंने राक्षसी पाप चलाया है जिससे हजारों आदमियों को कई बीमारीयाँ करके मार देते हैं और सारे जहान में यह बात पहले से प्रगट कर देते हैं कि हैजा वगैरा की बीमारी जगह-२ होवेगी और हजारों आदमियों को काल का बहाना करके और काल डालके मार देते हैं. गरज कि जिस तरह से यह बनिये संसार को मरवाना चाहते हैं तो राक्षसी पाप से पहले बुद्धि भ्रष्ट कर देते हैं और फिर आपस में लड़ाकर के मार देते हैं और जो कि हिन्दुस्तान में हिन्दू - मुसलमान की औलाद है उन्होंको यह बनिये दूसरी बादशाहत को लाके अपने राक्षसी पाप से अकल खराब करके मरवा देंगे; सो इस बात को कुल जहान के लोग जानते हैं, बलके दिन-२ अपनी आँखों से देखते ही जाते हैं तो भी ख्याल नहीं करते हैं कि अब इससे भी ज्यादा खराब और नाजुक वक्त आवेगा, जो सौ कोस जमीन के ऊपर

जाकर के एक गाँव बसा हुआ मिलेगा, परन्तु इस जमाने में तो कोस दो कोस पर ही गाँव आ जाता है परन्तु खराब जमाना आने पर तो सो कोस के ऊपर बसा हुआ गाँव आवेगा और इसी तरह पर शहरों का और गाँवों का बुरा हाल करेंगे. सो यह बात तो पहले से बनियों ने चला दी है और नाम फकीरों का और साधु लोगों का जाहिर करते हैं कि फलाने साधु ने और फकीर ने यह वचन कहा है, सो सच्चा है, सो जिस तरह से कि दुनिया को सपना होता है उसी तरह फकीरों को भी सपना होता है और कुछ का कुछ दिखाई देता है और फकीर उस सपने को परमेश्वर की कुदरत जानते हैं कि जैसा सपना देखते हैं वैसा ही हो जाता है, परन्तु यह ख्याल दुनिया में कोई भी साहब नहीं करते हैं कि बनियों के घर का राक्षसी पाप है जिससे हमको जागते में और सोते में ऐसे-२ सपने नजर आते हैं और यह परमेश्वरकी कुदरत नहीं है; सो इस बात का ख्याल फकीर अतीत भी नहीं

करते कि जैसा रावण ने रखेश्वरों को दुनिया में बुरा होने का सुझाया था जब रखेश्वर लोग भी यह जानते थे कि बुरा होने का हाल हमको मालिक ने सुझाया है, परन्तु रावण के पाप की उनको भी खबर नहीं थी. सो खबर न होने की यह वजह हैं कि पहले राक्षसी पाप से अकल खराब कर देते हैं जिससे फिर कुछ नहीं समझने देते हैं परन्तु राक्षस विद्या केचलानेवाले दुनिया दिखाने केलिए और फकीरों वगैरा के दिखाने केलिए भक्ति करते हैं, सो रखेश्वरों के दिखाने के वास्ते रावण भी भक्ति करता था सो रखेश्वर लोग और शिवजी सरीखे भूल गये थे, परन्तु राक्षसी पाप अपने भाई-बेटों से कराता था लेकिन दुनिया के लोगों से छाने कराता था कि जहाँ पर कोई पंखेरू तक नहीं जा सकता था, तो आदमी की तो क्या ताकत थी कि जो वहाँ पर जा सकता? क्योंकि जब कुछ हाल मालूम नहीं था तो फिर कहाँ पर जावे. अगरचे मालूम होवे तो यह भी यकीन किया जावे कि दरियाफ्त

करते हुए चले जावेंगे, परन्तु मालूम नहीं; यह तो जब शनिचरजी महाराज को रावण ने समामुख होकर दुखी किया और कलपाया जब शनिचरजी ने दुनिया में रावण के राक्षसी पाप को जाहिर किया कि रावण गुप्ती पाप कराता है उसकी तलाश करनी चाहिए, अलावा इसके रावण ने राक्षसी वेद और राक्षसी वेद की किताबें और टीपणा वगैरा चला दिये थे और टीपणों को रखेश्वर लोग संसार में बांचते फिरते थे, सो उनकी तलाश करो, अगर तलाश न करोगे तो यह सब जहान को गारत कर देंगे परन्तु रावण के जाल की खबर राजा बादशाहों को हुई तो उन्होंने उसी वक्त अपनी रैयत से सलाह करके बड़ी भारी फौज तैयार की और अपनी फौज के वसीले से और जोर से रावणको रावण के भाई बेटों समेत और मय फौज वगैरा के गिरफ्तार कर लिया; जब रावण के भाई विभीषण को बड़ी भारी शरमिन्दगी हुई कि जो निहायत

दरजे की शरम और आबरू रखता था, इससे विभीषण ने अपने बड़े भाई काजाल कुल जहान के लोगों पर जाहिर कर दिया कि जो रावण ने राक्षसी विद्या का पाप चलाया था, मगर पेशतर लंका जाहिर नहीं थी, 'पोशीदा' थी; परन्तु विभीषण के बताने से और शनिचर के कहने से संसारमें जाहिर हुई हैं, जिसका हाल साफतौर पर किताबों से साबित होता है परन्तु जब तक कोई भी लंका का नाम नहीं जानते थे, लेकिन रावण के भाई बेटे और उनकी औलाद जानती थी और किसी को भी खबर नहीं थी क्योंकि रावण राक्षस विद्या का पाप लंका में करता था और मय कबीले के और मय भाई बेटों अपने के लंका में रहता था इससे उनकी औलाद भी अपने बुजुर्गों के मुवाफिक ही काम करते थे क्योंकि जैसा राक्षसी पाप चलाया था, उसी तरह से उनके भाई बेटे भी कराते थे, परन्तु जबकि उनके पाप को संसार ने एक दिल होकर छोड़ा दिया तो कुछ दिन गुजरने के बाद हरनाकुश

पोशीदा = किसी प्रकार के आडंबर के पीछे

वगैरा ने भी तरह-२ से राक्षसी पाप चलाया था जिसका हाल साफ तौर से ऊपर लिखा गया, उसी तरह अब इन बनियों ने भी बलराजा के बाद से राक्षसी पाप चलाया है और सबकी अकलों को राक्षसी पाप से खराब कर दिया है और इन बनियों का गिरोह हिन्दुस्तान में से रावण की तरह से पाप कराने को निकला है, जबसे बराबर दुनिया के नाम का पाप करा रहे हैं जिसकी खबर दुनिया को बिलकुल नहीं है; परन्तु इस कदर अलबत्ता मालूम है कि इन बनियों ने राक्षसी पाप चलाया था उस जमाने में बादशाह ने ''जैन धर्म के मंदिर'' गिरवाये थे जिसका अब तक सबूत मौजूद हैं बल्कि इसका हाल तवारिखों से जाहिर होता हैं कि जिस कदर मंदिर के अन्दर पुतलियाँ थी उनकी नाकें तक काट ली थी, इससे उनकी सूरतें बिलकुल बदल गई थी. सो सब संसार के लोग जानते हैं, परन्तु मंदिरों का गिरवाना और पुतलियों की नाकों का काटना इस वजह से हुआ था कि इन सौदागर महाजनान ने राक्षस

विद्या का पाप चलाया था, इससे मंदिरों को और मंदिरों की पुतलियों को बादशाह ने तुड़वाया था, परन्तु सौदागर महाजनान अपने फरेबी हीले से कब बाज आते हैं बल्कि यह तो उसी तरह से राक्षसी पाप चला रहे हैं जबसे अब तक किसी को भी इनके राक्षसी पाप की खबर नहीं है; परंतु अब मुझको राक्षसी पाप से इन बनियों ने दुखी किया हैं जब मुझको इनके राक्षसी पाप की खबर पड़ी है, जिससे मैं इन बनियों के राक्षसी पाप के दफे कराने के लिए कोशिश कर रहा हूँ सो तुम सब संसार के आदमियों और राजा- बादशाहों एकदिल होकर इस काफिर विद्या को छोड़ाओ, जब तुम्हारी औलाद बचेगी और पहले इन बनियों ने राक्षसी पाप चलाया था, सो जब बादशाह को खबर पड़ी थी तो बादशाह ने इन बनियों को सजायें दी थी, जब सच्च-२ बोलकर अपना पाप बता दिया और पाप को छोड़ दिया और आयन्दा के वास्ते यह इकरार हाथ जोड़ के और कसमें खाकर

किया था,कि "ऐ बादशाह! अब हम सौदागरान से दुनियां के नाम का पाप नहीं होगा और अबके कसूर को अपना बाल-बच्चा जान के माफ करो और छोड़ दो." इसी तरह से बादशाह ने सौदागरान की कसम का भरोसा करके सौदागरान को छोड़ दिया, परन्तु इन सौदागरान ने कसम का डर करके दो-तीन पीढ़ी तक तो राक्षसी पाप का करना बन्द कर दिया परन्तु इन बनियों ने अपने दिल में ऐसा ख्याल करके कि अब हम अपना राक्षसी पाप करेंगे तो अब हमारे जाल की खबर किसी को भी नहीं होगी, इससे इन बनियों ने फिर अपने राक्षसी पाप का करना शुरू कर दिया है और जबसे कि राक्षसी पाप का करना शुरू किया है जबसे संसार के लोगों को गारतकर रहे हैं. सो मैं आप लोगों के समझाने के वास्ते राक्षसी पाप का हाल लिख रहा हूँ कि यह बनिये बड़े जाली और बदकार हैं कि बादशाह से कसम धरम खाके भी बाज नहीं रहे हैं तो अब किस तरह से रह सकते हैं, सो अब तुम राजा

बादशाह इन बनियों का भरोसा न करके इनके पाप को फौरन छोड़ाओ और पहले बादशाहों की तरह से इन बनियों से कसम धरम न लोगे और न अब इनके धोके में आओगे; क्योंकि इनके कसम का कुछ भरोसा नहीं, अगर बादशाह को ऐसा मालूम होता कि बनिये अपने कसम पर न रहेंगे और हमसे ही बगावत करेंगे. अगरचे बादशाह को ऐसा मालूम होता तो इन बनियों को हरगिज-२ जिन्दा न रहने देता और न कसम का भरोसा करते, परन्तु ऐसा बनियों को नहीं जानते थे कि जैसा यह बनिये कर रहे हैं, यह सब हाल कुल जहान में प्रगट है कोई मेरे लिखने की भी जरूरत नहीं है, क्योंकि इन्होंने अपने राक्षसी पाप से तमाम जहान के लोगों की अकल ऐसी खराब कर दी है कि तुम लोगों को अपना जाल नहीं समझने देते हैं, सो अब तुम संसार के लोग अपनी अकल को दुरस्त रखके इन सौदागरान के पाप को छोड़ाओगे तो तुम्हारे बाल-बच्चों को

आराम मिलेगा, क्योंकि इन बनियों ने भी रावण की तरह से राक्षसी पाप चलाया है और रावण ने एक टापू के अन्दर एक शहर अपनी औलाद रहने के वास्ते और संसार के नाम का पाप कराने के वास्ते आबाद किया था और उस आबाद किये हुए शहर में दुनिया के नामका पाप कराता था और उसी टापू में अपनी औलाद को इस गरज से रखता था कि जो मेरी औलाद मुझको पाप करते हुए देखेगी तो फिर मेरी औलाद भी मेरे मरने के बाद दुनिया के नाम का पाप करती रहेगी, सो बराबर दुनिया के नाम का पाप करते रहे; परन्तु जबसे कि शनिचर ने विभीषण से राक्षसी पाप का पता लगाकर संसार में जाहिर किया तो संसार के लोगों ने शनिचर के कहने को सच्चा जानकर रावण के राक्षसी पाप को दफे कराने के वास्ते बन्दोबस्त किया, परन्तु बलराजा के बाद से इन बनियों ने भी राक्षसी पाप का स्वर्ग बनाया है सो रावण की तरह से किसी टापू के ऊपर स्वर्ग

बनाया है वहाँ पर दुनिया के नाम का पाप कराते रहते हैं, जिसके हाल से मैं तुम राजा -बादशाहों के वाकिफ होने के वास्ते लिखा करता हूँ कि जिस तरह से अगले जमाने के राजा बादशाह ने इन सौदागरान के जाल को दफे करने के लिए गिरफ्तार किया था और उनसे पाप का करना छुड़ा दिया था, उसी तरह से अब तुम राजा -बादशाह इन सौदागरान के राक्षसी पाप को पकड़कर और सजायें देकर इन बनियों के पाप को छोड़ाओ, अगरचे इनके पाप को छोड़ाने में तुम राजा बादशाहों ने गफलत की तो यह बनिये अपने राक्षसी पाप से साती-आठो विलायतों के लोगों को गारत कर देंगे, क्योंकि यह सौदागर महाजनान मय अपनी औलाद के दिल्ली मण्डल से उठकर दुनिया के नाम का पाप कराने के वास्ते निकले हैं जबसे अब तक बराबर दुनिया के नाम का पाप करा रहे हैं, परन्तु पाप करने वाले बनिये हिन्दुस्तान के बनियों से मिले हुए हैं

कि जहाँ पर दुनिया के नाम का पाप कराते हैं, वहाँ पर हिन्दुस्तान के बनिये उनके वास्ते हमेशा खरच भेजते हैं, परन्तु "बांनी-मु-बांनी यह हिन्दुस्तान के बनिये हैं" क्योंकि यह जिस कदर पाप करने के लिए हुकम लिखकर भेजते हैं वो उसी कदर 'बमोजिब' हुकम के तामील करते हैं, क्योंकि वो पाप के करने वाले बनिये इन हिन्दुस्तानी बनियों के नौकर हैं, सो जैसा कि हुकम यह बनिये देते हैं वैसा ही वो करते हैं और वो पाप करने वाले वहीं पर रहते हैं; और रात-दिन दुनिया के नाम का पाप करते हैं; सो "हिन्दुस्तान के बनियों को पाप करने की जगह मालूम है सो इन बनियों को सजा वगैरा दी जावे और दरियाफ्त किया जावे तो यह बनिये सख्ती के सबब से पाप करने की जगह को बतला देवेंगे" और बाद मालूम होने पाप की जगह का उस जगह का निशान ही मिटा देना चाहिए और पाप को इन बनियों से छुड़ा देना चाहिए, तो फिर वही जमाना

हो जावे कि जैसा पहले था कि जो गरीब शख्स जग कर लेता था, उसी तरह से इन बनियों का पाप छोड़ा दिया जावे तो इस जमाने के गरीब गुरबा भी पहले जमाने की तरह से जग कर लिया करेंगे; क्योंकि पहले मुझको भी इनके जाल की खबर नहीं थी परन्तु जबसे मुझको इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से कल पाया है इससे मुझको इन बनियों के राक्षसी पाप की खबर पड़ी है, कि यह तमाम जहान के बच्चे गारत करने के लिए यह राक्षसी पाप चलाया है, इससे मैंने तमाम जहान के बच्चे बचने के लिए यह काम अपने ऊपर उठाया है कि यह सौदागर महाजनान तमाम जहान के बच्चे मारने की गरज से राक्षसी पाप कर रहे हैं और कच्ची उमर में मार देते हैं, इससे मैंने तमाम जहान के औलाद को बचाने के वास्ते यह काम अपने सिर पर उठाया है और दिन-२ तुम लोगों को इनके जालों से वाकिफ करता फिरता हूँ और "जो कोई बात, किताब के

पढ़ने से तुम्हारे समझ में ना आवे या मेरे मुलाजिम या मुन्शी के समझाने से समझ में न आवे कि जो मैं शहर-२ में मुलाजिम करके भेजूंगा तो उसकी दलील तुम संसार के लोगों और राजा बादशाहों मुझको बुलवाकर कहो याने पूछो और समझो या मुझको अपने पास बुला लो तो मैं तुम लोगों को इन सौदागरान के जाल से वाकिफ करके अच्छी तरह से समझा दूँ'' कि जिस तरह से इन्द्रजाल का जाल चलाया है और इसी जाल से बुद्धि भ्रष्ट की है परन्तु अव्वल तो राक्षसी पाप राजा रावण ने और हरनाकुश और कारून बादशाह ने चलाया था परन्तु जबकि रावण के भाई विभीषण को रावण के राक्षसी पाप की खबर हुई तो विभीषण ने इस बात का ख्याल करके कसम खाई किजो दुनिया के नामका पाप हो रहा है वोह मैं नहीं होने दूँगा, चुनांचे विभीषण ने कसम खाई हुई का लिहाज करके अपने भाई रावण को दुनिया के

नाम का पाप करने से रोक दिया और कसम को विभीषण ने कायम रखा और अपनी जिन्दगी में विभीषण ने, अपनी औलाद की जिन्दगी में, रावण का राक्षसी पाप नहीं चलने दिया और कसम खाई हुई का असर विभीषण ने कुल जहान में जाहिर कर दिया कि जो हम और तुम और सब संसार के लोग विभीषण का हाल अच्छी तरह से जानते हैं कि असल में रावण का राक्षसी पाप विभीषण के बंद कराने से ही बन्द हुआ है और जबसे रावण का राक्षसी पाप फिर नहीं चला है परन्तु बल राजा के बाद से इन सौदागर महाजनान ने ऐसा इन्द्रजाल का जाल चलाया है. हालांकि यह बनिये जादू करने के सबब से कई पकड़े भी गये हैं और सजा भी पाई है और कितने ही दफे धरम -ईमान की कसम और गाय-सुवर की कसमें खाई हैं, सो उस वक्त तो मारे डर के इन सौदागरान ने अगले बादशाहों के सामने इस इन्द्रजाल के जाल की, कि जो दुनिया के नामका, कि जहाँ चौरासी लाख कुण्डियाँ

नारगी की बनाई हुई हैं सो उन कुंण्डियों के ऊपर दुनिया के नाम का पाप कराते हैं सो जबकि इन सौदागरान के जाल को बादशाह ने पकड़ा और महाजनान को तकलीफ दी तो उन्होंने उन कुण्डियों के ऊपर कि जहाँ दुनिया के नाम का पाप कराते थे, बंद कर दिया; परन्तु यह सौदागर महाजनान ऐसे बदमाश हैं कि जहाँ पीढ़ी दो पीढ़ी गुजरी और इन्होंने अपना इन्द्रजाली जाल करना शुरू किया, चुनांचे यह सौदागर महाजन दुनिया के नाम का पाप बराबर करा रहे हैं, परन्तु राजा बादशाहों को और संसार के लोगों को इन सौदागरान के जाल की बिलकुल खबर नहीं है कि दुनिया में क्या हो रहा है और क्या नहीं हो रहा है? परन्तु मुझको तो इन बनियों के जाल की अब खबर पड़ी है इससे मैं तुमको और सब संसार को इन बनियों के जाल से वाकिफ करता हूँ कि जो तुम सब संसार के लोग इन सौदागरान को तकलीफ न दोगे और सजा देकर दरीयाफ्त हाल न करोगे,

जब तक यह बनिये अपने राक्षसी पाप को हरगिज नहीं छोड़ेंगे. सो इनके पाप को छोड़ाने में पूरे तौर से कोशिश करके छोड़ाओ जबकि पाप करना छूट जावेगा जब तुमको और तुम्हारी औलाद को आराम मिलेगा और कुल जहान में अमन-अमान हो जावेगा और इन बनियों से यह भी दरियाफ्त करो कि जो तीन लोक की जातों को यह हिन्दुस्तानी बनिये स्वर्ग और नरक की कुण्डियाँ कहा करते हैं कि वहाँ पर चौरासी लाख कुण्डियाँ हैं औरजमराज चौरासी लाख जीवा जून को सजा देते हैं; सो भाई मेरे हो, स्वर्ग और नर्क तो यहजमीन माता ही हैं वहाँ पर कुछ भी नहीं है और जोकि यह बनिये बताते हैं वो बनियों के घर का राक्षसी पाप है और हम संसार के लोगों को इन बनियों ने भुला रखा है और जहाँ पर कि यह स्वर्ग और नरक बहका करके बताते हैं उस जगह को इन बनियों से दरियाफ्त करो, क्योंकि जहाँ पर यह बनिये 'दोजख'और 'बहिश्त' बताते हैं; वही इनके

घर का जाल है; और यह जो कहते हैं कि फलानी जगह पर राध लहू की कुण्डियाँ हैं और लोहो के थम्ब हैं सो वो हर वक्त गरम रहते हैं और जब कोई बुरे कर्म करते हैं तो उनको नर्क नसीब होता है और जो थम्बों से बाँधा जाता है, सो यह तो इन सौदागरान का जाल है और स्वर्ग-नर्क तो यह जमीन माता ही हैं और जहाँ यह बनिये और दुनिया बताते हैं. सो दुनिया को तो कुछ दोष नहीं क्योंकि दुनिया तो सुन कर कहती है वो बनियों के पाप करने की जगह है; सो इन सौदागरान से, साथ कोशिश के तकलीफ देकर दरियाफ्त करो कि जहाँ पर तुम स्वर्ग-नर्क बताते हो वो हम सब राजा बादशाहों को दिखाओ, क्योंकि तुम बनियों ने हमको अपने राक्षसी पाप से भुला रखा है इससे हम संसार के लोग तुम बनियों के जाल से बहके- २ और भूले -२ फिरते हैं. सो यह तुम बनियों का राक्षसी पाप है कि जिस तरह से रावण ने संसार को भुलाया था और पाप करने की जगह को स्वर्ग और नर्क, दुनिया को

भुलाने के लिए कहा करता था और सबकी अकल को राक्षसी पाप से कैद कर दिया था, उसी तरह से तुम बनियों ने भी अपने राक्षसी पाप से सबकी अकलों को खराब कर दिया है; इससे हम संसार के लोग तुम्हारे पाप करने की जगह को स्वर्ग ही जानते हैं मगर 'दोजख' और 'बहिश्त' यह जमीन माता ही हैं, और जोकि हिन्दू-मुसलमान किताबों को पढ़ते हैं सो यह किताबें सब बनियों के घर की चलाई हुई हैं सो इनके जाल की खबर हमको तो अब तक नहीं थी परन्तु अब हमको साध अनोपदास ने हमारे बाल-बच्चों की जिन्दगी के वास्ते तुम्हारे जाल से वाकिफ किया है जिससे तुम्हारा जाल हमको मालूम हुआ है, नहीं तो अब तक हम सब जहान के लोग तुम्हारे जालों से बेखबर थे, परन्तु 'बाबा' हमारे बच्चे बचने की गर्ज से और सतजग होने की वजह से तुम्हारे पाप को प्रगट किया है कि जो तुम बनिये रात-दिन दुनिया के नाम का पाप किसी टापू के ऊपर कराते रहते हो, उसको

दिखाओ; अगर नहीं दिखाओगे तो हम तुमको और तुम्हारे बाल बच्चों को जान से मार देंगे, जबकि इन सौदागरान को ऐसे-२ डर दिए जाते हैं जब किसी कदर पाप करने की जगह को बताते हैं परन्तु कुल नहीं बताते हैं, क्योंकि यह सौदागर महाजनान बड़े जाली और फरेबी हैं. सो जब तक कि इन सौदागर महाजनान को अच्छी तरह से संसार के लोग तकलीफ नहीं देंगे जब तक यह सौदागर महाजनान हरगिज अपने फरेबी हीले से बाज नहीं आवेंगे, क्योंकि हिन्दुस्तान के बनिये उनसे मिले हुए हैं और यह जाल भी फैलाया हुआ इन सौदागर महाजनान का ही है, सो इसके छोड़ाने का बन्दोबस्त तुम संसार के लोगों जल्दी से करो ताकि तुम्हारे बाल-बच्चों को आराम मिले, क्योंकि जो सौदागर महाजनान दिल्ली मण्डल से उठकर पाप करने को रावण की तरह से किसी टापू के ऊपर गये हुए हैं, सो वो वहाँ पर दुनियाके नाम का रात-दिन पाप कराते रहते हैं

परन्तु पाप करने वाले बनियों को पाप करने की जगह मालूम है कि जो बलराजा के बाद से अपने कबीले समेत पाप करने के वास्ते निकले हैं, परन्तु यह सौदागर भी उसी तरह से चल रहे हैं कि जिस तरह से रावण लंका में गुप्ती पाप कराता था, उसी तरह से यह बनिये भी गुप्ती पाप करा रहे हैं; परन्तु इन सौदागरान के गुप्ती पाप करने की जगह किसी राजा -बादशाह को और साधु फकीरों को और सातों-आठों विलायतके लोगों को मालूम नहीं है, न अंग्रेजों को इनके जाल की खबर है और जहाँ-२ कि इनकी दुकानें पहुँच गई हैं, वहाँ पर इन्होंने अपनी हिकमत से जाल करके खोल दी हैं परन्तु जहाँ पर कि यह बनिये जाते हैं तो अपना स्वरूप बदल कर जाते हैं, सो यह या तो फकीरी के भेष में या गरीबी के भेष में, होकर जाते हैं या अमीर बनके जाते हैं और शहरों में फिरते हैं कि जिस तरह से रावण स्वरूप बदल-२ के मुलकों-२ में फिरता था और अपना राक्षसी जाल

फैलाता फिरता था, उसी तरह से यह सौदागर महाजनान तरह-२ के भेष बदलकर मुलकों में जाते हैं और अपना जाल रावण की तरह से फैलाते फिरते हैं. सो किसी को यह बनिये अपने राक्षसी पाप की खबर नहीं पड़ने देते हैं कि जिसकी तुमको खबर पड़ती कि जो इन सौदागरान ने राक्षसी पाप चलाया है मगर यह अच्छी तरह से समझना चाहिए कि इन बनियों ने रावण की तरह से संसार के बच्चे गारत करने के लिए यह राक्षसी पाप चलाया है और जाल की खबर न होने का यह सबब है कि इन्होंने अपने राक्षसी पाप से पहले ही सबकी अकल खराब करदी है; सो इस वजह से खराब की है कि कोई भी हमारे जाल को और फरेब को न पहचान सके और जो कि इन बनियों ने गुप्ती पाप का स्वर्ग बनाया है उसको अपने कब्जे में रखते हैं और अपनी न्यात बिरादरी के हाथों से दुनिया के नाम का पाप कराते हैं कि जिस तरह से रावण अपने कुल के हाथों से पाप कराता था, उसी तरह से

बलराजा के बाद से इन सौदागर महाजनान ने दुनिया के नामका पाप कराना शुरू किया है और जो कि पाप करा रहे हैं वो वहीं पर रहते हैं और उसी जगह उनके बाल बच्चे रहते हैं, क्योंकि वो मय कबीले के हिन्दुस्तान से उठकर गये हैं और जिस तरह से कि हिन्दुस्तान और दूसरी विलायत के लोग खेती-बाड़ी का काम करते हैं उसी तरह से उनके बाल-बच्चे भी सीख-२ के खेती-बाड़ी का काम करतेहैं और कमाई करके खाते हैं और जो काम करना नहीं जानते हैं वो उसको सीखते हैं उसी तरह से पाप करने वालों के बच्चे अपने माँ-बापों से दुनिया के नामका पाप करना सीखते हैं, सो इन बनियों के घराने में गुप्ती पाप की विद्या पीढ़ी-दर-पीढ़ी सीखते चले आते हैं. इस वजह से यह महाजनान अपने कबीले समेत और औलाद समेत दुनिया के नामका पाप करने के वास्ते गये हैं और कबीले और औलाद को इस गर्ज से साथ ले गये हैं कि जो हमारी औलाद हमको

पाप करते हुए देखेगी तो हमारी औलाद हमारे घर के काम को सीखकर बाद हमारे गुजरने के बराबर काम करते रहेंगे और अपने खानदान में यह काम हमेशा रहता आवेगा, क्योंकि यह एक किसम का पाप थोड़ा ही हैं! यह तो तरह-२ का है, इससे इन हिन्दुस्तानी बनियों ने उन पाप करने वाले बनियों को कबीले समेत दिल्ली मण्डल से खर्च देकर भेजा है. सो खर्च अभी तक भेजते है कि जिस तरह से अपने भाई-बेटों को रावण ने कबीले समेत भेजा था और यह कह दिया था कि लंका में दुनिया के नाम का पाप अलोप कराना, सो वो रावण के कहने मोजिब दुनिया के नाम का लंका में पाप कराते थे, जिससे दुनिया की अकल और राजा -बादशाहों की अकल खराब हो गई थी, सो ऐसा ख्याल करके इन बनियों ने भी राक्षसी विद्या का पाप चलाने के लिए अपनी औलाद को बलराजा के बाद से किसी टापू पर भेज दिया है, सो वो दुनिया के नाम का पाप कर रहे हैं और जबकि रावण ने

राक्षसी पाप चलाया था तो रावण ने शनिचर को गरीब देखकर अपने राक्षसी पाप से दुखी किया था, जब शनिचर ने दिल में ख्याल करके देखा कि जो परमेश्वर की भक्ति करता है उसको सैंस (१०००) बुद्धि है, और मैं भक्ति करता हूँ सो जाल ही जाल देखता हूँ सो इसकी तलाश करनी चाहिए,क्योंकि यह जरूर कहीं न कहीं पर राक्षसी पाप हो रहा है और जब राक्षसी पाप होता है जब ही कच्ची उमर में लोग मरते हैं वरना हरगिज ना मरें. ऐसा ख्याल करके शनिचर ने विभीषण से रावण के राक्षसी पाप का पता लगाया और पता लगाकर के रावण के राक्षसी पाप से कुल संसार को वाकिफ किया, जब कुल संसार ने एक दिल होकर रावण के राक्षसी पाप को मिटाया और छोड़ाया, परन्तु जोकि रावण ने राक्षसी पाप का स्वर्ग और गुप्ती पाप का स्वर्ग बनाया था और विभीषण ने कुल संसार को बता दिया था और हाथ जोड़कर यह कहने लगे

कि मैं तो अपने कुल में राक्षस विद्या के पाप को हरगिज नहीं चलने दूँगा, सो मैं इस बारे में अपने धर्म की कसम खाता हूँ; सो विभीषण ने अपने कुल में राक्षस विद्या का पाप नहीं चलने दिया, इससे विभीषण ने मय अपनी औलाद के इस जहान में नाम सलामत रखा, कि इस जहान में हर शख्स की जबान से विभीषण का नाम नेकी केसाथ जाहिर होता है क्योंकि विभीषण ने रावण का पाप संसार के बचने की गर्ज से कुल शनिचर को बता दिया परन्तु रावण दुनिया के नाम का पाप करता था सो वो संसार को दिखाकर थोड़ा ही करता था! परन्तु जबकि रावण ने शनिचर को राक्षस विद्या के पाप से दुखी किया था जिससे शनिचर को रावण के जाल की खबर पड़ी थी, परन्तु रावण दुनिया के नाम का पाप चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर कराता था; सो जब तक रावण ने शनिचर को अपने राक्षसी पाप से दुखी नहीं किया था जब तक शनिचर को भी

खबर नहीं थी कि पाप क्या चीज है, परन्तु जब कि रावण ने शनिचर के नाम का पाप कराया और शनिचर का दिल दुखाया और नारगी की कुण्डियाँ सुझाई, जब शनिचर को रावण के जाल की खबर पड़ी. और अलावा इसके रावण ने राक्षसी वेद की किताबें और टिपणा वगैरा दुनिया में चला दिये थे, उन किताबों के अन्दर नारगी का और सजा देने का और चौरासी लाख कुण्डियों का लिखा हुआ है; सो इस जाल को शनिचर ने अच्छी तरह समझा कि जो रावण शनिचर को राक्षसी पाप से सुपना वगैरा कराता था, सो शनिचर उस जाल से भी वाकिफ हो गया और वाकिफ होकर यह कहने लगा कि अब तो मुझको रावण के राक्षसी पाप की अच्छी तरह से खबर पड़ी है कि जिस कदर दुनिया के नाम का पाप रावण और मेरे नाम का पाप करता है तो यह सबब जादू का है क्योंकि यह जिस जगह पर पाप कराते हैं उस जगह को जादू के जोर से मालूम नहीं होने देते हैं

और दूसरी जगह सुझा देते हैं, कि फलानी जगह पर राक्षसी राक्षस विद्या का पाप हो रहा है और खास जगह पाप की जाहिर नहीं होने देते हैं. सो यह पाप करने की वजह है कि कुछ का कुछ सुझा देते हैं क्योंकि इस राक्षसी विद्या का हाल अगले जमाने केसती लोग भी नहीं जानते थे, क्योंकि उनकी अकल राक्षसी पाप से खराब कर दी थी; जब संसार के लोगों ने ऐका करके रावण के ऊपर चढ़ाई की और चढ़ाई करके रावण को मारा तो रावण का भाई विभीषण संसार की चढ़ाई को देख करके और रावण के मारे जाने का हाल सुनके और संसार का डर करके, रावण के राक्षसी पाप को छोड़कर बाहर निकला, जब शनिचर ने रावण से दरियाफ्त किया कि तुम चौरासी लाख जीवाजून दुनिया के नाम से कलपाते हो और तकलीफ देते हो, सो रावण छल करके मने करने लगा तो शनिचर ने रावण से यह कहा कि मने करके कुछ भी नहीं होता है, तू सच-२ मुझको अपने जाल से वाकिफ कर दे

और बता दे, नहीं तो मैं तुझको और तेरी औलाद को संसार के हाथों से मरवा दूंगा; तो भी रावण ने अपना राक्षसी पाप का जाल नहीं बताया. जब शनिचरजी महाराज ने रामचन्द्रजी महाराज से कहा कि रावण दुनिया के नाम का और राजा बादशाहों के नाम का पाप चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर करता है जिसको तमाम दुनिया स्वर्ग बोलती है, सो 'महाराज' यह स्वर्ग नहीं है और जो चौरासी लाख कुण्डियाँ हैं वो रावण के राक्षसी पाप करने की जगह है. सो रावण से दरियाफ्त करो तो पाप छोड़ाने की तज़वीज की जावे, क्योंकि अपन लोगों की बुद्धि रावण के राक्षसी पाप में कैद हो रही है जिससे रावण की चलाई हुई किताबों को और टीपणों को सच्चा समझ रहे हैं और जिन किताबों में चौरासी लाख कुण्डियाँ राध लहू की लिखी हुई हैं वहाँ पर चौरासी लाख जीवाजून को दुख देते हैं; जब वो पाप दुनिया को लगता है. सो यह किताबें रावण के जाल की चलाई हुई हैं और रावण जो

कि गुप्ती पाप कराता था उसका अब तक संसार के लोग बिखान कर रहे हैं जम देवता सजा देते हैं, सो इन बातों की किताबें तुम राजा बादशाह और रैयत वगैरा पढ़ ही रहे हो, जिससे रावण के राक्षसी पाप का हाल तुम लोगों को मालूम ही है, परन्तु शनिचर के कहने से सब संसार ने राक्षसी वेद की किताबों को और टीपणों को देखा तो चौरासी लाख कुण्डियाँ राध लहू की साबित हुई, जब यह कहने लगे कि यह राक्षसी वेद की किताबें तो हम कभी से पढ़ते थे और रावण के राक्षसी पाप को 'दरगाह' जानते थे और मालिक की कुदरत को और उसकी रचना को भूल गये थे, परन्तु रावण के जाल का तो हाल हमको अब मालूम हुआ है कि यह मालिक की कुदरत नहीं है, यह तो रावण के घर का जाल है. जब रामचंद्रजी ने रावण के जाल का हाल देखकर अपने दिल में बहुत रंज किया और फिकर से यह कहने लगे कि हम तो अब तक रावण के भ्रमजाल में कैद हो रहे थे इससे

रावण का जाल मालूम नहीं होता था, सो वेद की किताबों में लिखा है सो सब संसार के लोग भी कहते हैं कि रावण ने जाल से हम सब संसार के लोगों को मालिक ही भुला दिया था, सो किताबों से साबित है, जब रामचंद्रजी महाराज ने अपने दिल में खयाल करके देखा की दुनिया तो रावण के जाल से अन्धी हो रही है, कि इस कदर पाप हो रहा है तो भी नहीं समझते हैं जब रामचन्द्रजी महाराज ने सोचकर तमाम दुनिया को और राजा बादशाहों को रावण के राक्षसी पाप से वाकिफ किया, जब राजा बादशाहों ने मय रैयत के एक दिल होकर बड़ी भारी फौज बनाई और रावण के उपर चढ़ाई करके रावण के राक्षसी विद्या को छोड़ाया जब दुनिया की औलाद सलामत रही, क्योंकि राजा रावण के बुजुर्ग राक्षसी पाप को पीढ़ी-दर-पीढ़ी करते थे, इससे रावण ने भी राक्षसी पाप को अपने बुजुर्गों से सीखा और सीख करके राक्षस विद्या अपने बुजुर्गों से ज्यादा चलाई इस वजह से पकड़े गये,

जब संसार के लोगों ने हेत करके रावण के राक्षसी पाप को छोड़ाया, सो सच जानना और खिलाफ ना समझना और हरनाकुश राजा ने और कंश राजा ने और कारून बादशाह ने जो राक्षस विद्या रावण की तरह से चलाई थी तो उन्होंने एक मरतबा ही चलाई थी, परन्तु जब संसार के लोगों को खबर पड़ी जब उन्होंने एक दिल होकर उनके राक्षस विद्या को छोड़ाई परन्तु उन्होंके खानदान में एक-दो भक्त थे, सो उन्होंने बाद हो जाने दफे, राक्षस विद्या के, फिर नहीं होने दी; क्योंकि जो फिर राक्षस विद्या करेंगे और संसार को खबर पड़ेगी तो मय औलाद के मेरी भी जान निकाल देंगे. इस वजह से भक्त लोगों ने संसार के लोगों का डर करके अपने खानदान में राक्षस विद्या का पाप नहीं होने दिया और ऐसे -२ भक्त लोग रावण वगैरा के खानदान में हो गुजरे हैं कि जो उन्होंने अपनी भक्ति का डर करके और संसार के लोगों का डर करके अपने जमाने में पाप को नहीं

होने दिया, परन्तु बलराजा के बाद से इन बनियों ने राक्षस विद्या का पाप फैला करके सबकी अकल को फेर करके खराब कर दिया है जिससे इनके जाल की खबर किसी के कान में नहीं पड़ी है और ना मालूम हुई है अलबत्ता एक मरतबे पहले जमाने के बादशाह ने अपनी अकलमन्दी से इन बनियों का राक्षसी पाप पकड़ा था, जब उन बनियों से दरियाफ्त किया गया तो उन्होंने बिलकुल अपना पाप करना नहीं बताया, जब बादशाह ने इन बनियों को सजा दी और इन बनियों के मन्दिरों को गिरवाया और पुतलियों की नाक और कान कटवाया, जब यह महाजन अपने दिल में यह ख्याल करके आये कि बादशाह को हम अपना पाप करना नहीं बतावेंगे तो यह हमको जरूर ज्यादा सजा देंगे, क्योंकि अभी तो इन्होंने हमारे धर्म के मंदिरों पर हमला किया है इससे किसी कदर बता देना चाहिए और कसूर की माफी माँग लेनी चाहिए तो अपनी औलाद को किसी तरह का दुख न होवे,

और जब यह बात दब जावेगी तो फिर चला देंगे और अबके बिलकुल खबर नहीं पड़ने देंगे. सो ऐसा खयाल करके इन बनियों ने राजा –बादशाह के आगे आकर कसम खाई, कि हमको छोड़ दो, अब हम दुनिया के नाम का पाप नहीं करेंगे, जब राजा – बादशाहों ने मय रैयत के इन बनियों की कसम का ऐतबार करके इन बनियों को छोड़ दिया; परन्तु इन सौदागर महाजनान ने छूटते ही कुछ अरसा गुजरने के बाद फिर राक्षस विद्या का पाप चला दिया, सो इन बदकारों का कभी भरोसा न करना चाहिए, क्योंकि यह ऐसे बेईमान शख्स हैं कि जब इन्होंको सजा मिलती है जब तो यह किसी कदर पाप को छोड़ देते हैं परन्तु कुल नहीं छोड़ते हैं और जब पीढ़ी दो पीढ़ी गुजर जाती हैं, जब फिर दुनिया के नाम का पाप करना शुरू कर देते हैं, सो इस राक्षसी पाप से जमीन माता दुख पाती हैं. सो वेद पुराणों में भी लिखा है और सब संसार के लोग भी कहते हैं कि जमीन माता के नामका

राक्षसी विद्या का पाप कराते हैं जिससे जमीन माता दुख पाती हैं और पाप की वजह से रिजक वगैरा भी पूरा नहीं होता है और न पूरी-पूरी वनस्पति होती है, इससे तमाम दुनिया दुख पाती है, बल्कि जमीन माता भी इस राक्षसी विद्या के पाप से दुबली हो गई है और उसके शरीर की चरबी भी गल गई है; सो चरबी जमीन के शरीर में इन चीजों को कहते हैं कि जिसको फी जमाना चाँदी-सोने की खानें बोलते हैं वोह जमीन माता के शरीर की चरबी है परन्तु राक्षस विद्या का पाप चलाया है, उस पाप से जमीन माता के शरीर की चरबी गल गई है; और पहले राजा रावण ने राक्षस विद्या का पाप चलाया था, तो किसी ने एक पीढ़ी तक चलाया था और किसी ने दो पीढ़ी तक चलाया था परन्तु जबकि राक्षस विद्या की खबर दुनिया को पड़ी जब दुनिया ने उन्होको सजा दी और सजा देकर उनकी राक्षस विद्या को छोड़ा दिया, जबसे जमीन माता दुबली नहीं हुई; और रावण के जमाने तक चाँदी-सोनेकी

खानें मौजूद थी सो रावण ने तो संसार के लोगों की अकल थोड़ी भ्रष्ट की थी तो जब पाप कराता था जब दुनिया के लोग फौरन समझ जाते थे और जबकि दुनिया के नाम का पाप कराता था और दुनिया की अकल थोडी खराब हो जाती थी, तो दुनियाँ के लोग उसी वक्त समझ लेते थे कि कहीं राक्षसी पाप हम लोगों के नाम का हो रहा है जिससे हमारी अकल फिरी हुई है, तो संसार के लोगों ने अपनी अकल को खराब देखकर और एक दिल होकर फौरन राक्षसी पाप को छोड़ा दिया परन्तु इन सौदागरान ने भी बल राजा के बाद से राक्षस विद्या का पाप चलाया है. सो यह महाजन लोग तो अपने पाप को समझते हैं कि राक्षसी पाप से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, सो ऐसा समझ करके इन सौदागर महाजनान ने रावण हरनाकुश वगैरा से भी बढ़कर राक्षस विद्या का पाप चलाया है और साफ बुद्धि भ्रष्ट कर दी है और जमीन के ऊपर जो खानें थी वो जमीन के

शरीर की चरबी थी, परन्तु अब जमीन माता बिलकुल दुबली हो गई हैं और बलराजा के बाद से राक्षस विद्या चल रही है और बलराजा को मरे हुए का हाल न मालूम कि किस कदर अरसा हुआ जब से यह बनिये पाप करा रहे हैं और रावण हरनाकुश वगैरा तो पाप करने से डरते थे कि जो हम ज्यादा पाप करावेंगे तो हमारी औलाद को लगेगा, इससे उन्होंने थोडी २ बुद्धि भ्रष्ट करी थी और इनके जमाने मे तो ऐसी बुद्धि कर दी है कि जमीन माता के शरीर की भी पहचान नहीं रही है. इससे मैं बार- बार लिखता हूँ कि इस जमाने के लोगों की ऐसी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है कि जो आप लोग समझाने से भी नहीं समझते हो, सो इस बात का खयाल करना चाहिए कि जब राक्षसी विद्या का पाप छूट जावेगा जब जमीन माता फिर ताजा हो जावेगी और जो कि चाँदी-सोने की खाने गल गई हैं वो पीछे प्रगट हो जावेगी और जिस तरह

से कि आदमी बीमार होता है और फिर उसको आराम हो जाता है जब वो शख्स खाना पीना अच्छी तरह से खाता पीता है तो फिर मोटा ताजा हो जाता है, सो जबकि यह महाजन लोग जमीन माता के नाम का पाप नहीं करावेंगे तो जमीन माता की बीमारी हट जावेगी और होले - २ जमीन माता ताजा हो जावेगी, जब धान वगैरा भी बगैर बोये हुए के पैदा होने लगेगा और चाँदी-सोने की खाने भी संसार के लोगों को दिखने लगेगी और जब दुनिया के नामका पाप करना छोड़ देंगे जब राजा - बादशाह को रैयत देख के खुश होगी और रैयत को देखके राजा -बादशाह खुश होंगे और सब संसार के लोग मोहब्बत से रहेंगे और कच्ची उमर में नही मरेंगे और पूरी उमर पाकर मरेंगे और जब तक कि जिन्दा रहेंगे किसी किसम की बीमारी नहीं पावेंगे, सो सब हिन्दू-मुसलमान, अंग्रेज और सातो आठो विलायतों के बादशाहों को इस

बात का ख्याल करना चाहिए कि इस तरह का हाल दुनिया में बरतेगा, जब यह जानना चाहिए कि महाजनान ने राक्षसी विद्या छोड़ दी है और "पहले के जमाने में राक्षस विद्या नहीं थी जब दुनिया में सतजग था, जब दुनिया में सिंह और बकरी शामिल चरती थी ऐसा सम्प था, सो जब क्या मालिक दूसरा था? और अब क्या मालिक और ही है?" परन्तु मालिक तो वो का वही है और मालिक ऐसा नहीं है कि जो गरीबों की अकल खराब कर देवे, लेकिन मालिक तो सबका परवरश करने वाला है और किसी की बुद्धि भ्रष्ट नहीं करता है और मालिक तो एक ही है, दो या तीन नहीं हैं; यह तो जाल से बहका रखा है कि इस तरह से हम जाल करेंगे तो किसी को हमारा राक्षसी पाप मालूम नहीं होगा, इससे राक्षस विद्या का पाप चलाया है और जब की राक्षस विद्या का पाप चलाते हैं जब पहले सबकी अकलों को पाप से खराब कर देते हैं, परन्तु मालिक के घर में तो

शेर और बकरी शामिल चरती, ऐसा हेत इरादा है; परन्तु रावण ने दुनिया के नाम का पाप चलाया था उसका नाम इन्द्रजाल रखा था, परन्तु दिन -२ दुनिया की अकल उनके राक्षसी पाप से भ्रष्ट होती जाती थी जब दुनिया के लोग यह कहते थे कि इन्द्रजाल से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और जबकि शनिचर को कलपाया जब शनिचर ने अपने दिल में समझा, कि चलाया तो पाप है और नाम इन्द्रजाल बोलते हैं; परन्तु इस तरह हरनाकुश राजा ने भी दुनिया के नाम का पाप कराया था और दुनिया ना समझने की वजह से उस पाप का नाम राक्षस विद्या रखा था कि इस राक्षस विद्या के नाम से ही हमारा पाप दुनियां में जाहिर नहीं होगा, क्योंकि जिस तरह से रावण ने दुनिया के नाम का और जमीन माता के नाम का पाप चलाया था और नाम इन्द्रजाल रक्खा था कि किसी पर मेरे राक्षसी पाप का नाम जाहिर नहीं होगा उसी

तरह हरनाकुश राजा ने और कंश राजा ने और कारून बादशाह वगैरा ने भी राक्षस विद्या का पाप चलाया था और नाम बदल करके रखा था, कि जो मैं नाम बदलकर रखूँगा तो मेरा नाम किसी पर जाहिर नहीं होगा, इससे उन लोगों ने राक्षस विद्या का पाप चलाया था और दुनियाके नाम से कराते थे कि जिस तरह से रावण दुनिया के नाम का और जमीन माता के नाम का पाप कराता था, इसी तरह से हरनाकुश ने भी राक्षस विद्या का पाप चलाया था, तो हरनाकुश ने इन्द्रजाल का नाम बदलकर राक्षस विद्या का नाम रखा और दिल में यह सोचा कि मैं इन्द्रजाल के नाम से, दुनिया के नाम का या राजा बादशाहों के नाम का पाप कराऊँगा तो दुनिया फौरन समझ जावेगी और एक दिल होकर मुझको और मेरी औलाद को तमाम दुनिया जान से मार देगी, इससे हरनाकुश ने रावण के चलाए हुए इन्द्रजाल का नाम बदल कर रखा था, परन्तु पाप तो वही था कि जो

रावण करता था मगर नाम इस वजह से बदलकर रखा था कि इससे दुनिया के लोग मेरे राक्षसी पाप को नहीं समझेंगे कि राक्षस विद्या क्या चीज है? इससे हरनाकुश ने भी राक्षस विद्या का पाप दुनिया के नाम से कराना शुरू किया, परन्तु पाप वोह का वहीं रखा इसी तरह से कंश राजा ने और कारून बादशाह ने भी नाम बदल-२ कर दुनिया के नाम से पाप कराना शुरू किया था; परन्तु पाप वोह का वहीं रक्खा और उसी तरह से कारून बादशाह ने भी दुनिया के नामका पाप कराना शुरू किया और जो कि दुनिया के नामका पाप कराता था उसका नाम काफिर विद्या रखा, परन्तु नाम इस वजह से बदल कर रखा कि दुनिया हमारे पाप को नहीं समझेगी, इससे नाम बदलकर रखा और दुनिया के नामका पाप कराता था, सो उस वक्त दुनिया गुरूनानक के समझाने से पाप को समझ गई और दिन -२ वाकिफ होते गये, सो जिस कदर की दुनिया वाकिफ होती गई

उसी तरह पाप करने वालों को सजा मिलती गई, इससे पाप को छोड़ते गये; और अब उसी तरह से बलराजा के बाद से इन सौदागर महाजनान ने भी दुनियाके नाम से जीवड़ों को मारना शुरू किया है और जहाँ पर राक्षस विद्या का स्वर्ग बनाया है कि तमाम जहान के लोग चौरासी लाख कुण्डियाँ बोलते हैं वहाँ पर चौरासी लाख जीवाजून को दुख देके मारते हैं, परन्तु पाप तो वोह का वही है लेकिन इन बनियों ने पाप का नाम कलुकाल रख दिया है और यह सौदागर दुनिया के नामका पाप दिन -२ ज्यादा कराते जाते हैं, वैसे ही दुनिया की बुद्धि खराब होती जाती है जिसको दुनिया के लोग कलजग कहते हैं और दिल में यह ख्याल नहीं करते हैं कि कलजग कोई चीज थोड़ा ही है, कि इन बनियों की तरह से पहले जमाने में राक्षस विद्या का पाप चल चुका है, परंतु जिन-जिन शख्सों ने राक्षस विद्या का पाप चलाया था सो उन्होंने संसार के नासमझने की वजह से नाम बदल-२ के रखा था

कि जो हम कलजग नाम रखकर दुनिया में जाहिर करेंगे तो हमारे पाप को कोई भी नहीं समझेगा, इससे दुनिया कलजग–२ बोलती है; परन्तु यह कोई भी नहीं कहता है कि यह रावण की तरह से इन बनियों ने पाप का नाम बदल करके चलाया है, सो नहीं समझते कि यह कलुकाल बनियों के घर का पाप है और इसी पाप से लोगों की अकल कैद हो रही है कि जो ना तो पण्डित और ना साधु फकीर और ना राजा बादशाह और ना रैयत इस पाप होने के ऊपर गौर करते हैं, कि यह कलुकाल एक किस्म का पाप है कि जिसको बनियों ने सातो–आठो विलायतों का धन लेने के वास्ते चलाया है और सबकी अकलों को अपने राक्षसी पाप से भ्रष्ट कर दी है इससे जरा भी ख्याल नहीं करते, हालांकि कच्ची उमर में ही लाखों मरद औरतों और बाल–बच्चों समेत साल–ब–साल मरते जाते हैं तो संसार के लोग यह ख्याल नहीं करते कियह क्या सबब है, क्योंकि पहले जो कोई

मरता था तो पूरी उमर पाके मरता था और अब तो कम उमर में ही मर जाते हैं सो दुनिया में किसी ने राक्षसी पाप तो नहीं चलाया है? जिसकी तलाश करें और तलाश करके पाप को देखे और पाप को छोड़ावे, सो तो किसी को नहीं सूझता है कि यह कलुकाल बनियों के घर का पाप है और यह मालिक की कुदरत नहीं है; क्योंकि मालिक कच्ची उमर में किसी को नहीं मारता है जिसका सबूत वेद की किताबों में है और दुनिया में भी कहते हैं कि रावण, हरनाकुश और कंश वगैरा ने अपने राक्षसी पाप से मेह को और मौत को अपने बस में कर लिया था, इसी तरह से इन बनियों ने भी राक्षसी विद्या के पाप से मेह को और मौत को अपने बस में कर लिया है, परन्तु मौत को बस में कर लेना किसको बोलते हैं, वो यह है कि जो कोई कच्ची उमर में मरे जब यह जानना कि मौत को बस में कर लिया है. सो इस बात को अच्छी तरह से तुम संसार के लोगों को समझना चाहिए कि किसी ने

राक्षसी विद्या का पाप चलाया है, क्योंकि आगे रावण ने और हरनाकुश ने राक्षस विद्या का पाप चलाया था, तो अगले जमाने के सती लोगों ने राक्षसी पाप से दुख पा करके राक्षसी पाप को छोड़ा दिया था, जब दुनिया बची थी, नहीं तो दुनिया कभी नहीं बचती; क्योंकि पाप के करने से दुनिया का बुरा हो जाता है, इस वजह से संसार के लोगों ने तमाम जहान में एका करके राक्षसी पाप के करने वालों को सजायें देकर उस राक्षसी पाप का करना छोड़ा दिया, परन्तु तुम संसार के लोग कलजग-२ करते हो, सो इन सौदागरान के घर का राक्षसी पाप है. सो यह पाप करने वाले बनिये ही हैं सो अब इनके घर की तारीफ सुनो, कि दुनिया में इन बनियों का बिखान सब करते हैं सो सब तुम राजा बादशाह और पण्डित-फकीर और साधु-संत और गरीब- गुरबा और संसार इन बनियों के जाल को ख्याल करके देखो कि इन बनियों ने झूठ का जाल किस तरह से चलाया है कि जो बयान नहीं किया

जाता, सो आप सब साहब महेरबानी फरमाकर और जरा कान लगा करके इन बनियों के जाल का हाल सुनो कि जो दुनिया में भजन गाते हैं उसमें किस कदर झूठ का जाल चलाया है कि, पहले जमाने में जो सती लोग हुए हैं उन्होंने मालिक की भक्ति की है इससे उनका नाम दुनिया में अमर रहा है, क्योंकि मरे हुए पीछे नहीं आते हैं, सो ऐसी-२ बातें कहते हैं, यह मिसाल सुनो कि "जोवन गया न बावड़े और मरान जीवे कोय." सो यह बात सबको ही सूझती है कि मरे हुए पीछे नही आते हैं और आगे राजा रावण ने राक्षस विद्या चलाई थी और जबकि भजन गाते हैं और यह कहते हैं कि रावण के वक्त का रोना रोते हैं; और अब जो भजन गाते हैं सो अब इन बनियों का रोना रोते हैं कि पांच (५,००,००,०००) करोड़ से प्रहलाद जागेगा और सात (७,००,००,०००) करोड़ से हरिश्चंद्र, और नौ (९,००,००,०००) करोड़ से पाण्डव राजा, जेष्ठल राजा समेत जागेगा. सो यह बात दुनिया में कहते हैं

और अलावा बारह (१२,००,००,०००) करोड़ से बलराजा जागेगा, सो भी दुनिया में कहते हैं और जो कि राजपूतों में रामदेवजी भक्त हो गुजरे हैं और वोह जात के तुंवर थे, उनके बारे में भी तमाम जहान के लोग कहते हैं कि रामापीर नकलंग जागेगा, जब मरे हुए मुरदे भी जागेंगे कि मसानों में गाडे हुए हैं; सो ऐसे-२ हालात दुनिया के लोग भजनों के अन्दर गाते हैं और बांचते हैं, सो यह तो दुनिया के भुलाने के वास्ते और बहकाने को झूठ का जाल चला दिया है और दुनिया की बुद्धि भ्रष्ट कर दी है, सो दुनिया झूठ को ही सच्चा जान रही है और यह कहते हैं कि कलजग के दफे करने के वास्ते अगले जमाने के सती लोग कि जो मर गये हैं वोह पीछे जिन्दा होकर कलंकी से लड़ाई करेंगे, सो यह बात दुनिया में कहते हैं; परन्तु जिस वक्त लड़ाई के वास्ते चढ़ाई करेंगे उस वक्त रामा पीर नकलंग जागेगा और नीला घोड़ा उनके सवारी मे ंहोगा और सूरज - चन्द्रमा

उनके रकाब को पकड़ेंगे, सो यह भी दुनिया अपने मुँह से कहती है. सो तुम सब संसार के लोगों, और राजा बादशाह कान लगाके सुनो व समझो क्योंकि यह बनियों का जाल है क्योंकि सूरज-चन्द्रमा तो जमीन माता के शरीर में ज्योत हैं कि जिस तरह से अपने शरीर में ताकत की वजह से रोशनी है उसी तरह से जमीन के शरीर में चाँद और सूरज ज्योत हैं और तमाम जहान के वास्ते दीनदयाल हैं और 'बन्दा तो गन्दा है' क्योंकि बन्दा जैसी भक्ति करता है वैसा ही उसको फल मिलता है, कि जो भलाई करता है उसको भलाई मिलती है और जो बुराई करता है उसको बुराई मिलती है और बुरे काम करने वालों की उमर कम है और भले काम करनेवालों की उमर ज्यादा है क्योंकि जो बदकाम करता है उसका नाम तमाम जहान में बदी के सबब से कोई नहीं लेता है, इससे बदकाम की जड़ नहीं और जो अच्छा काम करता है और नेकी में रहता है उसका नाम नेकी की सबब से

तमाम जहान में अमर रहता है. इसी तरह से जिन शख्सों ने भक्ति की है उनका नाम अब तक दुनिया में प्रगट है, इससे अमर हैं; परन्तु इन बनियों ने झूठ का जाल कैसा चलाया है कि जो यह कहते हैं कि मरे हुए जिन्दा हो जावेंगे, सो यह सौदागर बनियों के घर का जाल है. मरा हुआ शख्स जिन्दा नहीं हो सकता है और सूरज-चन्द्रमा सी चीज को रकाब पकड़ने के वास्ते मुकर्रर किया है, सो यह बात भी बड़े अफसोस के लायक है कि सूरज-चन्द्रमा सी चीज को इन बनियों ने अपने जाल से रामा पीर के घोड़े की रकाब पकड़ने के वास्ते साईस मुकर्रर' किया है; सो यह सब इन बनिये बेईमानों के घर का जाल है, यह मालिक की कुदरत नहीं है. सो अब तुम सब हिन्दू - मुसलमान और अंग्रेज और सब परमेश्वर की रचना, ख्याल करो कि इन बनियों ने तमाम जहान के लोगों की अकल को खराब कर दिया है और यह जाल अकल खराब करने ही के लिए चलाया है कि झूठ की बात को

यकीन से सच्चा समझा दिया है, सो इस बात का झूठ, सच देखना चाहो तो देखो कि जो भजन गाते हैं उन्होंको बुलाओ और उनसे भजन गवा-२ के सुनो जिसके सुनने से तुमको कुल हाल मालूम हो जावेगा, कि जो अब इन बनियों का जाल छा रहा है, सो यह जाल इन बनियों का है इससे गाने वालों को गाने की वजह से कुछ दोष किसी किसम का नहीं है; क्योंकि भजन वगैरा बनाये तो सौदागर लोगों की औलाद के हैं और उन पर छाप दूसरे लोगों के नाम की लगा देते हैं कि इस तरह से जो हम भजनों को चलावेंगे तो हमारा नाम नहीं होगा. सो ऐसे -२ किस्से और भजन तरह -२ के इन बनियों ने चलाये हैं कि जिनका जिकर अब हो रहा है, सो सब संसार के लोग और राजा - बादशाह वगैरा सातो-आठो विलायतों के लोग इनके जाल को सुनते हैं, सो इस जाल को छोड़ाने के वास्ते कुल जहान के लोग कोशिश करें तो उम्मीद है कि इन बनियों का राक्षसी पाप छूट

जावे और तुम्हारे बाल बच्चों को इनके जाल मिटने से आराम मिले तो बेहत्तर है, इससे यह बात ख्याल करने के काबिल है क्योंकि यह सौदागर ऐसे जालिम और बदकार हैं कि जो चाँद और सूरज के नामका पाप करें तो जादू के जोर से चाँद-सूरज को भी जमीन पर उतार लेवें, परन्तु चाँद और सूरज को और कोई नहीं उतार सकता है; हाँ, यह बात बेशक हो सकती है कि जो बनिये जादू के जोर से जमीन पर उतारना चाहे तो उतार लेवें क्योंकि यह राक्षसी पाप करते हैं और राक्षसी पाप को यह ताकत है कि जो चाहें वहीं करें, चुनांचे यह बनिये इसी तरह से चाँद और सूरज को उतार सकते हैं, सो अजब नहीं कि जब इनके दिल में उतारने की आवेगी तो उतार देंगे, लेकिन यह सूरज-चन्द्रमा जमीन माता की देह में ज्योत हैं कि जिस तरह से अपने शरीर में ज्योत है, परन्तु इससे पहले जो किस्सा का जिकर किया गया है वोह कुल जाल हैं; क्योंकि इन्होंने किसम - २ के जाल

बे-अन्दाज चला दिये हैं; कि जिसका कुछ भी शुमार नहीं, बल्कि सैंकड़ों किसम के किस्से चला दिये हैं जिसके पढ़ने से कुल हाल इन बनियों के जाल का मालूम होता है, सो यह ऐसे -२ किस्से इन बनियों ने इस वास्ते चला दिये हैं कि जो यह आयन्दा को जाल चलावेंगे तो संसार के लोग यह जानेंगे कि अगले लोग करामती किताबों में लिख गये हैं और भजनों वगैरा में और मुँह जबानी किस्सा कह गये हैं, तो जो कुछ जाल दुनिया में बुरा होने के वास्ते चलावेंगे तो दुनिया हमारे जाल को नहीं समझेगी और यह बनिये चाँद और सूरज को तारों समेत अपने जादू से जमीन पर उतारेंगे; सो जबकि सूरज चन्द्रमा को उतारेंगे जब दुनिया के लोग यह जानेंगे कि यह करामात है, परन्तु इस बात की खबर किसी साधु - फकीर या पण्डित जोगी को बिलकुल नहीं है, जिसकी वजह यह है कि इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से सबकी अकलों को पहले से खराब कर

दिया है जिससे किसी को कुछ खबर नहीं पड़ती है बल्कि ऐसा सूझता है कि हम करामाती हो गये हैं और दुनिया भी जानती है कि करामाती हैं परन्तु इतना ख्याल नहीं करते कि सूरज-चन्द्रमा को तारों समेत जमीन पर उतारते हैं, तो वो जब उतरते हैं कि जब जमीन माता के नाम का पाप चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर कराते हैं जब जमीन माता का दम घुटता है कि जिस तरह से आदमी का दम बीमारी के सबब से घबराता है व घुटता है, परन्तु जमीन माता का दम चाँद-सूरज उतरने के सबब से घबराता है, क्योंकि यह बनिये जमीन माता के नाम का पाप चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर करावेंगे जब सूरज-चन्द्रमा को जादू के जोर से जमीन पर उतारेंगे, जिससे जमीन माता का दम घबरावेगा. सो इन बनियों ने अपने जाल की निगाह ना पड़ने की गर्ज से तरह -२ के किस्से और उनकी किताबों में यह लिख दिया है कि हनुमान जी ने अपने मुँह के अन्दर सूरज को ले

लिया था, सो किताबों में लिखा है परन्तु यह बात ख्याल करने के लायक है कि सूरज जैसी चीज को आदमी ने किस तरह से मुँह में ले लिया होगा? क्योंकि मुख के अन्दर सूरज किस तरह से आया होगा? मेरी दानिस्त में यह बात बिलकुल खिलाफ है, कि जो बातें इन बनियों ने किताबों के अन्दर लिखकर दुनिया में जाहिर की हैं, वो इन सौदागरान का जाल है कि जिनको तमाम जहान के लोग पढ़ते हैं और उन्हीं किताबों में ऐसा लिखा हुआ है कि जो इन किताबों को नहीं बांचोगे तो हिन्दू धर्म में हिन्दुओं को गाय मारने के बराबर पाप है. सो ऐसे - ऐसे हालात किताबों में लिखते हैं कि जो इन किताबों को नहीं मानोगे तो तुम्हारे वास्ते अच्छा नहीं है और अलावा इसके मुसलमानों के निस्बत ऐसा लिखा है कि जो तुम इन किताबों को नहीं मानेंगे तो तुम काफिरों में समझे जाओगे, सो ऐसी-२ जाल की बातें हजारों इन सौदागरान ने चलाई हैं और हजारों किताबें चलाई हैं;

सो देखो भाई, यह सौदागर तो खुद काफिर और कलंकी हैं क्योंकि इन्होंने अपनी किताबों में हिन्दू-मुस्लमानों के नाम लिख दिए हैं और कहते हैं कि यह किताबें तुम्हारे बुजर्गों की बनाई हुई हैं, सो तुम इनके मुवाफिक पढ़-२ कर काम करो. सो ऐसे - ऐसे जाल इन सौदागरान के हैं, सो तुम संसार के लोग इनके जाल से परहेज करके इन सौदागर महाजनान को गिरफ्तार करो और सजायें दो, ताकि यह सौदागर लोग अपने राक्षसी पाप करने की जगह को बता देवें और पाप को छोड़ देवें, क्योंकि इन सौदागरान ने अपनी अकल से अपने बच्चों को बचाने के वास्ते और हिन्दू-मुसलमान के और अंग्रेजों के बच्चों को मराने के वास्ते ऐसी-२ किताबें चलाई हैं कि जिस तरह से रावण ने काफिर विद्या की किताबें चलाई थी, इसी तरह से इन बनियों ने भी हिन्दू - मुसलमान के बच्चे मराने के वास्ते राक्षसी विद्या की किताबें चलाई हैं; क्योंकि इन बनियों ने हिन्दू-मुसलमान और अंग्रेजों के बच्चे

मराने के वास्ते इनके बुजुर्गों के नाम लिख दिये हैं, सो इस गर्ज से लिख दिये हैं कि जब कोई राजा –बादशाह इन किताबों का हाल दरियाफ्त करेगा कि यह किताबें किसने बनाई हैं, जब हिन्दू मुसलमान यह कहेंगे कि हमारे बुजर्गो की बनाई हुई हैं, सो राजा – बादशाह इनको ही तकलीफ देंगे और हम तो अलाहदा के अलाहदा ही रहेंगे इससे यह अकलमंदी की है कि जो इन्होंके घर में झूठी और जाल की किताबें निकलेंगी तो हिन्दू –मुसलमानों के बच्चे और अंग्रेजों के बच्चे मारे जावेंगे, जब दूसरी बादशाहत के लोग यह जानेंगे कि कलंकी यही हैं इससे अंग्रेज वगैरा के घर में और हिन्दू–मुसलमानों के घर में झूठी की किताबें हैं और इनकी ही चलाई हुई हैं जिसमें सूरज उतरने के अलावा और भी सैंकड़ो किसम की बातें, जाल की लिखी हुई हैं, परन्तु यह तो बनियों ने अकलमन्दी की है कि हिन्दू–मुसलमानों को जाल की किताबें पकड़ा दी हैं और नाम उनके बुजुर्गों के लिख दिये

हैं इससे अपनी जानते हैं, परन्तु असल में इन महाजन लोगों की बनाई हुई हैं और इन बनियों की चलाई हुई हैं जिसमें बनियों ने चलाकी करके हिन्दू-मुसलमानों के बुजुर्गों के नाम किताबों के अन्दर लिख करके जाहिर किये हैं, सो इस गर्ज से जाहिर किये हैं कि जब ऐसी जाल की किताबें देखेंगे तो यह जानेंगे कि दुनिया के नाम का पाप हिन्दू-मुसलमान ही कराते हैं, जिससे इन्होंके घरों में ऐसी-ऐसी किताबें हैं कि जिसमें यह हालात लिखी हुई है कि जमीन को डाढ़ के अन्दर ले लिया था और सूरज को मुँह में ले लिया था, सो किताबों में लिखा है परन्तु यह हाल उसी किताब के अन्दर लिखा हुआ है कि जिस किताब में चौरासी लाख कुण्डियों का हाल लिखा हुआ है, परन्तु यह किताबें राक्षसी वेद की हैं जिनमें इन बनियों ने हिन्दू-मुसलमानों के बुजुर्गों का नाम लिख दिया है कि जो पहले जमाने में सती हो गुजरे हैं. अलावा इसके इसी तरह से

अंग्रेजों के घर में भी इन बनियों की दी हुई और चलाई हुई किताबें हैं जिसमें ईसा मसीह का हाल लिखा हुआ है और यह कहते हैं कि यह किताब आसमान से उतरी हैं जिसमें यह लिखा है कि ईसा मसीह आसमान से उतरा है; मैं बड़े अफसोस के साथ आप लोगों की खिदमत में अर्ज करता हूँ कि "आप लोग ऐसे समझदार हैं कि जिसका बयान नहीं हो सकता और उड़ते जानवर को पहचान जाते हो, परन्तु इन बनियों के जाल की पहचान तुम लोग मेरे बताने से भी नहीं करते हो," सो यह राक्षसी पाप का सबब है, क्योंकि तुम्हारे ना समझने के बारे में पाप कराते हैं इससे तुम लोग नहीं समझते हो, सो ख्याल करने की बात है कि मरे हुए शख्स पीछे किस तरह से जिन्दा हो सकते हैं? यह तो इन बनियों का जाल है और मुरदे जिन्दा नहीं हो सकते हैं, यह तो सिर्फ संसार के लोगों को भूल इस गर्ज से बताई है कि यह ऐसे-ऐसे ख्याल करके खुद संसार

के लोग खामोश हुए बैठे रहेंगे, क्योंकि कलजग उस हालात में दफे होगा, जब मरे हुए मुरदे जिन्दा होंगे और नकलंग औतार होगा जब सतजग होगा. सो ऐसे-२ हालात तो जाल के सिर्फ संसार को भुलाने के वास्ते चला दिये हैं कि जो हमारे जाल के ऊपर चलेंगे तो फिर हमारा जाल मालूम नहीं होगा, चुनांचे सब संसार के लोग इन बनियों के जाल के ऊपर ही चल रहे हैं, सो सब साहब गौर फरमाकर और इन बातों को काम में लाकर इन बनियों के राक्षसी पाप को छोड़ाओ और 'इन बातों को दिल से भूल जाओ कि औतार होगा'; सो भाई मेरे हो, हमेशा सतजग ही है, कलजग नहीं है; यह तो इन बनियों के पाप का नाम है कि जिस तरह से रावण के पाप का नाम इन्द्र जाल था, इसी तरह से बनियों के पाप का नाम कलुकाल है, क्योंकि ना मुरदे आसमान से उतरते हैं, ना आसमान पर चढ़ते हैं; यह तो बनियों के राक्षसी पाप का फितूर है कि जो फिजूल बातें तमाम

जहान के लोग मानते हैं. सो यह बातें तुम सब साहबों को पाप की वजह से सच्ची और सही मालूम होती हैं, सो यह झूठ सौदागर महाजनान का है सो जबकि तुम संसार के लोग और राजा - बादशाह दिल से एका करके बनियों से दरियाफ्त करोगे और बनियों को सजायें दोगे जब यह बनिये मारे दहशत के आपसे आप पाप करने की जगह को बतावेंगे, अगरचे अब रासती से दरीयाफ्त किया चाहते हो तो कभी हरगिज नहीं बतावेंगे, क्योंकि यह काफिर जात है क्योंकि बनिये लोगों ने पहले भी काफिरी जाल चलाया था, जिसको बादशाह ने इन बनियों को सजा देकर छोड़ाया था जिसका जिकर ऊपर लिख चुका हूँ और कलंकी यह बनिये ही हैं और बनियों ने सबके ऊपर कलंक लगा दिया है और जो कि सभों के घर में जाल की किताबें हैं वोह भी बनियों ही के घर की हैं, क्योंकि बनिये लोगों ही ने तमाम जहान के

बच्चे मराने के लिए तमाम जहान के ऊपर कलंक धर दिया है, क्योंकि पहले राजा रावण ने राक्षस विद्या का पाप चलाया था जब भी दुनिया में बहुत से राजा - बादशाह भक्त हुए हैं, सो उनके नाम किताबों में लिख दिये थे कि जो कोई किताबों को देखेगा तो मेरी बदनामी नहीं होगी और दुनिया यह समझेगी कि यह किताबें ऋषिश्वरों ने और राजा - बादशाहों ने चलाई हैं; सो ऐसा कपट करके रावण ने अपना राक्षसी पाप चलाया था कि इस चाल से मुझको और मेरी औलाद को बिलकुल नुकसान नहीं है, उसी तरह से बनियों ने भी राक्षस विद्या का जाल चलाया है और तरह-२ के जाल कर रहे हैं कि जो दूसरों के नाम किताबों में लिख दिये हैं सो सिर्फ दूसरों के बच्चे मराने के वास्ते जाल से किताबों में नाम रख दिये हैं, सो इस गर्ज से रख दिये हैं कि हमारी औलाद को कोई भी नहीं मारेगा, तो सातो -आठो बादशाहतों के लोगों को और राजा -बादशाहों को

और रैयत को गारत कर देंगे कि जिसका कुछ पता नहीं लगेगा, क्योंकि आगे राजा रावण ने राक्षस विद्या का पाप चलाया था सो उसने तीन लोक में दुनिया के नाम का पाप चलाया था, परन्तु जब उसका जाल पकड़ा तो रावण को सजा मिली परन्तु दूसरों को नहीं; जिसकी वजह यह है कि वोह भूले हुए थे, परन्तु यह बनिये बलराजा के बाद से राजा -बादशाहों के नाम से और रैयत के नाम से रात-दिन गुप्ती पाप कराते हैं कि जिस तरह से रावण गुप्ती पाप दुनियाँ के नाम से कराता था, उसी तरह से यह बनिये करा रहे हैं. सो इनके जाल को छोड़ाना चाहिए, अगर इन बनियों का जाल नहीं छूटेगा तो यह बनिये सब संसार को गारत कर देंगे और इन बनियों ने गुप्ती पाप का स्वर्ग बनाया है सो उसको अपने कब्जे में रखते हैं और अपनी न्यात बिरादरी के हाथों से पाप कराते हैं, कि जिस तरह से रावण अपने कुल के हाथों से पाप कराता था,

तीन लपोक = तीन महापुरुषों की औलाद ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।

उसी तरह से इन बनियों ने भी बलराजा के बाद से अपनी न्यात बिरादरी के हाथ से पाप कराना शुरू किया है और बलराजा के बाद से इन बनियों ने पाप कराने के लिए अपने कुल में से छांट-२ कर भेज दिये हैं, सो वोह किसी टापू के ऊपर रहते हैं और उनके बाल-बच्चे भी उसी जगह पर पैदा होते हैं और जिस तरह से कि अपने बाल - बच्चे खेती बाडी करते हैं और खेती-बाड़ी का काम सीखते हैं, उसी तरह से इन पाप करने वालों के बच्चे राक्षसी विद्या का पाप करना सीखते हैं और पाप करते हैं, सो इनकी औलाद में पाप करने की विद्या पीढ़ी-दर पीढ़ी चली आती है; सो यह सौदागर लोग कबीले समेत दरियावों के ऊपर पाप करने को चले गये हैं कि हमारे बाल-बच्चे हमको गुप्ती पाप करते हुए देखेंगे तो यह भी गुप्ती पाप करना सीख लेवेंगे तो हमारे कुल में गुप्ती पाप पीढ़ी-दर-पीढ़ी होता रहेगा, क्योंकि गुप्ती पाप का काम एक-दो दिन में हासिल नहीं होता है क्योंकि

पाप सैकड़ों किसम के हैं, कुछ एक किसम के नहीं हैं कि जो एक दिन में पाप के सीखने वाले हासिल कर लेवे. इस गर्ज से यह बनिये लोग मय कबीले के गए हुए हैं कि जिस तरह से राजा रावण ने अपने भाई-बेटों को पाप करने के लिए भेज दिया था, उसी तरह से इन बनियों ने भी अपने भाई-बेटों को पाप करने को भेज दिया है और राजा रावण ने राक्षस विद्या का पाप चलाया था जब शनिचर को राक्षस विद्या के पाप से कलपाया और दुखी किया जब शनिचर को राक्षसी पाप की मालूम हुई जब शनिचार ने राजा बादशाहों को वाकिफ किया, जब राजा बादशाहों ने और कुल संसार ने रावण के कुल को सजा देनी की, जब विभीषण ने दिल में सोचा कि सब संसार के लोग एक दिल होकर मेरे कुल को भी रावण के साथ ही मार देंगे; ऐसा डर करके विभीषण रावण के जाल से अलाहदा हुआ और जो कि रावण ने राक्षसी पाप का स्वर्ग बनाया था वोह भविक्षण ने सारी दुनिया को

बता दिया और हाथ जोड़ के यह कहने लगा कि मेरे कुल में राक्षस विद्या का पाप अब कभी नहीं चलेगा जिसकी मैं कसम खाता हूँ, इसी तरह से विभीषण ने अपने धर्म - ईमान की कसम खाई, इस वजह से विभीषण अपनी औलाद समेत तिर गया और जबकि इन बनियों के राक्षसी पाप का हाल दुनिया में जाहिर हुआ जब बादशाह ने मय दुनिया के ऐका करके बनियों को सजा दी तो इन बनियों ने राक्षसी विद्या का पाप छोड़ दिया और यह कहने लगे कि अब हम अपने कुल में राक्षसी विद्या का पाप नहीं चलने देंगे, इस बारे में इन बनियों ने तरह-२ की कसमें खाई, जब संसार ने इनकी कसमों का ऐतबार करके इनको छोड़ दिया. हालांकि एक - दो दफे सजा भी दी जिसका सबूत यह है कि बनियों के जिस कदर मन्दिर थे उनको तोड़ दिया और जो कि मन्दिर में पुतलियाँ थी उनके नाक व कान कटवाये, सो इस बात को बनिये लोग छुपाते हैं और यह कहते हैं कि

बादशाह हमारे ऊपर बहुत नाराज हुआ था, इससे हमारे मन्दिरों को गिरवा दिये थे और पुतलियों के नाक व कान कटवा दिये थे; सो ऐसी -२ बातें तो दुनिया के लोगों को जाहिर नहीं होने देते हैं और झूठ की बातें दुनिया को किसम-२ की सुझा देते हैं सो दुनिया की बुद्धि कैद कर दी है, इससे दुनिया को खबर नहीं होती है और जो कोई झूठी बात कहता है तो दुनिया उसको सच जान लेती है, परन्तु बनिये बड़े बेईमान हैं कि तरह-२ के छल करके दुनिया को भुला देते हैं, हालांकि इन बनियों ने पहले कई -२ किसम की कसमें खाई थी और बहुत सी लाचारियाँ पहले बादशाहों के सामने की थी, जब बनियों को बादशाह ने छोड़ा था, कि अब यह बनिये अपनी कसम के ऊपर रहेंगे और पाप नहीं करावेंगे. अगरचे यह मालूम होता कि यह बनिये दुनिया के नाम का पाप फिर करना शुरू कर देंगे और हमारे बाल-बच्चों को अपने पाप से गारत कर देंगे और धन को अपने

काबू में कर लेंगे और हमारी अकल को मय औलाद के कैद करके फिर अपना राक्षसी पाप चला देंगे और दूसरे बादशाहों से मिलके हमारा राज ले लेवेंगे और हमारे बच्चों को मरवा देंगे; और अव्वल में यह राक्षसी जाल राजा रावण के वक्त से चला है सो जब से नौ - दस बार यह जाल पकड़ा गया है कि अव्वल तो राजा रावण के वक्त में यह जाल प्रगट हुआ, बाद उसके हरनाकुश के वक्त में जाहिर हुआ, बाद उसके कंश राजा के वक्त में यह जाल पकड़ा गया; फिर कारून बादशाह के जमाने में यह राक्षसी जाल चौड़े हुआ और फिर हिन्दुस्तान के बादशाह के वक्त में एक बार मालूम हुआ था और यह राक्षसी जाल कदीम से इन बनियों के घराने में चला आता है और राजा रावण, हरनाकुश वगैरा को भी इन बनियों ही ने थोड़ा -सा पाप अपने पाप में से सिखा दिया था और कदीमी असली राक्षसी जाल यह बनिये अपने काबू में रखते हैं और उनको पाप सिखा करके

यह बहका दिया था कि तुम राक्षसी पाप से चार कूंट में राज करोगे, जब रावण- हरनाकुश वगैरा ने वो पाप करना शुरू किया और संसार को उस पाप की खबर पड़ती गई तो संसार के लोग उस पाप को छोड़ाते गए. सो रावण, हरनाकुश, कंश, कारून वगैरा और कई राजा -बादशाह इन बेईमान बनियों के राक्षसी पाप के सबब से भूल ही भूल में मय औलाद के जान से मारे गये, जो यह महाजन लोग उनको पाप का करना नहीं सिखाते तो वो बेचारे संसार के हाथों से क्यूँ मारे जाते? और इन बेईमानों के पाप को बंद कराने का आज तक किसी से पूरे तौर से बन्दोबस्त नहीं हुआ है कि जो आयन्दा फिर कभी नहीं होता और यह बात संसार में कहते हैं कि "यह बनिये बेईमान लंका के ढेड़ हैं", क्योंकि यह पाप बनियों से ही निकला है और पहले रावण के वक्त में यह पाप लंका ही में प्रगट हुआ था, इस वास्ते लंका के ढेड़ इनको कहते हैं और अगले जमाने में इस पाप को छोड़ाने का

बन्दोबस्त किया गया और पाप करने वालों को पूरी-२ सजायें दी कि आयन्दा को, डर करके कोई पाप नहीं करें, परन्तु यह पाप बिलकुल नहीं मिटा क्योंकि पूरा-पूरा यह राक्षसी पाप तो कदीम से इन बनियों के काबू में हैं और इन्होंने जो राजा रावण और हरनाकुश वगैरा को सिखा करके उनके हाथ से कराया था वो थोड़ा-सा पाप संसार ने एक दिल होकर छोड़ा दिया; और इन महाजन लोगों का हाल तो उस वक्त संसार को थोड़ा ही मालूम था कि इस राक्षसी पाप के उस्ताद यह बनिये बेईमान ही हैं और यह बनिये ही दूसरों को सिखा-२ कर पाप कराते हैं, सो संसार को तो उस वक्त इनकी खबर पड़ जाती तो संसार के लोग इनसे भी पाप को छोड़ा देते जैसे रावण वगैरा का छोड़ाया था; और पहले जमाने में तो इन पाप करने वालों को ऐसी-२ बुरी सजायें देकर संसार ने मारा है, परन्तु संसार को आज तक यह बात मालूम नहीं है कि यह जाल कदीमी इन बनियों महाजनान का है

और आज तक इस हिन्दुस्तान में जिस कदर राजा बादशाह हुए हैं सबका पैसा धन इन बेईमानों ने पाप करा-२ के अपने काबू में कर लिया है और सबको निर्धन और भूखा कर दिया है और जाल डाल -२ के आपस में लड़ा -२ कर सबको मरा दिये हैं, इस वास्ते सातो-आठो विलायतों के लोगों और राजा - बादशाहों से मुझ गरीब साधु की हाथ जोड़कर अर्ज है, कि जो हमने इन बनियों के शामिल हिन्दुस्तान में जन्म पाया है जब हमको ही इनके जालों की खबर नहीं पड़ी तो आप लोगों को किस तरह से मालूम हो सकता है? और इन बेईमानों ने हिन्दुस्तान का लोभ दे-देकर दूसरी विलायत वालों को आपस में लड़ा -२ कर मरा देंगे जब भी इनके जाल की खबर किसी को नहीं पड़ेगी, और यह बनिये लोग आप लोगों को ना वाकिफ और भुला हुआ जानकर और अपने कुल में से किसी आदमी को फकीरी वगैरा के भेष में आप लोगों के पास भेज के रावण वगैरा की

तरह से थोड़ा – सा पाप अपने पाप में से सिखा करके आप लोगों के हाथ से पाप करावेंगे और आप लोगों को ऐसा –२ लोभ देवेंगे कि राक्षसी पाप के सबब से आप लोगों की बादशाहत हिन्दुस्तान और सातो–आठो विलायतों में हो जावेगी; जिस तरह से रावण वगैरा को सातो आठो विलायतों का लोभ देकर उसके हाथ से पाप कराया था और फिर इन महाजनान ने आप ही दूसरी विलायतों में यह बातें मशहूर की थी कि रावण बड़ा कलंकी है. आखिर रावण उस पाप के करने के सबब से संसार के हाथों से मारा गया, सो यह सौदागर महाजनान रावण की तरह से आप लोगों को भी सातो–आठो विलायतों का लोभ देकर और आप लोगों के हाथों से पाप कराके रावण की तरह से आप लोगों के बच्चों को मरा देंगे और जैसे रावण को कलंकी मशहूर किया था, उसी तरह आप लोगों को दूसरी विलायतों में कलंकी कहेंगे और दूसरी विलायत वालों के हाथों से आप लोगों के

बच्चों को मरवा देंगे और यह महाजन आप अलाहदा के अलाहदा रह जावेंगे और अपना नाम कभी जाहिर नहीं होने देंगे, क्योंकि इन बेईमानों ने हिन्दुस्तान के लोगों को भी अपने जाल की खबर नहीं पड़ने दी, सो आप तो पर विलायत के और पर-मुलक के हो; सो आप लोगों को भी बनिये सिखावेंगे रावण वगैरा की तरह से, कि आप चार कूंट में राक्षसी पाप के सबब से राज करोगे जब आप लोग भूल जावोगे और यह बनिये दूसरी विलायतों में आप लोगों को प्रगट कर देंगे कि फलाना बादशाह कलंकी है और आप लोगों को ना भी सिखावेंगे, तो भी कहने को लग जाते हैं और दुनिया में बातें चला देते हैं कि फलाना बादशाह कलंकी है, सो इनका मतलब यह है कि सब सातो-आठो विलायतों को राक्षसी जाल से आपस में लड़ा-२ कर मरा देंगे और जब संसार थोड़ा रह जावेगा तो फिर हम अपना राज चार कूंट में कर लेवेंगे

और फिर हमसे कोई नहीं जीत सकेगा और हमारी औलाद का राज नहीं छीन सकेंगे और जहाँ तक संसार में आदमी ज्यादा हैं जहाँ तक तो यह बनिये लोग दिखाऊ ऐसे गरीब और सती लोग होकर रहते हैं कि इनके जैसा गरीब दूसरा नहीं है, सो सातो-आठो विलायतों के लोग और राजा - बादशाह आपस में मिलके इस पाप को छोड़ाओ, जो सब संसार का भला होवे और सबकी औलाद उभरे, नहीं तो लोभ ही लोभ में कुछ किसी के हाथ नहीं आवेगा और अपनी औलाद को मरवा दोगे और हिन्दुस्तान को तो इन महाजनान ने आपस में लड़ा-२ के और बुद्धि भ्रष्ट कर दी है सो गारत कर देंगे और कुछ रही सही है उसको अब आप लोगों को हिन्दुस्तान में लाकर हिन्दू-मुसलमानों के बच्चों को आप लोगों के हाथों से गारत करा देंगे और जिस तरह से कि यह बनिये हमारे साथ में पेश आये हैं, उसी तरह से आप लोगों के साथ पेश आवेंगे.

अगर ऐसा हाल पेशतर से जाहिर होता तो इन बनियों की औलाद तक बादशाह बाकी नहीं रखता और हलाल कर डालता और इस बात की भी बादशाह को खबर होती कि यह बनिये दूसरे बादशाह को लाकर हमारी औलाद से राज छुड़वा देंगे और उनसे राज करावेंगे और हमको गारत करा देंगे और सब धन हमारा ले लेवेंगे, तो बादशाह इन बनियों की जड़ और औलाद अपनी राजधानी में नहीं रहने देता और गारत करा देता, परन्तु क्या कीजिये कि पहले इन बनियों के जाल की खबर नहीं पड़ी, इससे यह बनिये सलामत रह गये, इस वजह से इन बनियों ने फिर अपना राक्षसी पाप चला दिया, जो आज दुनिया में चल रहा है कि जिस पाप से करोड़ों आदमियों को हैजा वैगरा की बीमारी लगा करके मार देते हैं और साल-ब-साल मारते जाते हैं, क्योंकि जिस कदर पहले आदमी थे उस कदर अब कहाँ हैं? बल्कि दिन-२ और साल-२ कम होते

जाते हैं, जिसकी वजह यह है कि इस जमाने में भी राक्षसी पाप से आदमी कम पैदा होते हैं और उमर भी कम पाते हैं और पहले अच्छी तरह से फलते-फूलते थे और उमर भी बहुत पाते थे और कोई औरत 'बांझ' नहीं रहती थी, इससे कोई भी बे-औलाद नहीं रहता था और सबके औलाद होती थी इससे ज्यादा भी थी, और अब तो बे-औलाद बहुत से हैं कि जो औलाद के वास्ते तरसते हैं, जिसकी वजह यह है कि जो बनिये औलाद ना होने के बारे में पाप कराते हैं, जब औरत के औलाद नहीं होती है तो वो औरत 'बाझ' रह जाती है और जिसके नाम का पाप छोड़ देते हैं तो उसके औलाद हो जाती हैं तो फिर वो औरत बांझ नही कहलाती है. सो ऐसे जाल और फरेब सब इन बनियों के ही हाथ में है इससे जो चाहें वहीं कर सकते हैं, इससे मैं आप लोगों को जल्दी वाकिफ करता हूँ कि इनके पाप को छोड़ाने का बन्दोबस्त जल्द करो ताकि फिर सतजग हो जावे और फिर कोई बे

औलाद नहीं रहे, क्योंकि उस परमेश्वर ने तो सबको औलाद दी है और सबको खाने को दिया है, वोह किसी को किसी किसम की तकलीफ नहीं देता है, यह तो सौदागरान के पाप से सब संसार के लोग तरह -२ की तकलीफें उठा रहे हैं और आज सब साहब हिन्दू-मुसलमान अंग्रेज वगैरा एक दिल होकर बनियों के राक्षसी पाप को छोड़ावें तो छूट सकता है और पाप के छूटने से सबका भला हो सकता है, सो सब साहब ऐका करके बनियों के जाल को दफे करो ताकि फिर अमन - अमान हो जावे और अपने बच्चे सुख पावें, क्योंकि बनियों की 'दिली मनशाये' यह है कि जब संसार के लोग थोड़े रह जावेंगे जब अपना राज होगा, इस गर्ज से बनियों ने राक्षसी पाप चलाया है कि चार कूंट और चौदा भाण में राज करने के लिए राक्षस विद्या का पाप चलाया है कि चारकूंट और चौदा भाण में राज अपना करेंगे कि जिस तरह से रावण ने चार कूंट चौदा भांण हमें राज करने के लिए राक्षस विद्या का पाप

चलाया था, उसी तरह से बनियों ने सलाह करके राक्षस विद्या का पाप चलाया है और यह विचार किया है कि इस पाप से सब राजा - बादशाह गारत हो जावेंगे. सो क्या तो हिन्दुस्तान के और क्या सातो-आठो विलायतों के राजा - बादशाह और क्या अंग्रेज वगैरह सब ही गारत हो जावेंगे? और गारत होते -२ जबकि थोड़े - से आदमी रह जावेंगे जब हम बनिये अपना राज करेंगे, इससे राक्षस विद्या का पाप चलाया है और संसार का धन लेने के वास्ते और राज करने के वास्ते चलाया है कि जिस तरह से राजा रावण ने राक्षस विद्या का पाप चलाया था और हरनाकुश राजा ने व कंश राजा ने और कारून बादशाह ने राक्षस विद्या का पाप चलाया था और शनिचर ने उनके पाप को प्रगट किया था, जब संसार ने उन्होंके पाप को छोड़ा दिया, सो जबकि उनकी चालाकी मालूम हुई जब तमाम दुनिया ने उन्होंका नाम तक ही मिटा दिया, क्योंकि वोह बेईमान संसार के बच्चे

गारत करके राज करना चाहते थे सो इस लोभ की वजह से उन्होंने अपनी औलाद को भी संसार के हाथों से मरवा दी. सो राज का करना तो एक तरफ को गया 'क्योंकि राज तेज तो. धर्म पुण्य और नेकी का है,' सो यह बात सब संसार को झूठ नहीं समझना चाहिए क्योंकि मैं तो तुम्हारे बाल-बच्चे और सब संसार के आराम के वास्ते इन चोरों की चोरी को लिख करके जाहिर करता हूँ कि इन बनियों ने चार कूंट और चौदा भांण में राज करने के वास्ते राक्षसी पाप चलाया है, परन्तु मुझको राक्षस विद्या के पाप से दुखी किया है और रोज-२ राक्षसी पाप से दुख देते हैं, सो "मैं अपने ऊपर बीती हुई और नजरों से देखी हुई लिखता हूँ" अगर तुम संसार के लोगों और राजा बादशाह एक दिल होकर के नहीं छुड़ाओगे तो यह बनिये कुल संसार को गारत कर देंगे, क्योंकि अगले जमाने के लोगों ने दुख पा-पा कर पाप को छोड़ाया, जब आराम मिला है, इसी तरह से संसार के लोगों इनके

जालों को छुड़ाओगे जब तुम्हारे बाल -बच्चे बचेंगे और आराम मिलेगा; क्योंकि राज और तेज, धर्म और नेकी का है परन्तु इन बनियों ने राक्षस विद्या का पाप गारत करने के वास्ते चलाया है, सो यह बात काबिल गौर करने के है कि यह सौदागर लोग इसी तरह से जुलम करेंगे तो हम तुम सब संसार के लोग हिन्दू-मुसलमान के बच्चे और अंग्रेजों के बच्चे मारे जावेंगे बल्कि इन बनियों ने तमाम संसार के बच्चे गारत करने के वास्ते जाल की किताबें हमारे तुम्हारे घरों में हमारे तुम्हारे बुजुर्गों के नाम से लिख करके धर दी हैं, कि तीन लोक के बच्चे इनको पढ़ेंगे तो यह जानेंगे कि यह किताबें हमारे बुजुर्गों की चलाई हुई हैं, सो तुम सब संसार के लोगों और राजा - बादशाह तीन लोक के, कि जो किताबें इन बनियों की तुम्हारे घरों में धरी हुई हैं जिनको वेद की किताबें जानते हो, सो यह राक्षसी वेद की किताबें इन बनियों की चलाई हुई हैं और जो मैं बार-२

इनके वेद की किताबों के बारे में लिखता हूँ सो यह हाल सिर्फ तुम्हारे बच्चे बचने के वास्ते ही लिखता हूँ, सो मेरे लिखने पर गौर फरमाकर इस राक्षस विद्या के पाप को छोड़ाओ जब तुम्हारे बाल-बच्चे बचेंगे; अलावा इसके राक्षसी वेद की किताबों मे लिखा है कि सौ कोस के ऊपर एक गाँव बसेगा परन्तु इसके दरम्यान में जो गॉव होंगे वो उजड़े हुए मिलेंगे, सो इसी तरह से सौ-सौ कोस के ऊपर बसे हुए गाँव मिलेंगे, सो यह बात संसार में कहते हैं और किसी -२ किताब में ऐसे -२ हालात भी लिखे हुए हैं कि जब कोई राजा - बादशाह अपनी औलाद रहने के वास्ते उन किताबों की तलाश करेंगे तो मिल जावेगी और जिन लोगों के घरों में से यह किताबें निकलेगी वो सब मारे जावेंगे और बनिये अलाहदा के अलाहदा रह जावेंगे, इसी वास्ते यह किताबें दूसरों के घरों में फैलाई हैं. और दुनिया में ऐसा भी कहते हैं कि कलजग आवेगा और सौ-सौ कोस के

ऊपर एक गाँव बसा हुआ मिलेगा, सो इन बनियों ने ऐसा जुल्म का जाल पहले से चला दिया है कि जो जाल ही जाल चल रहा है परन्तु यह बात जरूर है कि पहले से तो जाल चलाने से कुछ नहीं होता लेकिन यह पाप दुनिया के नाम का कराते हैं, सो दुनिया यह जानती है कि अगले लोगों ने आगम भाकी है और वेद की किताबों में आगम भाकी हुई का हाल लिखा है कि कलजग होगा और खराब वक्त आवेगा सो वोह बात सच हो जाती है. सो संसार को दिखता ही है क्योंकि यह बनिये अपने राक्षसी पाप से तमाम जहान को रावण की तरह से गारत कराते जाते हैं, सो संसार को अगर इनके पाप की खबर होती जब तो संसार इनकी औलाद को मरवा देता, क्योंकि मालिक ने तो संसार को अमर रहने के वास्ते पैदा किया है और अमर रहने के लिए मालिक ने संसार को औलाद दी हैं सो सबको ही दिखता है और यह जो इन्होंने आगम बातें लिख दी हैं कि

शहर से आगे चलकर सौ कोस के ऊपर एक गाँव बसा हुआ मिलेगा, इसी तरह से सौ-सौ कोस के ऊपर गाँव से आगे गाँव मिलेगा सो सच है, परन्तु तुमको जताने के वास्ते लिखता हूँ कि जिससे तुम्हारी औलाद बचेगी; क्योंकि इन बनियों ने ऐसा राक्षसी पाप फैला रखा है कि जो पाप की वजह से तुम लोगों को यह अपने राक्षसी पाप की खबर नहीं पड़ने देंगे और न पड़ने देते हैं और इस जमाने में तो आध कोस, पौन कोस के ऊपर बसे हुए गाँव मिलते हैं. सो संसार के लोग अपनी-२ आँख से ही देख रहे हैं कि जो आबाद हैं, कुछ मेरे लिखने की भी जरूरत नहीं है; सिवाय इसके वेद की किताबों में भी लिखा है कि ''अनाज के दाने गिनती से बिकेंगे ' सो यह बातें भजनों में गाते हैं, सो यह किताबें इन सौदागर लोगों की चलाई हुई हैं, जिसमें ऐसे -२ हालात तरह -२ के लिखे हुए हैं और यह भी लिखा है कि ''टांके नीर तुलेगा और तुलकर पानी बिकेगा'' जब

कलजग आवेगा और महाप्रलय भी होगा; सो इस तरह की जो किताबें हैं वो इन बनियों की चलाई हुई हैं, सो उन किताबों के ऊपर नाम इन बनियों ने हम हिन्दू-मुसलमान के बुजुर्गों के लिख दिये हैं कि जो हिन्दू-मुसलमान और अंग्रेजों में बुजुर्ग हो गुजरे हैं, सो यह बनियों की जालसाजी और चालकी है सो इसको तुम अपने दिल में और मेरे लिखने पर गौर फरमाकर देखो कि जैसा जाल इन सौदागर महाजनान का रावण के तरीके से चला रहे हैं, परन्तु इन सौदागर महाजनान ने तमाम जहान के लोगों की अकल ऐसी खराब कर दी है कि जो बिलकुल नहीं समझते हैं सो यह राक्षसी पाप का सबब है, सो यह बनिये अकल को इस गर्ज से खराब कर देते हैं कि जो कोई जाल से वाकिफ करेगा तो कोई जाल को सच नहीं जानेगा और खिलाफ जानेंगे; इस वजह से समझाने वाले को अहमक जानेंगे तो हमारा जाल, जो चल रहा है वो

किसी पर जाहिर नहीं होगा तो बदस्तूर चलता रहेगा कि इससे तमाम जहान के नाम का पाप करके अकल खराब कर दी है, और इन बनियों ने पहले से सब लोगों की अकल खराब करके पहले भी राक्षसी पाप चलाया था, परन्तु अगले बादशाह ने इनके राक्षसी पाप को पहचान करके इनके राक्षसी वेद की किताबें वगैरा भी गारत कर दी थी परन्तु इन बनियों ने पहले भी रावण की तरह से और हरनाकुश और कंश और कारून की तरह से राक्षस विद्या, किताबों समेत चलाई थी सो खबर पड़ते ही बादशाह ने छोड़ा दी; और रावण वगैरा ने तो थोड़ी सी ही जाल की किताबें तैयार करके चलाई थी, सो यह बनिये राक्षसी पाप कराते हैं वो हिन्दुस्तान से ही पाप करा रहे हैं सो इन बातों की खबर हिन्दुस्तान के बनियों को ही है क्योंकि यह पाप करने वालों को, जो पाप बनिये कराते हैं उनको खर्च 'मुकर्ररा' भेजते हैं; और जो कि इन बनियो ने आगम भाकी है वोह सच है,

मुकररा = खाने पीने की वस्तुयें, धन एवं समान.

क्योंकि अव्वल तो यह बातें टीपणों में लिखकर के तमाम जहान में जाहिर करते हैं कि फलानी मिती और फलाने दिन और महीने में यह बात होगी कि काल और हैजा वगैरा आवेगा, सो पहले तो संसार में ऐसे - ऐसे हालात जाहिर कर देते हैं, जब वो मिती आती है जब यह बनिये चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर पाप कराते हैं, जब वो बात सच्ची हो जाती है कि जिस बात को तमाम जहान के लोग अपने मुँह से बनियों के पाप की तारीफ ईश्वर के नाम से करते हैं और कहते हैं कि मालिक की कुदरत है और यह नहीं कहते हैं कि यह मालिक की कुदरत नहीं है, यह तो रावण की तरह से इन बनियों का पाप है सो यह बुद्धि का प्रमाण है कि जो इनके जाल नहीं समझते हैं और फिर पछताते हैं और जबकि पाप को समझते हैं तो छोड़ाते हैं, क्योंकि रावण के वक्त में भी पहले लोग रावण के पाप को शनिचर के कहने से समझे जब रावण के पाप को छोड़ाया और फिर उस

पाप के बारे में तमाम जहान के लोगों ने बहुत फिकर किया कि जो हम पहले से समझते तो, इस कदर खराब न होते और आराम भुगतते, क्योंकि मालिक ने दुख किसी को नहीं दिया है बलके सुख दिया है; और यह जो हमने दुख उठाया है यह रावण के राक्षसी पाप से उठाया है क्योंकि रावण ने अपने राक्षसी पाप से तमाम जहान की अकल ऐसी फेर दी थी कि जो कोई रावण के जाल की बात को कहता था उसको मालिक की कुदरत जानते थे और यह जाल नहीं समझते थे, परन्तु शनिचर के समझाने से तमाम जहान ने समझ के रावण के जाल को अजमाया, तो बरोबर रावण का जाल निकला और परमेश्वर की कुदरत नहीं निकली; जब संसार ने अपने दिल में बड़ा अफसोस किया कि हम रावण का जाल नहीं जानते थे और मालिक की कुदरत जानते थे, खैर इसी तरह से हरनाकुश राजा ने राक्षस विद्या का पाप चलाया था जब भी तमाम जहान मालिक की

कुदरत जानते थे और जबकि इनके जाल की खबर पड़ी और पाप को छोड़ाया जब तमाम जहान ने रावण के जाल की तरह से हरनाकुश वगैरा के जाल का बड़ा अफसोस किया और कहने लगे कि हम तो मालिक की कुदरत जानते थे और इनका जाल नहीं जानते थे, परन्तु यह तो रावण की तरह से हरनाकुश वगैरा का जाल निकला, खैर इसी तरह से अब इन सौदागर महाजनान का पाप बलराजा के बाद से चल रहा है और इन बनियों ने भी रावण की तरह से तमाम जहान की अकल फेर दी है जिससे मालिक की कुदरत जानते हैं और इनके जाल की पहचान नहीं करते हैं, कि इन बनियों के भी रावण की तरह से छल हैं, इससे मैं आप लोगों को शनिचर की तरह से वाकिफ करता हूँ कि आप लोग जल्दी वाकिफ होकर और समझकर इनके पाप को छोड़ाओ ताकि तुमको आराम मिलेगा और जबकि यह पाप दफे होगा जब संसार के लोग रावणके जमाने की

तरह से इन बनियों के जाल का अफसोस करोगे, इससे मैं आप लोगों को इन बनियों के जाल से वाकिफ करता हूँ सो तुम लोग वाकिफ होकर इन बनियों के जाल को छुड़ाओ ताकि तुमको आराम मिले; क्योंकि ऐसे-२ जाल हैं इससे राक्षसी पाप कर रहे हैं कि जब तमाम जहान गारत हो जावेगा तो फिर हम अपना राज करेंगे, क्योंकि जब सौ- सौ कोस के ऊपर जाके एक गाँव मिलेगा, सो जबकि ऐसा होगा जब तो बनियों की औलाद ज्यादा होगी और छत्तीसों जात की औलाद कम होगी. सो क्या हिन्दुस्तान में और क्या अंग्रेजों की विलायतों में, क्या सातो-आठो विलायतों में, सौ-सौ कोस के ऊपर जाके एक गाँव मिलेगा! सो ख्याल करने की बात है कि हिन्दुस्तान का राज बहुत बड़ा सैंकड़ों कोस में हैं सो हिन्दुस्तान में इस हिसाब से थोड़े ही गाँव रहेंगे और जो इससे बड़ी विलायतें हैं उसमें भी थोड़े गाँव रहेंगे जब यह बनिये अपना राज करेंगे; क्योंकि सातो-

आठो विलायतों को गारत कर देंगे जब थोड़े से गाँव रह जावेंगे तो बनियों का जाल कौन मिटावेगा? क्योंकि यह बनियें तो ज्यादा रह जावेंगे और राजा-बादशाह और रैयत वगैरा कम रह जावेगी जब इन बनियों का जाल किसी सूरत से नहीं मिटेगा, परन्तु इस वक्त में परमेश्वर की रचना ज्यादा है सो इनके जाल को सारी 'खलकत' एक दिल होकर मिटा सकती है, परन्तु इनके जाल की तो खबर मुझको पड़ी है जिससे मैं तमाम जहान के राजा - बादशाह को और रैयत को वाकिफ करता हूँ सो सब संसार के लोगों इनके जाल को छोड़ाओ, क्योंकि जब तक संसार के लोग ज्यादा हैं जब तक यह बनिये गरीब होकर रहते हैं, परन्तु राजा - बादशाह को अपने जाल से लड़ा देते हैं जिससे हजारों आदमी लड़कर मर जाते हैं; सो यह 'राक्षस विद्या के पाप से, बुद्धि फेर के, कुत्ते - बिल्ली का बिरग कराके और बिरगे बेर का पाप कराके लड़ा देते हैं, और दिल में ऐसा

सुझा देते हैं कि मैं राजा से लड़कर इसका राज छीन लूँ और दूसरे राजा - बादशाह यह कहते हैं कि मैं इससे लड़कर इसका राज छीन लूँ; सो यह बनिये कुछ आपस में लड़ा करके गारत करा देते हैं और कुछ काल वगैरा डाल के गारत कर देते हैं और कुछ मरी डाल के संसार को गारत कर देते हैं, सो इसी तरह से यह बनिये महाजन साल-ब-साल संसार के नाम का पाप कराते हैं जिससे आदमी संसार के साल-ब-साल कम होते जाते हैं, क्योंकि कच्ची उमर में मार देते हैं जिससे ऐसी-२ आगम भाकी है कि ऐसा कलजग आवेगा कि सौ कोस पर एक गाँव बसा हुआ मिलेगा, सो इस सूरत से संसार के आदमी थोड़े रह जावेंगे और सौ कोस पर गाँव बसेगा, जब इन बनियों की जात ज्यादा रह जावेगी तो कुल संसार में इनका राज हो जावेगा; सो इन बनियों ने अपने दिल में ऐसा समझ लिया है कि पाप करा-२ के संसार के आदमियों को मार देना, जब मरते -२ संसार में आदमी थोड़े

रह जावेंगे जब आप ही हमारा राज हो जावेगा नहीं तो बादशाहों से लड़ाई करके राज लेना तो इनके बस का काम नहीं है. इसी तरह से संसार में हर एक तरह का बिगन करके संसार को कम करते जाते हैं, सो ऐसे -२ जाल तरह-२ के चला करके यह बनिये संसार को गारत कर देते हैं और इसी तरह से पहले रावण, हरनाकुश ने और कंश राजा ने और कारून बादशाह ने चारों कूंट में राज करने की गर्ज से राक्षसी पाप चलाया था और जब कि इनकी चोरी पकड़ी गई जब तमाम जहान ने एक दिल होकर और रावण वगैरा को मार के राक्षस विद्या का पाप छोड़ाया जबसे रावण वगैरा का जाल बंद हुआ है, जब संसार की औलाद बची है और जब हरनाकुश वगैरा ने जाल चलाया था जब उन्होंने भी संसार के लोगों को गारत कराने के वास्ते राक्षस विद्या का पाप चलाया था, सो बहुत से लोगों को तों 'बिरगे बेर' लड़ा करके मार देता था और बहुत से लोगों को काल डाल के

मार देता था परन्तु जबकि इनके जाल की खबर संसार को हुई जब तमाम संसार ने एक दिल होकर हरनाकुश के पाप को दफे किया जब संसार की औलाद सलामत रही, नहीं तो उम्मेद नहीं थी कि जो रावण के पाप से दुनिया बचती क्योंकि रावण की औलाद ज्यादा रह जाती और संसार की औलाद कम रह जाती तो बेशक संसार की औलाद कम होने की वजह से रावण राज कर लेता और जो दिल में आता वो अपने राज में करता और संसार के लोगों को दुख देता तो फिर संसार किसके आगे जाके दुख रोता? कि हमको रावण वगैरा दुख देता है सो हमको मदद देके छुड़ाओ, क्योंकि रावण ने चार कुंट और चौदा भांन में राज करने के सबब से राक्षस विद्या का पाप चलाया है और सब राजा बादशाहों को और रैयत को अपने राक्षसी पाप से गारत कर देता, जब तमाम जहान के लोग कम रह जावेंगे और हम ज्यादा होंगे जब हम अपने दिल में जो बिचारेंगे

वहीं करेंगे. सो रावण वगैरा इस तरह का ख्याल करके दिल में लाते थे और दिल में क्या चाहते थे! परन्तु शनिचरजी महाराज ने सब संसार को रावण के जाल से वाकिफ कर दिया इससे कुल जहान बच गया और बचने के सबब से तमाम जहान ने अपनी जबान से यह शुक्रिया अदा दिया कि शनिचरजी महाराज का जुग-जुग और भो-भो भला हो जी, कि हमको रावण के जाल से बचाया, जिसकी वजह यह है कि शनिचर ने रावण के जाल से कुल जहान को वाकिफ किया था, जब दुनिया ज्यादा थी और रावण की औलाद कम थी; इससे संसार ने एक दिल होकर रावण के राक्षसी पाप को छोड़ाया और जोरावण संसार के नाम का पाप कराके गारत कर देता, जब तो संसार में चोरी प्रगट नहीं होती तो रावण चार कूंट में अपना राज करता, तो फिर संसार रावण के नीचे से हरगिज-हरगिज नहीं निकलता बल्कि डूबा हुआ रहता, चाहे फिर वोह 'अमल-फाँसी' खा करके ही मरते तो भी

भो-भो = भव, भव, चौदा भांन = धरती व आसमान

नहीं मरने देता क्योंकि रावण की कुल तो ज्यादा रह जाती और संसार की कुल कम रह जाती तो फिर संसार को बड़ा भारी दुख हमेशा के वास्ते रह जाता और संसार का कुल कम रह जाता, जब ऐसा रावण करता; सो यह तो संसार के बड़े भाग कि जो रावण की चोरी मालूम हो गई, तो सातो-आठो विलायतों के लोग एक दिल हो करके और समझ के रावण की ओंद तक को मार दिया कि "जो रावण के घर में चिराग करने वाला ही नहीं." इससे फिर संसार के नाम का पाप करने वाला भी कोई नहीं रहा, क्योंकि संसार तो रचना है इससे जिन-२ ने कि राक्षस-विद्या का पाप संसार को गारत करने के वास्ते चलाया था, सो उन्होंकी औलाद तक को ही नहीं रखा है और रावण ने जो राक्षस विद्या का पाप चलाया था वो संसार को जाहिर करके थोड़ा ही चलाया था, क्योंकि जो जाहिर करता तो करने कौन देता? सो सच बात है कि जान के अपने बच्चों को कौन गारत होने

देता? परन्तु खबर नहीं थी इससे जहान को गारत किया व रावण का शनिचर को राक्षसी पाप करना थोड़ा ही मालूम था? बल्कि शनिचर को खुद ही ग्रह चाले के पाप से बाँध रखा था; सो शनिचर के नाम का पाप रावण, चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर कराता था और शनिचर को ऐसा सुझाया कि मुझको नारगी में डाला है और ग्रह देवता सजा दे रहे हैं और जो कि अगले जमाने के भगत लोग होकर मर गये हैं उनका सपना शनिचर को कराके सुझा देता था जब शनिचर ने दिल में सोचा कि जीता हुआ शख्स कोई, मुझको मारने को आवे तो मैं देखूं कि मरे हुए के सपने मुझको किस तरह से आते हैं, क्योंकि जो मर गये हैं उनके तो नाम अमर रहे हैं, सो यह ख्याल करने की बात है कि जो मर गये हैं वोह किस तरह से चौरासी लाख कुण्डियों पर जीवों को मारते हैं? और किस तरह से पाप कराते हैं? क्योंकि मरे हुए से तो कुछ भी नहीं होता है; हाँ! जिन्दा तो पाप से अलबत्ता कर सकते हैं,

सो वोह पाप करें तो उनकी चल जाती है परन्तु मरे हुए पाप किस तरह से करा सकते हैं, जब दिल में विचार किया कि जो मरे हुए सुझाते हैं और ग्रह कराते हैं, सो यह तो अपने को भूल बताई है कि इस तरह से हमारा जाल मालूम नहीं होगा, परन्तु यह पाप रावण की तरह से चलाया हुआ है जबसे दुनिया में टीपएा वगैरा और 'नाईत्तफाकी' वगैरा होना शुरू हुआ है और रावण ने राक्षस विद्या के वेद और किताबें बना करके चलाई थी उनकी पहचान शनिचर ने की, कि वेद असली नहीं हैं और जाल के हैं, क्योंकि उनको दुनिया बांचती थी और कानों से सुनती थी क्योंकि टीपणों वगैरा को ऋषिश्वर लोग तमाम जहान में बांचते फिरते थे परन्तु जब तक कि शनिचर को राक्षसी पाप से नहीं कलपाया था, जब तक यह जानता था कि अगला वेद है और जबकि शनिचर को कलपाया और चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर, बाबत मरी पड़ने के और ग्रह चाला के और रोग चाला के और बिरगे बेर

कराने के पा करा-२ के सुझाता था, जब शनिचर ने दिल में क्या ख्याल किया कि "जो कोई परमेश्वर की भक्ति करता है उसको बत्तीस लक्षण आते हैं" और मैं भक्ति करता हूँ, सो रात-दिन में जाल ही जाल में गिरफ्तार रहता हूँ, सो यह एक किसम का पाप है और रावण करा रहा है और जाहिरदारी में हम से मिला हुआ है कि हमारा पाप मालूम नहीं होवे, परन्तु यह पाप रावण का चलाया हुआ है सो यह ख्याल करके रावण के पाप को समझ के कुल संसार को वाकिफ किया कि तुम तमाम जहान के लोग वेद शास्त्र बांच रहे हो उनमें चौरासी लाख कुण्डियाँ लिखी हुई हैं, सो रावण किसी जगह दुनिया के नाम का पाप करा रहा है, जिसका बिखान तुम तमाम जहान के लोग अपने मुँह से कर रहे हो और जो कि ग्रह चाला के बारे में और मिरगी होने के बारे में और रोग चाले के बारे में और ग्रहण पड़ने के बारे में और तलवार चलने के बारे में, टीपणों के अन्दर लिखा

मिरगी = बेहोशी वाली बीमारी,

हुआ है सो वोह टीपणे ऋषिश्वर लोग बांचते फिरते हैं, सो वोह राक्षसी पाप रावण के घर का है क्योंकि मालिक के घर में तो शेर और बकरी शामिल चरती हैं ऐसा सम्प है; और यह तो रावण किसी जगह पर गुप्ती पाप कराता है बल्कि मेरे नाम से भी जीवड़ों को कलपा रहे हैं, इससे मैं भ्रमजाल में पड़ा हुआ हूँ, जब शनिचर ने रामचंद्रजी महाराज को और ऋषिश्वरों को वाकिफ किया है और रावण के राक्षसी वेद की किताबें रामचन्द्रजी महाराज ने और राजा – बादशाहों ने एक दिल होकर देखा और रावण के जाल की पहचान की और उनके जाल से वाकिफ हुए और वाकिफ होकर यह कहने लगे कि आदमियों से तो धर्म, पुण्य और नेकी वगैरा हो सकती है और जो पाप करे और जुलम करे तो उसकी कुल डूब जावे और जो नेकी करे उसकी कुल तिर जावे, जब रावण के राक्षसी पाप की तलाश सब राजा बादशाहों ने एक दिल होकर किया कि जो

रावण ने चलाया था परन्तु उसने तलाश इस तरह से की, कि जो रावण के वेद को तमाम जहान के लोग और राजा - बादशाह पढ़ते थे उसके जाल से शनिचर ने सबहों को वाकिफ किया, जब सच और झूठ की तलाश करी और पाप की तलाश करके अपने दिल में बड़ा भारी फिक्र किया और यह कहने लगे कि इन्द्रजाल के पाप से कैसी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है; क्योंकि रावण राक्षसी विद्या का पाप कराता था सो संसार के लोग उसकी ही शोभा और बिखान करते थे, सो रावण ने दुनिया के नाम से वेद वगैरा की किताबें चलाई थी उनकी तलाश की और ''चौरासी लाख कुण्डियाँ और डाढ़ में जमीन रखने का और सूरज-चन्द्रमा को मुँह में ले लेने की और ऋषिश्वरों के परचों की तलाश की; और अलावा इसके शराब के दूध होने की और गोस्त का गुड़ होने के और मरे हुए के जिन्दा होने की, अनेक तरह की किताबें और परचा होने की'' राजा - बादशाहों ने तलाश की परन्तु यह सलाह राजा

- बादशाहों को शनिचर ने बताई कि जो कच्ची उमर में किसी को मार देवे तो अतीत फकीर किसी मरे हुए के ऊपर हाथ फेरे और वो जिन्दा हो जावे तो फिर अतीत फकीर के परचे-२ पुकारते हैं और है करामता; सो यह तो आदमियों की भूल है, न कि यह तो कुछ भी नहीं करते और करने वाले तो दूसरे हैं! क्योंकि जब चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर पाप जिसके नाम का कराते हैं वो बीमार हो जाता है और ज्यादा पाप कराते हैं तो कच्ची उमर में मर जाते हैं और जो पाप को छोड़ देते हैं तो फिर जिन्दा हो जाता है और जो उनके नाम का पाप नहीं छोड़ते तो ''फकीर चाहे फिर लाखों ही दफे उस बीमार के ऊपर हाथ फेरे तो कभी हरगिज जिन्दा नहीं होता,'' जब आदमी पूरी उमर पाके मरता है वोह परमेश्वर की कुदरत है और जबकि राक्षसी पाप से बीमार होता है तो नहीं अच्छा होता है चाहे फकीर-साधु कितना ही हाथ उसके ऊपर क्यों न फेरे! सो यह बात

दुनिया में भी कहते हैं कि "मरा हुआ किसी से भी जिन्दा नहीं होता है;" सो यह तो जब से बेईमान लोग राक्षस विद्या का पाप चलाते हैं, जब कच्ची उमर में मरते हैं और जो एक दिन भी कम होवे और बुड्ढा होवे तो उसको दुनियां भुलाने के वास्ते उसके नाम का पाप छोड़ देवे, जब यह कहने लगते हैं कि एक दिन मालिक के घर का कमती है इससे नहीं मरा और जो जवानों को या कच्ची उमर के लोग, बच्चों को मार देवे और फिर उनके ऊपर कोई साधु-फकीर हाथ फेरे, तो जिसके नाम का पाप छोड़ देवें तो वोह जिन्दा हो जावे और जिसके नाम का पाप नहीं छोड़े वो जिन्दा नहीं होवे, तो साधु को करामाती जानते हैं और फिर उसकी तारीफ करते हैं कि फलाने साधु के हाथ फेरने से जिन्दा हो गया और यह ख्याल नहीं करते हैं कि यह पाप है; क्योंकि जो पाप को छोड़ देवें हैं जब तो जिन्दा हो जाते हैं और पाप को नहीं छोड़ें तो जिन्दा नहीं होवे, चाहे साधु

ऊपर कितना ही हाथ क्यों न फेरे, हरगिज जिन्दा नहीं होवे. जब साधु-फकीर यह कहने को लग जाते हैं कि हमने भक्ति अच्छी तरह से नहीं की इससे हमारे हाथ के फेरने से यह शख्स जिन्दा नहीं हुआ है, अगरचे अच्छी तरह से भक्ति की होती तो हमारे हाथ फेरने से जरूर जिन्दा हो जाते, क्योंकि जिसने भक्ति की थी उनके हाथ फेरने से कैसा जिन्दा हो गया! सो जिसके हाथ फरने से वो बीमार अच्छा हो जाता है तो वो हाथ फेरने वाले यह जानते हैं कि मेरे बराबर कोई जोगी नहीं; क्योंकि मेरे कहने से मरे हुए जिन्दा हो जाते हैं और यह ख्याल नहीं करते हैं कि यह पाप है कि कच्ची उमर में मर जाते हैं और जो कि पूरी उमर पाके मरता तो है वो जिन्दा नही होता है और जो कच्ची उमर में मरा है, वह जिन्दा हो जाता है और जो कच्ची उमर में मरता है, किसी ने राक्षसी विद्या के पाप से मारके और हमारी सिधाई बढ़ाके हमारे मराने के वास्ते

तो किसी ने राक्षसी पाप नहीं चलाया है? क्योंकि मालिक ने सबको उमर पूरी दी है सो ऐसा नहीं सोचने देते हैं, क्योंकि जब दुनिया के नामका पाप कराते हैं तो दुनियाँ की नजर बंद हो जाती है व अकल भी खराब हो जाती है कि जो शराब का दूध सूझता है और गोस्त का गुड़ सूझता है और पानी का घी सूझता है और ऐसा भी करके दिखला देते हैं कि जो पानी होवे तो उसका घी करके दिखला देवें और मिश्री का नमक करके दिखला देते हैं, इसी तरह से अनेक परचे दुनिया को करके दिखला देते हैं और उसी तरह साधुओं को भी दिखला देते हैं जिससे मालिक को ही भूल जाते हैं; और शनिचर ने ऐसे-२ परचे वगैरा से सब राजा बादशाहों को वाकिफ किया कि ऋषिश्वरों को और साधु-फकीरों का तो कुछ दोष नहीं, क्योंकि सब संसार की बुद्धि कैद की हुई है; इसी तरह से ऋषिश्वरों की बुद्धि कैद की हुई है, सो ऐसा हाल देख करके राजा -

बादशाह और साधु–फकीर वगैरा अपने –२ दिल में बहुत घबराये और दिल में डरे और जिसके घर में राक्षसी विद्या कि किताबें थी वोह भी बहुत डरे और कहने लगे कि रावण ने बड़ा जुलम किया है कि ऐसे–२ जुलम की किताबें हमारे बच्चे मराने के वास्ते हमारी बुद्धि फेरके और भ्रष्ट करके दे दी है; सो इस बात की तलाश अगर दूसरी विलायत के राजा – बादशाह करते और हमारे घरों में ऐसी–२ किताबें देखते तो यह कहते कि यह राक्षसी विद्या का पाप हिन्दुस्तान के राजा – बादशाह और रैयत वगैरा कराते हैं, जब इनके घर मे ऐसी–२ किताबें राक्षसी वेद की हैं, जब संसार ने और राजा –बादशाहों ने दूसरी विलायत के राजा –बादशाहों को खबर दी कि रावण ने सब संसार के गारत करने के लिए यह राक्षसी पाप चलाया है. सो सब राजा –बादशाहों ने शामिल होकर रावण के राक्षसी पाप को फौरन छोड़ाया जब दुनिया की औलाद बची हैं और

इसी डर की वजह से राक्षसी वेद की किताबें वगैरा पानी में गला दी थी क्योंकि यह राक्षसी जाल चलाया हुआ तो रावण वगैरा का था और हमारे घरों में यह किताबें हमारे बच्चे मराने के वास्ते दे दी हैं और आप अलाहादा के अलाहदा रहा, इस सबब से उन किताबों को गला देना और पानी में डुबो देना. दुनियां में कहते हैं कि रामचन्द्रजी वगैरा और तमाम संसार ने राक्षस विद्या का वेद डुबो दिया था, उसी तरह से इन बनियों ने राक्षस विद्या का पाप चलाया है सो मिटाओगे जब दुनिया की औलाद बचेगी, क्योंकि इन बनियों ने रावण से ज्यादा पाप चलाया है जिससे संसार की बुद्धि भ्रष्ट कर दी है और रावण ने तो थोड़ा-सा ही राक्षस विद्या का पाप चलाया था, जिससे संसार की थोड़ी बुद्धि भ्रष्ट हुई थी, परन्तु इस हाल से शनिचर ने सबको वाकिफ किया जब सब लोग फौरन समझ गये, परन्तु इन महाजन बेईमानों ने ऐसा पाप चलाया है कि जैसे

कोई शख्स शराब को पी करके मस्त हो जाता है कि अच्छी बुरी बात को बेहोशी से नहीं समझता है, इसी तरह से संसार के लोग मेरे समझाने से नहीं समझते हैं, क्योंकि इन बनियों ने सबकी अक्ल को अपने राक्षसी पाप से ऐसी खराब कर दी है कि समझाये से भी नहीं समझते हैं; परन्तु यह काम मैंने तो सब राजा -बादशाह और साधु-फकीर के बच्चे बचने के सबब से अपने ऊपर तकलीफ उठाके इनके पापों को जाहिर करना शुरू किया है और किसी की बुद्धि तो ऐसी कर दी है और वो यह कहता है कि हम तो जादू को समझते ही नहीं हैं, सो यह बात इस वास्ते कहते हैं कि इन बनियों ने बुद्धि लोगों की, पाप से खराब कर दी है और मैं बहुत कुछ समझाता हूँ कि राक्षस विद्या और काफिर विद्या और जादू चाला और कालुकाल, यह तो इन बनियों ने नाम रख दिए हैं; असल में तो यह संसार के नाम का पाप कराते हैं जब पाप जमीन को और सूरज को और चन्द्रमा को और

मेह को लग जाता है तो आदमी की तो कौन चलाई है? और मैं बहुत समझाता हूँ कि यह पाप कराते हैं परन्तु फिर भी कोई नहीं समझता है, सो तो आए बरस काल और ग्रहण पड़ने का और रोगचाला और मरी पड़ने का टीपणों में सुनाते हैं, जब रावण हरनाकुश के वक्त में तो संसार के लोग कहते हैं कि पाप लग जाता था और मेह को और मौत को सहारे की थी, तो उसी तरह पर ख्याल करो कि अब भी पाप लग जाता है और रावण वगैरा का पाप तो इस कदर नहीं था कि जैसा इन बनियों का पाप हैं. जब रावण वगैरा का पाप कराया हुआ लग जाता था तो इसी तरह पर इन बनियों का पाप क्यूं नहीं लगेगा? और मैं इस जाल में कैद हूँ जिससे इस जाल का हाल मेरी आँखों से मुझको सब नजर आता है कि यह बनिये जिसके नाम का पाप कराते हैं उसी को लग जाता है; सो मैं अपनी बीती हुई बात सारी इस किताब में लिखता हूँ और 'मैं सब संसार की औलाद उभरने के वास्ते हजारों रूपया खर्च

करता हूँ और दुख पाके संसार को वाकिफ करता हूँ,' जब भी संसार नहीं समझता है कि जो एक दिल होकर इन्होंके पाप को छुड़ावें तो सबके बच्चों को आराम मिले, परन्तु इन बनियों ने तो सबकी अकल खराब कर दी है कि जब कोई शख्स हमारे जाल को जहान के लोगों को समझावेगा तो संसार के लोग नहीं समझेंगे, तो हमारा जाल बदस्तूर चलता रहेगा कि जैसा अब चल रहा है इसी तरह से चलता रहेगा, क्योंकि पाप को समझाने वाला समझाते-२ ही मर जावेगा तो फिर हमारा पाप अच्छी तरह से चलेगा, परन्तु मुझको ऐसी चाहना लगी हुई है कि जिस तरह से मैंने इन बनियों के राक्षसी पाप को पकड़ा है उसी तरह से इनका पाप छूट जावे तो सब संसार की औलाद बच जावे; और यह राक्षसी पाप बनियों का चलाया हुआ है सो मेरे जीते जी छूट गया जब तो छूट जावेगा, क्योंकि इन बनियों का गिरोह बहुत है और दिन-२ ज्यादा होता जाता है सो फिर वो किसी से पकड़े नहीं

जावेंगे और ना फिर तुमको इनकी खबर लगेगी, तो फिर किस तरह से इनके पाप को छुड़ाओगे? इससे मेरे लिखने पर सब संसार के लोग भरोसा करके और ऐतबार करके इन बनियों के जाल को छुड़ाओ तो अच्छा है और जो कि इनका जाल चल रहा है उसको दुरस्त और सच जानना और इसके छुड़ाने में कोशिश किसी राजा -बादशाह और संसार के लोगों ने न की. और भूल रखी तो फिर इनका जाल छूटना मुश्किल है, क्योंकि फिर तुम जो जाल को छुड़ाना चाहोगे तो फिर तुमसे हरगिज-२ नहीं छूटेगा. इससे 'तुम सब संसार के लोग एक दिल होकर इन बनियों के जाल को मेरी ही जिन्दगी में छुड़ाओगे जब इनका जाल छूटेगा' और मुझको इनके जाल की इस तरह से खबर पड़ी है कि ''इन बनियों ने मुझको अपने राक्षसी पाप से तकलीफ दी है कि जो मुझको इनके जाल से जिन्दा रहने की भी उम्मीद नहीं थी,'' परन्तु मैंने अपने ऊपर गिरते ही जाल के,

इन बनियों का जाल संसार में जाहिर करना शुरू किया और यह कहा कि इन बनियों ने मुझको अपने राक्षसी पाप से कलपाया है और कलपाते हैं, जिससे साबित होता है कि यह बनिये मुझको अपने राक्षसी पाप से मार देंगे परन्तु इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से मुझको मारा तो इससे नहीं है, कि हमने राक्षसी पाप से मार दिया तो संसार यह जानेगा कि यह बनिये जादू के जोर से हमको भी मार देंगे तो हमारा जाल मालूम हो जावेगा, इससे मुझको नहीं मारा, परन्तु इन बनियों का पाप संसार के गारत करने के लिए हद से ज्यादा चल रहा है, इससे मैंने संसार को बनियों के जाल से वाकिफ करना वाजिब समझा कि जब मैं संसार को वाकिफ करूँगा तो संसार के लोग इन बनियों के जाल से वाकिफ होकर जरूर इन बनियों के पाप को अपनी औलाद सलामत रहने की खातिर छुड़ावेंगे; चुनांचे वाकिफ करने के सबब से इन बनियों ने मुझको अपने पाप से दुखी करके

छोड़ दिया और मारा नहीं परन्तु यह बनिये संसार के नामसे किसी टापू के ऊपर गुप्ती पाप करा रहे हैं सो इन बनियों ने इस राक्षस विद्या के पाप से ऐसा दुख दे रखा है कि जबान से भी अदा नहीं किया जाता, वो बनियों के घर का चलाया हुआ है कि जिस तरह से रावण ने राक्षस विद्या का पाप चलाया था, उसी तरह से बनियों ने भी राक्षस विद्या का पाप चलाया है, जिससे सबकी अकल भ्रष्ट हो रही है कि समझाने से भी नहीं समझाते हैं; क्योंकि मालिक ने तो सबको उमर पूरी दी है परन्तु यह जो कच्ची उमर में मरते हैं सो यह गुप्ती पाप से मर जाते हैं, सो इस कच्ची उमर के मौत का ख्याल करके संसार के लोगों को बनियों के जाल से वाकिफ करना जरूर बात समझा कि "जो मेरे जीते जी इन सौदागरान का जाल छूट गया जब तो छूट जावेगा, जब संसार के बच्चे बच जावेंगे नहीं तो बनियों की चोरी किसी पर जाहिर नहीं होगी" क्योंकि यह सौदागर लोग सबसे मिल जाते हैं और मिलके

सबकी अकल को भ्रष्ट कर देते हैं जिससे फिर संसार के लोगों को ऐसा सूझता है कि जो बनिये कहते हैं वो सच समझते हैं अब मेरा लिखना है कि जिस तरह से शनिचर ने रावण के जाल से संसार को और राजा-बादशाह को वाकिफ किया जब राजा -बादशाह ने एक दिल होकर रावण के राक्षसी पाप को छुड़ाया, उसी तरह से अब मैं संसार के राजा - बादशाह और रैयत को बनियों के जाल से वाकिफ करता हूँ और इन बनियों का जाल पकड़कर सलाह बताता हूँ, सो सब संसार के लोग मिलके इन सौदागरान के जाल को छुड़ाओ ताकि तुम्हारे बच्चे इन बनियों के राक्षसी पाप से बच जावें और संसार में पीछे सतजग हो जावे और कुल चीजें संसार में सतजग की तरह से होने लगे कि जैसे पहले जमाने में होती थी, उसी तरह से अब भी होने लगे; सो जबकि सतजग होगा तो चाँदी-सोने की खानें भी प्रगट हो जावेंगी और जबकि आदमी बीमार होता है और दुबला हो

जाता है तो उसका शरीर कमजोरी के सबब से दुबला हो जाता है और चरबी नहीं रहती है, क्योंकि दुख की वजह से गल जाती है, परन्तु जब वो बीमार आदमी अच्छा हो जाता है तो फिर वो अच्छा होने की वजह से दिन-२ ताजा हो जाता है और जिस तरह से कि उसके शरीर में ताकत आ जाती है, उसी तरह से चरबी भी बढ़ती जाती है, इससे यह बात समझने के लायक है क्योंकि जिस तरह से अपने शरीर में कुल चीजें हैं और वो बढ़ती जाती हैं; उसी तरह से जमीन माता के शरीर में भी गोस्त, खून, हड्डी और चरबी वगैरा है जिसकी पहचान इस तरह से है कि "जो पहाड़ हैं वो जमीन माता के शरीर के हाड़ हैं और जो कि मिट्टी है वो जमीन माता के शरीर का गोस्त है और जो कि चाँदी-सोने की खानें हैं वो जमीन माता के शरीर की चरबी हैं और जो कि हीरा-पन्ना हैं वो पहाड़ों का रूप हैं," परन्तु यह बनिये राक्षसी पाप से काल पड़ा रहे हैं जब से जमीन माता दुख पा रही हैं जिससे जमीन

माता के शरीर की चरबी गल गई है और इसके शरीर की रोशनी भी जाती रही है. सो देखो भाई! कि जिस तरह से आदमी का शरीर बीमारी के सबब से कमजोर हो जाता है और बदसूरत लगने लगता है, इसी तरह से जमीन माता का भी रंग बदल गया है कि जो कोई भी नहीं पहचान सकता है और जमीन माता का शरीर तो मालिक ने अपनी कुदरत से और ही किसम का और आदमी और जीवाजून का स्वरूप और तरह का ही बनाया है और अलावा इसके झाड़ वनस्पति का स्वरूप और ही तरह का बनाया है, सो भाई मेरे हो, परमेश्वर ने अपनी कुदरत से सबके स्वरूप न्यारे-२ बनाए हैं कि जो जमीन के ऊपर मौजूद हैं सो तुम तमाम जहान के लोग इस बात का ख्याल दिल से रखना कि जिस दिन तुम तमाम जहान के लोग एक दिल होकर इन बनियों के जाल को छुड़ाओगे जब जमीन माता का शरीर तैयार हो जावेगा और पहाड़ का जो स्वरूप है वो भी हीरा-पन्ना की तरह से चमकने

लगेगा और हीरा-पन्ना यह पहाड़ हैं. परन्तु जब जमीन माता की बीमारी जाती रहेगी जब कुल चीजें मेवा-मिष्ठान वगैरा और चरबी वगैरा सतजग की तरह से होने लगेगी; जब यह जानना कि बनियों ने राक्षसी पाप छोड़ा है, नहीं तो यह बनिये अपने राक्षसी पाप से कुछ का कुछ सुझाके भुला देवेंगे, क्योंकि यह बनिये कुल पाप को नहीं छोड़ेंगे और तुमको थोड़ा राक्षसी पाप छोड़के यह सुझा देंगे कि हमने राक्षसी पाप छोड़ दिया हैं. सो यह बात तुम अच्छी तरह से ख्याल करना कि जब यह बनिये पाप को छोड़ देवेंगे जब तो कोई भी कच्ची उमर में नहीं मरेगा और तुम तमाम दुनियां के लोगों की ऐसी बुद्धि हो जावेगी कि एक-२ को चाहने लगेगा और शेर-बकरी शामिल चरेगी; अनबोलों में भी ऐसा सम्प होगा और कुल चीजें सतजग की तरह से पैदा होगी, जब ये जानना कि इन बनियों ने दुनियाँ के नाम का पाप छोड़ा है और जो कि यह

पाप कराते हैं, वो अलोप कराते हैं, अगरचे जाहिरदारी में करें जब तो हर कोई इनके पाप को छोड़ा देवे परन्तु गुप्ती पाप की वजह से किसी पर इनका पाप साफ-२ जाहिर नहीं होता है कि किस कदर पाप कराते हैं और कहाँ पर कराते हैं? इससे किसी से भी इनका पाप कराना नहीं छोड़ाया जाता, परन्तु इन बनियों ने तो मुझको अपने राक्षसी पाप से रू-ब-रू कलपाया है, इससे इनकी चोरी मालूम हुई और जिस कदर पाप से नुकसान हो रहा है वो मैं अपनी नजरों से देख रहा हूँ, इससे आप लोगों को इस लिखे हुए पर गौर फरमाना मुनासिब है कि "मालिक के घर से तो सबकी उमर पूरी दी हुई है और इस जमाने में तो आदमी की उमर (१२५) बरस की है, सो एक सौ पच्चीस बरस की उमर मेरी भी है और मेरा जनम चैत्र सुदी (१४) संवत् (१९०५) का है सो इस मिती और संवत् से लगाकर संवत् (२०३०) तक मेरी उमर होनी चाहिए; क्योंकि यह

कुछ आदमी की दी हुई थोड़ी ही है! यह तो परमेश्वर की दी हुई है और इसी तरह से कुल जहान के लोगों की उमर (१२५) बरस की है'' परन्तु यह किसी को भी पूरी उमर नहीं पाने देते हैं और कच्ची उमर से मार देते हैं. सो इस पाप की वजह से लाखों में एक-दो की ही पूरी उमर होती हैं, सो मुझको तो इस बात का गम नहीं है परन्तु यह बनिये मुझको अपने राक्षसी पाप से कच्ची उमर में मार देंगे, इस बात पर अलबत्ता गम है कि ''जब मुझको मार देंगे तो फिर बनियों की चोरी को कौन जाहिर करेगा?'' क्योंकि बनियों के तो दिल में यह है कि इसने हमारा जाल पकड़ा है सो इसको मार देवेंगे तो हमारे वास्ते अच्छा है, क्योंकि हमारा जाल फिर अच्छी तरह चल निकलेगा इससे यह बनिये मुझको अपने राक्षसी पाप से मारना चाहते हैं कि हम बनियों का जिस कदर जाल है वो सब शनिचर की तरह से इसको मालूम है, अगरचे इसको नहीं मारेंगे तो हमारा

जाल किस तरह से चलेगा. क्योंकि शनिचर की तरह से यह तमाम जहान को हमारे जाल से वाकिफ कर देगा, जब संसार के लोग फौरन हमारे जाल को छुड़ा देंगे. तो फिर हम दुनियाँ को किस तरह से गारत करेंगे, और क्यों कर उनका धन अपने काबू में आवेगा? सो इन बनियों के दिल में तो राक्षसी पाप कराने की रहती है इससे ऐसा ही सूझता है और रावण के वक्त में तो रावण ने शनिचर को कलपाया था, जब शनिचर ने विभीषण से कहा कि जो तू मेरे जीते जी पाप को छोड़ा देगा जब तो तू भी सलामत रह जावेगा और मुझको जादू से तुमने मार दिया तो संसार तुम्हारी जान भी निकाल देगा, तो रावण के साथ तुम भी मारे जाओगे, क्योंकि रावण ने शनिचर को कलपाया था जब शनिचर ने विभीषण से कहा कि जो मेरे जीते जी तुम और तुम्हारा भाई रावण पाप को छोड़ देगा जब तो तू भी बच जावेगा और जो कि मुझको जादू से मार दिया तो संसार तेरी भी

रावण के साथ जान निकाल देगा, क्योंकि संसार को तुम्हारे राक्षसी पाप की खबर नहीं है, परन्तु मैंने तुम्हारा जाल पहचान लिया है और पहचान करके तुम्हारे जाल से वाकिफ किया, सो तुम मेरे सामने अपना राक्षसी पाप छोड़ दो कि जिस कदर तुमने चलाया है क्योंकि तुमको तुम्हारा कुल जाल मालूम है. अगरचे तुम मेरे सामने अपने पाप को नहीं छोड़ोगे तो दुनियाँ को तुम आधा पाप छोड़के बता दोगे और बगैर छोड़े यह बात प्रगट कर दोगे कि हमने छोड़ दिया, सो तुम्हारे जाल को संसार के लोग किस तरह से जानेंगे कि पाप को छोड़ा है कि नहीं छोड़ा है? क्योंकि वो तुम्हारे राक्षसी पाप को पहचानते ही नहीं, सो तुम इस जाल को मेरे सामने छोड़ दो; सो शनिचर के कहने को समझ करके विभीषण ने कहा कि "मैं तुम्हारी जबान से तिरना चाहता हूँ सो मैं अपने कुल में राक्षसी पाप नहीं चलते दूँगा," क्योंकि विभीषण को तो पाप का छोड़ना ही मंजूर था, इससे

शनिचर के कहने को मंजूर कर लिया और छोड़ने को तैयार हो गया, परन्तु जबकि इस हाल को विभीषण ने रावण से कहा तो रावण ने शनिचर के सामने राक्षस विद्या के छोड़ने में इन्कार किया, जब शनिचर ने तंग किया जब रावण ने अपने राक्षसी पाप को बता दिया परन्तु कुछ बताया और कुछ नहीं बताया. जब शनिचर ने यह देखा कि यह पूरा पाप नहीं बताता है कि जिस कदर इसका पाप है, हालांकि मुझको रावण का राक्षसी पाप कुल मालूम है कि जिस कदर यह करता है, परन्तु रावण अपने पाप को मेरे से अलोप रखता है, जिसकी वजह यह है कि जो किसी कदर मेरा पाप छाने रह जावेगा, तो मैं पीढ़ी, दो पीढ़ी के बाद फिर अपना राक्षसी पाप चला दूँगा; परन्तु शनिचर बड़ा अकलमंद और समझदार था कि जो रावण की चोरी को पकड़ लिया था, लेकिन रावण तरह-२ के जाल करके अपने पाप को छुपाता था, मगर शनिचर रावण की फरेबी

बातों को बिलकुल नहीं मानता था और रावण को तंग करता था चुनांचे रावण ने अपना राक्षसी पाप कुल नहीं बताया. जब शनिचर ने विभीषण से रावण के पाप को दरियाफ्त किया तो विभीषण ने रावण का राक्षसी पाप कुल बता दिया, कि जिस कदर रावण गुप्ती पाप करता था; इससे शनिचर के दिल में रावण की तरफ से शक पड़ गया, इस वजह से शनिचर ने रावण के राक्षसी पाप से तमाम जहान को वाकिफ कर दिया कि रावण का मुझको भरोसा नहीं हैं, क्योंकि इसने राक्षसी पाप बिलकुल नहीं बताया है, सो अचरज नहीं कि एक-दो पीढ़ी के बाद फिर अपना राक्षसी पाप चला देंवे, क्योंकि यह मेरे सामने भी झूठ बोलता है तो तुम लोगों के सामने तो किस तरह से सच बोलेगा, इससे मैं तमाम जहान के राजा -बादशाह और रैयत को इस रावण के राक्षसी पाप से वाकिफ करताहूँ कि जो तुम्हारी मरजी में आवे वोह रावण के जाल का बन्दोबस्त करना, इस बात से सब जहान ने

यह विचार किया कि रावण का राक्षसी पाप शनिचर को मालूम है, सो रावण ने अपना राक्षसी पाप शनिचर को ही नहीं बताया तो हमको तो क्योंकर सच-सच अपना जाल बतावेगा? ऐसा ख्याल करके तमाम जहान ने शनिचर के कहने पर यकीन लाकर दिल में ख्याल किया कि जो अब हम रावण को मय औलाद के नहीं मारेंगे जब तक इसका राक्षसी पाप दफे नहीं होगा, बल्कि रावण अपने राक्षसी पाप से हमारी औलाद को भी गारत कर देगा. इस वजह से तमाम जहान ने एक दिल होकर रावण को मय औलाद के जान से मार दिया, कि रावण के घर में चिराग करने वाला भी नहीं रहा; यह बात दुनियाँ में अच्छी तरह से मशहूर है, परन्तु अब शनिचर की तरह से इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से कलपाया है परन्तु पाप तो वो का वहीं है कि जैसा रावण कराता था, उसी तरह से इन बनियों का भी राक्षसी पाप चल रहा है कि जो दुनियाँ के नाम से और जमीन माता के नाम से

करा रहे हैं. सो यह बनिये अपने राक्षसी पाप से मुझको इस तरह से सुझाते हैं कि हम तुमको अपने राक्षसी पाप से मार देंगे, इससे मैं भी शनिचर की तरह से बनियों को समझाता हूँ कि जहाँ पर बनियों का मेला होता है और सब पंच सौदागर लोग जमे होते हैं, वहाँ पर जा-जा के समझाता हूँ कि "तुम अपने राक्षसी पाप को छोड़ दो सो कोई तो सौदागर लोगों में से यह कहता है कि जिसने चलाया है उसको मारो, और कोई यह कहता है कि हमको खबर नहीं और कोई यह कहता है कि अभी तो हमारा राक्षसी पाप रावण की तरह से खूब चलेगा और बंद नहीं होगा." जिस पर मैंने बनियों से यह कहा कि तुम लोग एका करके रावण की तरह करते हो, सो छोड़ दो तो भविक्षण की तरह से तुम महाजन लोग भी तिर जाओ, क्योंकि जाल तुम्हारा है, एक शख्स से नहीं चल सकता है, यह तो सब मिल कर चलाते हैं, जब ही चलता है, सो तुम छोड़ दो; क्योंकि जिस कदर तुम्हारा

एका = संगठन

जाल चल रहा है, वो मैंने पकड़ लिया है सो तुम्हारे छुपाने से नहीं छुपता है और जो कि अब मेरे सामने ही इनकार करते हो तो संसार के लोगों को किस वास्ते अपने पाप को बताओगे, क्योंकि जो मेरे सामने ही इन्कार करते हो, कि जो मुझको तुम्हारा राक्षसी पाप कुल मालूम है परन्तु इन्होंको तो मालूम नहीं है; सो फिर इन्होंको किस वास्ते बताओगे और तमाम जहान को गारत कर दोगे और सब संसार का धन अपने कब्जे में कर लोगे. जब मैंने इन्होंसे कहा कि ''रावण की भी नहीं चली थी तो तुम सौदागरान की कब चलेगी,'' इस वास्ते तुम अपनी औलाद बचने के वास्ते राक्षस विद्या का पाप छोड़ दो, क्योंकि जिस तरह से रावण का जाल शनिचर ने देखा था और रावण से राक्षसी पाप शनिचर ने अपनी जिन्दगी में ही छुड़ाया था, उसी तरह से ''अब तुम सौदागर लोग मेरे जीते जी छोड़ दो, नहीं तो रावण की तरह से

तुम्हारी जान भी कुल जहान के लोग एक दिल होकर निकाल देंगे'' कि जो मेरे सामने नहीं छोड़ोगे, क्योंकि रावण ने शनिचर से अपने पाप को छुपाया था और कुछ बताया था और कुछ नहीं बताया था इससे शनिचर ने रावण के पाप को तमाम जहान में जाहिर कर दिया कि रावण ने कुल पाप नहीं बताया है, सो जिस तरह से तुम्हारे दिल में आवे उसी तरह से रावण के राक्षसी पाप को छुड़ाना, चुनांचे तमाम जहान ने शनिचर के कहने पर यकीन करके रावण की जान ही निकाल दी, उसी तरह से अब मैं भी तुम सौदागरान के पाप को छोड़ाना चाहता हूँ क्योंकि तुम सौदागर लोग बड़े बेईमान हो कि तुम राजा - बादशाह के सामने कसम खा-खा के बच जाते हो और उनसे यह कह देते हो कि हमने पाप करना छोड़ दिया, इससे कुछ सख्त सजा वगैरा नहीं देते हैं परन्तु जहाँ पीढ़ी, दो पीढ़ी गुजरी और अपना पाप करना शुरू कर दिया, गर्ज की

इसी तरह से चलाते रहते हो परन्तु "अब, जब तक कि कुल पाप को नहीं छोड़ोगे, हरगिज-२ जीता नहीं छोड़ने दूँगा और संसार के हाथों से तुम सौदागरान को मरवा दूँगा," क्योंकि तुम ऐसे बदमाश हो कि अपने पाप से तमाम जहान को गारत कर देते हो और दया नहीं करते हो, बल्कि तुमने अपने राक्षसी पाप से सबकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है कि जो मैं राजा बादशाहों के पास मिलने को जाता हूँ और पाप से वाकिफ करता हूँ, तो तुम सौदागर लोग अपने राक्षसी पाप से राजा -बादशाहों के दिल में मुझ गरीब को 'अहमक' सुझाते हो और राजा -बादशाहों को समझाने नहीं देते हो, बल्कि तमाम जहान के लोगों से मुझको गालियाँ दिलाते हो और रात-दिन पाप कराते रहते हो और छोड़ना नहीं चाहते हो और जो मैं उनसे न समझने के सबब से लड़ने को लग जाऊँ और नाराज होकर समझाऊँ जब वो समझने वाले मुझको मारने लग जावें, सो यह फितूर तुम

जीता = जिन्दा

सौदागरान के राक्षसी पाप का ही है क्योंकि तुम संसार को समझने नहीं देते हो और सबकी अकल खराब कर रहे हो कि जो तुम सौदागर लोग हमको अपने पाप से बुद्धि फेरके लोगों के हाथों से धक्के दिलवाते हो. सो यह तुम सौदागरान की जालसाजी है कि सभों की अकल को अपने राक्षसी पाप से भ्रष्ट कर दी है, इससे संसार के लोगों को ऐसा ही सूझता है, सो ऐ संसार के लोगों, तुम अपने दिल से इनके राक्षसी पाप को समझो कि किस कदर जाल इन बनियों का चल रहा है कि जिस जाल से तुमको अच्छे - बुरे हाल की खबर नहीं पड़ती है, कि जो बुरा काम करते हो उसको ही अच्छा समझते हो और अच्छे काम को बुरा समझते हो, सो यह राक्षसी पाप बनियों का चलाया हुआ है; सो जब तक कि तुम इन बनियों के जाल को नहीं समझोगे और नहीं छोड़ाओगे जब तक यह बनिये इसी तरह से चलाये जावेंगे, कि जिस जगह मैंने लोगों को समझाया तो

वहीं पर इन बनियों ने उनकी बुद्धि फेरके मेरे को धक्के लगवाये, लेकिन जब तक कि वोह लोग पाप की वजह से भूले हुए थे और समझते नहीं थे बल्कि उन्होंको धक्के देने का ही सुझाते थे, इससे मुझको धक्के दिए; परन्तु ''जब वो लोग इन बनियों के पाप को समझे तो वोह लोग ही मुझको अपना गुरू समझने लगे. सो ऐ संसार के लोगों! मैं तो किसी का गुरू हूँ ना चेला हूँ और ना किसी को अपना चेला करता हूँ'' कि जो इन बनियों ने रावण की तरह से सबकी अकल खराब कर दी है, कि जो अपनी चोरी को संसार पर जाहिर नहीं होने देते हैं; सो संसार में इनकी चोरी बगैर बताये के किस तरह मालूम हो सकती है, क्योंकि यह बनिये गुप्ती पाप करा रहे हैं, कुछ जाहिर थोड़ा ही कराते हैं कि जो दुनिया को मालूम हो जावेगा, क्योंकि ''जिसने राक्षस विद्या की चोरी पकड़ी है और संसार में जाहिर की है वो जीवदान देने वाले के बराबर है.'' सो इस बात को वेद शास्त्रों में भी

कहते हैं और लिखते भी हैं,परन्तु मैं तो दुनिया के बच्चे मरते हुए देखता हूँ इससे उनके जिन्दा रहने के वास्ते बनियों के पाप को परमेश्वर के लेखे जाहिर करता हूँ, कि दुनिया इस जाल से वाकिफ होकर इन बनियों के पाप को अपने बच्चे जिन्दा रहने की गर्ज से, और कम उमर में ना मरने की वजह से तमाम जहान के लोगों को वाकिफ करता हूँ परन्तु नहीं समझते हैं सो यह बात ख्याल करने के काबिल है कि तमाम जहान के बच्चे बचने के सबब से इन बनियों के जाल से वाकिफ करता हूँ, हालांकि मेरे बदन में इस कदर ताकत नहीं है कि समझाऊँ और धक्के खाऊँ, परन्तु 'तमाम जहान के बच्चे बचने के गर्ज से धक्के खाता हूँ और समझाता फिरता हूँ, मगर बाजे शख्स ऐसे मिल जाते हैं कि धक्के देते हैं और समझते नहीं हैं; सो यह बुद्धि भ्रष्ट होने का सबब है लेकिन ''जिस वक्त मेरे पर ऐसा नाजुक वक्त गुजरता है उस वक्त गम खा जाता हूँ, हालांकि बनियों के जाल को लिखाने में

बदन के अन्दर कांपनी छूट जाती है कि जो मारे कमजोरी के बदन से पसीना निकलता है'' परन्तु संसार के बच्चे तिरने के वास्ते अपने ऊपर ऐसी तकलीफ वाजबी जानकर इन बनियों के पाप को तमाम खलकत में समझाता फिरता हूँ कि सब संसार मिलके और एक दिल होकर बनियों के जाल को छोड़ाओ जब इनका जाल दफे होगा और जिस कदर कि इन बनियों ने मुझको अपने राक्षसी पाप से दुखी किया है, सो इतना तो शनिचर को भी रावण ने दुखी नहीं किया था; क्योंकि शनिचर ने रावण के राक्षसी पाप को पकड़ा था और पकड़कर शनिचर ने रावण के राक्षसी पाप से तमाम जहान को वाकिफ किया और शनिचर ने रावण के भाई विभीषण को राक्षसी पाप के बारे में कहा कि तेरे भाई रावण ने दुनियाँ के नाम से और जमीन के नाम से राक्षसी पाप कराया है, जिसकी मुझको अच्छी तरह से खबर है और मैंने रावण की चोरी पकड़ी है, सो संसार के बच्चे

बचने के लिए संसार के हाथों से ही रावण के राक्षसी पाप को छोड़ाउंगा. चुनांचे इस बात के सुनने से विभीषण अपने दिल में निहायत दर्जे डरा और अपना कुल बचने के वास्ते अपने भाई रावण का, राक्षसी पाप को बताया, कि रावण ने जिस कदर पाप दुनियाँ के नाम से चलाया था, क्योंकि शनिचर को भक्ति के सबब से रावण का कुल जाल मालूम हो गया, इससे शनिचर ने इसके बचाने के बारे में निहायत कोशिश की और कोशिश करके छोड़ा दिया, मगर इन बनियों ने अब फिर राक्षसी पाप चला दिया, सो इनका पाप चल रहा है, जिसकी खबर अब तक संसार को बिलकुल नहीं है, परन्तु बनियों ने अब मुझको अपने राक्षसी पाप से दुखी किया है कि जिस तरह से रावण ने अपने राक्षसी पाप से शनिचर को कलपाया था, उसी तरह से इन बनियों ने मुझको दुखी किया है; परन्तु जिस तरह से शनिचर ने विभीषण से रावण का राक्षसी

पाप दरियाफ्त किया था और विभीषण से यह कहा था कि जो रावण का राक्षसी पाप तू मुझको बता देगा तो तेरी औलाद भी सलामत रह जावेगी. चुनांचे विभीषण ने अपनी औलाद सलामत रहने के सबब से रावण का राक्षसी पाप बता दिया, गर्ज कि इसी तरह से मैं भी इन बनियों से दरियाफ्त करता हूँ और यह कह रहा हूँ कि शनिचर की तरह से मुझको तुम बनियों का राक्षसी पाप मालूम है, सो तुम सौदागर लोग मुझको अपना राक्षसी पाप बता दो, तो तुम भी विभीषण की तरह से तिर जाओगे और अपनी औलाद को सलामत रखोगे; परन्तु यह बनिये बड़े जालसाज और बदमाश हैं, इससे अपनी चोरी को जाहिर नहीं होने देते हैं और रात-दिन पाप करा रहे हैं जिसका हाल चन्द जगह किताबों में लिखा हुआ है और मैं भी इन बनियों के जाल को इस किताब में जगह - जगह वास्ते वाकिफियत, आम लोगों के

लिख चुका हूँ, कि जहाँ पर गुप्ती पाप दुनियाँ के नाम का करा रहे हैं, इससे अब मेरी अर्ज यह है, कि अब तुम संसार के लोग एक दिल होकर इन बनियों के राक्षसी पाप को छुड़ाओ, जिससे संसार की औलाद बचे, ''सो इनका जाल मेरे जीते जी छुड़ाओगे जब तो छूट जावेगा वरना फिर नहीं छूटेगा,'' क्योंकि यह रावण की तरह से राक्षसी पाप अलोप करा रहे हैं और दरियाफ्त करते हैं तो नहीं बताते हैं, परन्तु इन बनियों का जाल जब ही दफे होगा कि जिस तरह से तमाम जहान ने एक दिल होकर रावण का राक्षसी पाप छोड़ाया था, उसी तरह से बनियों का पाप भी सब जहान के लोग एक दिल होके छुड़ावेंगे तो छूट जावेगा क्योंकि इन बनियों ने सबकी बुद्धि ऐसी खराब करदी है कि जो मैं समझाता हूँ तो नहीं समझते हैं और हँसने लगते हैं, सो यह न समझने का सबब है और जब समझेंगे फिर कभी नहीं हँसेंगे, और न मेरी कही हुई बात को मश्खरी - मजाक

समझेंगे. सो यह बात काबिल ख्याल करने के है कि जो मैं समझाता हूँ लेकिन तमाम जहान के लोग अकल फिरने के सबब से ऐसा कहने लगते हैं कि 'बाबा गैला हो गया है और कोई यह कहना है कि वहम हो गया है इससे इधर-उधर बकता फिरता है' और कोई यह कहता है कि 'बाबा का माल असबाब और जमीन जायदाद को किसी बनिये ने ले ली है जिससे इन्होंको बदनाम करता है' सो भाई मेरे, मेरा तो किसी बनिये ने माल- असबाब वगैरा नहीं लिया है, परन्तु तुम्हारी अकल इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से न समझने के लिए फेर दी है, जिससे तुम लोग अपने मुँह से मुझ गरीब को ऐसी-२ शख्त बातें कहते हो, लेकिन जो कि राक्षसी पाप को जहान में प्रगट करता है वोह अच्छा समझा जाता है और पहले जिन शख्सों ने राक्षसी पाप को संसार में जाहिर किया है और दफे कराया है वोह भी अच्छे समझे गए हैं; सो भाई मेरे हो, परमेश्वर की जो रचना है सो

सब संसार के लोग औतार ही हैं, मगर अपनी- अपनी भक्ति का फल अलाहदा-२ है, क्योंकि जो भक्ति करता है उसकी भलाई दुनियाँ में रहती है और जो बुराई करता है उसकी बुराई रहती है. सो मैं तो संसार में कोई बुरा काम नहीं करता हूँ बल्कि तमाम जहान के बच्चे बचने के लिए अपने सर पे बोझ उठाकर भलाई करता हूँ ताकि सब संसार को सुख प्राप्त होवे तो उमदा है, इससे मैं बनियों की चोरी को जो गुप्ती पाप दुनियाँ के नाम का करा रहे हैं उसको आप लोगों के दिल में प्रगट कर रहा हूँ कि इन बनियों का जाल दफे हो जावे तो कैसी उमदा बात है; परन्तु जैसी-जैसी बात तमाम जहान के लोग मुझसे कहते हैं वो मैं ही जानता हूँ बल्कि इस ही 'वरक' के ऊपर लिख चुका हूँ सो बनिये राक्षसी पाप से ऐसी -२ बातें सख्त कहलाते हैं तो उसके सुनने से मेरे दिल में कैसी बुरी आती हैं, परन्तु कुछ भी किसी से नहीं कहता हूँ बल्कि खुशामद करके और बनियों के जाल को देख -२

के समझाता हूँ तो भी तमाम दुनियाँ ख्याल नहीं करती है; सो ऐ भाईयों, यह ख्याल करने की बात है इससे तुमको बार-२ समझा के हिदायत करता हूँ कि मेहरबानी करके और मेरी आजीजी पर खयाल फरमा के इस काम को भी समझो और ख्याल करो, क्योंकि मैं सिर्फ तुम्हारे बच्चे बचने के वास्ते इन बनियों के जाल को समझाता हूँ और 'तुम लोग पागल और सिरड़ी कहते हो, सो मेरे दिल में कैसी बुरी आती है कि सर फोड़के मर जाऊँ' परन्तु इस ख्याल से ऐसा नहीं किया जाता कि जो मैं ही इन बनियों के जाल से वाकिफ नहीं करूँगा तो फिर कौन करेगा? क्योंकि इन बनियों ने मुझको अपने जाल से कलपाया है इससे मैं बनियों की चोरी जाहिर करता हूँ और इसी वजह से मैं अपने ऊपर यह काम उठाके इन बनियों के जाल से वाकिफ करता हूँ और किसी के बुरे-भले कहने को ख्याल में नहीं लाता हूँ और जगह -२ जाके समझाता फिरता हूँ, सो सच -२ जानना और

सिरडी = जिसका सर खराब हो

सब संसार के लोग इन सौदागरान के पाप को छोड़ाने की कोशिश करो, क्योंकि रावण और हरनाकुश और कंश, कारून वगैरा ने पहले भी राक्षसी विद्या का पाप चलाया था और अपने दिल में यह विचार किया था कि चारों कूंट में अपना राज करूँ, जब मेरी मरदानगी है, परन्तु उनके राक्षसी पाप की चोरी सब संसार में प्रगट हो गई, इससे कुल संसार ने उनके पाप का बन्दोबस्त करके छोड़ा दिया था, परन्तु रावण की तरह से इन बनियों ने भी राक्षस विद्या का पाप चलाया है, सो चारकूंट में राज करने के वास्ते और दिल में यह भी विचारा है कि हम बनिये तमाम जहान में अपना राज करें. इससे मैं आपको बार-२ इन बनियों के जाल से वाकिफ करता हूँ कि यह बनिये लोभ ही लोभ में तमाम जहान को गारत कर देंगे, परन्तु यह महाजन लोग अलाहदा के अलाहदा रह जावेंगे, सो सब संसार को आपस में लड़ाके मार देवेंगे, इससे तमाम जहान के लोग

जल्दी एक दिल हो जाओ जिससे तमाम जहान के लिए बेहत्तर है, नहीं तो तमाम जहान की औलाद रहने की नहीं है; और अपने हिन्दुस्तान में तो सरपंच तुम अंग्रेज ही हो, इससे मैं साध (अनोपदास) हाथ जोड़कर अर्ज करता हूँ कि इन सौदागर महाजनान के जाल की पहचान करो और इनके जाल को छोड़ाने का बंदोबस्त जल्द करो और यह भी समझने की बात है कि इन बनियों के जाल की किसी जात में खबर नहीं है, कि यह बनिये हमको जाल से मारते हैं तो भी हिन्दू-मुसलमान इन बनियों का किस कदर दिल रखते हैं कि जैसे बच्चे अपने माँ-बाप का दिल रखते हैं और माँ बाप बच्चों का दिल रखते हैं; उसी तरह से हिन्दू - मुसलमान इन बनियों का दिल रखते हैं, सो दुनियां में सब ही जानते हैं और कहते हैं कि बनिये माई - बाप हैं, क्योंकि बादशाहों ने इन सौदागरान को ऐसी पदवी दी है कि 'पहले शाह और पीछे बादशाह'. सो यह बात काबिल ख्याल करने की है,

कि यह सौदागर महाजनान करोड़ों तरह के जाल जाहिर करते हैं, तो भी राजा-बादशाह और रैयत इन सौदागरान को ही सच्चा जानते हैं कि जिससे शाह की पदवी इन सौदागरान को बख्श रखी है कि जो आगे बाप का नाम आता है और बाद में बेटे का, परन्तु इसकी असली वजह यह है कि बादशाहों को इस बात की बिलकुल खबर नहीं है, कि यह महाजन लोग मिलके दगा करते हैं बल्कि वो तो ऐसा जानते हैं कि यह बनिये बड़े सती हैं और नेक हैं जिससे इन महाजनान को शाह की पदवी दे रखी है, कि जो पहले इन सौदागरान का नाम आता है और उसके बाद बादशाह का नाम आता है. सो यह बात काबिल गौर करने की है कि राजा -बादशाह इन सौदागरान का इस तरह से तो लाड़ रखते हैं और कहते हैं कि ''जहाँ सौदागर महाजनान नहीं, वहाँ राज नहीं'' सो ऐ तमाम जहांन के राजा -बादशाह और रैयत, अपने-२ दिल में, साथ गौर के ख्याल करके देखो

कि इन महाजनान के ऐसे -२ तो भरोसे और ऐतबार करते हैं तो भी सौदागर महाजनान अपने फरेब और बदमाशी से बाज नहीं आते हैं और रावण की तरह से दरियावों के पार किसी टापू के ऊपर यह सौदागर महाजनान गुप्ती पाप करा रहे हैं, जिससे संसार में बीमारियाँ साल-ब-साल होनी शुरू हो जाती हैं और इन 'नाकिस बीमारियों' से करोड़ों आदमियों को मार देते हैं, जिसकी तारीफ तमाम जहान के लोग अपनी-२ जबान से अदा करते हैं, कि यह परमेश्वर की कुदरत है और सिवाय परमात्मा के कौन ऐसा कर सकता है? सो भाई मेरे, हिन्दू -मुसलमान, अंग्रेज वगैरह यह बात काबिल सोचने और ख्याल करने के है कि जिस तरह से राजा रावण ने और हरनाकुश राजा ने और कंश राजा वगैरह ने मेह को और मौत को अपने बस में कर रखा था, उसी तरह इन सौदागर महाजनान ने भी मेह को और मौत को अपने बस में कर रखा है जिससे काल वगैरा पड़ जाते हैं और हजारों तरह की

बीमारियाँ हो जाती हैं; यह सब सौदागर महाजनान के घर का राक्षसी पाप है, क्योंकि परमेश्वर ने सब जीवाजून को तरह -२ के आराम दिये हैं और कोई बात दुनियाँ के आराम देने के लिए बाकी नहीं रखी. सो भाई मेरे हो "कि जो शख्स, जो चीज अपनी कुदरत से बनाता है वो हरगिज -२ अपने हाथ से नहीं बिगाडता है और वो चीज उसी हालत में खराब होती है कि जब उसकी उमर पूरी हो जाती है" परन्तु अब कोई इस बात को गौर करो कि जब दिन बहार के आते हैं तो झाड़ वनस्पति वगैरा उस जंगल 'बयाँबान' में जहाँ वनस्पति के सिवाय दूसरी चीजों का नाम नहीं होता, तो वो कैसे सुहावने और अच्छे दिखलाई देते हैं और जब दिन पतझड़ के आते हैं, तो दरखत वगैरा उस बयाँबान में, कि जहाँ सिवाय दरखतों के दूसरी चीजों का नाम नहीं होता, कैसे बुरे मालूम होते हैं? और पतझड़ होकर सूखे दरखतों के मानिन्द हो जाते हैं, परन्तु पत्ते पीले जरद होकर और

मानिन्द = तरह

उमर पाके गिरते हैं और बगैर उमर पूरी होने के एक पत्ता भी दरखत की डालियों में से हरगिज-२ नहीं गिर सकता है; हाँ! ऐसा अलबत्ता हो सकता है कि अगर कोई आदमी हाथ से पत्तों को या डालियों को तोड़े, तो बेशक कच्ची उमर में तोड़ सकता है या राक्षसी पाप से तोड़ सकता है, कि जब दरखतों वगैरा के नाम का राक्षसी पाप कराते हैं तो ज्यादा हवा और आँधी वगैरा चल करके करोड़ों दरखत जड़ समेत उखड़ करके गिर जाते हैं, तो पत्तों का गिरना क्या मुश्किल है? परन्तु यह राक्षसी पाप से हो सकता है और राक्षसी पाप के चलाये वगैर और कोई भी ऐसा नहीं कर सकता है, फिर आदमी की भी उमर इसी तरह से है, क्योंकि बगैर पूरी उमर के हरगिज-२ नहीं मर सकता है और न दरम्यान में बगैर पूरी उमर के ईश्वर मारता है और अब जो साल-ब-साल करोड़ों आदमी कच्ची उमर में ही मर जाते हैं और यह ख्याल करने की बात है कि पहले सतजग में क्या कोई और दूसरा मालिक

था, कि जो पूरी उमर पाके मरते थे? और इस जमाने में क्या मालिक दूसरा है जो पहले के सी उमरें नहीं होती ? सो खूब सोचलो! कि इन बनियों का यह मतलब है कि पाप करा-२ के संसार को मार देवें और जब संसार थोड़ा रह जावे जब सब विलायतों में हम अपना राज कर लेवें. इस बात की तलाश अंग्रेज वगैरा भी नहीं करते हैं लेकिन उनको भी असली भेद नहीं मिला, मगर कच्ची उमर मे मरने का असली भेद यह है कि आदमी बगैर जादू के कच्ची उमर में नहीं मरता है और न यह ईश्वर का हुक्म है; हाँ; जादू के जुलम से कच्ची उमर में मर सकता है जिसकी खास वजह यह है कि जिसके नाम का जादू यह सौदागर महाजनान कराते हैं, तो वो ही मर जाते हैं और जिसके नाम से जादू नहीं कराते हैं वोह नहीं मरते हैं; सो यह जादू का काम दरियाओं के किसी टापू के ऊपर करा रहे हैं कि जहाँ सिवाय सौदागर महाजनान के और कोई नहीं जा सकता है,

परन्तु यह सौदागर महाजनान ऐसे बदमाश और बेईमान हैं कि जाहिरदारी में तो बहुत ही गरीब होके रहते हैं और लोगों को दिखाने के लिए इस कदर भक्ति में चलते हैं कि बनियों के बराबर कोई भक्त नहीं है, सो यह बनिये बेईमान लोगों को दिखाने के वास्ते भक्ति करते हैं कि हमारा जाल किसी पर जाहिर नहीं होगा; अगर किसी को मालूम भी हुआ तो हमारे पुण्य को देखके लोग हमारे जाल पर यकीन नहीं लावेंगे, इससे तमाम जहान के बनियों को देख लो कि बनिये लोग जाहिरदारी में किस कदर पुण्य वगैरा करते हैं! और छांने में कपट ही कपट और दगा ही दगा कर रहे हैं कि जैसे रावण करता था; उसी तरह से यह बनिये भी कर रहे हैं और जिस तरह से रावण संसार के हाथों से देवताओं के ऊपर हाड़-मांस डलवाता था, उसी तरह यह बनिये भी अब देवताओं पर हाड़ - मांस को संसार के हाथों से डलवा रहे हैं. सो संसार का तो कुछ दोष नहीं है,

क्योंकि उनको जादू से बीमार करके देवताओं का सुझा देते हैं कि देवताओं ने बीमार कर डाला है, जब हाड़ मांस वगैरा देवताओं के ऊपर डालते हैं और जादू से काल वगैरह भी पड़ा देते हैं और दुनियाँ को जादू से यह सुझाते हैं कि अबके देवताओं की पूजा नहीं की, जिससे काल पड़ा है; फिर दुनियाँ देवताओं के ऊपर जीवड़ों को मारने लगती है, तो फिर सौदागर महाजनान पाप को कम कर देते हैं तो कुछ मेह बरस जाता है और अगर यह महाजन जादू का पाप नहीं छोड़े तो हरगिज नहीं बरसे, चाहे सारी दुनिया के जीव देवताओं के ऊपर मार देवे; तो फिर दुनिया कहती है कि अबके मालिक की ही मरजी मेह बरसाने की नहीं है, सो यह बातें उन मुलकों में होती हैं कि जीव जिन -२ मुलकों में देवताओं के ऊपर मारते हैं, सो तलाश करके देख लो परन्तु राजा -बादशाह इन महाजनान के जाहिर को देख के भरोसा करते हैं, अगरचे अन्दरूनी हाल मालूम होवे तो हरगिज -२ इन बनिये बेईमानों का

भरोसा नहीं करे; परन्तु तमाम जहान के लोगों की बुद्धि अपने राक्षसी पाप से ऐसी खराब कर दी है कि जो समझते ही नहीं हैं, कि जैसे तमाम जहान के राजा बादशाहों की अकल को रावण ने खराब कर दी थी, उसी तरह पर इन बनियों ने भी की है कि जो समझाये से भी नहीं समझते हैं और यह बनिये राजा -बादशाहों को आपस में लड़ाके मार देते हैं परन्तु अपने राक्षसी पाप को ऐसे करते हैं कि बिलकुल जाहिर नहीं होने देते हैं, इससे राजा -बादशाह, हिन्दू-मुसलमान वगैरह यह नहीं जानते हैं कि राक्षस विद्या का जाल इन बनियों ने भी बलराजा के बाद से रावण के मुवाफिक चलाया है जिसकी खबर किसी राजा - बादशाह को अब तक नहीं है, अगरचे खबर होती तो जरूर इन बनियों का जाल दफे करने के लिए बंदोबस्त करते और इन्होंका ऐतबार नहीं करते; परन्तु बड़ी भारी अकल इन बनियों ने यह की, कि पहले तमाम जहान के राजा- बादशाहों की अकल और रैयत की

ऐसी फेर दी है कि जो जाल इन बनियों का जाहिरदारी में चल रहा है वो मेरे नजदीक बहुत ही बद है, जिसको तमाम जहान के लोग खास जाल ख्याल करते हैं, बल्कि बनियों की बड़ाई करके और बनियों का जाल ख्याल करके अपनी -२ जबान से यह कहते हैं कि यह कोई जाल बनियों का नहीं है, यह तो परमेश्वर की कुदरत है जिससे तमाम खलकत इन बनियों का भरोसा दिल से कर रही है और यकीन से इन बनियों के जाल को कुल संसार के लोग ईश्वर की कुदरत जानते हैं और यह नहीं समझते हैं कि यह परमेश्वर की कुदरत नहीं है, लेकिन जबकि बुद्धि कैद हो जाती है. अलावा इसके संसार के लोग यह भी कहते हैं कि हम सब लोग बनियों के सहारे से ही पलते हैं, अब तुम लोग अच्छी तरह से समझो और देखो कि ''जब रावण ने राक्षसी पाप चलाया था जब तमाम खलकत परमेश्वर को भूल गई थी और रावण के राक्षसी पाप की

माला फेरती थी'' और यह कहती थी कि रावण के सहारे से ही पलते हैं और रावण वगैरा की तरह से, कि जबसे इन बनियों ने राक्षसी पाप चलाया है जबसे इनकी माला फेरते हैं और कहते हैं कि हम बनियों के सहारे से ही पलते हैं, इससे बनिये माई-बाप हैं; सो देखो भाई, जिस तरह से रावण के वक्त में और हरनाकुश के और कंश राजा के वक्त में और कारून बादशाह के वक्त में परमेश्वर को भूल गये थे और उन्होंके जाल की माला फेरते थे, उसी तरह से 'अब इन बनियों के जाल की माला फेरते हैं' और ईश्वर को भूल गये हैं और बनियों के जाल को ईश्वर की कुदरत बोलते हैं और इनके जाल के ऊपर जरा भी ख्याल नहीं करते हैं बल्कि इन्होंके ऊपर ऐसे-२ लाड़ रखते हैं कि जिस तरह से माँ और बाप के हुकम को बेटा - बेटी उठाते हैं और अपने बुजुर्गों के सामने सर को झुकाते हैं. अगरचे उन बच्चों को कोई शख्स, कोई बात भली-बुरी कहवे

तो वोह बच्चे अपने माँ–बाप से जाकर उस बात को उसी वक्त कह देते हैं और किसी तरह का डर अपने दिल में नहीं रखते हैं, तो इसी तरह से हिन्दू–मुसलमान बुरी–भली बात बनियों से छुपा के नहीं रखते हैं और बनियों के ऊपर लाड़ रखते हैं; सो सब जहान के लोगों तुम अपनी–२ आँखों से देख ही रहे हो कि जैसा हो रहा है और मैं देख रहा हूँ कि जिस तरह से यह बनिये कहते हैं और सलाह करते हैं उसी तरह से होता है बल्कि ''हिन्दुस्तान में तो बनियों का ही डाला निमक पड़ता है'' परन्तु हिन्दू–मुसलमान इन बनियों का लाड़ तो हमेशा से ही रखते हैं और बनिये बेईमानों का माजना देखो कि जबसे इन्होंने राक्षसी पाप चलाया है जबसे संसार का बुरा कर रहे हैं, सो ऐसे–२ तो हिन्दू–मुसलमान इन बनियों के लाड़ रखते हैं परन्तु यह बनिये ऐसे बदमाश और हरामकार हैं कि यह अपनी हरकत से बाज नहीं आते हैं; सो इन बनियों के जालों को और

निमक = नमक, माजना = नीति

बेईमानियों को तमाम जहान के राजा -बादशाह और हिन्दू-मुसलमान और अंग्रेज वगैरह मुलाहजा करो और सोचो कि इन बनियों ने जादू के जोर से अव्वल ही अव्वल में तो राजा -बादशाहों के खजानों को जमीन के रास्ते से खेंच लिया है और खेंच लेते हैं याने जमीन को फाड़-२ के और जिन बादशाहों को, कि खराब कर दिया है, सौ उन बादशाहों के खजानों को जादू के जोर से पहले ही खेंच लिया था कि जो खजाना कदीमी थे, परन्तु जबकि यह बनिये किसी के खजानों को खेंचना चाहते हैं तो पहले जमीन के फटने के नाम का जादू कराते हैं जब जादू के जुल्म से जमीनमाता फट जाती है, जब राजा-बादशाहों के खजानों को खेंच लेते हैं, परन्तु जादू सौदागर महाजनान समुद्र के ऊपर किसी टापू में कराते हैं कि जहाँ चौरासी लाख कुण्डियाँ राध लहू की बनाई हैं, सो दुनिया में उस पाप की सब तारीफ और बिखान करते हैं कि मालिक के घर में

मुलाहजा = सलाह, मशविरा, कदीमी = आदू

चौरासी लाख कुण्डियाँ राध लहू की नारगी पड़ने की हैं, सो इन बनियों ने उस गुप्ती पाप का किस्सा चला दिया है, सो सुन २ के कहते हैं और इन बनिये महाजनान ने स्वर्ग और नर्क भी रावण की तरह से बनाया है सो जबकि 'चौरासी लाख जीवाजून को चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर दुख देते हैं जब जादू चलता है और जिस तरह के जाल कि दुनिया में तरह-२ के चल रहे हैं यह बनियों के घर का ''इन्द्रजाली'' पाप है और इसी ''इन्द्रजाली'' पाप से तमाम राजा बादशाहों की अकल और संसार के लोगों की अकल फेर रखी है जिससे यह सौदागर अपने जाल को संसार के लोगों पर जाहिर नहीं होने देते हैं और खजानोंको खेंच लेते हैं और राजा बादशाहों को और संसार के लोगों को ऐसा सुझा देते हैं कि धन सरक गया और राजा बादशाह और संसार के लोग ही ऐसा कहने को लग जाते हैं कि लक्ष्मी सरक गई है और यह नहीं कहते हैं कि यह

नारगी = अथाह व्याधि

बनियों के घर का राक्षसी पाप है परन्तु वो किस तरह से कहें, क्योंकि उनकी अकल तो राक्षसी पाप में कैद हो रही है इससे वो जाल को नहीं पहचानते हैं और जिस तरह से कि यह बनिये जादू के जोर से खजानों को खेंच लेते हैं, उसी तरह से यह बनिये मंदिरों की पुतलियों को भी संसार के भुलाने के लिए जमीन को फाड़-२ के उड़ा देते हैं और मन्दिरों को भी उड़ा देते हैं और फकीरों के दिल में और जतियों के दिल में और राजा बादशाहों के दिल में ऐसा सुझा देते हैं कि जोगी-जती बड़े करामाती हैं; सो जोगी-जती अपने दिल में यह कहने को लग जाते हैं कि हम बड़े करामाती हैं और सिद्ध हो गये हैं, जिससे संसार के लोग भी यह जानते हैं कि जोगी-जती बड़े करामाती हैं, परन्तु जोगी-जती जिन्दा 'समाधि' लेते हैं, जिसकी वजह यह है कि सौदागर महाजन जादू के जोर से जमीन को फाड़ देते हैं. सो जमीन को सौ कोस तक फाड़के पोली कर देते हैं, जब वो

जतियों = जाप करने वाले साधु, खजानो = धन-सोना, चान्दी, हीरे पन्ने इत्यादि, जोगी -जती = पंडित, महात्मा, विद्याधारी

जती-जोगी सौ कोस के ऊपर रास्ते से होके बाहर निकलते हैं, सो यह बात काबिल गौर करने के है कि जहाँ तक इन बनियों के दिल में आता है उसी कदर जमीन फाड़के जादू के जुलम से पोली कर देते हैं, सो अगर यह बनिये अपने राक्षसी पाप से जमीन को कोस दो कोस में फाड़ देवें जब तो जती-जोगी कोस, दो कोस के ऊपर जाके बाहर निकलते हैं, अगरचे तीन-चार कोस जमीन को फाड़ देवें तो तीन -चार कोस के ऊपर जाके बाहर निकलते हैं और जो ज्यादा दूर तक फाड़े तो ज्यादा दूर पे जाके निकलते हैं और जो कम जमीन को फाड़े तो कम दूर पे जाके बाहर निकलते हैं; और यह बनिये ऐसा भी करते हैं कि जो पहले जमाने में भक्त लोग महादेव और देवी-देवता वगैरा हुए हैं उनकी समाधियों के ऊपर मंदिर वगैरह बना दिए हैं और उनकी समाधियों के ऊपर लोग बकरा वगैरा चढ़ाते हैं कि जिनके गुण तमाम जहान के लोग गाते हैं और उनकी

पूजा करते हैं, तो यह बनिये लोग जादू के जोर से जमीन को फाड़के और उनके मन्दिरों की पुतलियों को जिस कदर दूर पे बाहर निकालना मंजूर होवे, निकाल देते हैं और दुनियाँ को अपने जादू से ऐसा सुझा देते हैं कि देवी-देवता वगैरा फलानी जगह पर निकले हैं और यह रोग जमीन माता को इस तरह का है कि जैसे आदमी के बदन मे बादी की सोजन और चीस और चबक हो जाती है और वो सोजन और चबक और चीस मिसलन आदमी के सर में होवे और वो एक साथ ही फौरन पाँव में आ जावे और पाँव में से कमर में आ जावे, उससे आदमी को बहुत सख्त तकलीफ होती है कि मरने लायक हो जाता है, इसी तरह से यह महाजन लोग बादी का रोग जमीनमाता को कर देते हैं जब उनको किसी खजानों या मंदिर और मंदिर की पुतलियाँ वगैरा और फकीर वगैरों को जल्दी खेंचना मंजूर होवे तो जमीनमाता को बादी की चीस का रोग कर देते हैं कि वो

चीस और चबक = एक तरह की पीडा - चुम्बक की तरह शरीर के किसी भी भाग मे दर्द पैदा करना.

चीस फौरन खींच के चली जाती है, जिस जगह पर खेंच के मँगाना और निकालना मंजूर होवे, फौरन जमीन फटके अन्दर ही अन्दर में जमीन के उस जगह पर पहुँचकर बाहर जमीन के निकल जाते हैं; जैसे आदमी के शरीर में बादी से चीस हो रही होवे और होते-२ बहुत जल्दी कमर में या पाँव में जाके होने लगे तो आदमी उससे बहुत तकलीफ और दुख पाता है, और इसी तरह से जमीनमाता भी उस रोग से बहुत भारी दुख पाती है और जो किसी चीज को हौले-२ खेंचना चाहें और निकालना चाहें तो जमीन माता को बादी के सोजन का रोग करा देते हैं तो वोह चीज हौले-२ सरक के जिस जगह खेंचना चाहें, खेंच के बाहर निकाल देते हैं, जैसे आदमी के बदन में, बादी की सोजन सरकती हैं, कभी हाथ में, कभी गर्दन में और कभी गर्दन से कमर में और कमर से, पाँव में, तो उससे भी आदमी को दर्द होता है; इसी तरह से जमीनमाता के शरीर में भी बादी की

होले होले = धीरे -धीरे, सोजन = सूजन की पीडा

सोजन से दर्द होता है और ऐसी-२ अनेक तरह की बीमारियों से जमीनमाता दुबली होगई हैं इससे जमीन माता की चरबी याने खानें सोने और चाँदी की गल गई हैं और जब देवी-देवताको जमीन फाड़के निकाल देते हैं जब उनके देखने के वास्ते कुल खलकत जाती है और बहुत खुश होते हैं और हाथ जोड़ते हैं और तरह-तरहकी दुआयें माँगते हैं, सो यह सबब बनियों केराक्षसी पापका है कि जिसका नाम इन्होंने कलुकाल रखा है जिससे सब संसार को ऐसा ही सूझता है कि जो दुनिया भरोसा करने को लग जाती है और यह नहीं समझती है कि यह बनियों के घर का जादू है कि जो देवी-देवता इस कदर दूर पे आके निकले हैं और नहीं समझते कि पत्थर की पुतली किस तरह से चल सकती है! सो दुनिया तो इनके जाल में भूली हुई है जिससे कुछ पहचान जादू वगैरह की नहीं हो सकती है कि इन बनियों ने जादू के जोर से तमाम जहान के लोगों की अकल कैद कर दी है जो समझाये से नहीं समझते हैं और जिस तरह से कि जमीन को

फाड़ के पोली कर देते हैं और खजानों को खेंच लेते हैं, जब तमाम जहान के लोग यह जानते हैं कि धन सरक गया है; सो जिस तरह से कि यह बनिये खजानों को खेंच लेते हैं उसी तरह से मंदिरों की पुतलियों को भी जादू के जोर से जिस कदर दूर पे जमीन फाड़ के बाहर निकाल देते हैं. अगरचे इनको यह बात मंजूर होवे कि फलाने मंदिर की पुतली को फलानी जगह पर निकाले तो वहीं जाके निकाल लेवेंगे, सो यह बात इस तरह से है कि जो यह बनिये, जिस मंदिर की पुतली के नाम से पाप कराते हैं तो उसी मंदिर की पुतली को बाहर निकाल देते हैं और लोगों के समझाने के लिए पहले ऐसा सुझा देते हैं कि देवी के मंदिर की पुतली हजार कोस पे जाकर निकली है और देवी बड़े परचेवाली हैं और यह परमेश्वर की कुदरत है जिसको सब संसार और राजा बादशाह वगैरह बड़ी खुशी के साथ देखने के वास्ते जाते हैं

और 'दंडोवत' करते हैं. सो यह पुतलियों का निकालना और जमीन का फटना और काल वगैरा का पड़ना और बीमारियों का और खजानों वगैरा का खेंचना और अकल वगैरा का फिरना और बारिस का ना होना और कम उमर में मरना, जादू से हो रहा है; और यह जादू इन्द्रजाली रावण की तरह से इन बनियों ने बलराजा के बाद से चला रखा है कि जहाँ जमीन वगैरह फट जाती है और कहीं की पुतली कहीं पे जाके बाहर निकलती है, सो यह बातें तमाम जहान में मशहूर हैं परन्तु अकल ऐसी खराब कर दी है कि इस बात को पहचानते ही नहीं हैं और परचों के भरोसे तमाम लोग भूले हुए और बहके हुए हो रहे हैं. सो भाई मेरे हो! कि जिस कदर यह परचे हो रहे हैं यह सब बनियों के चलाए हुए हैं, इसी तरह से पहले रावण ने भी दुनिया के भुलाने के लिए परचे चलाये थे; चुनांचे बाद मरने रावण वगैरा के इन बनियों ने भी दुनिया को भुलाने के और बुद्धि कैद करके तरह-२ के परचे

दंडोवत = नमन करना

दिखला दिये हैं, देखो भाई जब कि अपने बदन में किसी तरह की तकलीफ हो जाती है और हड्डी वगैरा टूट जाती है तो फिर किस तरह का दर्द होता है कि जो खाना-पीना भी भूल जाते हैं और यह बनिये जादू के जोर से जमीन को फाड़ देते हैं और तरह-२ के रोग जमीन के नाम से जमीन को करा रहे हैं और किसी को अपने राक्षसी पाप करने की मालूम नहीं होने देते हैं, इससे मैं संसार के लोगों को इन बनियों के जाल से वाकिफ करता हूँ कि जिस तरह से तुम्हारे बदन में दरद होता है इसी तरह से जमीनमाता के बदन में भी दर्द होता है जिसके हाल से संसार के लोग बिलकुल बेखबर हैं कि यह सौदागर महाजनान जमीनमाता के नाम का पाप कराते हैं इससे जमीन को तकलीफ दे रहे हैं और सब संसार की अकल को अपने राक्षसी पाप से खराब करके ऐसे-२ परचे दिखला रहे हैं कि जिससे दुनियाँ यह नहीं समझती है कि रावण के मुवाफिक इन बनियों के घर का राक्षसी पाप चल रहा है

बल्कि संसार के लोग तो परचों के भरोसे भूले हुए हैं, और इधर-उधर गोते खाते फिरते हैं और यह समझते हैं कि परचा कोई निहायत ही उमदा चीज है; परन्तु भाई मेरे हो! जिस परचों को तुम अच्छा समझते हो सो यह अच्छा नहीं है, यह तो निहायत ही खराब जादू है! क्योंकि रावण के मुवाफिक इन सौदागर महाजनान ने राक्षसी पाप बलराजा के बाद से चलाया है और संसार को और राजा बादशाह और फकीर-फुकरा को करामाती संसार में सुझाते हैं जिससे संसार के लोग साधु-फकीरों के पीछे दौड़ते फिरतेहैं और हाथ जोड़ के उन फकीरों की खुशामद करते हैं, कि जो फकीर अपने मुँह से किसी शख्स को यह कह दें कि जा बच्चा तेरा लड़का, जो बीमार है वोह अच्छा हो जावेगा, कि तू देवी के ऊपर या फलाने पीर के ऊपर, चार-पाँच या कम ज्यादा बकरा या पाड़ा वगैरा हमारे कहने के मुवाफिक अभी जाकर चढ़ा देना, चुनाचे उसने फकीर के

कहने पर यकीन लाके और फकीर के कहने मोजिब उसी कदर बकरे वगैरह लाके चढा दिये कि जिस कदर फकीर ने बताये थे. जो बीमार अच्छा हो गया जब तो फकीर को करामाती और सिद्ध, तमाम जहान के लोग जाहिर करने को लग जाते हैं और कहने को लग जाते हैं कि फलाना फकीर बड़ा करामाती है और जो अच्छा नहीं हुआ तो, संसार के लोग यह कहने को लग जाते हैं कि उसकी 'कजा' आ गई थी. सो भाई मेरे हो, यह तुम्हारी बुद्धि का जोहर है कि जो तुम लोग क्रिशमों के भरोसे देवतओं के ऊपर जीव देते हो और हाड़ डालते हो और परचों के भरोसे भूले हुए हो, परन्तु यह परचा कोई चीज नहीं है और ना फकीरों, अतीतों के कहने से कुछ होता है; हाँ, ऐसा अलबत्ता है कि जो फकीर हैं और परमेश्वर की भक्ति करता है तो उसके जीव का भला होता है, दूसरे का भला सिवाय परमेश्वर के नहीं कर सकता है. सो ईश्वर तो सबका ही भला चाहता है वो तो किसी के वास्ते बुरा नहीं चाहता है, यह तो सोदागरान ने

कजा = मृत्यु का आखिरी समय, अतीतों = बहुत अनुभवी बुजर्ग

रावण की तरह से राक्षसी पाप चलाया है और तमाम जहान की अकल राक्षसी पाप से खराब करदी है जिससे परमेश्वर को तो कोई भी याद नहीं करता है, जिससे परमेश्वर को सब भूल गये हैं और बनियों के जाल की सब माला फेर रहे हैं कि जैसे रावण के वक्त में तमाम जहान के लोग रावण के जाल की माला फेरते थे, उसी तरह से अब इन सौदागर के राक्षसी पाप की माला फेर रहे हैं और इन बनियों ने सैकड़ों किसम के जाल के रोग तो जाहिर कर दिये हैं जिससे जमीनमाता दिन-२ दुबली होती जाती है, क्योंकि फी जमाने में चाँदी-सोने की खानें बोलते थे वोह बीमारी के सबब से गल गई हैं, परन्तु यह चाँदी-सोने की खाने हैं जमीन माता के शरीर की चरबी है, लेकिन यह बात काबिल ख्याल करनेके है कि जब शरीर में चरबी नहीं होगी तो शरीर की ताकत कहाँ से रहेगी? बल्की उनकी तो ताकत के अलावा हड्डी भी गल जावेगी, चुनांचे अब जमीनमाता में ताकत नहीं रही है, क्योंकि इसके

शरीर की चरबी गल गई है इससे जमीन माता दुबली हो गई है और दुबली होने के सबब से जमीन के ऊपर कोई चीज अच्छी तरह से नहीं होती है. जिसकी खास वजह यह है कि इन बनियों ने राक्षसी पाप चला रखा है जिससे न तो मेह होता है और न जमीन माता सुख से स्वास लेती हैं जिसकी खबर अब तक तुम संसार के लोगों को बिलकुल नहीं है; अगरचे खबर होती तो अपनी-२ औलाद बचने के लिए बन्दोबस्त करते, क्योंकि रावण वगैरा के वक्त में शनिचर के कहने से बन्दोबस्त किया था जब पाप दफे हुआ था, फिर शनिचर की तरह से अब मैं भी बनियों के राक्षसी पाप से तुम सब संसार के बच्चे बचने के लिए तुम सबको वाकिफ करता हूँ जिसका बन्दोबस्त तमाम जहान के हिन्दू मुसलमान और अंग्रेज वगैरा अपनी-२ औलाद बचाने के लिए इस किताब (जगतहितकारनी) के 'मजमून' को पढ़कर के बंदोबस्त करो जब तुमको और तुम्हारी औलाद को

फी जमाने = पुराना युग, मजमून = सार

अच्छी तरह से आराम मिलेगा; अगरचे बंदोबस्त नहीं करोगे तो यह बनिये दूसरी बादशाहत को अब लाकर हिन्दुस्तान का राज कराएँगे, इससे मैं सबको पहले से वाकिफ करता हूँ कि जो पहले से ही इन बनियों का जाल मिटा दिया जावे तो फिर दूसरी विलायत का बादशाह हिन्दुस्तान में राज करने को हरगिज-२ नहीं आवे, क्योंकि जब पाप दफे हो जावेगा तो सतजग हो जावेगा और सबकी बुद्धि दुरस्त हो जावेगी; जब कोई किसी की चीज को लेना अच्छा नहीं जानेगा और अब तो इस गर्ज से दूसरी विलायत के बादशाह हिन्दुस्तान में आते हैं कि हमारे पास धन ज्यादा हो जावे, परन्तु यह खबर किसी को भी नहीं है कि हमारे मुलक में इस कदर धन था वोह कहाँ गया? क्योंकि उस धन को इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से पहले ही खेंच लिया और अकल को खराब कर दिया, जब भूखे मरते आते हैं कि शेर अधाया और धापा हुआ होता है तो किसी पर

अधाया = माराभ मे खाया पिया

हमला नहीं करता है और जबकि भूखा होता है जब उसके सामने कोई जानवर आवे, फाड़ खाता है इसी तरह से बादशाहों का हाल है क्योंकि इन सौदागरान का इरादा चारकूंट में राज करने का है, इससे संसार के लोगों की अकल फेर दी है, कि जो दूसरों का ही बुरा करना सूझता है और भला करना नहीं, जिसकी वजह यह है कि एक-दूसरे का बुरा चाहेगा जरूर तनाजा होगा, तो आपस में लड़ाइयाँ और दंगे होंगे और लोग आपस में लड़-२ के मरेंगे; इसी तरह से राजा बादशाहों में भी आपस में बिगाड़ रंज हो गए हैं कि जो एक-२ को देख के राजी नहीं हैं. और दिल में ऐसा इरादा है कि मैं इसको मार डालूं तो इसका राज मेरे कब्जे में हो जावे, गर्ज कि दोनों में से एक का भी मतलब और मुराद हासिल नहीं होती है और आपस में लड़कर मर जाते हैं और फिर उस चीज के मालिक ऐरी-गेरी और ही याने यह बनिये लोग बन बैठते हैं और इसी तरह से तमाम जहान और विलायत के

राजा बादशाह गारत हो जावेंगे और बनियों की जात के लोग ज्यादा रह जावेंगे जब तमाम विलायतों के अन्दर यह सौदागर महाजन अपना राज करेंगे; क्योंकि जो राक्षसी पाप चलाता है वो इसी गर्ज से चलाते हैं, जिसका सबूत अव्वल ही अव्वल में लिख दिया है क्योंकि पहले रावण वगैरह ने चलाया था परन्तु संसार ने अपनी औलाद बचने का ख्याल करके, शनिचर के कहने पर यकीन लाकर, रावण के राक्षसी पाप को छोड़ाया. इसी तरह से अब इन बनियों का राक्षसी जाल छोड़ाना चाहिए, परन्तु "यह जाल आसानी के साथ इस तरह से छूटेगा कि सब राजा रैयत समेत एक दिल होकर शहर-दर-शहर और गाँव-दर-गाँव में इन सौदागरान के जाल को जाहिर करो और अंग्रेजों को और दूसरी विलायत के लोगों को इन बनियों के जाल से वाकिफ करो जब इन बनियों का जाल छूटेगा, "कि जो दरियावों के ऊपर अलोप पाप करा रहे हैं. सो ऐ भाइयों, हिन्दू - मुसलमान और

अंग्रेज वगैरह इस बात को साथ पुख्ता दिलके समझो और इसकी चर्चा शहर-२ और गांव-२ और गली-२ में अपनी-२ जबान से करते रहो और जबकि बादशाह (एडवर्ड) इस मजमून याने सौदागरान के राक्षसी पाप को अच्छी तरह से समझ लेंगे जब इन बनियों का राक्षसी पाप, कि जो दरियावों के टापू पर अलोप करा रहे हैं, मिटा देंगे; सो यह जादू के पाप का हाल खिदमत में ''बंदगांनआली बादशाह एडवर्ड साहब बहादुर दांमईक बालहु' के अर्ज करके दफे कराया जावे कि जिसकी तलाश में विलायत के कुल अंग्रेज हैं कि ऐसी कौन-सी बात साल-ब- साल होती है कि करोड़ों आदमी हैं जा और प्लेग वगैरा की बीमारी के सबब से मर जाते हैं और करोड़ों कच्ची उम्र में और ही बीमारियों के सबब से मर जाते हैं, परन्तु साफ-२ हाल अब तक जाहिर नहीं हुआ कि किस वजह से मर जाते हैं? इस बात से मैं साध (अनोपदास), हकीमों और तबीबों को और डॉक्टरों को और सब

संसार के लोगों को और अंग्रेजों को वाकिफ करता हूँ सो इसका बन्दोबस्त करो तो कोई शख्स कच्ची उमर में ना मरे और वो यह है कि सौदागर महाजनान जमीन के दुबली हो जाने का और मर्द औरत को कच्ची उमर में मरने का और हवा ज्यादा चलने का और दरखतों को जमीन से उखाड़ने और बरसात जमीन पर न होने का और संसार के लोगों की बुद्धि भ्रष्ट होने का और पर स्त्री से भोग करने का और जानवरों से बुरा काम करने का और औरतों को बे-औलाद रखने का, पाप चौरासी लाख कुण्डियों पर कराके चौरासी लाख जीवाजून को कलपाते हैं और यह सौदागर लोग दुख देते हैं, जब वो पाप सबको आके लगता है. सो जिस तरह का पाप कराते हैं उसी तरह का बुरा हो जाता है जिसको परचा व परमेश्वर की कुदरत ख्याल करके बैठे हैं और इन सौदागरान ने पहले से ही ऐसी-२ बातें चला दी हैं और कोई - २ पोथी - टीपणों में भी

परचा = चमत्कार

लिख दिया है कि ऐसा कलजग आवेगा कि "लोग, माँ–बहन से भी हराम करेंगे." सो जैसे भूल पड़ती जावेगी और राक्षसी पाप से बनिये लोग बुद्धि संसार के लोगों की फेरते जावेंगे और अपने लोगों को कौन सी खबर पड़ती है कि हमारी बुद्धि बनियों ने पाप से फेर दी है! तो फिर संसार के लोग जानवरों के मुवाफिक माँ–बहन से बुरे कर्म करने लगेंगे, क्योंकि जानवर कौन सा समझते हैं कि हम माँ–बहन से बुरा काम करते हैं? इसी तरह से संसार के लोगों की बुद्धि भ्रष्ट होकर जानवरों के मुवाफिक हो जावेगी, जब माँ–बहन से हराम करेंगे; सो सब संसार के लोग इस जाल को एक दिल होकर बहुत जल्दी छुड़ाओ, कि जो ऐसा वक्त नहीं आवे कि जो संसार के लोग माँ–बहनसे बद–सहोबत करें, जिससे पहले इस जाल को छोड़ाने का बन्दोबस्त करो कि जो तुम्हारे सब संसार की औलाद नहीं बिगड़े सो भाई मेरे हो! मैं अच्छी तरह से तुमको समझाता हूँ कि यह परमेश्वर की

हेत = मिलकर

कुदरत नहीं है यह तो बनियों के राक्षसी पाप की कुदरत है, सो इसको हेत करके छोड़ाओ क्योंकि इन सौदागरान ने संसार की अकल ऐसी खराब कर दी है जिससे तुमको जमीनमाता के शरीर की बीमारी का हाल मालूम नहीं होता है कि जमीनमाता जीवता जीव हैं या मरी हुई हैं; सो देखो भाई! जमीन माता तो जिन्दा जीव हैं और अमर हैं, मरी हुई नहीं हैं; अगरचे मरी हुई होती तो सूखकर कब की गल जाती, तो संसार इस जमीन माता के ऊपर कहाँ से रहता? सो ख्याल करने की बात हैं क्योंकि जमीनमाता तो जिन्दा जीव है जिससे कुल चीजें इसके ऊपर पैदा होती हैं और संसार इसके ऊपर रहता है और यह तो तुम सब संसार को बनियों ने अपने राक्षसी पाप से भुला रखा है जिससे तुम सब संसार को ऐसा ही सूझता है, क्योंकि जो बनिये जमीनमाता के नाम का पाप कराते हैं जिसको सब संसार परचा-२ कहते हैं और खुश होते हैं और

बनिये भी जाहिरदारी में सब हिन्दू-मुसलमान के सामने परचा-२ कहते हैं परन्तु यह बनिये अपने दिल में खुश होते हैं कि हमारा राक्षसी पाप चल रहा है कि जिसको सब संसार के राजा -बादशाह और रैयत वगैरह परचा जानते हैं और बनिये तो अपने राक्षसी पाप को खूब जानते हैं, परन्तु यह बनिये अपने राक्षसी पाप से अपने पाप की खबर तुम राजा बादशाहों को नहीं पड़ने देते हैं और मुझ गरीब साधु को इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से कलपाया है जब मुझको इनके राक्षसी पाप की खबर पड़ी है और जब तक कि मुझको राक्षसी पाप से नहीं कलपाया था जब तक मैं भी अंधों की तरह से था; परन्तु जबकि इन्होंने मुझको अपने राक्षसी पाप से दुखी किया जब मुझको इनके जालों की खबर पड़ी है लेकिन तुम संसार के लोग तो अब तक बेखबर हो, जिसकी खास वजह यह है कि तुम लोगों की अकल इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से खराबकर रखी है

जिससे इन बनियों की खबर तुमको नहीं पड़ती है. इससे अब मैं सब संसार के बच्चे बचने की गर्ज से इन सौदागरान के राक्षसी जाल से वाकिफ करता हूँ कि जो कुछ जमीन को रोग हो रहा है और कच्ची उमर में मरते हैं और मंदिरों की पुतलियों को जमीन फाड़ के बाहर निकाल देते हैं, सो यह सब "फितूरान" सौदागरान के राक्षसी पाप का है जिसको तुम सब संसार के लोग और राजा बादशाह और रैयत वगैरा मिलके और एक दिल हो के इन्होंके राक्षसी पाप को छोड़ाओ तो संसार की औलाद को सुख प्राप्त होवे और इन सौदागरान ने अपने राक्षसी पाप से तमाम जहान के राजा बादशाहों की अकल और रैयत वगैरा की अकल ऐसी खराब कर दी है कि जिसका हाल मैं कलम से नहीं लिख सकता हूँ क्योंकि राजा बादशाह इन बनियों 'नमक हरामों' को ही सच्चा जानते हैं और सभों को झूठा; हालांकि तमाम हिन्दू-मुसलमान सच-२ बात कहते हैं तो भी

झूठा समझेंगे और सौदागर महाजन चाहे झूठ बोलते है तो इनको सच्चा समझेंगे, सो यह सारा सबब राक्षसी पाप का है परन्तु हिन्दू-मुसलमान इन बनियों को माँ-बाप के बराबर जानते हैं, तो भी यह बनिये झूठे-सच्चे कागज करजा के हिन्दू-मुसलमानों के नाम से बनाके रख छोड़ते हैं और कुछ दिन गुजरने के बाद उन्होंसे झगड़ा करके उस झूठे-सच्चे करजे में उन गरीबों के घर का माल असबाब और गायें, बैल और भैंस वगैरा जिस कदर माल उसके घर में निकलता है, करजे में वसूल कर लेते हैं और एक कागज जाली और उस पर अपने दस्तखत और अपने कामदार के और दो-चार गवाहों के दस्तखत कराके रख छोड़ते हैं और जबकि अदालत में किसी तौर से 'नालिस' का काम पड़ता है तो यह बनिये उस कागज जाली का सबूत पेश कर देते हैं और अदालत उस जाली कागज को सच्चा जानती है औरबनिया उस कागज को पेश करके सच्चा हो

जाता है. सो बनिये के रू-ब-रू गरीब आदमी अदालत में झूठा हो जाता है, यह अदालत का इन्साफ होता है; क्योंकि यह बनिये गरीबों के बुजुर्गों के नाम से झूठा जाली 'तमसुक' वगैरा लिखके रख छोड़ते हैं.और जबकि उनके बुजुर्ग मर जाते हैं जब उनसे रूपया वगैरा माँगते हैं कि जो तमसुक के अन्दर लिखे हो! और यह लिखते हैं कि ''तुम्हारे दादा ने हमारे दादा से रूपए लिये थे जिसका सबूत 'तमसुक' है और तुम्हारे बाप-दादा के हाथ के दस्तखत मौजूद हैं; जिसका रूपया तुम दे दो, नहीं तो हम राज में नालिश करके ले लेवेंगे.'' अगर गरीब ने डर के बनिये ही के कहने से रूपया दे दिये जब तो खैर, और जो नहीं दिये तो राज में नालिश कर दी और वोह तमसुक पेश करके राज में कहा कि यह इसके बाप के हाथ का लिखा हुआ है; फिर राज में उस कागज या बही को या तमसुक को देखके बनिये के 'डिग्री' कर दी और गरीब आदमी को 'झूठा' कर दिया, उससे बनिये को

तमसुक = लिखावट / खत, नालिश = कुडक कार्यवाही / कानूनी कार्यवाही

दिला दिया गर्ज कि, गरीब जो सच्चा था वो तो झूठा किया गया और बनिया जो बिलकुल झूठा था वो सच्चा कर दिया गया; इस तरह से राज में फैसला होता है, तो ऐसा फैसला राज के इन सौदागरान के राक्षसी पाप से इसी तरह से होता है क्योंकि अकल तो कुल संसार की इन सौदागरान के राक्षसी पाप से फिरी हुई है, तो इसी तरह से अदालत के 'हाकिमों' की भी बुद्धि राक्षसी पाप से इन बनियों ने फेर दी है, इस वास्ते अदालत में जोबनियाँ झूठा होता है वो तो सच्चा हो जाता है और गरीब जो सच्चा होता है वो झूठा हो जाता है और गरीब बेचारे की बनिये के सामने अदालत में भी पूछ नहीं होती है और गरीब का भरोसा और ऐतबार नहीं करते हैं, चाहे वो कैसा ही सच्चा क्यों ना हो, तो भी उसको झूठा समझते हैं और बनिये चाहे कैसे ही झूठे क्यों न हों, तो भी उनको सच्चा समझते हैं. सो यह सबब इन बनियों के राक्षसी पाप का है कि इन्होंने सबकी अकलों को अपने

राक्षसी पाप से खराब कर दी हैं जिससे सब राजा बादशाह और गरीब-गुरबा के सबूत को झूठा समझते हैं और बनियों के सबूत को सच्चा जानते हैं कि जो बिलकुल झूठा सबूत पेश करते हैं, कि जो जाली कागज और बही वगैरा पहले जाल की बना करके और गवाही-'शाहदी' लोगों से कराके और अपने दस्तखत और अपने कामदार के दस्तखत कराके और मोहर छाप लगाके जरूरत के वक्त अदालत में सबूत पेश करते हैं; जब वो कागज अदालत में सच्चा समझा जाता है, सो खयाल करने की बात है कि ''सारी दुनियाँ रात-दिन कमाती है जब भी भूखे मरती है और एक कौड़ी पास नहीं है और यह बनिये दिन भर बैठे रहते हैं, सो इनके पास ऐसी-२ जालसाजी और बेईमानियों से बहुत कुछ धन है'' जिसकी वजह यह है कि जो बनिये गरीब हैं और थोड़ा पैसा रखते हैं वो संसार के गरीब लोगों का पैसा अनेक तरह से छल और

बेईमानी से काबू में करते हैं और जो बनिये ज्यादा धन-दौलत रखते हैं, वो अमीर लोगों का पैसा छल और फरेब और बेईमानी से काबू में करते हैं; सो यह सब सबब बनियों के राक्षसी पाप का है कि इन बनियों ने सबकी अकलों को अपने राक्षसी पाप से खराब कर दी हैं जिससे राजा - बादशाह गरीब-गुरबा के सबूत को झूठा जानते हैं और अलावा इसके गरीब बनिये तो गरीब लोगों के नाम का झूठा कागज करजा देने का जालसाजी से, मय गवाही के बना लेते हैं और उस कागज पर मौहर छाप लगाके और पुख्ता करके रख छोड़ते हैं और इसी तरह से 'तालेवर बनिये' अमीर लोगों के नाम का कागज करजा देने का झूठा बना लेते हैं और कहते हैं कि मुझसे फलाने अमीर सरदार ने इस कदर रूपया, एक रूपया सैंकड़े के ब्याज पर लिए हैं, और ब्याज के रूपए बनिये को वसूल नहीं हुए होवें तो क्या काम करते हैं कि ब्याज के रूपए जोड़ के

असल रूपयों में जोड़ देवें कि जो ब्याज के रूपयों का भी ब्याज शुरू हो जावे; सो यह बनिये बेईमान ऐसे-२ कागज झूठी गवाही कराके और मोहर छाप लगवाके और सबूत पुख्ता करके रख छोड़ते हैं और कुछ दिन या वर्ष गुजरने के बाद यह बनिये रूपयों का तकाजा करते हैं, कि तुम्हारे दादा ने हमारे दादा से इस कदर रूपया करज लिए थे, वो हमको दे दो; क्योंकि रूपयों का सबूत हमारे पास मौजूद है और तुम्हारे दादा के हाथ का तमसुक लिखा हुआ है, गवाही वगैरह समेत हमारे पास मौजूद हैं. सो उसने कहने से रूपया दे दिए जब तो खैर, नहीं तो वो झूठा जाली तमसुक राज में पेश करके और चौथाई देके नालिश कर देते हैं और रूपया वसूल कर लेते हैं; परन्तु वक्त के हाकिम और राजा -बादशाह इन सौदागरान के जालसाजी पर गौर नहीं करते हैं. क्योंकि जो गरीब ने बनिये से कर्ज लिया होवे, तो गरीब यह कभी नहीं कहे कि मैंने नहीं लिया, क्योंकि

तकाजा = पूछ ताछ

जो रूपया कर्ज लेता है वो भी अपने पास लेन-देन का सबूत रखता है; क्योंकि जब कोई शख्स किसी के पास से रूपया कर्ज लेता है तो वो शख्स भी याद रखने के वास्ते दिन मिती लिखवा लेता है और कई आदमियों को वाकिफ कर देता है, कि इस कदर रूपया मैंने कर्ज फलाने से लिया है, उसकी दिन मिती में भूल ना पड़े परन्तु सौदागर महाजनान जाल के कागज-पत्र बनाके रूपया एक जबरदस्ती की राह से ले लेते हैं और जब गरीब आदमी हाकिम अदालत से फरियाद करके इन्साफ कराना चाहता है और कहता है कि जो रूपया यह सौदागर महाजन हमसे माँगते हैं वो रूपए हमने नहीं लिए और यह जो कहते हैं तुम्हारे दादा ने हमारे दादा से लिए थे सा हम इमान धर्म से कहते हैं कि हमारे दादा ने इनके दादा को ब्याज समेत रूपया पीछे दे दिये, जिसका सबूत हमारी बही में मौजूद है सो देख लिया जावे, बल्कि जिसके सामने

दिया है वोह गवाही मौजूद है उनसे अदालत दरियाफ्त कर लेवें, तो अदालत गरीब आदमी का सबूत पेश किया हुआ देखती है तो भी झूठा ठहराते हैं और बनिये के सबूत को सच्चा जानते हैं चाहे बनिया कैसा ही झूठा क्यों न हो, परन्तु तो भी राजा बादशाह बनियों को ही सच्चा और ईमानदार जानके गरीब से रूपया दिलवा देते हैं और गरीब के सबूत को गौर नहीं करते हैं; जिसकी खास वजह यह है कि इन बनियों ने इन्द्रजाली जाल से तमाम जहान की अकल और राजा बादशाहों की अकल को कैद कर दी है जिससे बनियों को ही सच्चा जानते हैं चाहे बनिये साफ झूठे क्यों न हों और गरीब-गुरबा चाहे सच्चा होवे, परन्तु राजा बादशाह इनको झूठा ही समझते हैं और अलावा इसके सौदागरान के कामदार जात का ख्याल करके अपने सेठों का हुक्म सर माथे के ऊपर उठा के हर किसी के नाम का जाली तमसुक बना रखते हैं और गवाही वगैरह

करा रखते हैं और मजमून, तमसुक वगैरह का इस तरह से लिखते हैं कि फलाने शख्स ने फलाने सेठ से इस कदर रूपया, इतने ब्याज पर बैल, गायें और मकान वगैरह गिरवी रख के लिए थे; सो यह रूपया मैं नहीं दूँ तो यह कुल चीजें जो तमसुक में लिख दी हैं, वो इस करजे बाबत करजा देनेवाले के हैं, हमको राज दरबार में इन चीजों से जो तमसुक में लिख दी हैं कुछ वास्ता नहीं है. अगरचे मेरी तरफ से इस करजे के रूपया बाबत, राज दरबार में किसी तरह का उजर करूँ तो मैं राज का गुनहगार हूँ, सो यह बनिये ऐसे-२ कागज झूठे जालसाजी के बना लेते हैं परन्तु राजा बादशाह जब भी इन सौदागरान को ही सच्चा जानते हैं और गौर नहीं करते हैं, सो यह राक्षसी पाप का सबब है और कोई बात ऐसी नहीं कि जिससे तमाम जहान की अकल फिर जावे; सो यह सिर्फ 'इन्द्रजाल' की ही माया है और इस जाल से ही सबका धन काबू में कर लिया है और दूसरी विलायतों में जो धन है,

उसको भी अपनी हिकमत से काबू में किया चाहते हैं क्योंकि दूसरी विलायतों में भी इनकी दुकानें पहुँच गई हैं और पहुँचती जाती हैं, सो इसी तरह से वहाँ का भी धन अपने काबू में कर लेंगे क्योंकि दुनियाँ में चाँदी-सोने की खानें कदीम से ही थी जिससे सोने-चाँदी का ठाट और पाट गिना जाता था. सो इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप के जोर से कुल धन, जिसका ठाट और पाट संसार में गिना जाता था, सो इन महाजनान ने अपने कब्जे में कर लिया है; इससे तमाम दुनियाँ सौदागर बनियों के पाँव नीचे है, इससे ऐ साते-आठो विलायतों के राजा बादशाहों, यह बात काबिल गौर करने के है कि तमाम जहान खेती-बाड़ी करके राजा बादशाहों की औलाद को खेती करने वाले ही पालते हैं और जिस पर भी हजारों तरह की वेठ बेगार को हाजिर रहते हैं और करते हैं, सो इन लोगों की ऐसी - २ तो करनी है और अलावा इसके यह खेती करने वाले रात-

बेगार = बिना पैसे काम करना

दिन जानवरों की तरह से मेहनत करके कमाते हैं और तमाम जहान को पालते हैं, सो इन लोगों की मेहनत को देखके तो ऐसा ख्याल करना चाहिए कि खेती करने वाले माँ-बाप के बराबर हैं, कि हमारी औलाद को और हमको यह खेती करने वाले ही पालते हैं, परन्तु इन सौदागरान ने अपने राक्षसी पाप से कुल जहान की अकल ऐसी खराब कर दी है कि जो सौदागरान के ताबेदार हो रहे हैं और जो कि जमीन माता के ऊपर कमाके देते हैं और पालते हैं इन्होंका कुछ गुण और अहसान भी नहीं जानते हैं; सो यह वजह इन्द्रजाल की है, क्योंकि जाल से लोगों की अकल कैद कर दी है जिससे नेक काम वालों की पहचान नहीं होती है बल्कि बुरा ही बुरा सूझता है कि हर वक्त गरीबों के गले पर अकल फिरने के सबब से राजा -बादशाहों ने हाथों से छूरी रखी हुई है, क्योंकि गरीब आदमी ने किसी सौदागर - महाजनान के पास से चाहे एक कौंड़ी भी नहीं

ली होवे और गरीब आदमी ईमान से कहे कि मैंने कौडी भी नहीं ली है परन्तु राज से कुछ सुनवाई नहीं होती है, और बनिये महाजन लोग झूठा जाली कागज और तमसुक इस तरह से बनाते हैं कि जो लोग मरे हुये हैं उनके नाम से झूठी बही में और जाली तमसुक वगैरह लिख लेते हैं और उस तमसुक में गवाहियांन वगैरह भी झूठी जालसाजी वगैरह, की ऐसे लोगों की लिख लेते हैं कि जो लोग मर चुके हैं याने सात २ पीढ़ी का कर्जा उनकी औलाद के साथ जालसाजी और फरेब दगाबाजी करके लेते हैं याने परदादा को दिये या नहीं दिये झूठा रूपया ही मांगता है तो पर पोते से रूपया वसूल कर लेते हैं. सो ऐ तमाम जहान के लोगों! यह कोई इन्साफ नहीं हुआ, यह सारा सबब राक्षसी पाप का है जिससे राजा -बादशाहों को यह खबर नहीं होती है कि गरीब ने किसी से रूपया पैसा लिया है या नहीं लिया है या यह महाजन लोग गरीब को झूठा ही इलजाम देता है और

अदालतों के हाकिमों को गरीब लोगों के सबूत पर बिलकुल ख्याल नहीं होता है; अगर बनिये के सामने किसी गरीब का सबूत झूठा भी होवे तो एक आदमी झूठा होवे या दो झूठे होवे, या दस झूठे होवे, यह नहीं हो सकता कि कुल बनिये ही बनिये सच्चे होवे और बाकी तमाम संसार के लोग सब झूठे हो जावें, यह तो राक्षसी पाप से बनियों ने तमाम संसार के लोगों को झूठों के मुवाफिक कर दिया है और अदालत गरीब आदमियों से यह नहीं पूछती है कि तुम्हारा सबूत या बही या रसीद वगैरा जो होवे तो अदालत में पेश करो, यह तो गरीब से कोई नहीं पूछता और बनिया चाहे झूठा होवे और चाहे सच्चा होवे, उसको ही हर सूरत से सच्चा समझते हैं; परन्तु यह सारा ही सबब राक्षसी पाप का है कि अदालत के हाकिमों की अकल और सब संसार की अकल इन बनिये महाजनान ने अपने बस में कर रखी है इससे हाकिम लोगों

को सच- झूठ की निगाह नहीं पड़ती है और इन तमाम बनियों ने आपस में ऐका करके सब संसार का पैसा खेंचकर, सब दुनियाँ को गारत करके और दुनिया में अपना राज करने के लिए ऐसा जुलम चलाया है जिसकी खास वजह यह है कि यह बनिये लोग कुल एक दिल हो रहेहैं और संसार के नाम का पाप करा रहे हैं, जिससे हिन्दुस्तान के लोगों की अकल ऐसी खराब कर दी है जिससे इन सौदागरान के पाप करने की पहचान किसी राजा बादशाहों को और रैयत वगैरा को नहीं पड़ती है; क्योंकि इन सौदागर महाजनान ने सबकी अकल खराब करदी है, जिसकी वजह यह है कि हमारे राक्षसी पाप की किसी को भी खबर नहीं पड़ी, तो हमारा राक्षसी पाप खूब चलेगा और जबकि हमारा राक्षसी पाप खूब चलता रहेगा तो हम सातो-आठो विलायतों का धन अपने काबू में कर लेंगे, कि जिस तरह से हिन्दुस्तान का धन सबकी अकल फेरके ले लिया है, उसी तरह से सातों-

आठों विलायतों का धन अपने कब्जे में कर लेंगे. इस सबब से इन सौदागर महाजनान ने अपने दिल में सोचकर इन्द्रजाल का पाप चलाया है कि जब कुल बादशाहों का धन हमारे पास हो जावेगा और किसी बादशाह के पास और रैयत के पास धन नहीं होगा जब सब राजा बादशाह और रैयत वगैरा हमारे हुकम की तामील करेंगे और जिस तरह से कि अब राजा बादशाह राज कर रहे हैं उसी तरह से हम अपना राज करेंगे; इस गर्ज से इन बनियों ने हिन्दुस्तान के लोगों की अकल अपने राक्षसी पाप से खराब करके सातो-आठो विलायतों का माल और धन को अपने कब्जे में किया चाहते हैं, कि जिस तरह से हिन्दुस्तान का धन काबू में कर लिया है इसी तरह से कुल विलायतों का धन भी काबू में किया चाहते हैं. इससे मैं तुम हिन्दू-मुसलमान और अंग्रेज वगैरह को इन सौदागरान के राक्षसी पाप से वाकिफ करता हूँ, सो आप लोगों को इन सौदागरान का राक्षसी पाप

सब संसार हेत करके छोड़ाओ जब इन बनियों का राक्षसी पाप दफे होगा, परन्तु यह बात भी काबिल ख्याल करने के है कि जो मेरे जीते जी राजा -बादशाहों ने एक दिल होके इन सौदागरान के राक्षसी पाप को छोड़ाया, जब तो मैं यकीन करता हूँ कि जरूर-२ छूट जावेगा, नहीं तो फिर तुम लोगों से नहीं छूटेगा;क्योंकि तुमको इनके जालों की वाकफियत नहीं है क्योंकि इन सौदागरान के जाल बेशुमार हैं और मुझको तो इन सौदागरान के जाल की इस वजह से खबर है कि 'मुझको इन्होंने अपने राक्षसी पाप से दुःखी किया है इससे खबर है क्योंकि मुझको तमाम जहान की औलादों को अपने हाथ से और संसार की मदद से इन सौदागरान के राक्षसी पाप से बचाना है और मुझको इन सौदागरान ने जादू के जोर से बहुत तकलीफ दी है जिससे कुल इन्द्रजाली जाल मालूम हुआ है कि जिस कदर यह बनिये दरियावों के टापू पर अलोप पाप करा रहे हैं कि जिससे दिन-२ दुनियाँ में

बुरा होता जाता है, परन्तु लोगों को यह बनिये अपने राक्षसी पाप से दुख नहीं देते हैं याने नहीं कलपाते हैं इससे तुमको इनका राक्षसी पाप मालूम नहीं होता है. सो जबकि, तुम लोगों को यह सौदागर महाजनान समामुख नहीं कलपावेंगे तो तुमको मालूम नहीं हो सकता और यह सौदागर लोग आप लोगों को समामुख नहीं कलपाते हैं, आप लोगों के नाम का होम करा-२ के गलाते हैं अगर समामुख कलपावें तो इनके जाल की संसार में खबर पड़ जावे, जब तो इनके जाल कौन चलने देवें? और मुझको तो इन्होंने समामुख कलपाया है जिससे मुझको मालूम हुआ है; इससे मैं आप लोगों को इन सौदागरान की चोरी से वाकिफ करता हूँ कि "तुम्हारे बाल-बच्चे इन्होंके जाल से बचें, सो तुम सब साहब हेत करके और एक दिल होके इन्होंके जाल को मेरे जीतेजी दफे कराओगे जब तो दफे हो जावेगा, नहीं तो बाद मेरे मरने के फिर तुमसे इन

होम = अग्नि कुण्ड में अनाज की आहुति के साथ मन्त्र उच्चारण

सौदागरान का राक्षसी पाप दफे नहीं होगा'' और जो आप लोगों ने इन्होंके जालों को सच जानके और यकीन लाके बन्दोबस्त किया तो मैं कुल जाल इन सौदागरान का अपने सामने, तुम लोगों के हाथ से दफे करा दूँगा. कि जिस कदर पाप इन्होंका अलोप हो रहा है और बाद मरने मेरे के, जो बन्दोबस्त इन सौदागरान के जादू का किया तो दफे नहीं होगा, कि सौदागर लोग किसी कदर पाप छोड़ देंगे और यह कह देंगे कि हमने सब राक्षसी पाप छोड़ दिया है, जिस पर आप लोग सच जानके इन सौदागरान से बिलकुल नहीं कहोगे और यह अपना मौका पाके फिर पूरा पाप करना शुरू कर देंगे और अपने जाल की खबर किसी को बिलकुल नहीं पड़ने देंगे, कि जैसे अब तक किसी को अपने राक्षसी पाप की खबर नहीं पड़ने दी है; इसी तरह से फिर नहीं पड़ने देंगे, तो फिर यह सौदागर महाजनान तमाम जहान के लोगों को गारत करके अपना राज करेंगे.इससे

इन्होंके राक्षसी पाप को छोड़ाना चाहिए क्योंकि मुझको इन्होंकी चोरी मालूम हुई है, जिसकी वजह यह है कि मुझको समामुख कलपाया और दुखी किया इससे मालूम हुआ है, सो यह बात भी सौदागरान के भूल की है, क्योंकि जो सौदागर महाजनान मुझको अपने राक्षसी पाप से भूल के नहीं सताते, तो कभी इनका जाल संसार के लोगों पर जाहिर नहीं होता, हालांकि मैं सब संसार के भले के वास्ते अपने ऊपर इस फकीरी की हालत में बोझ उठाके वाकिफ करता हूँ कि संसार के लोग जल्दी मेरे कहने पर यकीन ला करके समझ जावें और मदद देवें तो सौदागरान के राक्षसी पाप को दफे करा दूँ, तो संसार के लोगों को किसी तरह का दुख नहीं होवे, बल्कि सतजग की तरह से सुख पावें और फिर सतजग हो जावे, कि जैसा रावण के वक्त से पहले था; सो ऐ संसार के राजा-बादशाह और रैयत, मेरे लिखने पर गौर फरमाकर जल्दी बन्दोबस्त

करो तो पीछे सतजग हो जावे और सबकी उमर भी पूरी होने लगे, क्योंकि परमेश्वर ने तो उमर पूरी दी है परन्तु राक्षसी पाप से कच्ची उमर में मर जाते हैं, सो मैं सौदागरान का राक्षसी पाप छुड़ाने के लिए वाकिफ करता हूँ इससे यह सौदागर महाजन अपने राक्षसी पाप से तुम संसार के लोगों की अकल को कई-२ तौर से फेरेंगे और जाल जाहिर न होने के लिए कुछ का कुछ तुम लोगों को सुझा देंगे, क्योंकि बनियों के दिल में राक्षसी पाप छुड़ाने का विचार नहीं है बल्कि'' इन सौदागरान का जाल पहले भी किसी राजा बादशाह ने पकड़ा था और दफे कराना चाहा था, बल्कि सौदागरान का जाल मालूम होने पर मंदिर वगैरह गिरवा दिए थे परन्तु इन सौदागरान ने उन राजा बादशाहों की बुद्धि भष्ट करके राक्षसी पाप से भुलाया था और कुल राक्षसी पाप नहीं छुड़ाया था और बाद एक-दो पीढ़ी गुजरने के फिर राक्षसी पाप अपना चला दिया था.'' सो यह बात दुनियाँ में

मशहूर है सो जिस शख्स ने कि इन्होंका राक्षसी पाप पकड़ा था, जो उसी वक्त इनके राक्षसी पाप को छुडा के बनियों को मार दिया जाता तो फिर राक्षसी पाप नहीं चलता, परन्तु गुप्ती पाप के करने वालों को गारत नहीं किया जिससे गुप्ती पाप चलता रहा है; सो इस बात की खबर कुल हिन्दुस्तान के महाजनान को ही है परन्तु गुप्ती पाप के करनेवालों को गारत नहीं किया जिससे गुप्ती पाप चलता रहा है, परन्तु अपने घर का राक्षसी पाप जाहिर न होने के लिए पाप करने वाले बनियों को नहीं बताते हैं और रावण के जाल को तो रावण के भाई विभीषण ने बता दिया था जिससे शनिचर ने सब संसार को वाकिफ किया और रावण के जाल को संसार के हाथों से दफे कराया और फिर नहीं चलने दिया; परन्तु सौदागर महाजनान ने अपने कुल में, आपस में एका ऐसा कर रखा है कि सौदागरान के कुल में से इस बात को दरियाफ्त करो तो अपने पाप करने का भेद किसी

कजाकार = दूसरी जाति के लोग, बुराई वाले.

को भी नहीं देते हैं, चाहे कैसा ही लालच दो परन्तु असली भेद कभी नहीं देंगे, क्योंकि पहले किसी बादशाह ने राक्षसी पाप करने के सबब से सौदागरान को अच्छी तरह से तकलीफें दी थी, बल्कि जादू करने की वजह से ही इन बनिये लोगों के मंदिर तक गिरवा दिये थे जब भी सच नहीं बोले थे, सो अब किस तरह से सच बोलेंगे? बल्कि ज्यादा और हजारों तरह की कसमें खायें, क्योंकि जिस सूरत से होगा अपने जाल करने को छुपावेंगे और पाप करना नहीं बतावेंगे, क्योंकि इनके कुल में यह सलाह की हुई है कि जो जाल 'कजाकार' किसी के कहने से जाहिर हो जावे और राजा बादशाह सख्ती करें या मार देवें तो कुछ परवाह की बात नहीं है; परन्तु असली जाल को नहीं बताना, क्योंकि अपनी औलाद सलामत रहेगी और पाप करना नहीं छूटेगा, तो तुम लोगों के जान का बदला राक्षसी पाप के जादू से तीन गुणा ले लेवेंगे और अपना राज करेंगे परन्तु पाप के

करने को हरगिज-२ अपने कुल के आदमियों मत बताना, सो यह नहीं बतावेंगे; परन्तु तुम राजा बादशाहों को यह बात गौर करके समझना चाहिए कि जब तक यह पाप को नहीं छोड़े, तो इनकी औलाद तक को जिन्दा मत रहने देना और रावण की तरह से मय औलाद के गारत कर देना जब अपना राज होगा. अगर इस तरह से नहीं किया तो कुल विलायतों को यह सौदागर लोग गारत करके अपना राज करेंगे, इससे तमाम जहान के राजा बादशाह और रैयत इन्हों के राक्षसी पाप का करना छुडाओ और बन्दोबस्त करो तो मेरे जीते जी इन्होंका पाप करना छूट जावे, नहीं तो फिर नहीं छूटेगा, क्योंकि यह बनिये दुनिया दिखाई के लिए किसी कदर पाप छोड़ देवेंगे और किसी कदर नहीं छोड़ेंगे, परन्तु तुम राजा बादशाह किसी कदर पाप के छोड़ने से यह जानोगे कि इन्होंने बिलकुल पाप का करना छोड़ दिया है, परन्तु यह पीढ़ी - दो-पीढ़ी गुजरने के बाद संसार को भुला के फिर

अपना राक्षसी पाप चला देंगे, क्योंकि संसार के दिखाने के वास्ते कई बार पाप को छोड़ चुके हैं और फिर संसार भूल में पड़ जाने के बाद चला रहे हैं, उसी तरह से अब भी करना चाहते हैं, इससे मैं कुल संसार के लोगों, इन्होंके पुराने और नये जाल से वाकिफ करही देताहूँ कि जिस तरह से शनिचर ने रावण के राक्षसी पाप से संसार को वाकिफ किया था, तो तमाम जहान के लोगों ने शनिचर के वाकिफ करने से ही जल्दी बन्दोबस्त करके रावण के राक्षसी पाप को, मय रावण के कुल को गारत कर दिया था, कि जबसे फिर रावण के गुजरने के बाद कुछ दिनों तक राक्षसी पाप नहीं चला था; हाँ, हरनाकुश वगैरा ने अलबत्ता राक्षसी पाप चलाया था, कि जिस तरह से रावण ने चलाया था लेकिन जिस तरह से कि रावण का राक्षसी पाप दफे कराया गया था, उसी तरह से हरनाकुश के जाल को नरसिंघजी ने दुनियाँ में मशहूर करके राजा बादशाहों से बन्दोबस्त

करा दिया, सो यह बातें दुनियाँ में मशहूर हैं परन्तु रावण का राक्षसी पाप कुल शनिचर को मालूम था जिससे रावण अपने राक्षसी पाप को छुपा नहीं सका, सो अब! इन सौदागरान का राक्षसी पाप शनिचर की तरह से मुझको मालूम है सो मैं तमाम जहान के हिन्दू-मुसलमान, अंग्रेज वगैरह को इन सौदागरान के जाल से वाकिफ करता हूँ कि जिस तरह से रावण के इन्द्रजाली पाप को शनिचर के कहने से तमाम जहान ने एक दिल होके छोडाया था, उसी तरह से अब इन सौदागरान के जाल को तुम तमाम जहान के लोग एक दिल होकर मेरे कहने से छोड़ाओ जब छूटेगा और फिर नहीं चलेगा; और जबकि यह जमीन कांपती है जब जमीन राक्षसी पाप से फट जाती है जब संसार के छांने-छांने अलोप धन खेंच लेते हैं और जो कि कदीमी धन था वो इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से खेंच -२ के किसी टापू के उपर जमे कर रक्खा है, सो वो धन तो दुनियाँ से

छिने खेंच-२ के जमे किया है, सो धन को तो यह बनिये जानते हैं और दूसरी विलायतों में जब जमीन माता कांपती हैं जब बहुत से मकान गिर जाते हैं और बहुत सी जानों का नुकसान होता है और जब जमीन फट जाती है जब लोग परमेश्वर की कुदरत जाहिर करते हैं और यह नहीं समझते हैं कि जमीन राक्षसी पाप से फटती है, सो किसी ने धन कदीमी खेंचा है. यह नहीं जानते हैं. सो देखो भाई, कि विलायतें चाहे लाखों कोसों और करोड़ों कोसों मे ंक्यों न हों परन्तु राक्षसी पाप के जादू से जमीन को फाड़ के कदीमी धन ले लेते हैं, कि जिस तरह से मंदिरों को जादू के जोर से उड़ा देते हैं और उन्होंकी पुतलियों को कहीं से कहीं पर बाहर निकाल देते हैं, इसी तरह विलायतों का धन भी खेंच लेते हैं, सो यह बातें मंदिर वगैरा के उड़ाने की और कहीं के मंदिर की पुतली कहीं पर निकालने की बातें दुनियाँ में मशहूर हैं परन्तु दुनिया के लोग इन बातों को

परचा-२ जानते हैं और कहते हैं, सो ऐ हिन्दू-मुसलमान अंग्रेज मेरी यह अर्ज है कि जिन्होंको तुम सब लोग परचा-२ कहते हो यह परचा नहीं है, क्योंकि यह तो राक्षसी पाप की माया है परन्तु दुनियाँ के लोगों! तुमको इस जाल की खबर नहीं है इससे परचा-२ कहते हो, जिसकी खास वजह यह है कि इन सौदागरान ने अपने राक्षसी पाप से कुल जहान की अकल खराब कर दी है जिससे जमीन के कांपने का हाल नहीं जान सकते हो. परन्तु यह बात भी काबिल ख्याल करने के है कि बगैर तकलीफ जमीन माता हरगिज-२ नहीं काँप सकती हैं, यह उसी हालत में काँपती हैं कि जब जमीन के नाम का पाप कराते हैं, परन्तु सोचने की बात है कि जिस तरह से आदमी का शरीर है इसी तरह से जमीन माता का भी शरीर है, परन्तु (२४) घण्टा दिन-रात में कोई घड़ी पल आदमी के वास्ते ऐसी आती है कि जो मारे दर्द के बुखार वगैरा आ जाता है और

कुछ नहीं सुहाता है बल्कि ऐसा मालूम होता है कि दम अभी निकल जावे, क्योंकि जब दर्द की सख्ती होती है तो उस वक्त में तमाम शरीर कमजोरी के सबब से काँपने को लग जाता है; सो भाई मेरे हो, जिस तरह से अपने शरीर में दर्द वगैरा होता है उसी तरह से जमीन माता के भी शरीर में दर्द होता है परन्तु जमीन माता के शरीर में दर्द होने की वजह से निहायत ही खराबियाँ हैं और जमीन के काँपने की वजह यह है कि यह सौदागर महाजनान जमीन माता को, जमीन माता के नाम का पाप कराके और जमीन को फाड़के धन खेंच लेते हैं जब जमीन माता के शरीर में दर्द होता है और दर्द के सबब से ही काँपती हैं. सो यह सब सबब राक्षसी पाप का है, बगैर राक्षसी पाप के न तो आदमियों को कोई बीमारी है और न जमीन माता को कोई बीमारी किसी किसम की है; परन्तु यह जिस कदर बीमारियाँ दुनियाँ में होती हैं और जमीन माता को हैं यह सब इन्द्रजाल के

पाप से हैं, क्योंकि इन बनियों ने दुनियाँ के भुलाने के वास्ते पहले से तरह-२ की बातें नई तरह की चला दी हैं कि जिससे कोई शख्स हमारे जाल को न पहचान सके; मिसलन जमीन माता काँपती तो है राक्षसी पाप से और दुनियाँ के भुलाने के वास्ते यह जाहिर कर देते हैं कि परमेश्वर की कुदरत है, उसके घर की कौन जानता है? क्योंकि संसार के लोग कहते हैं कि ''जमीन माता के नीचे एक बैल है और उस बैल के सींग के ऊपर यह जमीन माता हैं क्योंकि जब बैल सींग को बदल के दूसरे सींग के ऊपर लेता है जिससे जमीन माता काँपती हैं'' और अलावा इसके बहुत से लोगों को ऐसा सुझा दिया है जिससे वोह ऐसा कहते हैं कि ''जमीन माता बासग नाग के सर के ऊपर बिराजी हुई हैं परन्तु जब कि सर्प अपने सर को हिलाता है तो उसके सर हिलाने से जमीन काँप जाती है और कोई सबब नहीं है'' सो ऐसी-२ बातें इन सौदागरान ने दुनिया के भुलाने

लंग = लिंग, मूत्र द्वार, बासग नाग = काला भयंकर साँप

के वास्ते पहले से चलादी हैं, कि जमीन माता बैल के सींग के ऊपर हैं और कोई यह कहता है कि सर्प के सर के ऊपर हैं और कोई कहता है कि महादेव के लंग के ऊपर बिछी हुई हैं और जैसा दुनियाँ के लोग कहते हैं ऐसा ही किताबों में इन महाजनान ने पहले से ही यह बातें लिख दी हैं और नाम उन किताबों के ऊपर हिन्दू-मुसलमानों के बुजुर्गों के लिख दिए हैं कि जिससे इन महाजनान का नाम संसार में जाहिर न होवे. सो देखो! यह ख्याल करने की बात है कि "जमीन माता कौन सा फूल है कि जो बैल के सींग के ऊपर या सर्प के सर के ऊपर खड़ी रह सकें या बैठ सकें" यह तो इन सौदागरान के घर का राक्षसी पाप है कि जिससे अकल खराब कर दी है जिससे जमीन माता के शरीर की ही पहचान नहीं है; परन्तु सौदागरान के कुल को इस जमीन माता के शरीर की पहचान अच्छी तरह से है कि जैसे रावण के वक्त में रावण के कुल के, जमीन माता के

शरीर की पहचान जानते थे, इसी तरह से अब सौदागरान की कुल तो जमीन के शरीर की पहचान जानती है और संसार की औलाद नहीं जानती है जिसका सबूत यह है कि जिस तरह से रावण ने किताबें वगैरा चलाकर और बुद्धि भ्रष्ट करके जमीन के शरीर की पहचान भुला दी थी और रावण की कुल जानती थी, उसी तरह से सौदागरान ने अब राक्षसी पाप की किताबें चलाकर सभों की अकलों को खराब कर दिया है जिससे जमीन के शरीर की पहचान संसार के लोगों को बिलकुल नहीं है. सो सब सबब इन्द्रजाल का है और जबकि इन्द्रजाल चलता है जब ही संसार की अकल खराब हो जाती है और जब ही संसार में रोग तरह-२ के हो जाते हैं, नहीं तो हरगिज-२ रोग नहीं हो सकता है; सो यह राक्षसी पाप सौदागरान का चलाया हुआ है इससे दुनियाँ भूली हुई फिरती है, दूसरा कोई सबब नहीं है क्योंकि ''जमीन माता किसी के सींग के ऊपर नहीं खड़ी हैं

यह तो सिर्फ अपने दम से खड़ी हैं'' और यह जो कहते हैं कि जमीन माता किस चीज पर ठहरी हुई हैं; सो भाइयों, ''यह बात किसको मालूम है कि किस चीज पर ठहरी हैं, मालिक को खबर है कि जल के ऊपर ठहरी हैं या मालिक की कुदरत से ठहरी हैं, कोई जमीन के बाहर जाके और देखकर थोड़ा ही आया है और जमीन के नीचे क्या कोई खड्डा है?'' और इन महाजनान ने जमीन माता को जादू से पाप कराके दुबली कर दी है इस वास्ते आप लोगों को वाकिफ करता हूँ कि ''जमीन माता तो अपने दम से खड़ी हैं कि जिस तरह से आदमी अपने दम के सबब से जमीन पर खड़ा या बैठा रहता है, इसी तरह से जमीन माता अपने दम के वसीले से खड़ी हुई हैं कि जिस तरह से आदमी दम के सबब से जमीन पर खड़ा या बैठा हुआ है'' और जमीन माता को बैल के सींग के ऊपर बताते हैं और कहते हैं वोह बनियों के राक्षसी पाप से भूल के कहतेहैं, क्योंकि इन बनियों ने सबकी अकल राक्षसी पास से

खराब कर दी है जिससे उन्होंको दुरस्त और सही नहीं मालूम होता है और खिलाफ बातें सच्ची मालूम होती हैं; फिर ऐसी-२ बातें जाल की इन सौदागरान की हजारों बल्कि करोड़ों हैं कि जिनकी कुछ गिनती नहीं है बलके हजारों ही बातें इन सौदागरान की चलाई हुई हैं. सो हम तुम, सब संसार के लोग देख रहे हैं और अपने हाथो से कर रहे हैं और अलावा इसके कई किताबें ऐसी-२ जाल की चला दी हैं और नाम उन किताबों के अन्दर हिन्दू-मुसलमान के बुजुर्गों का अपना बचाव करके लिख दिया है, सो इस गर्ज से लिख दिया है कि जब कभी हमारे जाल की खबर पड़ेगी तो किताबों के देखने से हमलोगों पर जाल साबित नहीं हो सकेगा; क्योंकि किताबें संसार के लोगों के नाम से हैं इससे राजा -बादशाह संसार के लोगों को ही पकडेंगे और हम बनिये तो अलेहदा के अलेहदा रह जावेंगे, परन्तु इन सौदागरान ने ऐसी - ऐसी बातें जाली अपने भले के वास्ते और तमाम

संसार को गारत करने के वास्ते चलादी हैं कि जिसके ऊपर दुनिया अपने आप ही चल रही है और इन लोगों की किताबों को दुनिया अपनी किताबें करके बैठी है. सो भाई अव्वल ही बात काबिल ख्याल करने के है कि तमाम जहान के लोग किताबों को बांच-२ के खुश होते हैं और यह कहते हैं कि " श्रीकृष्ण महाराज ने समुद्र को मथा और बिलोया था, परन्तु जिस वक्त कि मथा था उस वक्त बासग नाग की रस्सी बनाके समुद्र को बिलोया था जिसको जबान, मारवाड़ में 'नेतरा' कहते हैं जिससे श्रीकृष्णजी महाराज ने समुद्र को मथा था" सो यह बात तमाम दुनियाँ में आम लोग कहते हैं, सो यह बात भी बनियों के घर की चलाई हुई है क्योंकि समुद्र का जल श्रीकृष्णजी महाराज ने नहीं मथा था क्योंकि श्री कृष्णजी महाराज भी एक औतारों में से थे; हाँ, श्रीकृष्णजी ने ईश्वर परमात्मा की भक्ति की है जिससे उनका नाम अमर रहा है और इन्होंने भी शनिचर की

तरह से संसार के साथ नेक काम किया है जिससे श्री कृष्णजी का नाम अब तक अमर है, बाकी जाल इन सौदागरान का है; सो यह जाल सिर्फ संसार के भुलाने के लिए चला दिए हैं कि जिन्होंको सब संसार के लोग बिलकुल नहीं समझते हैं, सो संसार के लोगों की अकल फेरने के लिये राक्षसी पाप चलाया है जिससे अकल खराब हो गई है; इससे मुझ गरीब के कहने पर यकीन नहीं लाते हो. परन्तु देखो कि जिस तरह से श्रीकृष्णजी महाराज औतार हुए हैं, सो देखो भाई श्रीकृष्णजी महाराज के तौर पर तुम सब हिन्दू–मुसलमान, अंग्रेज वगैरा मन सा औतार ही लोग हो, सो तुम श्रीकृष्णजी को यह कहते हो कि उन्होंने समुद्र का जल मथा था, सो उसी तरह से अब तुम लोग भी समुद्र के जल को क्यों नहीं मथ लेते हो? अगर समुद्र का जल तुम लोगों से नहीं मथा जाता है तो श्रीकृष्णजी महाराज क्या जल मथ सकते थे? कि जो तुम लोग बयान करते हो, यह तारीफ तो सौदागरान के

जाल की है क्योंकि समुद्र कुछ दही का मटका थोड़ा ही था कि जिसको श्रीकृष्णजी महाराज ने मथ लिया, क्योंकि समुद्र का पानी हजारों कोसों में पड़ा हुआ है यह नहीं हो सकता कि श्रीकृष्णजी महाराज ने समुद्र का जल बिलोया होवे, फिर साफ-२ तुम लोगों को ख्याल करना और समझना चाहिए कि यह सौदागरान के घर का जादू है. सो ऐसे-२ जादू के अन्दर तमाम जहान के लोगों की अकल फिरी हुई है जिससे तुम सबको ऐसा ही सूझता है; परन्तु यह तो ख्याल करो कि हम तुमसे एक तालाब का ही जल नहीं बिलोया जाता है तो श्रीकृष्ण महाराज ने समुद्र का जल किस तरह से बिलोया होगा? क्योंकि श्रीकृष्णजी महाराज तो खुद ही औतार थे कि जिस तरह से हम और तुम सब संसार के लोग हैं उसी तरह से श्रीकृष्णजी महाराज थे, परन्तु इन बनियों ने दुनिया के भुलाने के वास्ते तरह-२ की किताबें राक्षसी वेद की हिन्दुओं के घर में, हिन्दुओं के बुजुर्गों के नाम

लिखकर धर दी हैं और उसी तरह मुसलमानों के बुजुर्गों के नाम लिख के धर दी हैं और राजा - बादशाहों के घरों में राजा -बादशाहों के बुजुर्गो के नाम लिख के धर दी हैं, परन्तु यह सब जाल इन सौदागरान के घर का चलाया हुआ है. सो इन्होंने अपने बचाव के वास्ते यह कैसी अकलमन्दी की है कि जब कोई राजा -बादशाह इन सौदागरान के जाल को दरियाफ्त करेगा तो हिन्दुओं के घरों में जाली किताबें निकलने के सबब से हमारा जाल किसी तौर से कोई नहीं समझेगा बल्कि किताबों के देखने से हिन्दू-मुसलमान को ही इन्द्रजालिया समझ करके तरह-२ की तकलीफें देंगे, उस हालत में इन्हीं लोगों के बच्चे मारे जावेंगे और हमारे बच्चे बच जावेंगे. इस वजह से इन सौदागरान ने हिन्दू-मुसलमानों के घरों में अपने राक्षसी पाप से अकल फेर के जाल की किताबें पकड़ा दी हैं, जिससे तमाम लोग हिन्दुस्तान के आपस में लड़ते चले जाते हैं; इसी तरह से सौदागर

महाजन दूसरे बादशाहों के लोगों को लाके अपने राक्षसी पाप से अकल को फेरके और आपस में नाराजगी कराके गारत कर देंगे और इसी तरह से कि हिन्दुस्तान के राजा - बादशाहों को गारत करके धन अपने काबू में कर लेंगे. सो देखो भाई, कि यह बनिये सातो-आठो विलायतों के लोगों को गारत करने के लिए अपने राक्षसी पाप को करते जाते हैं और हजारों को राक्षसी पाप से गारत किए हैं परन्तु बादशाह लोग और तमाम जहान के लोग इन सौदागरान के साथ तरह-२ के सलूक कर रहे हैं जिस पर यह लोग अपने जाल से बाज नहीं आते हैं, क्योंकि सौदागरान को बादशाह ने 'शाह' की पदवी दी है और दूसरे तरह-२ के लाड़ रखते हैं; और इन बेईमानों का चाहे कितना ही लाड़ रखे परन्तु इनको तो अपना ही मतलब सूझता है और यह चाहते हैं कि सातो-आठो विलायतों को गारत करके हमारे औलाद का राज सब विलायतों में हो जावे, इनको

तो यह लोभ लगा हुआ है इससे यह लोग अपनी बदमाशी से बाज नहीं आते हैं और अपना राक्षसी पाप तमाम जहान को गारत करने के लिए रात-दिन करा रहे हैं, कि जिसके सबब से राजा -बादशाह के लड़के मय रैयत के ऐसे तंग हाल हो रहे हैं कि "जो उन्होंको रोटी-कपड़ा भी नसीब नहीं होता है बल्कि साग तरकारी वगैरा से या कंगा-कंगी वगैरा बेच-२ के दिन गुजारनी करते हैं." सो यह हाल कुछ छुपा हुआ नहीं है बल्कि सब साहब अपनी-२ आँखों से देख रहे हैं, कि जैसे हिन्दुस्तान के लोगों की और मक्कावालों की 'कैफियत' है परन्तु इन सौदागरान ने राजा -बादशाहों के ऊपर और रैयत के ऊपर जरा भी ख्याल नहीं किया कि इन राजा -बादशाहों ने हमारे साथ मे ऐसे-२ सलूक किए हैं जिसके अहसान से 'कयामत' तक नहीं छूट सकते हैं और न अहसान को हम अपने दिल से भूल सकते हैं परन्तु उन अहसानों को सौदागरान ने भूल

करके उन सल्लूक के ऐवज में यह नतीजा सब संसार के लोगों के लिए जाहिर किया है जिससे साल-ब-साल जादू के सबब से इन सौदागरान के संसार के लोग गारत होते चले जाते हैं; सो ऐ भाई मेरे हो, इन सौदागरान को सिवाय संसार के गारत करने के और कोई काम नहीं है, सो यह नेकी करने का फल है कि अपने साथ में 'जाहेराबदी' कर रहे हैं जिस पर भी हम तुम लोग इन सौदागरान की खातरदारी कर रहे हैं और इन जालिमों के जुलम को सह रहे हैं, जिस पर भी कोई साहब इन्होंका जाल दफे करने के लिए मददगार नहीं होते हैं ताकि इन्होंका जाल दफे कराया जावें. सो इस बात को भी तो कोई साहब नहीं सोचते हैं और अकल फिरने के सबब से अपने-२ मतलब में लगे हुए हैं, और यह नहीं समझते हैं कि मतलब ही मतलब में और लालच ही लालच में हिन्दुस्तान को और मक्कावालों को गारत कर दिया है, तो इसी तरह से दूसरी विलायतों को गारत कर देंगे, सो

इस बात का बन्दोबस्त तमाम जहान के हिन्दू-मुसलमान और अंग्रेज वगैरा एक दिल होकर करो, सो यह बात आप लोगें को सही और दुरस्त जानना चाहिए और जल्दी इस जाल के दफे करने के लिए दिल से कोशिश करनी चाहिए ताकि संसार का भला होवे. और यह बात तो तुम लोग अच्छी तरह से जानते हो कि जो शख्स किसी के साथ नेकी करता है तो उस नेकी के एवज में वोह शख्स अपनी जान देने को तैयार हो जाता है, क्योंकि फलाने ने हमारे साथ नेकी की है परन्तु यह बनिये ऐसे बदमाश हैं कि चाहे इन बनियों के साथ में नेकी करते रहे हैं तो भी यह बनिये कुछ अहसान नहीं मानते हैं. सो मैं इन बनियों के साथ संसार की नेकी करने का कई जगह लिख चुका हूँ कि जैसे नेकी इन बनियों के साथ में कुल राजा - बादशाह और रैयत वगैरा ने की है, परन्तु इन सौदागरान ने उस नेकी करने का ख्याल जरा भी नहीं किया बल्कि और नेकी के

एवज में तमाम जहान की अक्ल अपने राक्षसी पाप से कैद करके खराब कर दी है कि जिसका दुरस्त करना मुश्किल हो रहा है और इसी राक्षसी पाप के जादू से कुल माल अपने काबू में कर लिया है और इसी सबब से 'इन सौदागरान की दुकानें दूसरी विलायतों में, वास्ते धन काबू में करने के गई हुई हैं, 'सो वहाँ पर भी यह सौदागर महाजनान इसी तरह से करेंगे कि जिस तरह से हिन्दुस्तान में किया है इसी तरह से दूसरी विलायतों मे भी करेंगे; इससे मैं इन सौदागरान के जाल से वाकिफ करता हूँ और कर रहा हूँ, क्योंकि कुल बनिये अपनी-२ दुकानें ले जा करके पाप को पाप के करने वालों के शामिल होके ज्यादा पाप कराया चाहते हैं क्योंकि यह बनिये ऐसे हैं कि मिले के तो मिले रहते हैं और राजा-बादशाहों को आपस में लड़ाके मार देते हैं; और धन अपने काबू में कर लेते हैं; क्योंकि हिन्दुस्तान का धन इन बनियों ने लोगों की अकल फेर के अपने कब्जे में कर लिया है और

दूसरी विलायतों में पहुंच भी गए हैं, सो संसार के लोग कहते हैं कि सौदागर बनिये दूसरी विलायतों में जाते रहते हैं और धन को काबू में करके लाते हैं परन्तु इन्होंने कैसी अकलमन्दी की है कि गरीबों-अमीरों से मिले के तो मिले रहते हैं और गरीबों-अमीरों को आपस में लड़ाकर मार देते हैं और आप अलाहदा के अलाहदा रह जाते हैं. सो देखो भाई, कि जिस तरह से हिन्दुस्तान का धन अपने काबू में कर लिया है इसी तरह से दूसरी विलायतों का धन अपने काबू में कर लेंगे, सो यह बनिये अपनी अकल से धन का तो धन काबू में कर लेते हैं और सब संसार के दिल में और संसार की औलाद के दिल में यह महाजन लोग मीठे और प्यारे सूझते हैं और तमाम जहान के लोगों को और रैयत वगैरा को और उन्होंकी औलादों को अपने राक्षसी पाप के जादू से गारत कर देते हैं और जो कि गारत करने से बाकी रहे हैं उनको अब गारत कर देंगे; क्योंकि यह बनिये संसार के

नाम से और जमीन माता के नाम से अलोप पाप करा रहे हैं जिसकी खबर किसी राजा –बादशाह और रैयत वगैरा को नहीं है और अलावा इसके इस जाल की खबर अभी तक अंग्रेजों को और दूसरी विलायत के लोगों को बिलकुल नहीं है, अगरचे खबर होवे कि यह बनिये राजा –बादशाहों के बच्चे गारत करने के लिए पाप अलोप करा रहे हैं जब तो संसार के लोग और राजा – बादशाह एक दिल होकर इन सौदागरान की औलाद को भी गारत कर देवें और फिर हरगिज–२ इन्होंके पाप को नहीं चलने देवें, परन्तु इन बनियों ने तो सबकी अकलों को अपने राक्षसी पाप से भ्रष्ट कर दी हैं कि जिससे इन बनियों का राक्षसी जाल किसी राजा –बादशाह को और संसार के लोगों को मालूम नहीं होने देते हैं और जो मैं इन सौदागरान के जाल से राजा – बादशाहों को वाकिफ करता हूँ तो यह सौदागर बच्चे अपने राक्षसी पाप से उनकी अकलों को फेर करके

बेजा = बकवास, बिना मतलब की निम्न स्थर

उन्होंके मुँह से ऐसी-२ बातें बुरी और बेजा कहला देते हैं कि साध (अनोपदास) ने जो संसार में बनियों के जाल को प्रगट किया है और जाल-२ पुकारता फिरता है; सो साधु को बहम हो गया है, परन्तु राजा-बादशाह यह ख्याल नहीं करते हैं कि "यह फकीर है और इसको रोटी-कपड़े की कुछ भी परवाह नहीं है और न किसी तरह का लालच है और न इसके औरत है और न बाल-बच्चे हैं, जिसकी वजह से कुछ फैल अपने मतलब के लिए करता होगा!" सो इन बातों में से एक भी मुझमें नहीं है, सो इस बात को सबही हिन्दू-मुसलमान जानते हैं कुछ मेरे लिखने की भी जरूरत नहीं है; हाँ, मुझको यह काम करना जरूरी बात है कि जिस सूरत से कुल जहान की औलाद को सुख प्राप्त होवे और किसी किसम की बीमारी नहीं होवे और कोई कच्ची उमर में नहीं मरे और पूरी उमर पाकर मरें, इस वजह से यह बोझ, जहान की औलाद को राक्षसी पाप से सुख प्राप्त

बहम = वहम

होने के लिए अपने ऊपर उठाया है. सो खास वजह इसकी यह है कि यह राक्षसी पाप सौदागर महाजनान का चलाया हुआ है और कहीं दरियावों के टापू के ऊपर हो रहा है और मुझको इन सौदागरान ने अपने राक्षसी पाप से दुखी किया है, इससे यह जाल मालूम हो गया है लेकिन जो कि जाल को चलाते हैं और करते हैं वोह काफिर गिने जाते हैं और जो जाल को पकड़ता है वोह जीवदान देने के मुवाफिक होता है और समझा जाता है. सो आप संसार के लोगों समझो कि तुम्हारे बड़े-बूढ़े उस शख्स को, जो राक्षस विद्या के जाल को, प्रगट करे तो उसको कैसा समझते थे? और "अगले लोग तो कुत्ते का भी गुण मानते थे" और मैं जो "इन महाजनान का जाल संसार को, सुझा रहा हूँ तो मुझको लोग पागल और खबती कहते हैं." अगले लोग तो जाल प्रगट करनेवाले को जीवदान देने वाले के मुवाफिक समझते थे, सो ऐसी बात तो मैं अपने निसबत नहीं कहलाता हूँ

खबती = बुरे गुणवाला, सिरडी = सिड सिडीला, काफीर = महापापी / अधर्मी मनुष्य, खबती = नासमझ

कि संसार मुझको पर-उपकारी कहो या समझो और न अपने कलम से लिखता हूँ और न मैं अपने को किसी लायक समझता हूँ, परन्तु मेरे को ऐसी-२ बातें भी तो मत कहो कि सिरड़ी और पागल और इसको वहम हो गया है. सो संसार को तो कुछ दोष नहीं, उनको तो राक्षसी पाप से ऐसा ही यह महाजन सुझाते हैं, जब संसार तो कहता है; सो जिसका हाल वेद शास्त्र से तमाम जहान के लोगों को मालूम हो सकता है कि राक्षसों की चोरी पकड़ने वालों का कितना 'कुरब' है, "मैं अपनी जबान से इन नाचीज बात को अपने 'हैंडक्लर्क' से क्या लिखाऊँ, क्योंकि जिन शख्सों ने राक्षसी पाप की चोरी को पकड़ के जाहिर किया है और फौजें मरी हैं जिन्होंका हाल किताबों में लिखा हुआ है कि लंका पर 'अठारह पदम फौज' रामचंद्रजी के जमाने में रावण का जाल छोड़ाने के वास्ते चढ़ी थी जब रावण का जाल छोड़ाया था." उसी तरह से इन बनियों के राक्षसी पाप का

कुरब = त्याग, नाचीज = नगन्य

बन्दोबस्त कराया जावे और बाद बन्दोबस्त होने के इन बनियों का जाल दफे किया जावेगा और "मैं इस जाल को दफे कराने के लिए सन् १८८१ से कोशिश कर रहा हूँ सो जबसे कोशिश करते-करते चन्द रियासतों को तो समझा करके अपने कब्जे में कर लिया है और वाकिफ कर दिया है," इसी तरह से कुल रियासतों के लोगों को वाकिफ किया जावे जब यह काम पार जावेगा, क्योंकि इन सौदागरान ने ऐसी अकल खराब की है कि समझाए से भी नहीं समझते हैं बल्कि इन सौदागरान की सी ही कहने को लग जाते हैं कि सरासर बनियों के परचे जाली चल रहे हैं उनको सच्चा जानते हैं और कुदरत-२ बयान करते हैं, इससे मैं अफसोस के साथ आप लोगों की कम अकली को और बनियों के राक्षसी पाप को पहले से लिखके जाहिर करता हूँ ताकि लोगों को इस अपनी कम अकली पर ख्याल होवे, बल्कि अपनी

अकलों को असली हालत पर लाके और इन सौदागरान के जालों को मुझसे और मेरे हैंड क्लर्क से समझके और यकीन लाकर सब संसार के राजा –बादशाह व रैयत दिल से अपनी–२ औलादों को प्यारा समझके इन बनियों के जालों को दफे करने के लिए बन्दोबस्त करो, क्योंकि यह तमाम संसार के लोगों की हिम्मत से इनजाम को पहुँचेगा कि जिस तरह से रावण के वक्त में शनिचर के कहने से कुल संसार के लोगों ने कमर हिम्मत की, बाँधी और फौजें वगैरा तैयार करके अपनी–२ औलाद बचने के वास्ते रावण वगैरा के जाल को दफे किया, कि जिसका जिकर अब तक होता चला आ रहा है; फिर इसी तरह से इन सौदागरान के राक्षसी पाप को दफे करो और ''यह किताब कोई मजहब के बारे में या ज्ञान के बारे में नहीं है, यह सिर्फ जहान की औलाद को बुरे जाल से सुख प्राप्त होने के बारे में आप लोगों को 'हिदायत' है'', कि साथ गौर के इस किताब के

मजमून को समझके और अपना फरज जान के बन्दोबस्त करो तो इन सौदागरान का राक्षसी पाप दफे हो जावे तो बेहत्तर है, क्योंकि इन सौदागरान का इस तरह पर दिल है कि जिस तरह से हमने हिन्दुस्तान का धन काबू में कर लिया है उसी तरह से सातो-आठो बादशाहतों का धन हमारे काबू में हो जावे, तो जिस तरह से कि तमाम जहान के राजा -बादशाह राज कर रहे हैं और उनका हुकम चल रहा है, इसी तौर से हम अपना राज करे और अपना हुकम चलावें और जो कि हिन्दुस्तान में और दूसरी विलायतों में कदीमी धन था वह ''इन बनियों ने जादू के जोर से जमीन को फाड़ के खेंच लिया है कि जिस तरह से मंदिरों को जमीन फाड़-२ के उड़ाया था और मंदिरों की पुतलियों को कहीं से कहीं उड़ाके बाहर निकालते थे जिसको दुनियाँ परचा-२ कहती है, परन्तु जादू से बाहर निकालने की खबर तो किसी राजा -बादशाह को या गरीब-

गुरबा को भी नहीं पड़ी है'' और जो कि खानें चाँदी-सोने की थी जिसका हाल राजा -बादशाह वगैरह सब जानते हैं परन्तु इन सौदागरान ने अपने राक्षसी पाप के जादू से जमीन माता को तरह-२ के रोग लगा दिये हैं और जो कि असली धन था उसको छांने राक्षसी पाप से खेंच लिया है; सो इस बात की खबर किसी को भी नहीं है, जिसकी वजह यह है कि इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप के जोर से सबकी अकलों को खराब कर दिया है जिससे भूले हुए और बहके हुए हैं और खानों की तलाश नहीं करते हैं, कि जमीन पर तो हमेशा से, कि जब से रचना रची है जबसे सोने-चाँदी की खानें वगैरह हैं, सो वो खानें अब कहाँ गई? सो भाई मेरे हो, इन सौदागरान ने अपने राक्षसी पाप से तमाम जहान के लोगों की अकल और राजा -बादशाहों की अकल ऐसी खराब कर दी है कि जिससे खानों की ही तलाश नहीं करते हैं बल्कि ऐसे भूल गए हैं

कि जो यह जानते हैं कि चांदी-सोने की खानें मौजूद ही नहीं थी! सो भाई मेरे हो, सोने-चांदी की खानें मुलक-२ में कदीम से थी, परन्तु बलराजा के बाद से जो इन सौदागरान ने जमीन माता के नाम का राक्षसी पाप कराना शुरू किया है और कराते हैं जिससे जमीन माता को तरह-२ की बीमारीयाँ हो गई हैं, इससे सोने-चाँदी की खानें गल गई हैं, क्योंकि चाँदी-सोने की खानें जो दुनिया में कहते हैं वो जमीन माता के शरीर की चरबी थी, परन्तु बलराजा के बाद से इन सौदागरान ने अपने राक्षसी पाप से काल वगैरा डाल के और तरह-२ की बीमारियाँ करके जमीन को बहुत तकलीफें दे रखी हैं जिससे जमीन माता की चरबी गल गई है. सो खयाल करने की बात है कि "जब दरकत ही जाता रहा तो फल कहाँ से लगेगा ? क्योंकि सौदागरान के राक्षसी पाप से और इन्होंके जादू की वजह से जमीन माता के शरीर की चरबी गल

गई है कि जिसको फी जमाना चाँदी –सोने की खानें बोलता है, फिर गल जाने की वजह से मालूम नहीं होता है; और टूटा हुआ जो धन था उसको काल वगैरह पड़ा के काबू में कर लिया है, सो ख्याल करने की बात है कि जब खानें ही मौजूद नहीं हैं तो राजा –बादशाह के पास और रैयत के पास धन कहाँ से आवे ? अगर यह सौदागर बच्चे जमीन के नाम का राक्षसी पाप करना छोड़ देवें तो फिर बदस्तूर खानें चाँदी – सोने की मुल्कों–२ में हो जावें, क्योंकि जब आदमी बीमार होवे और तरह–२ की तकलीफें सहता रहा होवे और खाना वगैरा हजम नहीं होता है व शक्ल से बदशक्ल हो जाता है, परन्तु जबकि उनको आराम हो जाता है और कोई तकलीफ किसी किस्म की उसको नहीं रहती है, जब खाना अच्छी तरह से खाता है और ईश्वर की कृपा से उसका खाना अच्छी तरह से हजम हो जाता है और खाना हजम होने के सबब से उसके शरीर में

ताकत आती -जाती है, वैसा ही भला-चंगा होता जाता है, उसी तरह पर उसके शरीर में गोस्त और चरबी वगैरा बढ़ती जाती है; उसी तरह से उसमें ताकत आती जाती है, परन्तु शरीर में जबकि अच्छी तरह से ताकत आ जाती है तो मोटा ताजा हो जाता है तो फिर वही शख्स अपने काम को बदस्तूर करता है. चूंकि जमीन माता भी सौदागरान के राक्षसी पाप की वजह से बीमारियाँ पा रही है इससे उसके शरीर की चरबी गल गई है जिससे अब कोई चीज जमीन पर नहीं होती है, अगरचे जमीन के नाम का पाप करना छोड़ देवें. तो जमीन माता असली हालत पर आ जावे और कुल चीजें जमीन पर बहुत अच्छी तरह पैदा होने लगे; परन्तु राक्षसी पाप का दफे होना तमाम जहान के हिन्दू-मुसलमान और अंग्रेज वगैरा के एक दिल होने से हो सकता है. इससे सब साहबों को इन सौदागरान के जालों से वाकिफ किया जाता है कि जल्द वाकिफ होकर इन्होंके पापों को छोड़ावें जब छूटेगा,

क्योंकि इन सौदागरान ने पहले भी राक्षसी पाप चला करके तमाम जहान के लोगों की अकल खराब कर दी थी, परन्तु जबकि बादशाह को इनके जालों की खबर पड़ी तो उन्होंने इन सौदागरान से राक्षसी पाप छोड़ाने की कोशिश करके छोड़ाया; परन्तु इन सौदागरान ने किसी कदर तो पाप को छोड़ दिया और किसी कदर नहीं छोड़ा, परन्तु राजा -बादशाह के सामने जाके और कसमें गाय और सुअर की खाकर कहा कि हमने कुल पाप का करना छोड़ दिया, इससे उन राजा बादशाहों ने अपने दिल में यह जाना कि सौदागरान ऐसी बुरी कसम खाते हैं, सो वाकई कुल पाप को छोड़ दिया. इस वजह से सौदागरान को फिर तकलीफ नहीं दी, अगरचे उन्होंको यह मालूम हो जाता है कि यह सौदागर बच्चे झूठी कसम खाते हैं और कुल पाप नहीं छोड़ा है तो उसी वक्त इस सौदागर बच्चों के कुल को ही गारत कर देते कि जिस तरह से रावण के कुल को गारत कर दिया था, परन्तु सौदागरान के

आधा पाप नहीं छोड़ने की खबर राजा -बादशाह को इससे नहीं पड़ी थी कि इन सौदागरान ने अपने राक्षसी पाप के जादू से अकल को कैद कर दिया था इससे वो राजा - बादशाह ऐसे ही जानते थे कि कुल पाप का करना छोड़ दिया है; क्योंकि धर्म की कसमें खाई थी परन्तु इन सौदागरान ने पीढ़ी - दो पीढ़ी तक तो पाप नहीं कराया और बाद, दो-तीन पीढ़ी गुजरने के फिर वहीं राक्षसी पाप जमीन के नाम से और आदमियों के नाम से कराना शुरू कर दिया है जबसे अब तक करा रहे हैं, अगरचे राजा -बादशाह को यह खबर होती कि यह राक्षसी पाप शुरू कर देंगे और हमारे बाल-बच्चों को बाद हमारे मरने के फिर यह बनिये अपने राक्षसी पाप को चलाके संसार को गारत कर देंगे और हमारी बादशाही को डुबो देंगे, जब तो इन सौदागरान को इनकी औलाद समेत जब ही गारत कर देते, कि जो इन सौदागरान के कुल में ''पानी देवा और नाम लेवा'' तक नहीं रहता; परन्तु इन सौदागर

बच्चों को ऐसा नहीं जानते थे, परन्तु इनके जालों से आप लोगों को वाकिफ करता हूँ, सो आप लोगों को इनकी कसमों का ऐतबार बिलकुल नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह झूठी कसमें खाके बच जाते हैं और फिर अपना पाप चलाके संसार को गारत करते हैं. इससे इन्होंकी कसम का भरोसा नहीं करना चाहिए और मेरे सामने इन्होंका राक्षसी पाप छोड़ाना चाहिए, क्योंकि इन्होंके राक्षसी पाप की मुझको खबर है, ''अगरचे तुम्हारे सामने झूठ बोलेंगे तो मैं इनका झूठ नहीं चलने दूंगा, जब तो यह राक्षसी पाप छूट जावेगा और फिर नहीं चलेगा और मेरे मरने के बाद छुड़ाने का बन्दोबस्त करोगे तो फिर तुमसे नहीं छूटेगा'' क्योंकि यह अपने धर्म की कसमें खाके बच जावेंगे कि जैसे पहले बच गये थे उसी तरह से फिर करेंगे, क्योंकि इन्होंने अपने राक्षसी पाप से सबकी अकलों को खराब कर दिया है जिससे कुछ मालूम नहीं होता है, परन्तु ख्याल नहीं करते कि जमीन तो वो की वही है

और खानें चाँदी-सोने की इस जमीन पर नहीं हैं वो कहाँ गई? सो यह बात इससे इन्होंको नहीं सूझती है कि इन सौदागर बच्चों ने अपने राक्षसी पाप से ऐसी अकल फेर दी है जिससे बनियों के जाल की तरफ ख्याल ही नहीं होता है, क्योंकि इन सौदागरान का दिल इस तरह पर है कि कुल विलायतें गारत हो जावे और थोड़े रह जावें तो हम कुल विलायतों में अपना राज करें. इससे यह अपना राज करने के लिए राक्षसी पाप चलाया है और इसी से सबकी अकलों को कैद किया है सो जाहिर हो रहा है, परन्तु बनियों के जादू की वजह से अकलों पर परदा पड़ा हुआ है जिससे इन बातों की तरफ कोई साहब ख्याल नहीं करते हैं, सो यह प्रताप जादू का है, क्योंकि सौदागरान ने जादू के जोर से हिन्दुस्तान का धन तो अपने काबू में कर लिया है और किसी कदर टूटा हुआ धन बाकी रहा है उसको अब काबू में कर लेंगे. सिवाय इसके और विलायतों को अब गारत किया चाहते हैं जिससे

दूसरी विलायत के लोगों को हिन्दुस्तान के धन का लोभ देके लाते हैं और यह सौदागर बच्चे अपने पाप से उन्होंको हर तरह की मदद देते हैं परन्तु दूसरी विलायत के राजा -बादशाह यह ख्याल नहीं करते हैं कि जिस तरह से इन सौदागरान ने हिन्दुस्तान को निर्धन कर दिया है उसी तरह से हमको निर्धन किया चाहते हैं; सो इन बनियों का मतलब यह है कि जिस तरह से हिन्दुस्तान में किसी कदर धन रह गया है उसी तरह से दूसरी विलायतों में रखेंगे और जिस तरह से कि यह बनिये अंग्रेजों को रहे-सहे धन का लालच देके लाए हैं, इसी तरह से और विलायतों को लावेंगे और जिस हिकमत के साथ हिन्दुस्तान के रहे-सहे धन को यह बनिये लोग रेलों में लाद-२ के ले गए हैं और लिए जाते हैं इसी तरह से सब विलायतों का धन काबू में कर लेंगे और जो टूटा हुआ धन बाकी रहेगा उसको सौदागरी से रेलों में लाद-२ कर लिये जाते हैं क्योंकि यह

बनिये ऐसे बेईमान हैं कि ''जाहिरदारी में तो अंग्रेजों से भी मिले हुए हैं और दिल में कपट से पेश आ रहे हैं,'' कि जिस तरह से अगले जमाने के बादशाहों से मिले के तो मिले थे और दिल में कपट रखते थे, उसी तरह से यह बनिये अब भी कर रहे हैं कि जो अंग्रेजों से मिले के तो मिले हैं और दिल में कपट रखते हैं जिसकी अंग्रेजों को भी खबर नहीं है. सो देखो भाई, जबकि सौदागर बच्चे अंग्रेजों का धन अपने कब्जे में कर लेंगे, जब इसी तरह से तुम सातो–आठो विलायतों के राजा –बादशाहों को धन का लोभ और मदद देके अंग्रेजों की औलाद को गारत करने के लिए लावेंगे, परन्तु जाहिरदारी में तुमसे भी मिले रहेंगे और दिल में कपट रखेंगे और अंग्रेजों की तरह से और हिन्दुस्तान की तरह से तुमको भी निर्धन कर देंगे; इसी तरह से जब तुम्हारा भी धन काबू में कर लेंगे और निर्धन कर देंगे जब और विलायतों के राजा –बादशाह से जा मिलेंगे और उनको भी निर्धन कर देंगे,

क्योंकि उनको भी आपस में लड़ाके मार देंगे, जब और विलायत वालों को हिन्दुस्तान के धन का लोभ देके लावेंगे और उनको भी निर्धन कर देंगे, गर्ज की इसी तरह से साते-आठो विलायातों के राजा बादशाहों को बनिये हिन्दुस्तान के राज करने का लोभ देके और अपने पास से हर तरह की मदद देके लावेंगे और सिवाय बनियों के और किसी विलायत के राजा - बादशाह के पास धन नहीं रहेगा, जबकि यह बनिये अपना राज करेंगे कि जिस तरह से अब तुम कुल विलायतों के राजा -बादशाह राज कर रहे हो इसी तरह से यह सौदागर बच्चे भी राज कुल विलायतों में किया चाहते हैं; क्योंकि इन्होंने इसी सबब से राक्षसी पाप चलाया है और इसी पाप से सबकी अक्लों को कैद करके धन को अपने कब्जे में कर लिया है और जो बाकी है उसको अब काबू में कर लेवेंगे, जिसकी खबर किसी को भी नहीं और राजा -बादशाहों को भी नहीं है कि जिसके जाल से मैं वाकीफ

करता हूँ कि जो तुम सब लोग एक दिल हो के इन्होंके राक्षसी पाप को छुड़ाने का बन्दोबस्त करोगे तो दफे हो जावेगा, क्योंकि यह बनिये ऐसे 'बदजात' हैं कि जिस तरह से हिन्दुस्तान को आपस में लड़ा करके गारत कर दिया है, इसी तरह से कुल विलायतों को आपस में लड़ाकर गारत कर देंगे और यह बनिये फरेब करते हैं कि जब किसी राजा -बादशाह को हिन्दुस्तान में लाते हैं तो पहले उनके विलायतों का धन काबू में कर लेते हैं और एक-दो पीढ़ी के बाद उनको भूखे मरने के काबिल कर देते हैं, फिर उनसे यह बनिये फकीरी के भेष में और साहूकारी के भेष में मिलते हैं और फिर उनको हिन्दुस्तान के धन का लालच बताके और मदद देके लाते हैं; क्योंकि हिन्दुस्तान का धन इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से अपने काबू में कर लिया है इससे इनके पास धन बहुत है, सो अपने पास से मदद देके लाते हैं, सो इनकी गर्ज यह है कि जब हम इनको अपने पास से मदद देके ले चलेंगे

बदजात = जिसकी कोई जाति नहीं/बिगडी

तो हमारे बच्चों को यह राजा - बादशाह आराम देवेंगे और हमारे कहने में रहेंगे, सो वो तो हकीकत में ऐसा ही करेंगे क्योंकि वो तो भूखे मरते हैं इससे राज करेंगे और इन बनियों के हुकम की तामिल करेंगे क्योंकि "उनको तो इन बनियों ने राज कराया है, भला! वोह क्यों नहीं बनियों का अहसान मानेंगे?" वो तो जरूर मानेंगे, परन्तु उन राजा - बादशाहों की अकल इनके राक्षसी पाप से ऐसी खराब हो रही है कि जो अच्छे - बुरे काम की भी तमीज नहीं रही है, सो यह सबब राक्षसी पाप का है; क्योंकि जो हिन्दुस्तान में आते हैं वो यह तो ख्याल नहीं करते कि धन तो सब ही विलायतों में था, परन्तु हमारी विलायत का धन कहाँ गया? जो अब हम दूसरी विलायत में धन के लालच से जाते हैं, क्योंकि सतजग में सब विलायतों में सोने-चाँदी का ठाट और पाट था, इससे गरीब-गुरबा जग कर लेते थे परन्तु अब तो भले 'अमीर-कबीर' से भी जग नहीं होता है,

जिसकी वजह यह है कि इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से सब विलायतों के लोगों की अकल खराब कर दी है जिससे हिन्दुस्तान में आने वाले यह ख्याल नहीं करते हैं कि जब सब विलायतों में धन था तो हमारी विलायत का धन कहाँ गया? और ऐसा राक्षसी पाप हमारे धन पर किसने किया है? जिसकी तो खबर नहीं है, कि हमारा धन किधर को गया है और किसने ले लिया है? परन्तु बनियों ने सबकी अकलों को ऐसी कैद की है कि जो हिन्दुस्तान में आने वालों को और उनकी रैयत वगैरा को खबर तक नहीं पड़ने देते हैं और न फकीरों वगैरा को खबर पड़ने देते हैं और न याद रहने देते हैं. सो हिन्दुस्तान में आनेवालों की बुद्धि ऐसी कैद कर देते हैं फिर अकल खराब किए हुओं को देखते हैं कि अब इन्होंकी अकल निहायत खराब हो गयी है जब हिन्दुस्तान में लाते हैं और हिन्दुस्तान का कुछ धन बता देते हैं और सब अपने काबू में रखते हैं,

परन्तु उस बाकी धन को अपने राक्षसी पाप से किसी टापू पर खेंच के जमा कर लेते हैं कि जहाँ रात-दिन राक्षसी पाप कराते हैं, परन्तु यह सौदागर महाजनान अपनी-२ जबान से संसार के लोगों पर ऐसा जाहिर किया करते हैं कि "जब तक अंग्रेज हिन्दुस्तान में नहीं आए थे जब तक यह अंग्रेज अपनी विलायत में बहुत तंग हाल से थे और भूखे मरते थे," और यह बनिये लोग पहले से संसार में ऐसी-२ बात चला देते हैं जिससे संसार में सुन-२ के बात करते हैं कि अंग्रेज वगैरा पहले अपनी विलायत में भूखे मरते थे, जिसकी वजह यह है कि अंग्रेजों के पास पैसा नहीं था, इससे दुखी थे; सो इस बात को बनियों ने अपनी जबान से तमाम दुनिया में जाहिर कर रखा है कि जिससे तमाम जहान के लोग भी ऐसा ही जिकर करते हैं कि अंग्रेजों के पास धन नहीं था, इससे यह अंग्रेज अपनी विलायत में भूखे मरते थे, परन्तु जबसे हिन्दुस्तान में आए हैं

जबसे भूखे नहीं मरते हैं, क्योंकि जबसे ही इनके पास धन हुआ है, सो यह बात सौदागरान के राक्षसी पाप की है, कि जिस विलायत के लोगों को भूखे मरते करना मंजूर होवे तो यह बनिये अपने राक्षसी पाप से करके दिखा देते हैं; बल्कि परमेश्वर ने तो किसी को दुख नहीं दिया है, बल्कि हर तरह का सुख दिया है, परन्तु यह बनिये अपने राक्षसी पाप से धन को खेंच लेते हैं जब वो बगैर धन के भूखे मरने लगते हैं. इससे मैं आप लोगों को इन सौदागरान के राक्षसी पाप से वाकिफ करता हूँ कि जो मुझको मालूम हुआ है, वो यह है कि सतजग में बीमारी का हाल सुनने में नहीं आता था क्योंकि काल वगैरह और 'डाड़चाला' वगैरह नहीं होते थे और न जमीन को दुख था, परन्तु बलराजा के बाद से इन सौदागरान ने तरह-२ की बीमारियाँ जमीन माता को और आदमियों वगैरा को कर दी हैं इससे दुनियाँ में बुरा हो रहा है; परन्तु परमेश्वर किसी का बुरा नहीं करता है,

सो यह बुरा होना और काल वगैरह पड़ना और चाँदी-सोने की खानों का गल जाना, सौदागरान के राक्षसी पाप से है, सो इनके राक्षसी पाप को छोड़ाना चाहिए और इन बनियों से यह भी दरियाफ्त करना चाहिए कि जो बनिये यह कहते हैं कि अंग्रेजों की विलायत में धन नहीं था, परन्तु जबसे कि हिन्दुस्तान में आए हैं जबसे इनके पास धन हुआ है वरना इनके पास धन नहीं था. सो ख्याल करने की बात है कि धन तो सब ही विलायतों में था फिर यह बनिये तुम अंग्रेजों को किस तरह से भूखे मरते हुए बयान करते हैं, इससे मुझ गरीब साध (अनोपदास) की हाथ जोड़ के अर्ज है कि जब कुल विलायतों में धन था तो तुम्हारी विलायत का धन कहाँ गया? जिसकी तलाश करो, सो जिसके हाल से मैं आप लोगों को वाकिफ करता हूँ कि किसने तुम्हारी विलायत के धन के ऊपर जादू किया है जिससे तुम्हारी विलायत में तुम्हारी कदीमी धन नहीं

रहा जिसकी तलाश तुम अंग्रेज लोगों, मेरे कहने से करो; क्योंकि पहले जमाने में तो सब विलायतों के अन्दर चाँदी-सोने की खानें थी जिससे धन का टोटा नहीं था क्योंकि "चांदी-सोना खानों में से खोद-२ के निकलवा लेते थे और उनके बरतन वगैरा बनवा लेते थे" और जो-२ काम जरूरत के होते तो उस सोने-चाँदी का रूपया और मोहरे तैयार करा-२ के खर्च में लाते थे, परन्तु जबसे कि यह बनिये जमीन माता के नाम का पाप कराते हैं जबसे साल-ब-साल काल वगैरह डालते हैं; सो यह बनिये काल डाल-२ के टूटा हुआ धन दुनियाँ का अपने काबू में करते जाते हैं जिससे जमीन माता के शरीर में जो चाँदी-सोने की खानें थी वो जादू से गला दी हैं और गारत कर दी हैं, क्योंकि सौदागर बच्चे जमीन को तरह-२ की बीमारियाँ करते हैं जिससे जमीन के शरीर की चरबी गल गई है, परन्तु "टूटा हुआ धन तो सब ही विलायतों में था, सो तुम्हारी विलायत के धन पर

क्या जादू हुआ तो तुम्हारी विलायतों के घरों में किसी के पास धन नहीं रहा है?'' सौ उसकी तलाश करो, क्योंकि 'बगैर किसी के ले जाए हुए तो धन नहीं जा सकता, फिर कहाँ गया? धन कोई आदमी थोड़ा ही है, कि जो उठकर चला गया?, वो तो मिसाल पत्थर के हैं बगैर ले जाने के जा नहीं सकता, जिसकी तलाश करो; क्योंकि बनियों ने राक्षसी पाप के जादू से सभों के धन को काबू में कर लिया है जिसकी तलाश करो तो तुमको चोरी करने वालो की चोरी का हाल आप से आप मालूम हो जावे, परन्तु मैं इन सौदागरों की चोरी का हाल आप लोगों को जाहिर करता हूँ सो सिर्फ इस गर्ज से करता हूँ कि जो आप लोग बन्दोबस्त करोगे तो आपके बाल-बच्चों को इन सौदागरान के राक्षसी पाप से आराम मिले, क्योंकि इन बनियों ने ऐसी अकलमंदी की है कि जिसका हाल मैं कई जगह आप लोगों के समझने के लिए ऊपर लिख चुका हूँ, उससे कुल

हाल सौदागरान का साफ-२ जाहिर होता है परन्तु अब इन्होंका इरादा ऐसा है कि जैसा मैंने लिखा है, कि जब अंग्रेजों के बच्चे होशियार होंगे और समझेंगे तो यह जानेंगे कि इन सौदागरान ने ही हमारे बुजुर्गों को धन दिया है. ऐसा ख्याल करके वो हमारे हुकम में रहेंगे और हमारे कहने को मानेंगे, इससे इन सौदागरान ने अपनी अकलमंदी से तरह-२ की बातें पहले से चलादी हैं चाहे धन देवे, चाहे धन नहीं देवे; परन्तु अपनी औलाद के भले के वास्ते ऐसी-२ बातें पहले से चला दी हैं कि जब अंग्रेजों के बच्चे समझेंगे और उनको मालूम होगा तो अंग्रेजों के बच्चे यह जानेंगे कि हमारे बुजुर्गों को इन्होंने ही धन दिया है जब हमारे पास हुआ है, जिससे हमारे बुजुर्ग इन बनियों का हुकम उठाते हैं तो अब हमको भी इनका हुकम उठाना वाजिब है. इससे इन्होंने पहले से मतलब की बातें चला दी हैं कि जो हमारी बातों को सुनेंगे और उनके ऊपर चलेंगे तो हमारे

ऊपर किसी तरह का नुकसान नहीं आवेगा, परन्तु इन बनियों की अकलमंदी के ऊपर अंग्रेजों के बच्चे भी गौर नहीं करते और अपने मुल्क की तलाश नहीं करते, कि हमारी विलायत में टूटा हुवा धन था वो कहाँ गया? कि जिसकी हम तलाश भी नहीं करते हैं, परन्तु इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से तमाम जहान के लोगों की अकल को ऐसी खराब कर दी है कि जिससे तमाम जहान के लोगों को ऐसा ही सूझता है कि जिससे अपनी विलायत के टूटे हुए धन की तलाश नहीं करते हैं और इन्होंके हुकम को मानते हैं और यह बनिये अपने राक्षसी पाप से हमारे मुल्क के धन को अपने कब्जे में कर लेंगे, जिसकी तो खबर ही नहीं पड़ने देते हैं; और जो कि चाँदी-सोने की खानें थी उनको तो इन बनियों ने पहले से ही अपने राक्षसी पाप के जादू से कुल राजा -बादशाहों को भुला दी हैं कि जो यह जानते हैं कि खानें जमीन पर मौजूद ही नहीं थी. सो ऐ भाइयों, तुमको इन

सौदागरान ने अपने राक्षसी पाप के जादू से भुला रक्खा है क्योंकि जमीन माता को इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से बीमार कर दिया है जिससे खानें चांदी-सोने की गल गई हैं, अलावा इसके इसी तरह से इन बनियों ने संसार के आदमियों को और चोपायान और पंखेरूआन को अपने राक्षसी पाप से बीमारी डाल के कम उमर में मार देते हैं और कम उमर में मारने से इनका यह मतलब है कि संसार जल्द थोड़ा रह जावे और हमारी औलाद ज्यादा रह जावे, तो हम अपना राज करें; इससे मैं तुम अंग्रेजों और तमाम जहान के रजवाड़ों को इन सौदागरान के राक्षसी पाप से वाकिफ करता फिरता हूँ परन्तु सौदागर बच्चे अपने राक्षसी पाप से उन राजा-बादशाहों की अकल को फेर करके ऐसा सुझाते हैं कि बाबा को वहम हो गया है. खैर उस वहम के कहने का अपने दिल में कुछ ख्याल न करके और रंज नहीं लाके दुनियाँ का भला होने के लिए हाथा-जोड़ी करके समझाता फिरता हूँ

चोपायान = चार पेर वाले पशु/पशु-गाय भैस बकरी ऊंट इत्यादि २

तो वो समझने वाले लोग तुमको धक्के देते हैं और कही बुरा भला कहते हैं; फिर मैं उन शख्तियों को सह करके पिछली हालातों को, कि जो रावण और हरनाकुशने और कंश ने और कारून बादशाह ने इन सौदागरान की तरह से काफिरी पाप चलाया था कि शनिचर जी ने और नरसिंघ जी ने और श्रीकृष्णजी ने और गुरू नानक ने तमाम जहांन के बचने के लिए इन चारों शख्सों की चोरी को जाहिर करके दफे कराया है, या नहीं कराया है? जो नहीं कराया है तो वो कहो. जब तो इन बातों को सुन के सब अपनी-२ जबान से यह कहने को लग जाते हैं कि हाँ! इन शख्सों ने तो चलाया था, तो यह बात सच है तो अब इसी तरह से यह सौदागरान भी करते होंगे, जिससे हम लोगों की अकल ऐसी खराब हो रही है कि जो परमात्मा की भक्ति करते हैं तो एका एक तबियत भक्ति करने से डांवा डोल हो जाती है; सो यह सबब बेशक सौदागरान के राक्षसी पाप का है कि जो हम लोग इनके पापों को परमेश्वर की

कुदरत जानते थे, परन्तु आपके समझाने से और आपके चौड़े करने से मालूम हुआ, कि यह परमेश्वर की कुदरत नहीं है बलके सौदागरान के राक्षसी पाप की कुदरत है कि जिससे कम उमर में संसार के लोग मर जाते हैं, फिर इसका बन्दोबस्त करना और होना वाजिब है. सो ऐ भाईयों, मैं इसी गर्ज से आप लोगों को मुलकों-२ में जा-जा के सौदागरान के पाप से वाकिफ करता हूँ कि यह पाप सब संसार की मदद से दफे हो जावे तो सबको आराम मिले और "किताब के सुनाने का और मेरे समझाने का और हजारों रूपया खर्च करने का यही सबब है, वरना मुझको इस कदर तकलीफ उठाने से क्या काम?" परन्तु संसार को राक्षसी पाप से गारत होते देखा, फिर पहाड़ों का रहना और जंगल की बूटियों और फल-फूल का खाना छोड़के और आप लोगों को वाकिफ करके इन सौदागरान के जालों को दफे कराना दिल से वाजिब समझा और अपने ऊपर संसार की

औलाद को आराम हासिल होने के सबब से तकलीफ उठाना बेहत्तर समझा और ख्याल किया कि 'पहले भी जिस शख्स को काफिरी जाल की खबर पड़ी थी उसने अपना फरज जानके और रोटी खाना हराम जानके छुड़ाने की कोशिश की, 'जिन्होंकी बातें दुनियाँ में अब तक प्रगट हैं और मैं भी चन्द जगह, कि जहाँ-२ उन लोगों के नाम दर्शाने के मुनासिब समझे हैं, किताब में लिख दिए हैं और अब फिर भी आप लोगों के समझने के लिए उनका हाल लिखता हूँ कि जिन्होंने राक्षसी पाप चलाया था और छुड़ाया था; सो भाई मेरे हो, कि जिस तरह से अब इन सौदागरान का राक्षसी पाप चल रहा है सो इसी तरह से पहले रावण ने राक्षसी पाप चलाया था और संसार के लोगों की अकल फेर दी थी, परन्तु रावण ने शनिचर को अपने राक्षसी पाप से दुखी किया जब शनिचर को मालूम हुआ कि यह तो राक्षसी पाप है और तमाम दुनियाँ इसी राक्षसी पाप में कैद हो रही है,

फिर पाप का जाहिर करना और संसार के हाथों से उनके पाप को छोड़ाना वाजिब है. इससे शनिचरजी ने रावण के राक्षसी पाप से तमाम जहान को वाकिफ किया, जब रावण के छोटे भाई विभीषण ने अपने बड़े भाई रावण से राक्षसी पाप बंद करने को कहा, कि अब शनिचर को तुम्हारा राक्षसी पाप मालूम हो गया है इस वजह से तुम्हारी किताबें संसार के लोगों को नहीं पढ़ने देता है; इससे अब संसार के लोगों की अकल को ज्यादा खराब मत करो, अगर शनिचर की अकल हो ज्यादा खराब करोगे तो शनिचर अपनी औलाद को मरवा देगा; क्योंकि जमीन माता के ऊपर राजा -बादशाह, रैयत समेत बहुत हैं और अपनी औलाद वगैरह कम है, सो जबकि शनिचर ज्यादा तकलीफ पाएगा तो तकलीफ पाने के सबब से तुम्हारे राक्षसी पाप से तमाम जहान को वाकिफ करके उनके हाथों से अपनी औलाद को मरवा देगा, क्योंकि शनिचर को

तुम्हारे राक्षसी पाप की कुल खबर है. इससे इन्होंकी ज्यादा अकल मत फेरो, इससे रावण ने अपने भाई विभीषण के कहने को कबूल करके, शनिचर के डर से, लोगों की अकल को फेरना छोड़ दिया. इससे रावण के राक्षसी पाप को संसार फौरन समझ गया, जिससे शनिचर ने बहुत दुख नहीं पाया और अलावा विभीषण भी ज्यादा अकल खराब न करने देने की वजह से अपना नाम दुनियाँ में सलामत रख गया; परन्तु यह बनिये ऐसे बेईमान हैं कि जो मैं गरीबों-अमीरों को समझाने के वास्ते जाता हूँ तो यह राक्षस विद्या के पाप से ऐसा सुझाते हैं कि बाबा को 'शनिपात' हो गया है, परन्तु मैं इन बातों पर ख्याल न करके फिर उन्हीं लोगों को ज्यादा समझाता हूँ और उन्हींसे बातें करने लगता हूँ तो यह बनिये लोग अपने राक्षसी पाप से उनकी अकल को फेर करके ऐसी -२ बेजा बातें उनसे, मुझको कहलाते हैं, बल्कि वोह लोग मुझको धक्के देते हैं, चुनांचे मैं लाचार पीछे वापिस चला

शनिपात = एक तरह की बीमारी, बेजा = गलत बात/जानवर के दर्जे की बात

आता हूँ, तो मेरे वापिस आने के बाद वोह सभा के लोग यह कहने को लग जाते हैं कि बाबाजी बड़े हैं, जो सच कहते हैं; परन्तु कोई बातें काबिल समझने के नहीं हैं यह तो वैसे ही बनियों के पीछे पड़े हुए हैं, सो सभा वाले और मुलकों के राजा –बादशाह और रैयत वगैरा नहीं समझते हैं कि बाबा हजारों रूपया खर्च करके और राजाओं और गरीबों से और अमीरों से मदद ले के हम लोगों को समझाता फिरता है, सो जरूर कोई न कोई बात ऐसी है, नहीं तो यह शख्स क्यों रूपया खर्च करे और अपने ऊपर तकलीफ उठावें? सो नहीं समझते हैं; सो उन लोगों के न समझने का यही है कि उन्होंकी अकल इन सौदागरान ने अपने राक्षसी पाप से ऐसी फेर दी है जिससे नहीं समझते हैं और ऐसा कहने को लग जाते हैं कि यह बात बाबा बनियों के वास्ते नहीं कहता है और बनियों का नाम तो बाबा भुलाने के वास्ते बताता है, परन्तु अंग्रेजों के निसबत कहता है क्योंकि

अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान को ले लिया है और इन्होंने ही कुल धन हिन्दुस्तान का अपने कब्जे में कर लिया है. तो यह सबब संसार के लोगों की अकल का है, कि जो अंग्रेजों के ऊपर इन बनियों के राक्षसी पाप को टालते हैं, यह पाप करने वाले सौदागर बच्चे ही हैं और इन सौदागर बच्चों ही ने हिन्दुस्तान का धन अपने राक्षसी पाप से कब्जे में कर लिया है, परन्तु यह बनिये अपने पाप को जाहिर नहीं होने के लिए लोगों के दिल में कुछ का कुछ सुझाते हैं जिससे वो लोग भी कुछ का कुछ कहने को लग जाते हैं; अगरचे सभा में बनिये लोग भी बैठे होवे तो बनिये सभा वालों की राय से कहने को लग जाते हैं कि बराबर, यह जाल अंग्रेजों के ऊपर लिखा है सो यह बात सच है और हम बनियों की बात नहीं! क्योंकि अंग्रेजों के यहाँ राक्षसी पाप होता है. सो ऐ भाई मेरे, यह राक्षसी पाप इन सौदागरान के होते हैं और भुलाने के वास्ते अंग्रेजों का नाम लगाते हैं और अपना राक्षसी

निसबत = बारे में.

पाप करके और अकल को खराब करके खुश होते हैं और अपने कुल में जिक्र करते हैं कि हमारा राक्षसी पाप जाहिर नहीं हुआ है, क्योंकि तमाम जहान के लोग इनके बताने से यह जानते हैं कि यह राक्षसी पाप नहीं और अंग्रेजों का राक्षसी पाप चल रहा है; सो ऐ भाई बनियों तुम संसार के नाम से राक्षसी पाप, बाबत अकल फिरी हुई रहने के और अपना पाप किसी को ना समझने देने के बल्कि अंग्रेजों का पाप सुझाने के कराते हो, सो यह हिन्दुस्तान के बनिये उन पाप करने वालों बनियों के पास खर्च वगैरा भेजते हैं, कि जहाँ पर चौरासी लाख कुण्डियाँ राध लहू की बनाई हैं, वहाँ पर पाप कराते हैं. सो देखो भाई, कराते तो पाप को बनिये और लोगों के दिल में अंग्रेजों का सुझावें, जिससे संसार के लोग अंग्रेजों के ऊपर मेरी कहीं बात को समझते हैं परन्तु यह बनिये दूसरों के नाम सुझाके आप भले के भले रह जाते हैं और जबकि बनिये मेरे दर्शन करने को मेरे पास आते हैं, तो मैं उनसे

दरियाफ्त करता हूँ कि तुम सच-२ बोलो और विभीषण की तरह से सलामत रहना चाहो तो राक्षसी पाप के करने को अपने कुल में छुड़ाओ, परन्तु यह बनिये मेरे कहने को कब मानते हैं, बल्कि राक्षसी पाप रात-दिन कराके लोगों की अकल को खराब कर रहे हैं, जिससे संसार के लोगों को नहीं समझने देते हैं, जिससे वो लोग यह कहते हैं कि हम तो अंग्रेजों का ही राक्षसी पाप जानते हैं. जबकि वो यह कह चुकते हैं. जब फिर मैं उन्होंको इन सौदागरान के राक्षसी पाप से तमाम जहान के लोगों को समझाता हूँ और कहता हूँ कि जो तुम अंग्रेजों के निसबत कहते हो, सो खिलाफ बात है और जाल बनियों का चलाया हुआ है; क्योंकि अंग्रेज तो अब आए हैं और इन्होंको थोड़ा ही अरसा हुआ है, परन्तु इन बनियों का पाप तो बलराजा के बाद से हुआ है, सो हो रहा है. परन्तु जबकि अगले जमाने के राजा -बादशाह ने इन सौदागरान के ऊपर राक्षसी पाप दफे कराने के सबब से

हमला किया था और कुल राक्षसी पाप दफे कराने के लिए सौदागरान से दरियाफ्त किया था, सो इन्होंने अपने राक्षसी पाप को नहीं बताया था जब बादशाह ने इन लोगों के मंदिरों को गिरवा - २ के मंदिरों की पुतलियों को खण्डन किया था, जिसका सबूत अब तक मौजूद हैं; सो ऐ हिन्दू -मुसलमान, उस जमाने में अंग्रेंज कहाँ आए थे? जो तुम अंग्रेजों का जाल जानते हो, सो यह तो अंग्रेजों का जाल नहीं है, यह तो इञन सौदागरान का जाल हैं परन्तु यह सौदागर महाजनान तुमको अपने राक्षसी पाप से अंग्रेजो का जाल सुझाते हैं सो अंग्रेजों का जाल नहीं हैं, क्योंकि वो हिन्दुस्तान का राज कर रहे हैं और शेर-बकरी को एक घाट पानी पिला रहे हैं, इसी तरह से इसका भी बन्दोबस्त करेंगे परन्तु अभी इन्होंको इन सौदागरान के राक्षसी पाप की खबर नहीं है जिस वक्त खबर पड़ी, फौरन मेरे कहने पर यकीन लाके इन सौदागरान के राक्षसी पाप को दफे कराएँगे

फिर यह बात भी काबिल ख्याल करने की है कि जो तुम लोग यह कहते हो कि अंग्रेज धन को खेंच के ले गये हैं; सो भाई मेरे हो, कि अंग्रेज तो रूपया में से छे अन्नी लेते हैं सो छे अन्नी तो कदीम से देते हैं और लेते हैं कि जैसे पहले और बादशाह लेते थे, उसी तरह से यह अंग्रेज भी लेते हैं; परन्तु यह बात काबिल ख्याल करने के है कि अगले बादशाह छे अन्नी लेते थे जब तो धन का टोटा नहीं पड़ा और अब किस तरह से पड़ गया है, सो अंग्रेज लोग छे अन्नी जो लेते हैं, तो वो छे अन्नी पीछे हिन्दुस्तानी अमीर से ले करके और गरीब तक जो अंग्रेजी नौकर हैं, वो ले लेते हैं तो वो हिसाब पूरे का पूरा है और धन तो बहुत था कुछ छे अन्नी वगैरा के देने से धन थोड़ा ही टूटता है. सो इसका सबब यह है कि अंग्रेज तो वही छे अन्नी लेते हैं कि जैसे पहले जमाने के राजा -बादशाह लेते थे, परन्तु मैं आप साहबों से दरियाफ्त करता हूँ कि पहले हिन्दुस्तान के गरीब-अमीरों के घर में इस कदर

धन था कि जिसका कुछ शुमार नहीं हो सकता, सो वो धन कहाँ गया? सो वो धन अंग्रेजों ने थोड़ा ही ले लिया है? सो भाई मेरे हो, इन्होंने तो नहीं लिया है, क्योंकि वो तो सिर्फ छे अन्नी लेते हैं कि जो अगले जमाने के राजा -बादशाह लेते थे, सो उस छे अन्नी के लेने से धन का टोटा किसी हालत में नहीं पड़ सकता! वो तो सौदागर महाजनों ने अपने जादू के जुलम से खेंच लिया है, क्योंकि चाँदी-सोने का ठाट-पाट कुल विलायतों में था, परन्तु बलराजा के बाद से सोने-चाँदी का ठाट और पाट नहीं रहा है; सो इन बनियों ने अपने जादू के जोर से काल वगैरा डाल-२ के टूटा हुआ धन जमीन को फाड़-२ के खेंच लिया है और अलावा इसके जो लोगा दिखाऊ धन था उसको इन्होंने झूठा जाल चला और लगा के संसार के लोगों के पास से ले लिया है और बहुत-सा काल डाल-२ के धन ले लिया है, सो यह बनिये बलराजा के बाद से अपना करज सात-२ पीढ़ियों का निकाल-२ के

लेते जाते हैं और जैसा कि पहले सोने-चाँदी का ठाट और पाट कुल विलायतों में था वैसा अब नहीं है, क्योंकि विलायतों का धन भी इन बनियों ने जादू के जोर से खेंच लिया है, जिसका सबूत यह है कि जब जमीन काँपती है जब यह बनिये धन को अपने राक्षसी पाप के जादू से खेच लेते हैं और लोगों को कुछ का कुछ सुझा देते हैं, परन्तु मुझको इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से दुःखी किया है जिससे इन बनियों की चोरी मालूम पड़ी है जिसके हाल से मैं आप लोगों को वाकिफ करता हूँ कि जिस तरह से पहले जमाने में लोगों ने पहाड़ से पहाड़ जादू के जोर से लड़ा दिया था और जमीन माता को फाड़ के कहीं के मंदिरों की पुतलियों को कहीं पर निकाला था. सो इन बातों को सच मानते हैं परन्तु अब जो मैं अपने ऊपर बीती हुई और जो आंखों से देखी हुई बात को संसार में जाहिर करता हूँ तो लोगों को अच्छी तरह पर यकीन नहीं होता है कि अब यह बनिये जादू के

जोर से मन्दिरों को फाड़-२ के उड़ा देते हैं और धन को उड़ा देते हैं और खेच लेते हैं; परन्तु दुनिया के भुलाने के वास्ते यह कैसी जाल की बात चला दी है कि जमीन माता सींग बदलने के सबब से काँपती हैं, और जो कि धन को खेंच लेते हैं उसके बारे में यह जाल जाहिर कर रहे हैं कि लक्ष्मी में जान पड़ जाती है कि जब उसके कुल में कोई नहीं रहता है कि जिसने माल जमे करके जमीन में दफन किया है फिर लावारिस होने की वजह से उस गड़े हुए धन में जान पड़ जाती है, सो धन के सांप-बिच्छू बन जाते हैं. सो इस बात को तमाम दुनिया में जानते हैं कि वाकई में ऐसा ही होता है, परन्तु यह ख्याल ही नहीं करते हैं कि हम लोगों को इन बनियों ने अपने जादू के जोर से ऐसा ही सुझा रखा है, परन्तु धन में जान नहीं पड़ सकती है सो ख्याल नहीं करते; जिसकी वजह यह है कि इन्होंने अपने राक्षसी पाप से सबकी अकलों को फेर दिया है, जिससे सबको ऐसा ही सूझता है, परन्तु यह

जितनी बातें दुनिया में चल रही हैं सो यह सब राक्षसी पाप की चल रही हैं और जबकि यह बनिये जमीन माता को फाड़ते हैं तो जमीन को दुख होता है, कि जिस तरह से अपने शरीर में चोट लग जाती है और कहीं की हड्डी टूट जाती है तो किस कदर भारी दर्द होता है कि हर एक काम करने से लाचार हो जाता है. सो भाई मेरे हो, कि जिस तरह से अपने शरीर की हड्डी टूट जाती है और दर्द होता है, उसी तरह से जमीन के शरीर में दर्द होता है कि जब यह बनिये लोग जादू के जोर से फाड़ते हैं और किसी का जमे किया हुआ धन खेंच के अपने कब्जे में करते हैं, जिसके हाल से मैं आप लोगों को वाकिफ करता हूँ सो आप लोग वाकिफ होके और दिली इरादा तमाम लोगों से करके इन बनियों के राक्षसी पाप को दफे कराओ, तो तमाम जहान को इन बनियों के जादू से सुख प्राप्त होवे; क्योंकि यह बनिये ऐसे बदजात हैं कि जिन शख्सों ने

या उनके बुजुर्गों ने खेती-बाड़ी करके या नौकरी चाकरी करके सेर, दो सेर धन या मण दो मण धन, या दस-पन्द्रह सेर जमे कर लेते हैं, जब वो फिराक में रहते हैं कि इस धन को जमीन में गाड़ दूँ किसी वक्त में बच्चों के काम आवेगा, परन्तु जमीन के अन्दर जिस वक्त उस धन को गाड़ते हैं तो उन्होंका दिल जादू से किस तरह का डांवाडोल कराते हैं कि जो बयान नहीं किया जाता, वो यह है कि जो मैं इस जगह पर गाड़ूंगा जब तो कोई शख्स निकाल लेवेगा इससे फलानी जगह गाड़ना दुरस्त है, इसी तरह से थोडे दिन सोचा-विचारी में लग जाते हैं और बाद सोचा विचारी के उस धन को मुनासिब जगह जानके और बुद्धि फेरके गढ़वा देते हैं, जिससे यह बेईमान उसको कच्ची उमर में जादू से मार देते हैं और ऐसा सख्त बीमार करते हैं कि जबान जादू से बंद कर देते हैं, कि वो शख्स अपने बाल-बच्चों को धन नहीं बता सकता है, इससे उसकी नीति

बदजात = बुरी जाति/निम्नस्तर की जाति.

डांवाडोल रहती है कि यह बनिये महाजन उसको जादू से यह सुझाते हैं कि यहाँ गाडूं या वहाँ गाडूं? तो जिस जगह यह बनिये चाहते हैं, उस जगह जमीन में गड़वा देते हैं, तो उन लोगों का दिल मरते वक्त तक उस गड़े हुए माल में ही रहता है और यह कहता है कि जो मेरी जबान खुल जावे तो अपने बाल बच्चों को गड़ा हुआ धन बता दूँ, परन्तु उसकी जबान ऐसी सख्त बंद हो जाती है कि जबान से कुछ कह भी नहीं सकता; फिर वो धन वहीं पड़ा रह जाता है कि जहाँ गाड़ा था, क्योंकि उसकी औलाद को तो उस धन की खबर नहीं कि हमारे बुजुर्गों के पास धन था कि नहीं था और उसकी जबान बंद कर दी, फिर किस तरह से उसके घर वालों को मालूम होता कि धन था, कि नहीं था ? और बनिये लोगों को खबर रहती है, क्योंकि जिस वक्त आदमी मरता है जब यह बनिये अपने राक्षसी पाप से उसकी जबान को बंद कर देते हैं और कच्ची उमर में जादू से मार देते हैं, इस वजह से

बनियों को मालूम होता है. सो जब कि मर जाता है और किसी को खबर नहीं रहती है जब यह बनिये जादू के जोर से कुछ का कुछ सुझा के खेंच लेते हैं, सो ऐसे -२ जाल हजारों-करोडों कि जिसका कुछ मैं अन्दाज नहीं कर सकता हूँ, परन्तु इन बनियों का असली राक्षसी जादू यही है कि जिसको हिन्दुस्तान के हिन्दू-मुसलमान स्वर्ग-नर्क कहते हैं और चौरासी लाख कुण्डियाँ राध लहू की बताते हैं. सो यह बनिये जिस कदर उन्होंके नामका पाप कराते हैं, उसी कदर दुनिया में बुरा हो जाता है, सो बात दुनिया में नारगी वगैरा डालने की कहते हैं और किताबों में भी लिखा है, सो यह बनियों के घर का राक्षसी जाल है; अलावा इसके 'दुनिया के लोग ऐसा भी कहते हैं कि जिन्दा तो स्वर्ग में कोई नहीं जाता.' सो भाई मेरे हो, जिन्दा स्वर्ग में जावे जब तो इन बनियों का जादू फौरन जाहिर हो जावे कि दुनियाँ के नाम का पाप आदमी कराते हैं और

जो कि तमाम लोग स्वर्ग-२ कहते हैं सो यह स्वर्ग जमीन माता ही है कि जो अंग्रेजों की विलायत और दूसरी विलायत इस जमीन के ऊपर है, फिर यह जमीन ही स्वर्ग है और कहीं कुछ नहीं है; और जो कि किताबों में लिखा है और "उन किताबों के देखने और सुनने वाले जो कहीं का कहीं पर स्वर्ग बताते हैं और यकीन करते हैं सो वोह रावण की तरह से इन बनियों ने जादू का स्वर्ग बनाया है." सो उसके ऊपर रात-दिन दुनियाँ के नामका और जमीन माता के नाम का पाप कराते रहते हैं, जिसकी तारीफ तमाम जहान के लोग अपनी-२ जबान से कर रहे हैं और यह नहीं जानते हैं कि यह स्वर्ग नहीं है, कि जिसको हम तमाम जहान के लोग बोलते हैं; क्योंकि यह रावण की तरह से बनियों का राक्षसी पाप है जिससे तमाम जहान के लोगों की अकल फिरी हुई है और स्वर्ग तो यह जमीन माता ही है, क्योंकि रावण ने जो राक्षसी पाप चलाया था तो उसने भी तमाम जहान के

नारसी = आतिश दर्द/तकलीफ यातनाएं.

लोगों की अकल फेर दी थी, कि जो दुनिया स्वर्ग को भूल गई थी और रावण के राक्षसी पाप को ही स्वर्ग जानती थी कि जो रावण की जिन्दगी में संसार का बुरा होता जाता था और किसी को खबर नहीं पड़ती थी, परन्तु शनिचर ने अपने ऊपर दुख पड़ते ही रावण के राक्षसी पाप को तमाम जहान में प्रगट कर दिया, जब कुल संसार सलामत रहा है; और उसी तरह से अब यह बनिये भी राक्षसी पाप कर रहे हैं और स्वर्ग का राज ले लिया है और लोगों को स्वर्ग भुला रखा है. सो यह रावण की तरह से बनियों के घर का राक्षसी पाप बलराजा के बाद से चल रहा है जिसको मैं (अनोपदास) शनिचर की तरह से संसार को वाकिफ करता हूँ ताकि सब लोग हेत इरादा करके और एक दिल होके इन बनियों के राक्षसी पाप को दफे कराओ तो संसार का भला होवे और जिन लोगों ने कि रावण के राक्षसी पाप को और हरनाकुश के पाप को और

कंश राजा के पाप को और कारुन बादशाह के पाप को अपनी 'हिकमत अमली' से फौजें तैयार करके और लड़ाइयाँ करके छोड़ाया था और पाप छोड़ाने के सबब से उनका नाम इस दुनिया में अब तक मशहूर है. फिर इन बनियों के राक्षसी पाप से तमाम जहान की औलाद को आराम हासिल होने के सबब से वाकिफ करता हूँ कि तुमको राक्षसी पाप के जादू से भुला रखा है, जब तुम इनके जालों को खिलाफ जानते हो, परन्तु यह ख्याल नहीं करते कि जिन-२ शख्सों ने राक्षसी विद्या को पकड़ के और तमाम दुनिया को उस काफिरी जाल से वाकिफ करके छोड़ाया है और पाप के करने वालों को संसार के हाथों से गारत कराया है; सो उनका गुण और अहसान तमाम जहान के राजा -बादशाह और रैयत वगैरा ने माना है और सुख प्राप्त होने के सबब से संसार के लोग अब तक उन भक्त लोगों के शुक्रगुजार हैं, कि जिन्होंने जमीन पर रहकर काफिरों के

हिकमत अमली = अपने अपने राज्य से

जालों से संसार को बचाया है, अगर भक्त लोगों ने संसार को पहले नहीं उभारा होता तो संसार जबही गारत हो जाता, परन्तु ईश्वर परमात्मा ने उन भक्तों को संसार के उभारने के लिए ही पैदा किया था, कि जिसका जिक्र तमाम जहान के लोग अपनी जबान से कहते हैं कि जो शनिचर जी और नरसिंघजी और श्रीकृष्णजी और गुरूनानकजी को उस 'करतार करंता' ने पैदा नहीं किया होता तो बेशक रावण और हरनाकुश वगैरा अपने राक्षसी पाप से गारत कर देते और कुल विलायतों में अपना राज करते; परन्तु परमात्माजी ने हम तुम लोगों के रहने के लिये खूब पैदा किया कि जो उन भक्त लोगों के 'तूफेल' से सलामत रहे, जिससे अब तक उनके पूजा-गुण को मान रहे हैं. सो मेरे भाइयों, जब कोई दुश्मन किसी मुलक के ऊपर फौज लेके चढ़ आता है जब मुलक के मालिक और उनकी रैयत को दुश्मन के चढ़ आने की खबर नहीं पड़ती है कि जो

करतार करता = ईश्वर

बे खबर पड़े हुए होते हैं, जब दुश्मन को मुलक फतह करना क्या मुश्किल है? बल्कि साथ आसानी से फतह कर सकता है; परन्तु उस वक्त मुलक के मालिक का कुत्ता, दूसरे मुलक के लोगों को देख के और अपने मुलक के मालिक को देखके और 'मालिक के नमक खाए हुए का हक जानके' इस कदर शोर व गुल मचाता है कि जो सोते हुए शख्स फौरन जाग जाते हैं तो वो कुत्ते फौरन अपने मुलक का इन्तज़ाम कराके दुश्मन को जेर करा लेते हैं, और उस कुत्ते के सबब से अपने मुल्क को बचा लेते है तो बाद फतह हो जाने मुलक के मालिक, उस मुलक का, उस कुत्ते का कितना गुण मानते हैं और कहते हैं कि अगर कुत्तों ने रात को शोर व गुल नहीं किया होता तो मुलक को हम अपने हाथों से खो बैठते; परन्तु मुलक का रहना अपने पास कुत्तों के तूफेल से हैं कि जो हमको सोते से जगाया, कि जो हमने अपने मुलक को दुश्मन के हाथों से बचा लिया इससे कुत्ते का

गुण मानते हैं, सो कुत्ते का गुण सिर्फ मुलक रह जाने से मानते हैं, कि जो लोग तमाम जहान के लोगों को राक्षसी पाप से बचाते हैं तो उन्होंका गुण माने, तो अचरज ही क्या हैं क्योंकि उन्होंने तो संसार की औलाद को बचाया था, जिसका हाल दुनिया में मशहूर हैं परन्तु यह नहीं मालूम कि इन बनियों के राक्षसी पाप से तमाम जहान के लोगों को वाकिफ करता हूँ तो भी नहीं सुनते हैं और ना समझते हैं, बल्कि अक्ल फिर जाने के सबब से यह संसार के राजा -बादशाह और साधु-संत पागल कहते हैं और समझते नहीं हैं, सो ऐसी अकल खराब कर दी है; सो मेरे भाइयों मुझको तुम से क्या लेना है? सो तुम नहीं समझते हो, अगरचे तुम नहीं समझोगे और मुझको पागल जानके भरोसे में रहोगे जब तो तुम लोग अपनी औलाद समेत इन बनियों के राक्षसी पाप से गारत हो जाओगे और जो मेरे कहने पर यकीन लाके समझोगे तो तुम अपनी औलाद समेत

सलामत रह जाओगे और बाद दफे होने राक्षसी पाप के कम उमर में नहीं मरोगे और ऐश आराम करोगे, और जो कम उमर में मर जाते हैं और पूरी उमर (१२५) बरस की नहीं पाते हैं, सो बनियों के राक्षसी पाप से मर जाते हैं; और अगले जमाने में तो उमरें आदमियों की और अनबोलों की और झाड़ वनस्पति की, बहुत कुछ होती थी और ''दस-२ (१०,०००) हजार बरस'' की उमर होती थी, परन्तु अब इस जमाने में तो (१२५) बरस की पाप से कर रखी है; सो अब पूरी (१२५) बरस की भी नहीं होने देते हैं और कच्ची उमर में मार देते हैं. सो यह बेईमान अपने ''कौल इक़रार'' से फिर गये हैं, क्योंकि परमेश्वर किसी को कच्ची उमर में नहीं मारता है यह बनियों के राक्षसी पाप का सबब है जिससे कम उमर में लोग मर जाते हैं, क्योंकि ईश्वर किसी को कच्ची उमर में नहीं मारता है यह तो बनियों का राक्षसी पाप चल रहा है, जिससे कम उमर में

कौल इकरार = शर्तों की स्वीकृति

लोग मर जाते हैं; और जो कि दूसरी विलायत के आते हैं उनको यह बनिये अपने राक्षसी पाप से अकल फेरके लाते हैं, जिसकी वजह यह है कि जो टूटा हुआ धन उनकी विलायतों में है उसको अपने राक्षसी पाप से लिया चाहते हैं, इससे दूसरी विलायत वालों को हिन्दुस्तान के राज का लालच देके लाते हैं और हिन्दू-मुसलमान को आपस में लड़ाके मारते हैं, जिसकी खास वजह इन बनियों ने यह सोची है कि जब सब लोग मुलक-२ के गारत हो जावेंगे और हम सभों से ज्यादा रह जावेंगे, जब हम अपना राज सब मुलक में और सब विलायतों में अच्छी तरह से करेंगे. इससे मैं तुम लोगों को इन बनियों के राक्षसी पाप से वाकिफ करता हूँ, सो तुम लोग वाकिफ होके इन बनियों के राक्षसी पाप को छोड़ाओ, क्योंकि अब तुम लोगों ने नहीं छोड़ाया तो फिर इनका जाल दफे होना मुश्किल है और फिर नहीं छूटेगा, क्योंकि बनिये लोग अभी तो थोड़े हैं

और सातों–आठों विलायतों के लोग इन बनियों से ज्यादा है सो अभी तो छूट सकता है और बनिये लोग जबकि ज्यादा रह जावेंगे और सातो –आठो विलायतों के लोग थोड़े रह जावेंगे तो इनका राक्षसी पाप किसी से भी नहीं छूटेगा, क्योंकि यह बनिये अपने राक्षसी पाप से सभों की अकलों को खराब कर देंगे और अपना राज करके सभों को यह बनिये लोग अपना नौकर और चाकर करके रखेंगे; और जबकि इनके राक्षसी पाप से लोगों की बुद्धि खूब भ्रष्ट हो जावेगी, जब आपस में लड़कर ही मर जावेंगे, तो एक गाँव से जाकर दूसरा गाँव, सौ कोस के ऊपर मिलेगा; शहरों के तो बहुत ही छोटे गाँव हो जावेंगे और गाँव बिलकुल बर्बाद हो जावेंगे. सो यह बात पहले से दुनिया में मशहूर कर दी है, पर दुनियाँ में कहते हैं सो मालूम नहीं कि कैसा फिसाद करवाके या काल पड़ाके मार देंगे या मरी, हैजा या लड़ाई से बुद्धि भ्रष्ट करके गारत करेंगे? सो तो इनकी यही

जानें, उस वक्त में यह बनिये अपना राज करेंगे; सो यह बात बाबत राज करने के और दिन -२ कलजग होने के बारे में हिन्दू-मुसलमानों की किताबों में लिखा हुआ है कि "ऐसा जमाना तंग आवेगा कि घास वगैरा तुलकर बिकेगा और धान के दाने भी गिनती से बिकेंगे," सो ऐसी -२ बातें पहले से ही इन बनियों ने चलादी हैं कि जो दुनिया उनसे सुन-२ के कहती है और जो आगे अच्छे फकीर हुए हैं, नाम उनका लगा दिया है कि वोह लोग पहले से कह गये हैं और किताबों में लिख गए हैं, सो उस जमाने को हिन्दुओं में कलजग और मुसलमानों में तेरहवीं -चौदहवीं सदी की किताबों में, किसी न किसी ने पढ़ी होगी, सो अगर लोग ऐसे नाजुक जमाने पर भी दिल से कोशिश और ख्याल नहीं करोगे तो अब भी दिन-२ इससे भी खराब वक्त जादू से करते जावेंगे क्योंकि जैसा कि किताबों में लिखा है और जो इन्होंकि किताबें चलाई हुई हैं और उनमें जो लिखा है, वैसा ही यह पाप कराके करते

जाते हैं तो वैसा ही होता जाता है और वैसा ही होके रहेगा; और अलावा इसके "बरसात इस तरह से होगा कि जैसे ओस पड़ता है उस जमाने में गिनवा दाना अनाज के बिकेंगे." सो भाई मेरे हो, यह जितनी बातें कलुकाल में होने के निसबत किताबों में लिखी हुई हैं, वो उस हालत में सच्ची होगी कि जिस हालत में इनका राक्षसी पाप दफे नहीं होगा; अगरचे आज राक्षसी पाप करना सब संसार के लोग एक दिल होके छोड़ा देवे तो कलजग का नाम ही नहीं होवे, अगर दफे नहीं हुआ तो यह बनिये राक्षसी पाप से लिखी हुई बातों को दिखला देंगे, कि जो हिन्दू-मुसलमानों की किताबों के अन्दर लिखा हुआ है. इससे मैं कहता हूँ कि तुम लोग एक दिल होके इस राक्षसी पाप को मेरे शामिल होके और मदद देके छोड़ाओ ताकि दुख नहीं उठाना पड़े, वरना यह बनिये अपने राक्षसी पाप से कैसे-२ दुख देवेंगे और उन दुखों के मारे गारत हो जाओगे. सो इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से ऐसी

अकल खराब करी है कि जो हिन्दू–मुसलमान के दिल में ऐसा ही सूझता है और किताबों को मानते हैं और कहने को नहीं मानते हैं; सो इन बनियों ने यह कैसी अकलमंदी की है, कि जिस किताब में तेरहवीं–चौदहवीं सदी का हाल लिखा हुआ है और कलजग होने का हाल लिखा हुआ है, वो किताबें बनियों के घर की चालाई हुई हैं और नाम उन किताबों के अन्दर हिन्दू–मुसलमानों के बुजुर्गो का पहले से छल करके लिख दिए हैं जिससे हिन्दू–मुसलमान दोनों, उन किताबों पर चल रहे हैं, सो यह अकल का सबब है; अगर उन किताबों पर अमल नहीं करें, कि जो राक्षसी वेद की किताबें हैं और उनके अन्दर हिन्दू–मुसलमानों के नाम लिखे हुए हैं, सो मेरे कहने के मोजिब कुल संसार के लोग उन किताबों को छोड़के इन बनियों के पाप के दफे करने की कोशिश करें, तो मैं उम्मीद करता हूँ कि जल्द लोगों को इन बनियों के राक्षसी पाप से आराम हासिल होवे और जिन किताबों को, कि हिन्दू–मुसलमान

अपनी जानते हैं और कहते हैं कि पहले जो बात किताबों के अन्दर हमारे बुजुर्गों ने लिख दी, वोह सब दुरस्त है. सो यह हिन्दू-मुसलमानों का ख्याल झूठा है और कुछ बात नहीं है अगरचे हिन्दू -मुसलमानों के बुजुर्गो को ऐसा ही सूझता था, तो उन्होंने यह क्यों नहीं लिख दिया कि यह तेरहवीं सदी का जमाना और कलुकाल का जमाना होगा? वो बनियों के राक्षसी पाप से होगा, फिर आप लोगों को ख्याल करना चाहिए कि यह कुल जाल बनियों का चलाया हुआ है; अगरचे तुम हिन्दू -मुसलमान के बुजुर्गो ने पहले से किताबें चलाई होती तो तुम्हारे बुजुर्ग जरूर इन बनियों के राक्षसी पाप को किताबों के अन्दर लिख देते, कि बनिये राक्षसी पाप अपना चलावेंगे और धन को खेंच के अपने कब्जे में कर लेंगे और काल वगैरा डाल के संसार के लोगों को गारत कर देंगे और इस तरह से बारिश होगी कि गिनती से अनाज के दाने बिकेंगे. सो उन्होंने कुछ नहीं

लिखा है, अगर उन्होंकी बनाई हुई होती तो वो अपनी औलादों का ख्याल करके जरूर-२ इन बनियों के जाल को लिख देते; इससे मैं अर्ज करता हूँ कि आप लोगों को खूब ख्याल करना चाहिए और अपनी किताबें न जानके और सौदागर बच्चों की किताबें जान के और मेरे लिखने पर गौर करके और अपनी-२ औलाद की तरफ देखके, जल्दी इस काम के दफे होने के लिए अमीर-गरीब और अतीत-फकीर और राजा-बादशाह मय रैयत के जगह-२ और मुलकों -२ में इन सौदागरान के राक्षसी पाप का दिल से जिक्र करो और अंग्रेजों को इन्होंके जालों से वाकिफ करो, क्योंकि वो आज हिन्दुस्तान के मालिक हैं क्योंकि इन्होंके समझने से और मेरे कहने से और अंग्रेजों की और राजा-बादशाहों की मदद से कुल जहान की औलाद को आराम हासिल हो सकता है; क्योंकि राक्षसी पाप वहीं चलाते हैं कि जिसके पास कुल संसार का धन होता है!

क्योंकि इस काम में खर्च ज्यादा होता है. अगरचे हिन्दू-मुसलमान के बुजुर्गो ने पहले से बुरा जमाना होने की किताबें चलाई होती, तो वो इनके राक्षसी पाप का करना और बनियों की चलाई हुई किताबें (औतारचरित्र) वगैरह का नाम लिखकर जाहिर कर देते और जिन किताबों में नाम लिखे हुए हैं, परन्तु बनियों ने अपनी अकलमंदी से तुम हिन्दू-मुसलमानों के नाम किताबों में लिख दिए हैं; सो वो नाम इस वजह से लिख दिए हैं कि जब कोई राजा -बादशाह किताबों का हाल दरियाफ्त करेंगे तो हम बनियों से नहीं करेंगे, तो हमारा जाल बदस्तूर चलता रहेगा; क्योंकि किताबें हिन्दू-मुसलमान के बुजुर्गो के नाम की हैं इससे राजा - बादशाह, हिन्दू -मुसलमानों को ही तंग करेंगे और किताबों में नाम निकालने के सबब से इन हिन्दू-मुसलमानों को ही गारत करेंगे. इससे ऐसे -२ जाल की किताबें बनियों ने

बनाके हिन्दू-मुसलमानों के बुजुर्गों के नाम से चलादी हैं और हिन्दू-मुसलमान के घरों में दे दी हैं जिससे हिन्दू-मुसलमान उन किताबों को अपनी जानते हैं, और जाल की पहचान नहीं करते हैं. सो यह सबब अकल फिरने का है, कि जो समझाने से भी नहीं समझते हैं और किताबों के ऊपर चलते हैं; सो यह बनिये अपने राक्षसी पाप से ऐसा ही सुझाते हैं कि यह किताबें हमारी हैं और हमारे धर्म का हाल लिखा हुआ हैं जिससे वो किताबों के लिखे होने के मोजिब चल रहे हैं और इन बनियों ने पहले से हजारों बरस का हाल लिख दिया है और किताबें भी तरह-२ के जादू की चलाके तुम्हारे बुजुर्गों का नाम लिख दिया है, सो वो किताबें तुम हिन्दू-मुसलमान के बुजुर्गों की नहीं हैं, यह रावण की तरह से इन बनियों ने राक्षसी पाप चलाने की गर्ज से बनाके चलाई हैं और जिस तरह से की रावण ने ऋषिश्वरों को और राजा -बादशाहों को गारत करने के लिए पकड़ा

दी थी, इसी तरह से इन बनियों ने भी अपने राक्षसी पाप से अकल फेरके राजा -बादशाहों को और संसार को पकड़ा दी हैं कि जब कोई राजा -बादशाह इन लोगों के पास जाल की किताबें देखेगा तो यह जानेगा कि हिन्दू-मुसलमान किसी जगह पर जादू करा रहे हैं, जिससे दिन-२ बुरा वक्त आता -जाता है; क्योंकि हिन्दू-मुसलमान अरसे से काफिरी पाप कराते हैं जिससे इन्होंके घर में राक्षसी वेद की किताबें हैं. सो मेरे भाइयों, कि जो अगली किताबें वेद और पुराण की और धर्म-पुण्य की थी और हिन्दू-मुसलमान के बुजुर्गों की थी और नेकी में चलने की थी, सो मिसलन रावण के गारत कर दी हैं और अपने जाल की किताबें रावण के मुवाफिक चलादी हैं, सो इस जाल से हिन्दू-मुसलमान के बच्चे मारे जावेंगे और जो कि सौदागर बच्चे पाप करा रहे हैं वो अलाहदा के अलाहदा रह जावेंगे और अपने पाप से तमाम जहान के लोगों को गारत कर देंगे और अपना राज करेंगे

सो तुम विलायत के राजा -बादशाह, रैयत समेत एक दिल होके छोड़ाओ, नहीं तो यह बनिये अपने राक्षसी पाप से सातो-आठो विलायतों के राजा -बादशाह और रैयत वगैरा के बाल-बच्चों को इस जमीन के ऊपर जिन्दा नहीं रहने देंगे, क्योंकि इन्होंको राज करने की 'हवीस' है. सो ऐ सातों-आठों बादशाहतों के राजा -बादशाह अगर टूटे हुए धन का लालच दें तो तुम उस टूटे हुए धन लेने के लालच में मत आओ और बनियों के पैसों को हराम जानना और जो किताबें कि बनियों की चलाई हुई हैं वो किताबें इन बनियों के घर में भी हैं; सो उन किताबों में भी हिन्दू-मुसलमान के नाम लिखे हुए हैं, सो इन बनियों ने अपने घरों में हिन्दू-मुसलमानों के नामों की किताबें, इस गर्ज से रख छोड़ी हैं कि जब कोई दूसरी विलायत का बादशाह हिन्दुस्तान में आवेगा और किताबों का हाल दरियाफ्त करेगा तो यह किताबें जो हम बनियों के घरों में हिन्दू-मुसलमानों के बुजुर्गों के

नाम की हैं, वो बादशाहों को दिखलावेंगे और कहेंगे कि यह किताबें हमारे बुजुर्गों को हिन्दू –मुसलमानों ने पकड़ा दी थी इससे हमारे घरों में मौजूद हैं, परन्तु काफरी विद्या का हाल तो हमको मालूम नहीं होता है सो यह बनिये इस वजह से इस कदर झूठ बोलेंगे कि हमारा राक्षसी पाप जाहिर नहीं होवे और हिन्दू–मुसलमान के नाम मालूम होवें और हम सच्चे के सच्चे बनें रहवें. इससे यह बनिये तरह –२ के छल 'बरवक्त' दरियाफ्त करने दूसरी विलायत के बादशाह के सामने करेंगे और अपना जाल साबित नहीं होने देंगे और अपना राक्षसी पाप करते रहेंगे और हिन्दू–मुसलमान आपस में गारत हो जावेंगे, क्योंकि बनियों के राक्षसी पाप से सब की बुद्धि खराब हो रही है इससे बनियों का छल जाहिर नहीं हो सकता है; इससे मैं आप लोगों के बच्चे बचने के सबब से तमाम जहान को इस राक्षसी पाप के छोड़ाने की गर्ज से वाकिफ करता हूँ, सो सब संसार के लोग एक दिल होके इन बनियों के

राक्षसी पाप को छोड़ाओ, जब तुमको आराम मिलेगा, और जो कि चाँदी-सोने की खानें थी वो गल गई हैं, सो जबकि राक्षसी पाप दफे हो जावेगा जब कुल विलायतों में चाँदी-सोने की खानें बोलते हो, वो जमीन के शरीर की चरबी हैं; जिसकी तारीफ यह है कि जो जमीन के शरीर में कंचन है वो तो सोना है और कंचन से उतरा हुआ वो चाँदी है और जोकि चाँदी से उतरा है वो ताम्बा, पीत्तल, लोहा, जस्ता और रांगा वगैरा हैं और जिसको कि तुम 'रसकोपका' कहते हो वो जमीन माता के शरीर की 'मनी' और 'मद' हैं कि जिस तरह से आदमी के शरीर में राजा वगैरा होता है, उसी तरह से जमीन माता का राजा वगैरा है; परन्तु राक्षसी पाप के सबब से दुख पा रही है, इससे जमीन माता के शरीर में ताकत नहीं रही है, सो जबकि जमीन माता के शरीर की बीमारी जाती रहेगी जब जमीन माता ताजा और तैयार हो जावेगी, जब कुल विलायतों में पीछा धन प्रगट

हो जावेगा कि जैसा सतजग में था. सो तुम संसार के लोगों और राजा –बादशाह एक दिल होके इन बनियों के राक्षसी पाप को छोड़ाओ ताकि फिर चाँदी–सोने की खानें और टूटा हुआ धन हो जावें और किसी विलायत में धन की भूख नहीं रहवे; क्योंकि जब इन सौदागर बच्चों का राक्षसी पाप दफे हो जावे जब किसी विलायत में धन का टोटा नहीं रहेगा और वैसा ही हो जावेगा कि जैसा ठाट और पाट सोने–चाँदी का सतजग में था, अगरचे यह बनिये टूटे हुए धन का लोभ देवें तो इन्होंके लोभ में मत आना, क्योंकि यह बनिये तुमको टूटा हुआ धन देके भुला देंगे और जो कि कदीमी धन था उसको अपने पास रखेंगे और जो कि तुमको टूटा हुआ धन देंगे वो भी पीढ़ी, दो पीढ़ी के बाद भुला के और अकल को फेरके ले लेवेंगे, परन्तु तुम संसार के लोगों को तो निर्धन का निर्धन रखेंगे, इससे कुल पाप जमीन माता के नाम का छोड़ाओ ताकि धन पीछा प्रगट हो

जावे और जिन शख्सों ने राक्षसी पाप चला-२ के धन जमे किया था, उन शख्सों का धन राक्षसी पाप छोड़ाने वालों ने नहीं लिया और वहाँ का वही पड़ा रहने दिया, क्योंकि पाप तज जाने की वजह से कुल विलायतों में पीछा धन सतजग के जमाने का सा हो गया था, इससे राक्षसी पाप के धन को किसी ने नहीं लिया; सो भाइयों, जबकि तुम राक्षसी पाप को संसार के लोग एक दिल होके इन बनियों के राक्षसी पाप को छोड़ाओ तो पीछा धन कुल विलायतों में हो जावेगा, कि जैसा सतजग में था और जो धन, कि रावण ने संसार का, राक्षसी पाप से लिया था उस धन को संसार ने नहीं लिया और हराम जाना और जबकि कारुन बादशाह ने राक्षस विद्या का पाप चलाया था जब कारुन बादशाह ने भी कुल संसार का धन अपने काबू में कर लिया था; जिसका हाल तमाम दुनिया में लोग अपनी जबान से बयान करते हैं कि कारुन बादशाह ने राक्षस विद्या के पाप से

कुल संसार का धन खेंच -२ के चालीस (४०) गंज याने चालीस (४०) डूंगरी धन जमे किया था, इससे उस धन को दुनिया ने नहीं लिया और हराम बराबर जाना. हालांकि कारुन बादशाह ने उस धन को देना चाहा और ब्राह्मणों से और साधु-फकीरों से कहा कि 'तुम इस धन को ले लो, हम पुण्य दान करते हैं, परन्तु किसी ने नहीं लिया और यह जवाब दिया कि हम लोग धन को क्या करेंगे? क्योंकि जो धन तुम हमको पुन्य दान करते हो वो धन तुम्हारे राक्षसी पाप का जमे किया हुआ है इससे इस दान को नहीं ले सकते! क्योंकि जो हम इस दान को ले लेवे तो हमारी औलाद भी डूब जावेंगी, इस वजह से नहीं लेते. सो मेरे भाइयों, रावण वगैरह के दान को और कारुन वगैरह के दान को तो किसी ब्राह्मणों ने और साधु-फकीरों ने भी नहीं लिया और हराम के बराबर जाना; और अलावा इसके ''बादशाह ने चमड़े का रुपया चलाया''

जिसकी यह तारीफ तमाम जहान के लोग बयान करते हैं कि सवा रुपए की मेंख सोने की चमड़े के अन्दर लगाके ब्रह्मणों को देने लगे और कहने लगे कि इन रुपयों को तुम लो कि जो हम तुमको दान मे देते हैं परन्तु तुम इन रुपयों का चमडे के बराबर जानना और चाँदी-सोने का दान मत जानना. ऐसे -२ फरेब करके देना चाहा तो भी उन रुपयों को किसी ने भी नहीं लिया और दान का लेना हराम ही जाना, परन्तु वो धन भी जमीन के ऊपर ही पड़ा रहा और किसी ने उस धन को नहीं लिया; सो उस धन को भी इन बनियों ने अपने कब्जे में करके ले लिया है, इससे वो धन भी दिखने में नहीं आता है और दुनियाँ ने उस धन को इस वजह से हराम जाना था कि जो जमीन पर चाँदी की और सोने की खानें हैं, सो उसमें से ला-२ कर बरतन वगैरह बनवाएँगे और मोहरें वगैरह बनवाके खरच करेंगे और इस राक्षसी पाप के जमे किए हुए धन को हम क्या करेंगे? इस वजह से उस

पड़े हुए धन में से एक पैसा भी नहीं लिया और हराम के बराबर जाना, जिसकी वजह यह है कि खानों को लोग भूले नहीं थे, सो जबकि धन की जरुरत संसार में किसी को भी होती थी तो संसार के लोग खानों में से खोद-२ कर ले आते थे, इससे उस जमे किए हुए धन की परवाह किसी को भी नहीं थी और जो कि धन जमे किया हुआ था वो भी मालिक का ही था, सो धन तो हराम नहीं था परन्तु जमे करने वाला हरामी था, कि जो संसार के लोगों को दुख देके राक्षसी पाप से खेंच लिया था और खेंच -२ के जमे किया था, सो उस धन को अगर कोई भी शख्स लेता तो कुछ हर्ज नहीं था, क्योंकि चोर किसी के मकान से धन खेंच के और चोर के ले जाता है और धन का पता लगाकर चोर को गिरफ्तार करा देते हैं, जब राजा -बादशाह उस धन को चोर से पीछा मालिक को दिलवा देते हैं तो मालिक उस धन का, उस धन को ले लेता है कि

मेरी कमाई का धन था; क्योंकि चोर-चुराके ले गया था, सो पीछा मुझको मिला है, कुछ मैंने किसी का छीन के थोड़ा ही जमे किया है! उसका तो लेना ही वाजिब है जिससे ले लिया है सो दुरस्त बात है. फिर इसी तरह से अगर संसार के लोग इस राक्षसी पाप के जमे किए हुए धन कोले लेते तो कोई बुराई की बात नहीं थी, क्योंकि वो धन भी रावण वगैरा ने और कारुन बादशाह ने बतौर चोरी के ही खेंच-२ करके लिया था, इससे उस धन के ले लेने में संसार के लोगों को कोई बुराई नहीं थी, खैर यह भी बेहतर ही है कि जो किसी ने उस धन को नहीं लिया तो ईश्वर-परमात्मा ने उस नेक नियती के सबब से संसार के लोगों को बहुत-सा धन बक्षा और बक्षेगा, कि जिन लोगों ने राक्षसी पाप के जमे किये हुए धन को हराम जाना; क्योंकि उन लोगों ने उस जमे किए हुए माल को हराम समझ के और राक्षसी पाप की पहचान शनिचर के कहने से करके

राक्षसी पाप के करने वालों को तमाम जहान ने एक दिल होके गारत कर दिया और पाप का करना छोड़ा दिया, कि जिस वजह से चाँदी –सोने की खाने फिर प्रगट हो गई, इससे संसार के लोगों को धन की तरफ से तकलीफ उठानी नहीं पड़ी थी. सो पहले जमाने की तरह से यह सौदागर महाजनान राक्षसी पाप करा रहे हैं और धन को अपने काबू में कर रहे हैं, सो अगर संसार के लोग एक दिल होके इन बनियों के राक्षसी पाप को छुड़ाओगे तो धन का टोटा नहीं रहेगा और वैसा ही हो जावेगा कि जैसे सतजग में था, क्योंकि जमीन माता की बीमारी हट जावेगी तो जमीन माता पीछे तंदुरस्त और ताजा हो जावेगी और खाने फिर प्रगट हो जावेगी; सो उन खानों में से कुल संसार के लोग फिर बरतन वगैरह बनवा लेना और मोहरें, रुपया बनवाके खरच करना और राक्षसी पाप के जमे किये हुए माल को हराम जानना और बनिये

देवतों भी मत लेना; क्योंकि जब राक्षसी पाप को छोड़ा दोगे तो फिर धन का टोटा नहीं है, अगर वो भी सभी लिया जावे तो कुछ दोष नहीं है, क्योंकि यह धन अपने ही चोरी का वापिस होता है. इससे मैं बार -२ आप लोगों को बनिये लोगों के जाल से लिख करके वाकिफ करता हूँ सो जल्दी इसके बारे में सब हिन्दू- मुसलमान और अंग्रेज वगैरा, मय अपनी -२ रैयत के, अपनी -२ औलाद सलामत रखने की गर्ज से पाप छोड़ाने की दिल से कोशिश करके छोड़ाओगे और मदद करके छोड़ाओगे और इस काम में देर नहीं करोगे, क्योंकि जो ''असली बात थी वो मैं लिख चुका हूँ,'' सो लिखे हुए पर चलके बन्दोबस्त करो और इन सौदागरन का राक्षसी पाप रावण की तरह से छोड़ाओ तो संसार के लोगों को आराम मिले और जो कि इन बनियों ने तमाम संसार के लोगों का धन चुराके अपने कब्जे में कर लिया है; सो सब संसार के लोग इन बनियों के

जमे किये हुए धन को, जो बांटके ले लो तो कोई 'मुजायका' नहीं; और जिस तरह से कि रावण वगैरा के वक्त में कोई शख्स खानों वगैरा को नहीं भूला था, उसी तरह से इन बनियों के राक्षसी पाप के चलाने से मत भूलो और खानों की पहचान रखो, कि जैसे पहले जमाने के लोगों ने पहचान रखी थी, सो अगर तुम लोग भी उसी तरह से पहचान रखोगे और भूलोगे नहीं और पाप के छोड़ाने का कोशिश करके पाप को छोड़ाओगे तो खानें प्रगट हो जावेगी और जिस तरह से कि खानें आजकल अलोप हो गई हैं इस तरह से नहीं रहेंगी; परन्तु यह बात काबिल ख्याल करने की हैं कि जैसे आजकल पत्थर-मिट्टी की खानें जमीन पर मौजूद हैं, इसी तरह से चाँदी-सोने की खानें बलराजा के जमाने तक मौजूद थी, परन्तु जबसे कि इन बनियों ने राक्षसी पाप चलाया है, जबसे ही खानें अलोप हो गई हैं और बीमारी के सबब से गल गई हैं. जिसकी वजह यह है कि इन

बनियों ने जमीन के नाम का पाप कराना शुरु किया है, जिससे जमीन के शरीर की चरबी गल गई है और खानों के अलोप होने का यही सबब है; अगर आज पाप का करना सौदागर बच्चे छोड़ देवें तो रफते-२ बदस्तूर खानें चाँदी -सोने की, पत्थर वगैरह की खानों की तरह से मौजूद हो जावें और जो कि मिट्टी-पत्थर की खानें तुम लोगों को दिखती हैं, सो इससे दिखती हैं कि इन खानों के नाम से पाप नहीं कराते हैं, अगरचे इन खानों के नाम से भी पाप कराते तो पहाड वगैरह की खाने भी गायब हो जाती, परन्तु इन खानों के नाम से पाप नहीं कराते हैं, नहीं तो यह भी जादू से खाक हो जाती; परन्तु इन बनियों ने ऐसी अकल खराब कर दी है कि खानों को भी भूले हुए हैं, जिससे यह बनिये तुमको भुलाके और धन को खेंच -२ के अपने कब्जे में किया चाहते हैं, तो पहले राक्षसी पाप के जोर से जमीन को फाड़ते हैं और जबकि जमीन

फट जाती है जब धन को खेंच लेते हैं, जब जमीन कांपती है, सो यह बनिये कुल विलायतों का धन अपने राक्षसी पाप से खेंच रहे हैं और जिनका कि खेंच लिया है उस विलायत में संसार के देखने के लिए थोड़ा-सा धन रहने दिया है; इसी तरह से कुल विलायतों में थोड़ा सा धन रहने देंगे. सो उस थोडे से धन को सौदागरी के जरिए से खेंच लेंगे, गर्ज कि जब कुल विलायतों का धन अपने कब्जे में कर लेंगे जब अपना राज करेंगे और अलावा इसके यह बात भी ख्याल करने के लायक है कि कुल जहान में यह बात मशहूर है, कि यह बनिये अपने राक्षसी पाप से कुल विलायतों का माल व मत्ता कि जो असली है उसको खेंच लेते हैं और हर एक विलायत में थोड़ा-२ रहने देते हैं. सो यह बात भी दुनिया में मशहूर है कि जिस कदर धन हिन्दुस्तान में और दूसरी विलायतों में असली हैं, वो सब लोगों के खर्च के वास्ते हैं, परन्तु इन सौदागरान ने अपनी अकलमंदी से संसार में

यह जाहिर कर रक्खा है कि एक हिस्से का धन तो कुल संसार के लोगों के वास्ते है और (१२) हिस्सा का धन जमीन के अन्दर गड़ा है परन्तु कुल धन मिलके (१३) हिस्सा था परन्तु यह (१३) हिस्सा धन को (१३) तुंबा भी कहते हैं, सो यह (१३) तुंबा धन टूटा हुआ है; सो यह टूटा हुआ धन भी कदीम से है, परन्तु इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से भुला करके अपने कब्जे में कर लिया है और जो कुछ कि, धन उस खर्च के हिस्से में से बाकी रहा है, उसको अपने राक्षसी पाप के जादू से खेंचकर अपने कब्जे में कर लेंगे; परन्तु इन बनियों ने अपनी अकलमंदी से राक्षसी पाप से सबकी अकलों को फेर करके यह कैसा जाहिर किया है कि कुल १३ हिस्सा धन था जिसमें से एक हिस्सा धन तो तमाम पृथ्वी के लोगों के खर्च के लिए है और जो कि १२ हिस्सा धन है वोह जमीन में गड़ा हुआ है. सो मेरे भाइयों, इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से अकल

फेरके भुला रखा है, कि कुल १३ हिस्सा धन है जिसमें यहीं एक हिस्सा धन जाहिर किया है और १२ हिस्सा धन अलोप जमीन के अन्दर रखा है; सो भाई मेरे हो, धन तो इस जमीन के पाप के करने वालों को तमाम जहान ने एक दिल होके धन बहुत था कि जिसकी कुछ हद भी नहीं थी, परन्तु तेरह हिस्सा धन दुनिया के भुलाने के वास्ते किताबों में लिख करके जाहिर किया है कि कुल तेरह तुंबा धन था और तेरह तुंबा तो इन्होंने संसार में बहकाने के वास्ते बातें चलादी हैं, असल में तेरह हिस्सा धन है, सो (१२) हिस्सा तो इन बनियों के पास ही अलोप है और एक हिस्सा जो दुनिया में है वोह एक नाम के वास्ते है, नहीं तो वोह तेरहवाँ हिस्सा भी इनके पास है; दूसरे राजा- बादशाह के पास तो एक थोड़ा-सा है तो वोह एक हिस्से का धन कुल विलायतों के खर्च के वास्ते जाहिरात में है, कि उस धन को तमाम जहान के लोग खर्च करके परवरिश पाते हैं, सो इन सौदागरान ने उस खर्च के तुंबा को भी

अपने कब्जे में कर रखा है और यह सोचने की बात है कि बारह हिस्सा धन जो जमीन के अन्दर अलोप बताते हैं, सो वोह जमीन में किसने गाड़ा है? अगर अपने हिन्दू-मुसलमान के बुजुर्गों ने वो बारह हिस्सा धन जमीन में गाड़ा होता, तो अपने हिन्दू-मुसलमान को उसका पता मालूम होता और हिन्दू-मुसलमान के बुजुर्ग अपनी -२ औलादों को जरूर पता बता देते कि फलानी जगह जमीन के अन्दर धन हमने गाड़ा है; सो यह तो सब चालें इन बनियों की हैं कि वो बारह हिस्सा धन जमीन में अलोप कर रक्खा है तो इनको ही उसका पता मालूम है, जो हिन्दू -मुसलमान के बुजुर्गो ने गाड़ा होता तो वो मरते वक्त अपनी औलाद को उस धन का पता बता देते, तो इस वास्ते इन बनियों के बुजुर्गो में इस बात का भेद है, सो जैसे वो मरते जाते हैं तो अपनी औलादों को भेद और पता धन का बताते जाते हैं, परन्तु अपना राक्षसी पाप जाहिर

न होने देने की वजह से इन बनियों ने खर्च के हिस्से के अन्दर से किसी कदर धन हर एक विलायत के अन्दर खरच के वास्ते छोड़ दिया है, बाकी बारह हिस्सा धन को अपने कब्जे में कर लिया है. इससे मेरा लिखना यह है कि यह जितनी बातें दुनिया में जाल की हो रही हैं यह सबब बनियों के राक्षसी पाप का है, क्योंकि संसार के लोगों की अकल इन सौदागरान ने अपने राक्षसी पाप से खराब कर दी हैं, कि जिससे बनियों के जाल की पहचान नहीं कर सकते हैं, बल्कि भूले हुए और बहके हुए हैं और ख्याल में नहीं लाते हैं कि इस जमीन के उपर तो इस कदर धन था कि जिसका कुछ अंदाज भी नहीं हो सकता था और सोने-चाँदी का ठाट और पाट था, सो वो धन कहाँ गया ? सो इतना तो कोई भी साहब ख्याल नहीं करते हैं, सो यह भी किताबों से साफ -२ साबित होता है कि सोने का ठाट और पाट था और अब नहीं है, जिसकी वजह यह है कि इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से

लोगों की अकल खराब करके कुल माल और मता संसार का अपने कब्जे में कर लिया है और जो कि धन थोड़ा-सा टूटा हुआ संसार के खर्च के लिए राक्षसी पाप जाहिर न होने के सबब से छोड़ रखा है, उसको होले -२ आपस में संसार के लोगों को लड़ाके ले लेवेंगे और सबको निर्धन कर देंगे और दूसरी विलायत के लोगों को यह बनिये बलराजा के बाद से लाने लगे हैं, अव्वल तो मक्कावालों को लाए और मक्कावालों के हाथों से इन बनियों ने खुद अलाहदा रहकर हिन्दुस्तान के आदमियों को मरवाया, परन्तु यह ख्याल मक्कावालों ने भी नहीं किया कि हिन्दुस्तान के हिन्दू-मुसलमान इन बनियों का इस कदर लाड़ रखते हैं और इन लोगों को हमारे हाथों से क्यों मरवाते हैं? सो इसकी वजह तो इन बनियों से दरियाफ्त करें कि कहीं बनियों के घर में जादू तो नहीं है! परन्तु इन बातों का ख्याल तो बिलकुल नहीं किया, जिसकी वजह यह है कि जिस विलायत के राजा -बादशाह को

हिन्दुस्तान में लाते हैं, तो पहले उनकी अकल अपने जादू के जुल्म से भ्रष्ट कर देते हैं जिससे वो आने वाले विलायत के लोग कुछ नहीं सोच सकते हैं और जो सोचें भी तो, राक्षसी पाप के सबब से उन्होंको फिर उल्टा ही सूझता है; परन्तु यह बनिये विलायत के आने वाले शख्सों की बुद्धि इस गर्ज से खराब कर देते हैं कि जब उनकी अकल खराब होगी तो हिन्दू-मुसलमानों के लोगों को आपस में लड़ा करके मार देंगे और वो खुद ही बुद्धि भ्रष्ट होने के सबब से मर जावेंगे, सो ऐसी-२ अकलमंदी इन बनियों ने इस वजह से चला रखी है कि जब यह दूसरी विलायत के शख्स हमारे मुलक में राज करने के वास्ते हमारे कहने से आवेंगे, तो अव्वल तो हमारे कहने को मानेंगे, दूसरा हम अपने राक्षसी पाप से उनकी विलायत का धन अपने कब्जे में कर लेंगे, चुनांचे मक्कावालों का धन राक्षसी पाप के जादू से इन बनियों ने हिन्दुस्तान का राज थोड़े-से बरस कराके

अपने कब्जे में कर लिया है और मक्कावालों के मुलक की गली -कूंचों से अच्छी तरह से वाकिफ हुए कि अब नहीं भूलेंगे; और जो कि मक्कावालों ने हमारी विलायत हिन्दुस्तान में राज करके, कि जो टूटा हुआ धन जमे किया हुआ था, ले गये थे. सो उस बारे में इन बनियों ने बुद्धि खराब करके यह अकलमंदी की है कि अब बुद्धि तो इन्होंकी खराब हो ही गई हैं, सो अब इस धन को जल्दी हम अपने कब्जे में कर लेंगे, क्योंकि हमने इन्होंके मुलक की गलियाँ वगैरा देखली हैं; सो हम अपनी दुकानें लाके और उनके मुलक में रहके, अपने मुलक का धन वापिस ले लेवेंगे. सो यह बनिये जिस मुलक में जाते हैं उस मुल्क के लोगों की अकल खराब करके और धन को अपने काबू में करके और उन लोगों को भूखा मरने के लायक करके दूसरी विलायत के राजा -बादशाह को हिन्दुस्तान में राज करने के वास्ते लाते हैं, जब वो भी राज करने के लालच से

इन बनियों के फंदे में आ जाते हैं; परन्तु यह बनिये अपने राक्षसी पाप से राज करने वालों की अकल को खराब करके उनके मुलक का धन अपने काबू में कर लेते हैं और विलायत वालों को और हिन्दुस्तान के लोगों को आपस में यह बनिये लड़ा देते हैं. सो इन बनियों का लड़ाने से यह मतलब है कि सब विलायतों का धन अपने कब्जे मे हो जावे क्योंकि जब कुल विलायतों के लोग कमती रह जावेंगे और सबका धन हमारे कब्जे में होगा, तो हम अपना राज कुल विलायतों में अच्छी तरह से करेंगे, इस वजह से बनियों ने इन्द्रजाल का पाप चलाया है और इस जाल की वजह से ही मुल्क -२ में लड़ाई होती है, नहीं तो क्यों लड़ें? परन्तु यह बनिये अपने राक्षसी पाप से लोगों की बुद्धि खराब करके और आपस में तनाजा कराके आप अलाहदा के अलाहदा रह जाते हैं और आपस में हिन्दू-मुसलमान को लड़ा के मरा देते हैं; सो यह सबब बनियों के इन्द्रजाल का है और इसी इन्द्रजाल के सबब से सोने

चाँदी का ठाट और पाट नहीं रहा है, नहीं तो पहले सोने-चाँदी का ठाट और पाट, सब जगह था और जो कि मक्का वाले हिन्दुस्तान में राज करके टूटा हुआ धन ले गए होंगे, वोह भी इन बनियों ने राक्षसी विद्या के पाप से पीढ़ी दो पीढ़ी या दस पीढ़ी गुजरने के बाद से ले लिया होगा, परन्तु जगह अफसोस की है कि इस कदर ख्याल मक्कावालों ने भी नहीं किया कि यह बनिये लालच देके हमको लिए जाते हैं; सो शायद यह बनिये हमारे मुलक का धन भी राज करने का लालच देके नहीं खेंच लेवें! सो नहीं सोचा, फिर यह मक्का वालों की नियत का ही फल है कि जो दूसरे मुलक के ऊपर चढ़ आने का और राज करने का डर नहीं किया और बनियों के कहने से और राज करने के लालच से मक्का वाले आए और राज किया, परन्तु हिन्दुस्तान में राज मक्कावालों ने करीब दस-दस पीढ़ी के किया होगा या कम ज्यादा, परन्तु राज के लालच से अपने मुलक का भी धन और

राज का करना गुमा दिया; और जो मक्कावाले हिन्दुस्तान से राज करके धन को ले गये थे, उससे ज्यादा धन अपने मुलक का मक्कावालों ने गुमा दिया. सो यह वजह लालच की है, अगर लालच नहीं किया होता तो कुछ नुकसान नहीं होता, परन्तु यह सबब लालच का है कि जो बनियों ने अपने राक्षसी पाप से मक्का वालों का धन अपने कब्जे में कर लिया है, कि जो मक्का वाले भी हिन्दुस्तान की तरह से भूखे मरते हैं और मक्का वालों ने हिन्दुस्तान में से छेअन्नी का धन राज करके ले गये होंगे, उस धन को भी इन बनियों ने ले लिया होगा और अलावा इन बनियों ने काल वगैरह डाल के उन लोगों को गारत करके ले लिया होगा और लोग यह भी कहते हैं कि हिंगलाज की तरफ और साताद्वीप की तरफ, कि जो मुलक वीरांन पड़े हुये हैं, उन मुलकों के आस-पास में करीब २० या २५ या ३० या ४० कोस के ऊपर जाकर के दो-चार झूंपड़े बसे

हुए मिलते हैं और जो कि जल पृथ्वी के ऊपर हैं उसको भी इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से ऐसा खराब कर दिया है, कि 'जो नमक जैसा पानी है,' कि जिसके पीने से मुँह खराब हो जाता है; और जिस खेत में जो वो पानी किसान लोग पिलाते हैं तो खेती वगैरा भी बर्बाद हो जाती है. सो इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से जमीन माता को रोग कराके केई मुलकों का पानी खराब कर दिया है, जिसकी पहचान इस तरह से करना चाहिए कि जिस तरह से आदमी का खून बीमारी के सबब से बिगड़ जाता है, इसी तरह से जमीन माता के शरीर का खून बिगड़ गया है जिससे कुओं वगैरह में पानी नहीं रहा है और न निकलता है; और बहुत से मुल्कों में पानी करीब १२ कोस के ऊपर या ३० या ४० कोस के ऊपर मीठा पानी मिलता है, सो वोह पानी बेरों में ७० या ८० पुरस की गहराई पे जाके निकलता है, परन्तु बहुत से मुल्कों में बारह -२ कोस के बीच में खारा जहर पानी निकलता

पुरस = मनुष्य के शरीर की लम्बाई का माप

है, जिससे जमीन के ऊपर कोई चीज और घास वगैरा नहीं उगता है; जिसकी वजह यह है कि इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से जमीन को दुख देकर के पानी खारा कर दिया है, इससे घास वगैरा नहीं होता है, सो नहीं मालूम कि लोगों ने किस कदर दुख पाए होंगे? और जो साताद्वीप की तरफ बहुत मुल्क वीरान पड़े हैं, सो यह बात ख्याल करने के लायक है कि उन मुल्कों को तो इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से वीरान कर दिए हैं और लोगों के दिलों में इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से ऐसा सुझा रखा है कि ईश्वर की कुदरत से साताद्वीप की तरफ मुलक वीरान हो गए हैं, कि जो उन मुलकों में बहुत आदमी नहीं होंगे; परन्तु सोचने की बात है कि ''परमेश्वर वहीं है जिसने तमाम जहान को अपनी कुदरत से पैदा किया है और जमीन -आसमान बनाया है सो परमेश्वर किस तरह से अपने हाथ की बनाई हुई चीजों को बिगाड़ सकता है''? क्योंकि यह बात गौर करने

की है, कि जब तुम लोग अपने हाथ से कोई दरकत लगाते हो, उस लगाये हुए दरखत को अपने हाथ से नहीं उखाड़ते हो और न बिगाड़ते हो, तो परमेश्वर अपनी कुदरत की चीजों को किस तरह से बिगाड़ सकता है? तो वो नहीं बिगाड़ सकता है, जब तक उसकी उमर पूरी नहीं होगी; क्योंकि जब मौसम पतझड़ की आती है तो दरकतों के पत्ते आप से आप जरद होके जमीन पर गिर जाते हैं. फिर ख्याल करना चाहिए कि उन पत्तों ने पतझड़ का वक्त आने तक पूरी उमर पाई तो आप से आप पक के गिर गए, तो उन जरद पत्तों के गिर जाने से किसी को भी किसी तरह का रंज नहीं होता है, क्योंकि पतझड़ के दिन थे सो गुजर गए और बहार के दिन आए; परन्तु किसी साहब के मकान पर किसी चीज का दरकत होवे और बहार के सबब से उस दरखत के ऊपर पत्ते लहलहा रहे हों; और कोई उन सबज पत्तों को तोड़े कि जो मौसम बहार में लहलहाते हों तो मालिक दरकत का उस शख्स से

दरकत = वृक्ष, रौनक = सुन्दरता

पत्ते तोड़ने के सबब से लड़ने को लग जाते हैं और गाली-गलोज देते हैं और दरकतों के पत्ते और डाली को नहीं तोड़ने देते हैं; सो दरकत के पत्ते न तोड़ने देने का यही सबब है कि दरकत को उस शख्स ने, वास्ते छाया के और मकान की रौनक के लिये लगाया है, सो भाई मेरे हो! जिस तरह से तुमको अपने हाथ की बनाई हुई चीज प्यारी मालूम होती है और उसको नहीं बिगाड़ सकते हो, उसी तरह से परमेश्वर को भी अपने हाथ की बनाई हुई चीजें प्यारी और अच्छी मालूम होती हैं, सो परमेश्वर भी नहीं बिगाड़ता है; क्योंकि उसकी कुदरत तो ऐसी पाक है कि जो बात कायम कर देवे तो फिर उसको बगैर उमर पूरी हुए के हरगिज-२ नहीं बिगाड़ता है, परन्तु यह बनिये लोग अपने राक्षसी पाप से पूरी उमर नहीं पाने देते हैं और जाल करके संसार के लोगों को, गारत तो अपने राक्षसी पाप से कर देते हैं और लोगों के दिल में ऐसे-२ हालात सुझा देते हैं कि देवताओं ने दोष किया हैं,

इससे लोग मरते हैं या कि ईश्वर की कुदरत है? और जो कि ‘हैजा’ की बीमारी से मरते हैं और ‘प्लेग’ से मरते हैं, परन्तु ‘‘बगैर हुकम ईश्वर के, पत्ता भी नहीं हिलता है’’ परन्तु ईश्वर परमात्मा ऐसा रहम वाला है तो वो अपनी जात से किसी को कुछ दुख किसी किस्म का नहीं देता है और न पूरी उमर होने के, किसी को मारता है; यह तो बनिये बेईमान अपने राक्षसी पाप से तमाम जहान को ईश्वर की कुदरत का सुझाके और देवताओं का दोष वगैरा सुझाके मारते हैं, क्योंकि इन बनियों के दिल में इस तरह से है कि ‘‘तमाम पृथ्वी के ऊपर रावण की तरह से हम बनिये अपना राज करें’’ इससे देवताओं वगैरा का सुझा देते हैं, कि जो सैंकड़ों मुल्क बीमारी वगैरा के सबब से वीरान हो गए हैं सो यह सबब बनियों की कुदरत का है, देवताओं और ईश्वर की कुदरत नहीं है, क्योंकि जो शख्स मर गया वोह बाद मरने के, कुछ नहीं कर सकता है; फिर यह बनियों की जालसाजी है क्योंकि जो देवता मर गए हैं उनका नाम

भक्ति करने के सबब से अमर रहा है, परन्तु इन बनियों ने बलराजा के बाद से करोड़ों तरह का जाल करके हिन्दुस्तान को और मक्का वालों को बिलकुल निर्धन कर दिया है और उसी के मुवाफिक तुम अंग्रेजों की विलायत को निर्धन किया चाहते हैं, क्योंकि निर्धन करने के सबब से अंग्रेजों से यह बनिये मिले हैं और अंग्रेजों को हिन्दुस्तान में लाके हिन्दुस्तान का राज करा दिया है, कि जो अब तक कर रहे हैं परन्तु यह बनिये, जबकि अंग्रेजों को हिन्दुस्तान में लाये तो पहले इनके मुलक का धन भी जादू के जोर से खेंच के ले लिया होगा कि जो असली था और बाकी रहा है उसको अब राक्षसी पाप के जोर से खेंच-२ के ले लेवेंगे, क्योंकि ''जादू को वो ताकत है कि जो चाहे वहीं कर सकता है'', अगर यह बनिये जादू के जोर से जिस मुल्क का धन खेंचना चाहते हैं तो खेंच लेते हैं; सो इस जादू के जाल को तो अगले जमाने के राजा -बादशाह भी बुरा कहते थे कि जादू

बहुत ही बुरा है परन्तु जबकि अंग्रेजों को यह बनिये हिन्दुस्तान में लाए होंगे, तो इन बनियों ने अंग्रेजों के मुल्क का असली धन राक्षसी पाप के जोर से अंग्रेजों को भुलाके दो-तीन पीढ़ी पेश्तर ले लिया होगा, क्योंकि यह बनिये जब दूसरे मुल्क के राजा -बादशाह वगैरा को हिन्दुस्तान के राज कराने को लाते हैं तो उनको पहले से निर्धन कर देते हैं जिससे वो गरीब हो जाते हैं और भूखे मरने लगते हैं. सो मक्कावाले और ईंगलिस्तान वाले कि जो हिन्दुस्तान में, वास्ते राज करने के आए हैं सो उन्होंने राज किया है और अभी तक कर रहे हैं और करेंगे; परन्तु यह बात वो खुद अपने दिल से जानते होंगे कि बेशक हम दो-तीन पीढ़ी तक दुखी रहे, परन्तु यह बनिये अपने राक्षसी पाप से उन राज करने वालों को पहले से ऐसा सुझाते होंगे कि कदीम से दुखी ही हैं. सो मेरे भाइयों, धन सब विलायतों में बहुत था और किसी विलायत में धन का टोटा नहीं था और

पेश्तर = लगातार

न धन बगैर उठाए के कहीं जा सकता है; परन्तु इन सौदागरान ने तीन विलायतों का असली धन अपने कब्जे में कर लिया है और जो कि टूटा हुआ धन है उसको कब्जे में किया चाहते हैं और उसी तरह से दूसरी विलायत के राजा -बादशाह को निर्धन करके यह बनिये हिन्दुस्तान में लावेंगे और उनका धन राक्षसी पाप के जोर से कुछ का कुछ सुझा के खेंच लेवेंगे और निर्धन कर देवेंगे, जब वो भूखे मरने लगेंगे जब बनिये उनको भी हिन्दुस्तान में लावेंगे और हिन्दुस्तान का राज कराएँगे और अंग्रेजों के बच्चों को मरवा देंगे. सो तुम सब संसार के लोगों और तमाम अंग्रेजों, सुन ही रहे हो कि अब रुस वाले हिन्दुस्तान में आना चाहते हैं; सो ख्याल करो कि उन रुस वालों को हमारे मुलक का हाल क्या मालूम है? और बगैर लाए के दूसरे मुलक का शख्स हिन्दुस्तान में किस तरह से आ सकता है? सो ख्याल करो कि वो खुद नहीं आता है और

वो भी इस तरह से आता है कि जिस तरह से तुम, अंग्रेज और मक्का वालों को हिन्दुस्तान में लाए थे; उसी तरह से रुस वाले भी हिन्दुस्तान में बनियों की राय से आते हैं, सो वो भी एक दफे जरुर आवेंगे, क्योंकि इन बनियों ने उनके मुलक का धन दो-तीन पीढ़ी गुजरने से पहले खेंच लिया होगा और जो कि टूटा हुआ धन बाकी है उसको अब सौदागरी के वसीले से खेंच लेंगे, कि जिस तरह से तुम लोगों का खेंचा था, गर्ज कि तुम्हारी तरह निर्धन कर देंगे और उनको बनियों ने अपने जादू से ऐसा सुझाया होगा कि जैसे तुमको और मक्का वालों को धन खेंच-२ के सुझाया था, कि हम कदीम से गरीब ही थे फिर यह बनिये वहाँ पर भी मिले हुए हैं; और रुसवालों को यह सौदागर लोग हिन्दुस्तान में राज करने के लिए लाना चाहते हैं, सो तुम हिन्दू-मुसलमान और अंग्रेज वगैरा, मैं तुमको बनियों के जाल से पहले वाकिफ करता हूँ कि तुम बनियों के

राक्षसी पाप छोड़ाने का बन्दोबस्त करो ताकि सबको सुख प्राप्त होवे और सब विलायतें बनी रहें, क्योंकि इस जमाने में इन बनियों ने ऐसा राक्षसी पाप चला रक्खा है कि जिससे तमाम जहान के लोग दुखी हैं, और जबकि आवेंगे तो इस जमाने से भी ज्यादा यह बनिये दुख दिलावेंगे; क्योंकि रुसवाले बनियों के कहने से और बहकाने से कुछ सुनवाई हिन्दू-मुसलमान की और हिन्दुस्तान के लोगों की नहीं करेंगे और रुसवालों को और सब विलायतों को समझाओ, कि वो इन बनियों के लोभ में न आवे. हिन्दू-मुसलमानों में से कौन राजा -बादशाह उस रुसवालों को बुलाने गए हैं ? फिर यह बनिये सलाह करके जाते हैं और दूसरी विलायत के बादशाहों को लाके हिन्दू-मुसलमान को मरवाते हैं, क्योंकि इनको रावण, हरनाकुश वगैरा की तरह से सब विलायतों को लोभ ही लोभ में गारत करके चार कूंट में अपना राज करने का इरादा है, इसी वास्ते हिन्दुस्तान का

लोभ दूसरी विलायत वालों को बताते हैं और अपने राक्षसी पाप से सबको गारत कर देंगे; इससे सब हिन्दू-मुसलमान और अंग्रेज वगैरा अपना -२ फर्ज जानके और रुस वालों को न आने देने का सबब समझ के, इन बनियों के राक्षसी पाप को छोड़ाओ और बनियों के जाल की किताबों को और पाप करने की जगह को मेरे कहने पर यकीन लाके देखो और पाप को छोड़ावो, जब सबको आराम मिलेगा. अगरचे बन्दोबस्त बनियों के पाप छोड़ाने का न करोगे तो यह बनिये राक्षसी पाप के जादू से अकल को फेर करके आपस में हिन्दुस्तान और मक्कावालों के और अंग्रेजों के लोगों को इस जाल ही जाल में कुल साती-आठो विलायतों को लड़ाके मरवा देंगे और परदेश वालों को यह बनिये लाके हिन्दुस्तान का राज कराएँगे; सो इसका बहुत जल्दी बन्दोबस्त हो, क्योंकि यह बनिये रात-दिन राक्षसी पाप करा रहे हैं. और अलावा इसके

जो अगले राजा -बादशाहों ने टूटे हुए धन के खज़ाने जमे किए थे, सो खज़ानों को भी यह बनिये अपने राक्षसी पाप से खेंच लेते हैं, परन्तु पहले जमीन राक्षसी पाप से फाड़ते हैं और बाद में टूटे हुए धन के खज़ानों को खेंच लेते हैं कि जहाँ पर यह सौदागर बच्चे रात-दिन राक्षसी पाप कहीं कराते रहते हैं, परन्तु यह राक्षसी पाप दरियाओं के किनारे पर कहीं करा रहे हैं और वहाँ पर सिर्फ बनियों के कुल के आदमी बहुत कुद रहते हैं और चौरासी लाख कुण्डियाँ बनाई हैं और चौरासी लाख कुलों को दुख देते हैं जब राक्षसी पाप होता है. सो इस राक्षसी पाप के कराने में करोड़ों रुपया खर्च होता है, सो वो रुपया तमाम बनियों का ही खर्च होता है और वहाँ पे सिवाय बनियों के और कोई नहीं जा सकता है, कि जहाँ चौरासी लाख कुण्डियाँ हैं; क्योंकि समुद्रों में हजारों कोसों में पानी पड़ा हुआ है कि जिस टापू के ऊपर यह बनिये पाप कराते हैं! इससे बनियों के पास

ज्यादा धन है और कुल विलायतों के राजा –बादशाहों के पास थोड़ा धन है, जब यह बनिये राक्षसी पाप से आपस में लडाके मार देते हैं और अकलों को फेर देते हैं और उन्होंको खज़ाने वगैरा याद नहीं रहने देते हैं और टूटा हुआ धन भी याद नहीं रहने देते हैं. सो देखो भाई, पहले तो धन बहुत था और अब थोड़ा किस तरह से रह गया है, सो ऐसी बात तो बनिये सोचने नहीं देते हैं और उल्टा सुझा देते हैं जिससे समझने लगते हैं, कि अब धन हमारे पास हमारे बुजुर्गों से ज्यादा है और जिसके पास थोड़ा है वो भी ऐसा नही समझते हैं, कि हमारे पास थोड़ा क्यों है? कि हमारे बुजुर्गों के पास तो बहुत था, परन्तु यह बनिये अपने राक्षसी पाप से कुछ का कुछ सुझा देते हैं इससे लोग वैसा ही समझने लगते हैं; परन्तु यह ख्याल करने की बात है कि यह सब बनियों की जालसाजी है, क्योंकि धन तो सब विलायतों में बहुत था, कि सोने का ठाट और पाट गिना जाता था. सो

मेरे भाइयों, तुम्हारे पास धन इस कदर था कि जिसका कुछ अंदाज नहीं हो सकता था, लेकिन इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से कुल विलायतों के धन को गारत करके अपने कब्जे में कर लिया है; सो तुम सब विलायतों के लोगों को तो अब भी खबर नहीं है, परन्तु मुझको तो इस सौदागर बच्चों का राक्षसी पाप इस वजह से मालूम हुआ है कि इन बनियों ने मुझको अपने राक्षसी पाप से दुखी किया है कि जिस तरह से रावण ने शनिचर को दुखी किया था, उसी तरह से इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से दुखी किया है, जब इन बनियों का राक्षसी पाप मालूम हुआ है, चुनांचे संसार के लोगों को गारत होते देखके, गारत न होने देने के सबब से संसार को इन बनियों के राक्षसी पाप से तुम तमाम जहान के लोगों को वाकिफ करता हूँ, क्योंकि यह कदीमी जाल इन बनियों का ही है, इससे यह ख्याल होता है कि रावण वगैरा को भी इन बनियों ही ने अपने राक्षसी पाप से मरवाया

होगा, यह बात भी इनके जाल की ही मालूम होती है, क्योंकि " मैं इस भेद से बेखबर नहीं हूँ" परन्तु मुझको इन सौदागर बच्चों ने अपने राक्षसी पाप से दुखी किया है इससे इनका राक्षसी पाप जाहिर होता है, कि खास इनके ही घर का है, बल्कि मैं सबूत इस तरह से देता हूँ कि जिस तरह से यह बनिये राजा –बादशाह के हाथों से अपने जाल को जाहिर न होने के लिए करावेंगे या कराते होंगे; परन्तु असली पाप को अपने कब्जे में रखेंगे और भुलाने के लिए थोड़ा बहुत पाप दूसरों के हाथों से करावेंगे फिर इसी तरह से इन सौदागर बच्चों ने राजा रावण और हरनाकुश और कंस और कारुन वगैरह को थोड़ा बहुत राक्षसी पाप का करना सिखाया होगा, परन्तु असली पाप का करना अपने कब्जे में रखते हैं; फिर यह बात काबिल ख्याल करने के है कि जिन लोगों ने पहले जमाने में राक्षसी पाप चलाया था और उन पाप करने वालों का पाप करना जाहिर हुआ तो

तमाम जहान के लोगों ने उस पाप का जुल्म करने वालों को गारत करके छोड़ाया कि जो जुल्म करने वालों की औलाद को भी जिन्दा नहीं छोड़ा और यह समझा कि जब हम ऐसे बुरे काम करने वालों को मय औलाद के गारत कर देंगे तो जहान में फिर कोई पाप का करने वाला नहीं होगा, तो तमाम जहान को हर तरह से आराम मिलेगा, परन्तु रावण वगैरा की तरह से अब भी राक्षसी पाप हो रहा है कि जिसका बन्दोबस्त न होने के बारे में, मैं पहले कुल जहान में जिक्र कर चुका हूँ और उसका मुझको यह यकीन था कि अब कभी नहीं होगा; क्योंकि पाप करने वालों को मय औलाद के गारत कर दिया है, अगर यह पाप उन्होंका नहीं होता तो यह कभी ऐसा बुरा काम न करते और रावण वगैरा की तरह से गारत होने का अपने दिल में डर रखते, कि पहले पाप करने वालों को गारत किया है; अगर हम लोगों की भी संसार के लोगों को खबर पड़ गई

तो हमारी भी हालत पाप करने के सबब से बुरी करेंगे. सो भाई मेरे, अगर राक्षसी पाप खास इन सौदागरान का नहीं होता तो यह शख्स, मारे दहशत के कभी इस काम को नहीं करते; परन्तु असल में पाप इन्होंका ही है और चौड़े नहीं आने के वास्ते दूसरों को सिखाते हैं और दूसरों की औलाद मारी जाती हैं और आप बचे के बचे रहते हैं. इससे यह बनिये बराबर पाप को करवा रहे हैं क्योंकि, इन्होंने अपने राक्षसी पाप के जादू से तमाम हिन्दुस्तान को गारत कर दिया है और दूसरी बादशाहतों को भी गारत किया चाहते हैं, जिसका हाल मुझको इस वजह से मालुम हुआ है कि मुझको इन सौदागर बच्चों ने अपने राक्षसी पाप से तरह -२ की तकलीफें दी हैं जिससे इन्होंका कुलजाल जाहिर हो गया, जिसको मैं साफ तौर से लिख चुका हूँ. परन्तु हिन्दुस्तान के हिन्दू-मुसलमान तो अब तक इस हाल से न वाकिफ हैं और न अब तक उनको किसी कदर भी ख्याल होता है

और न कहने से यकीन होता है और ऐसी अकल खराब हो गई है कि जैसे शराबी आदमी की अकल खराब हो जाती है और उसको अपने शरीर की खबर नहीं रहती है और न कुछ घर का कारोबार कर सकता है. सो यह राक्षसी पाप के सबब से अक्ल खराब हो गई है कि जिससे बनियों के जाल की पहचान अब कहने से भी कोई साहब नहीं कर सकते हैं और न ख्याल करते हैं; हालांकि सौदागरान के जाल से दिन-२ गारत होते जाते हैं और सौदागरान के शामिल ही सब लोगों ने जनम पाया है, परन्तु सौदागरन के जाल का किसी को भी भेद नहीं है और सौदागरान हिले-मिले रहते हैं परन्तु जाल की पहचान तो भी नहीं करते, जिसकी खास वजह यह है कि इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से तमाम जहान के लोगों की अकल खराब कर दी है इससे संसार के लोगों को भी कुछ खबर नहीं पड़ती है और न किसी किसम का शुभा होता है; हालांकि इन बनियों की दुकानें दूसरी

बादशाहतों में पहुँच गई हैं और पहुँचती जाती हैं, कि जिस तरह से हिन्दुस्तान के लोगों की अकल खराब कर दी हैं, इसी तरह से दूसरी विलायत के लोगों की अकल भी अपने राक्षसी जादू से खराब कर देंगे कि जो तुम लोग भी इनके जालों को नहीं पहचानोगे और न कुछ शुभा करोगे; इसी सबब से मैं तुमको पहले से वाकिफ करता हूं कि इन सौदागर बच्चों के ऐसे -२ बडे जादू हैं कि जिसके जरिए से जिस मुल्क का धन खेंचना चाहते हैं तो उसको अपने राक्षसी पाप के जादू से खेंच के अपने कब्जे में कर लेते हैं, परन्तु पहले उनकी अक्ल फेर लेते हैं जिससे वो अपने मुल्क के धन को भूल जाते हैं परन्तु जिस तरह से कि हिन्दुस्तान के लोगों की अकल खराब करके गारत किए हैं, उसी तरह से कुल विलायतों के लोगों की अकल खराब कर देंगे और मुलकों के लोगों को गारत करके अपना राज करेंगे, क्योंकि जिन लोगों ने इन सौदागर बच्चों के शामिल जनम

पाया है, तो इन्होंके साथ में ही कुछ अशराफत नहीं की तो तुम लोगों के साथ में तो क्या अशराफत करेंगे? बल्कि तुम लोगों को भी गारत करेंगे और अपने राक्षसी पाप का करना नहीं छोड़ेंगे और न बतावेंगे, क्योंकि इन बनियों का दिल इस तरह पर है कि चार कूंट और चौदा भांण में हम अपना राज करेंगे कि जैसा रावण का दिल था. फिर इसी सबब से यह सौदागर बच्चे दरियाओं के ऊपर अपना राक्षसी पाप रावण की तरह से करा रहे हैं और तुम साते-आठो विलायतों के राजा- बादशाहों को और अंग्रेजों को यह सौदागर बच्चे अपने राक्षसी पाप से बर्बाद कर देंगे और अपना जाल जाहिर न होने के लिए यह बनिये कुल विलायतों के लोगों से राक्षसी पाप करावेंगे, परन्तु तुमको रास्ता और कायदा इसका बतावेंगे कि जिससे तुम वैसा ही करने लगोगे; सो इस बात का मुद्दा इन्होंने यह सोचा है कि जब राक्षसी पाप की खबर होगी और दूसरी बादशाहत के

अशराफत = सच्चाई से पेश न आना

लोग करते होंगे तो हमारा जाल प्रगट और मालूम नहीं होगा और अपना जाल समझके कुछ बन्दोबस्त नहीं करेंगे, तो हमारा राक्षसी पाप अच्छी तरह से चलता रहेगा; और जो खबर भी होगी तो उन लोगों का ही नाम होगा और उनके ही बच्चे रावण, हरनाकुश वगैरा की तरह से मारे जावेंगे, इस वजह से पाप का करना थोड़ा-सा दूसरे मुलक के लोगों को भी सिखा देते हैं और कुछ का कुछ सुझा देते हैं, परन्तु यह सौदागर बच्चे आप अलाहदा के अलाहदा रह जावेंगे और अपने राक्षसी पाप की खबर नहीं पड़ने देंगे, क्योंकि असली पाप को अपने कब्जे मे रखते हैं सो वो किसी को नही बताते हैं और न सिखाते हैं लेकिन सौदागर बच्चों के जाल की खबर मुझको तो इस तरह से पड़ी है कि इन सौदागर बच्चों ने मुझको अपने राक्षसी पाप से दुखी किया है, इससे मेरे तमाम जहान के बच्चों को आराम हासिल होने के लिये सातो-आठो विलायतों के लोगों से हाथ जोड़ के

अर्ज है कि जो किताबें हिन्दू-मुसलमानों के घरों में हैं और उनमें यह हालत लिखी हुई हैं कि 'आदमी को मारके आदमी खावेगा,' वो किताबें इन बनियों के घर की हैं, परन्तु इन बनियों ने अपनी अकलमंदी से हिन्दू-मुसलमान के बुजुर्गो के नाम और अतीत फकीरों के नाम उन किताबों में लिख दिए हैं जिससे मानते हैं, और यह नहीं समझते हैं कि यह बनिये महाजनान के घर का जाल है और हिन्दुस्तान इनके जालों से गारत हो गई है इसी तरह से सातो-आठो विलायतों को गारत करेंगे, इससे मुझको बड़ा सोच है कि अभी आप सातो-आठो विलायतों के लोगों को इन बनियों के जाल की बिलकुल खबर नहीं है, सो मैं तुम सातो-आठो विलायतों के लोगों को वाकिफ करता हूँ कि दुनिया में यह जितनी खराबियाँ और कम उमर में जो मौत हो जाती है, यह सब बनियों के राक्षसी पाप से होती हैं क्योंकि हिन्दुस्तान तो इसी सबब से खराब हो चुकी है और रही सही है उसको

अब गारत कर देंगे इससे मैं तुम लोगों को वाकिफ करता हूँ और कहता हूँ कि समझो और इनके लालच देने में मत आओ बल्कि इन्होंके जाल दफे करने का बन्दोबस्त दिल से करो, ताकि इन सौदागर बच्चों के जाल से हमको और तुम साततो –आठो विलायतों के लोगों को सुख प्राप्त हासिल होवे; अगरचे जाल के दफे करने का बन्दोबस्त नहीं हुआ, तो यह सौदागर बच्चे सातो–आठो विलायतों के लोगों को अपने राक्षसी पाप से गारत करेंगे कि जैसा किताबों में लिखा है और बाद गारत होने, सातो–आठो विलायतों के यह सौदागर बच्चे अपना राज करेंगे इस वजह से इन्होंने यह राक्षसी पाप चलाया है, सो सातो–आठो विलायतों के लोग और अंग्रेज वगैरा अपनी –२ औलाद बचने के लिए इन सौदागर बच्चों से राक्षसी पाप का करना छोड़ाओ, जब तुम्हारी औलाद बचेगी; क्योंकि यह जाल तुम्हारी ही औलाद से छूटेगा और इसका बन्दोबस्त होगा, जबही

हिन्दुस्तान के लोग भी इन बनियों के जालों से छुटकारा पावेंगे, वरना कोई उम्मीद नहीं है जो बचें क्योंकि इन्होंने तमाम राजा -बादशाहों की अकल कैद कर दी है कि जो समझाने से भी नहीं समझते हैं और जो कि साते-आठो विलायतों के लोगों की अक्ल खराब कर दी है, जिसकी वजह यह है कि यह सौदागर बच्चे चार कूंट में और चौदा भांण में अपना राज किया चाहते हैं. इससे तुम सातो -आठो विलायतों के लोगों की अक्ल भी कैद कर दी है कि जो चाँदी-सोने की खानों की तलाश नहीं करते, कि पहले जमाने में चाँदी -सोने की खानें जो थी वो कहाँ गई? क्योंकि जमीन तो वो की वहीं है, परन्तु खानें कहाँ गायब हो गई? कि जो अब नहीं हैं परन्तु तलाश तो करें; सो तलाश तो कोई भी साहब किसी मुलक के नहीं करते हैं और ना यह ख्याल करते हैं कि वोह खाने क्यों और किस वजह से अलोप हो गई हैं? सो यह बड़ी भारी गफलत तुम सातो-आठो

विलायतों के लोगों की हैं, कि जो तुम तलाश नहीं करते हो. सो तुम लोग भी खानों की तलाश इस वजह से नहीं करते हो कि तुम लोगों की अकल इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से फेर दी हैं, कि जो खानों की तलाश करने की तरफ तुम लोगों का दिल नहीं होता है बल्कि ऐसा ख्याल करते हो कि खानें कदीम से मौजूद नहीं थी; सो भाई मेरे, यह खानें चाँदी-सोने की कदीम से हर एक मुलक में और विलायतों में मौजूद थी कि जिसको जमीन के शरीर की चरबी कहना चाहिए, परन्तु जैसे कि यह बनिये जमीन माता के नाम का पाप कराते हैं जबसे जमीन के शरीर की चरबी गल गई है; इससे जमीन माता निहायत दरजे का दुख पा रही हैं कि जमीन पर अच्छी तरह से अनाज वगैरा नहीं होता है और काल वगैरा पड़ता है. सो यह सब जादू का खेल है और जो बरसात अच्छी तरह से होवे तो जमीन को सरद-गऱम की बीमारी कर देते हैं

कि जिसकी वजह से जमीन को 'बदहजमी' का रोग होकर दिन-२ जमीन माता ना ताकत होती जाती है, फिर इसी सबब से जमीन पर कोई-सी चीज खाने की नहीं होती है मिसाल इस तरह पर है, कि जब कोई आदमी को बीमारी किसी किसम की हो जाती है तो वो शख्स कुछ खाना वगैरा नहीं खा सकता है और न काम कर सकता है; अगरचे उसने खाना खाया भी होवे तो वो बदहजमी के सबब से वो बीमार आदमी कैसी मुसीबत उठाता है और सब कामों से निकम्मा हो जाता है. फिर इसी तरह से यह जमीन माता भी तरह-२ की बिमारियाँ पा रही है जिससे कोई चीज जमीन पर पैदा नहीं होती है और जबकि यह सौदागर बच्चे जमीन के नाम का पाप ज्यादा करावेंगे जब जमीन के ऊपर कुछ भी पैदा नहीं होगा, तो फिर कहाँ से कुल विलायतों के लोग खाने-पीने का गुजर करेंगे? फिर न मौजूद होने, अनाज वगैरा के सबब से आदमी को मार के आदमी खावेगा;

और जो कि किताबें बनियों की बनाई हुई हैं और उनमें यह बातें लिखी हुई हैं कि जिनका नाम (औतारचरीत्र) वगैरा है, परन्तु इन किताबों में इन सौदागर लोगों ने अपनी अकलमंदी से राक्षसी पाप जाहिर न होने के सबब से अगले सती लोगों का नाम, रावण वगैरा की तरह से लिख दिए हैं और रावण वगैरा ही की तरह से यह बनिये छल कर रहे हैं, कि जैसे रावण ने राक्षसी वेद की किताबें अपना जाल फैलाने की गर्ज से ऋषिश्वरों को पकडा दी थी और नाम भी किताबों में ऋषिश्वरों के बुजुर्गों के लिख दिए थे, फिर उसी तरह से इन सौदागर बच्चों ने भी अपना जाल फैलाने के गर्ज से और आप तरक्की पाके राज करने के लिये राक्षसी वेद की किताबें और टीपना वगैरा ब्राह्मणों को, और राजा -बादशाहों को और तमाम जहान के लोगों को बाद मरने राजाबल के किताबों में बुजुर्गों के नाम लिखकर रावण की तरह से दे दी हैं; जिससे तमाम जहान के लोग उन किताबों को

अपनी जानके अपने काम में ला रहे हैं लेकिन यह नहीं समझते हैं कि यह किताबें सौदागरान की हैं और नाम जो किताबों में हमारे बुजुर्गो का लिखा है, सो रावण की तरह से छल करके लिख दिया है; परन्तु यह किताबें इस गर्ज से पकड़ा दी हैं कि हमारा जाल प्रगट नहीं होगा, क्योंकि यह सौदागर लोग संसार के गारत करने के सबब से राक्षसी पाप करा रहे हैं और जो कि किताब औतार चरित्र वगैरा की हैं, उसमें लिखा हुआ है कि ''अब ऐसा जमाना तंग दिन-२ आवेगा कि जो मैं बार-२ नहीं लिख सकता हूँ, क्योंकि उन किताबों के देखने से और पढ़ने से ऐसा रंज होता है कि उस जमाने को न देखने के लिए जहर खा लूँ'' क्योंकि संसार समझाने से भी नहीं समझता है, हालांकि संसार इस बात को अच्छी तरह से जानता है कि अब जमाना खराब है और खराब ही आता-जाता है और बदकारी का हाल भी आपस में बहन-भाई के सुना जाता है, परन्तु अब तक ख्याल नहीं होता,

हालांकि मैं चाहता हूँ कि सब राजा -बादशाह और संसार के लोग एक दिल होके मेरा कहना माने और हर तरह की मदद से इस बारे में कोशिश करें तो फौरन यह राक्षसी पाप इन सौदागरान का छूट जावे, तो फिर कोई कम उमर में न मरने पावे कि जैसा सौदागर लोगों के जादू से हो रहा है, कि जिसको संसार के लोग अच्छी तरह से जानते हैं और फिर भी तकलीफ उठाते हैं और फिर इन किताबों की लिखी हुई बातों को परमेश्वर की कुदरत बयान करते हैं और उसको दुरस्त जानते हैं कि जो किताबों में बुरा होने की आग में लिखी हुई हैं वैसा ही पाप करा -२ के बुरा कराते जाते हैं, जिससे यह किताबें सच्ची हो जाती हैं वैसा ही बुरा होता जाता है; सो भाई मेरे हो, यह तुम्हारे समझ की बात है कि जिन किताबों में बुरा होने का हाल लिखा हुआ है उन किताबों को ही तुम मानते हो, परन्तु वो किताबें परमेश्वर की बनाई हुई नहीं हैं, वो तो सौदागर बच्चों की बनाई हुई और चलाई हुई हैं, परन्तु

तुम हिन्दू-मुसलमान के नाम से और तुम्हारे बुजुर्गों के नाम से लिख करके पकड़ा दी हैं, जिसकी वजह यह है कि जो कोई इन किताबों का हाल दरियाफ्त करेगा तो इस हिकमत से हम सौदागर बच्चों का नाम नहीं लगेगा और तमाम जहान के लोगों का नाम होगा. सो देखो भाई, जो किताबों में आगम लिखी हुई हैं सो उन लिखी हुई अगमों से तो कुछ नहीं होता, परन्तु यह बनिये दरियाओं पार की जहाँ चौरासी लाख कुण्डियाँ राध लहू की बनाई हैं और तमाम जहान के लोग उसको स्वर्ग-नर्क कहते हैं, कि वहाँ पे स्वर्ग है; सो वहाँ पर स्वर्ग है न नर्क है और जो है तो जमीन माता ही है, जिसको कि तुम लोग जानते हो वो बनियों के घर का राक्षसी पाप है, इससे संसार में बुरा होता है और वो आगम की बात किताबों की सच्ची हो जाती है और जैसा कि किताब औतार चरित्र में लिखा है कि बहुत ही बुरा वक्त आवेगा, सो जब यह बनिये बहुत बुरा होने का और बहुत बुरा वक्त आने का

पाप करावेंगे, तो वैसा ही हो जावेगा कि जैसा किताब औतारचरित्र वगैरा में लिखा है और अब जो मैं तमाम जहान के लोगों को इनके जालों से साफ तौर से वाकिफ करता हूँ तो कुछ ख्याल में नहीं लाते हैं और बनियों के जाल को झूठा जानते हैं और आगमों को सच्चा जानते हैं और कहते हैं, कि यह आगमें हमारे बुजुर्गो की भाखी हुई हैं; सो यह अकल का सबब है, क्योंकि इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से तमाम जहान के लोगों की अकल ऐसी कैद कर दी है कि जिससे वो जाल की किताबों को अपनी जानते हैं; सो मेरे भाईयों, तुम्हारी नहीं हैं, यह तो बनियों के घर की हैं और अपना नाम जाहिर न होने के लिए तुम्हारे बुजुर्गो का नाम रावण की तरह से छल करके किताबों में लिख दिए हैं, कि जिस तरह से रावण ने ऋषिश्वरों के नाम लिख दिए थे, जिससे ऋषिश्वर लोग उन किताबों को अपनी जानते थे, फिर उसी तरह से इन सौदागर बच्चों ने भी हिन्दू-मुसलमानों के बुजुर्गो के नाम किताबों में

लिखके पकड़ा दी हैं. सो यह किताबें जाली इन सौदागरान की हैं, सो उन किताबों को अपनी मत जानो और न इन्होंको पढ़ो, बल्कि इन किताबों से परहेज करके अलाहदा रहो और जिसके पास देखो उसको समझाओ, तो इन सौदागरान का राक्षसी पाप जल्द दफे होवे तो संसार के लोगों को आराम मिले. अब ऐ अंगेज लोगों, मैं तुमको हाथ जोड़कर अर्ज करता हूँ सो सच-२ मानो, क्योंकि मेरे नजदीक तो तुम सातो-आठो विलायतों के राजा -बादशाह एक हो और माँ-बाप के मुवाफिक हो, इसी तरह से हिन्दुस्तान के राजा -बादशाह वगैरा भी माँ-बाप के मुवाफिक हो, परन्तु जो कि मैं आप लोगों की खिदमत में अर्ज करता हूँ कि कदीमी जाल हिन्दुस्तान के महाजनान का है; परन्तु यह सौदागर लोग जाहिरात में नहीं आते हैं और राक्षसी पाप करते रहते हैं, क्योंकि पहले इन सौदागर बच्चों ने रावण, हरनाकुश, कंश, कारुन वगैरा और पृथ्वीराज चौहान वगैरा को थोड़ा-सा

पाप सिखा करके यह कह दिया था कि तुम राक्षसी पाप करते रहना, जब तुम चार कूंट और चौदा भांण में राज करोगे. सो यह बनिये थोड़ा सा राक्षसी पाप का करना सिखा देते हैं, परन्तु असली पाप को अपने कब्जे में रखते हैं, तो वो यह जानते हैं कि राक्षसी पाप हमारे घर का है और बनियों का नहीं है, ऐसा ख्याल करने लगते हैं और जाल ही जाल में रावण, हरनाकुश, कंश, कारुन और पृथ्वीराज चौहान वगैरा मारे गये और सौदागर बच्चे अलाहदा के अलाहदा रहे; परन्तु अब इस बात को सोचना चाहिए और समझना चाहिए कि जिन लोगों ने इन सौदागर महाजनान के शामिल ही जन्म पाया है तो उन लोगों को बिलकुल इनके राक्षसी पाप की खबर नहीं पड़ी, बल्कि जान से वो लोग मारे गए और जिन लोगों को सौदागरान ने थोड़ा-सा राक्षसी पाप का करना सिखाया था जिनका नाम अब तक दुनिया में बुराई के साथ मशहूर है, परन्तु यह

सौदागर लोग चिंगारी छोड़के आप अलाहदा हो जाते हैं और दूसरे आपस में लड़ करके गारत हो जाते हैं, परन्तु कदीमी पाप के करने वाले अब तक सती लोग और धर्मात्मा लोग कहला रहे हैं; परन्तु इनके जालों की खबर अब तक किसी को नहीं है और न पड़ेगी इसी तरह सैकड़ों आदमी इन बनियों के जालों से भूल ही भूल में मारे गए और इसी तरीके और 'तदबीर' से यह सौदागर लोग असली पाप कर रहे हैं और बराबर चला रहे हैं कि जिसकी खबर किसी को भी नहीं है और न किसी को राक्षसी पाप की तरफ से शुभा होता है, अब कि यह सौदागर रावण वगैरा की तरह से सातो-आठो विलायतों के लोगों की बुद्धि भ्रष्ट करके भुलावेंगे कि जो भूल की वजह से कुछ ख्याल नहीं करेंगे फिर मैं सातों-आठों विलायतों को और हिन्दू-मुसलमानों के लोगों को मय तुम अंग्रेजों के पहले से वाकिफ करता हूँ कि इन बनियों का वही जाल है कि जिस,

जाल से इन्होंने सैकड़ों लोग हिन्दुस्तान में गारत किए हैं, फिर उसी तरह से अब सातो–आठो विलायतों को मय तुम अंग्रेजों के गारत करेंगे और तुमको भी रावण, हरनाकुश वगैरा की तरह से थोड़ा बहुत राक्षसी पाप का करना सिखावेंगे, लेकिन असली पाप का करना तुमको भी नहीं बतावेंगे और यह भी अजब नहीं है कि तुम अंग्रेजों को राक्षसी पाप का करना रावण की तरह से सिखा दिया हो या न सिखाया हो, क्योंकि बनिये लोग यह कहते हैं कि अंग्रेज लोग राक्षस हैं और यही राक्षसी पाप कराते हैं जिससे बारिश वगैरा कम होती है और इसी से अकल वगैरा कैद हो रही है और इसी पाप की वजह से रोग चाले फैले हुए हैं; क्योंकि बनिये असली पाप तो आप करते हैं और भुलाने के लिए और राज करने का लालच बताके दूसरों से राक्षसी पाप करा देते हैं, जिससे वो रावण की तरह से राक्षसी पाप को करने लगते हैं और कर रहे हैं; परन्तु यह मालूम नहीं कि किस तरह का

सिखाते हैं? कि जिसका हाल मैं अपनी जबान से कुछ नहीं लिखा सकता, क्योंकि इन सौदागर बच्चों की करतूतों का कुछ अंदाज नहीं है क्योंकि तरह -२ के हैं, जबकि जाल का करना सिखाते हैं कि तुम भी राक्षसी पाप का करना सीखो और स्वर्ग बनाओ, जब लालच में आके वो भी भूल जाते हैं और राक्षसी पाप का स्वर्ग बनाते हैं और कहते हैं कि राक्षसी पाप का स्वर्ग हमारा है. सो पाप का करना थोड़ा बहुत लालच में आके सीख लेते हैं और यह जानते हैं कि हमारा राक्षसी पाप है, परन्तु यह नहीं सोचते कि हमको भुलाया है, क्योंकि यह बनिये असली पाप को अपने कब्जे में रखते हैं कि जिसकी खबर अगले सती लोगों को भी नहीं पड़ी बल्कि जाल में मारे गए कि जैसे रावण, हरनाकुश वगैरा भूल ही भूल में आके यह जानते थे कि हमारा राक्षसी पाप है और इसी वजह से मारे गए, कि जो राक्षसी पाप चार कूंट और चौदा भांण में मशहूर है कि जो देवता स्वरुपी लोगों की बुद्धि

खराब कर दी थी कि जो उन भक्त लोगों को कुछ भी नहीं सूझता था, कि जो गारत होने के वक्त तक रावण, हरनाकुश वगैरह यह जानते थे कि हमने राक्षसी पाप का स्वर्ग बनाया है, सो वो लालच में आके भूल ही भूल में मारे गए और बनिये अलाहदा के अलाहदा रहे, कि जिनका कदीमी पाप है. सो देखो भाई, कि जिनको पाप का करना सिखाया था उनको अपने हाथों से मरवाया कि जिनका नाम दुनिया में अब तक, साथ बदी के मशहूर है, कि जो इन बनियों के कहने में आके अपनी औलाद को अपने शामिल ही गारत कराया बल्कि इन कदीमी पाप करने वालों के शामिल ही जनम पाया था, परन्तु इन बनियों के जालों का भेद तो उनको भी नहीं मिला तो तुमको इनके जालों की क्या खबर? क्योंकि तुमको भी और भुलावेंगे; जब तक तुम अंग्रेज भी यह जानोगे कि हम चार कूंट और चौदा भांण में राज करेंगे और तुमसे भी रावण, हरनाकुश वगैरह की तरह से राक्षसी पाप का स्वर्ग-नर्क

भुलाके बनाव देंगे और तुमसे बनवाया भी होगा, अगरचे नहीं बनवाया होगा तो अब बनवा देंगे; जब तुम भी भूल जाओगे, परन्तु ऐसी बात तो तुम लोग भी नहीं सोचते हो कि राक्षसी पाप से बुद्धि तीन लोक की खराब हो जाती है, परन्तु तीन लोक संसार में आदमियों को बोलते हैं और कहते हैं परन्तु इतनी बात तो तुम लोग भी नहीं सोचते हो कि हमारी अकल तो राक्षसी पाप से खराब कर दी है; क्योंकि पहले बहुत से राजा –बादशाह इसी जाल मे मारे गए परन्तु जाल नहीं छूटा, लेकिन यह बात सोचना चाहिए कि जाल तो सौदागर महाजनान का है कि इन्होंने अगले सती लोगों को मरवाया और तुम अंग्रेजों को भी मरवा देंगे, परन्तु इस बात को तुम अंग्रेज भी बुद्धि कैद होने के सबब से नहीं सोचते हो कि हमको भी मरवा देंगे, क्योंकि आप लोग तो परदेशी हो, इससे आप लोगों को इन बनियों के गली –कूंचों का रास्ता मालूम नहीं, सो जबकि इन बनियों ने देशी लोगों को ही अपने

राक्षसी पाप से मरवा दिया और उनको पता नहीं लगा तो तुमको इनके जालों का पता किस तरह से लगेगा? बलके तुमको भी अपने राक्षसी पाप से भूल ही भूल में रावण, हरनाकुश की तरह से मरवा देंगे और जबकि हिन्दुस्तान में और सब विलायतों में थोड़े-से आदमी रहेंगे जब यह सौदागर बच्चे अपना राज करेंगे इससे मेरी अर्ज यह है कि अब सातो-आठो विलायतों के लोग और अंग्रेज वगैरह इन बनियों के जालों को दूर कराओगे और "तुम्हारे बंदोबस्त से और इकबाल से हिन्दुस्तान के बाल-बच्चे बचेंगे, वरना उम्मीद बचने की नहीं है", क्योंकि अपने हाथों से तो नहीं मारते परन्तु दूसरे लोगों को सिखाके उनके हाथों से मरवा देते हैं तो पहले उनको राज करने का लोभ बताते हैं, जब वो भी भूल जाते हैं और उनको पीढ़ी दो पीढ़ी या दस पीढ़ी राज कराना मंजूर होता है तो उनको राज करा देते हैं इससे वो भूल जाते हैं और लालच में आ जाते हैं तो उनको

दगा करके दूसरी विलायतों के लोगों से मरवा देते हैं और दूसरों को राज करा देते हैं, परन्तु जिनको कि राज करा देते हैं वोह बहुत खुश होते हैं और जिनको कि गारत करा देते हैं तो फिर उनको और उनकी औलाद को ऐसा खराब कर देते हैं कि जो रोटी –कपड़ा भी नहीं मिलता है; परन्तु अब जो मैंने सौदागर लोगों की बात प्रगट की है तो अब यह बनिये तुमको भुलाके राक्षसी पाप तुम्हारे हाथों से करावेंगे और जबके सातो–आठो विलायतों को इसी तरह से खराब कर देंगे जब अपना राज करेंगे. इससे तुम लोगों को अपने बच्चों की तरफ ख्याल करके इन बनियों बेईमानों के कहने से इस राक्षसी पाप को नहीं करना चाहिए और इन्होंका राक्षसी पाप दफे कराओ, क्योंकि जब सब विलायतों में कम आदमी रहेंगे तो फिर तुम्हारे बच्चों को इनके राक्षसी पाप से कौन छुड़ावेगा? इस वजह से इन्होंका जाल अभी दफे कराओ, क्योंकि जो लाख पीढ़ी तक औलाद अपनी ही राक्षसी पाप से गारत होती है;

और जब तक औलाद सलामत है जब तक तुम लोगों का नाम भी अमर है और अमर ही हो और जो कि औलाद है वोह अमर बीज है और जब तक कि जमीन–आसमान है जब तक तो आदमी बंदा की औलाद अमर है, परन्तु जबसे कि काफिर विद्या का जाल चला है जबसे बे–औलाद रह जाते हैं और कच्ची उमर में मर जाते हैं. सो यह जादू का सबब है और अब जो जमीन के पेट में सांप, बिच्छू, टिड़ वगैरा पैदा हो जाते हैं, सो यह रोग चाले से होते हैं कि जमीन को फाड़के पोली कर देते हैं; सो यह बात इस तरह से है कि जैसे आदमी के पेट में रोग चाले की वजह से हजारों तरह के कीड़े पड़ जाते हैं और दुःख देते हैं, सो इस तरह के जो जीव हैं, यह सब रोग चाले के हैं. और अलावा इसके दरखतों में जो कीड़े लग जाते हैं और अनाज में सीड़ियाँ पड़ जाती हैं, यह सब राक्षसी पाप की वजह से है और इसीसे होते हैं. और जो कि टीपणों में इन्होंका हाल लिखा हुआ होता है, सो ब्राह्मण लोग

बांच-२ के सुनाते फिरते हैं और जो कि ऊँट, घोड़ा, गाये, बैल और कुल चौपाया और पंखेरु वगैरा हैं या आदमी हैं यह सब परमेश्वर के बनाए हुए हैं; सो यह किसी को किसी तरह की तकलीफ नहीं दे सकते हैं, क्योंकि पहले शेर और बकरी शामिल चरती थी और रहती थी और अब जो किसी में हेत इरादा नहीं है, जिसकी वजह यह है कि इन सौदागर बच्चों ने कुल संसार की और चौपायों और पंखेरु वगैरा की अकल अपने राक्षसी पाप से ऐसी फेर दी है कि जो किसी को, किसी की दया और भाव नहीं है और न हेत महोब्बत बगैरा है. इससे मैं आप लोगों को, आपकी औलाद को आराम प्राप्त होने के लिए इन सौदागर महाजनान के जादू से वाकिफ करता हूँ और कहता हूँ कि मेरे इस कहने पर यकीन लाके और सच जानकर इन्होंका राक्षसी पाप छोड़ाओ, तो तुम्हारी औलाद सुख पावे और तुम्हारे छोड़ाने से दूसरी विलायत के लोग भी बच जावेंगे; क्योंकि इनका बंदोबस्त आप लोगों की

सीडिया = कीडे, जीव, जन्तु

कोशिश से ही हो सकता है, बल्कि यह बनिये लोग तो सातो-आठो विलायतों के लोगों के और तुम अंग्रेजों के चोर हैं, क्योंकि जिस राजा- बादशाह ने किसी शख्स को राज कराया होवे तो वोह राज तो अमर है और वोह भी राज के कराने वाले पंच हैं. सो भाई मेरे हो, पंच और परमेश्वर तो एक है परन्तु जिसको की राज दिया जाता है तो उसको सिर्फ नेकी की वजह से देते हैं और पंच और परमेश्वर अपने नजदीक और गरीब-गुरबा के नजदीक एक है, क्योंकि वोह सबको एक ही जानते हैं और हक-ब-हक इन्साफ करते हैं इससे पंच और परमेश्वर बराबर है; इससे पंचों का दिया हुआ राज किसी तरह से नहीं जाता है और अमर रहता है, परन्तु इन बनियों बेईमानों ने ऐसा जाल चलाया है कि दूसरे लोगों को बदनामी देने के लिए और उनके बच्चों को बदनामी देने के लिए दूसरों के हाथों से मरवाते हैं और सौदागर बच्चे खुद अलेहदा के अलेहदा रह जाते हैं; परन्तु जिस तरह से कि

रावण, हरनाकुश वगैरा ने राक्षसी पाप से संसार के लोगों की अकल कैद कर दी थी जिस पर रावण, हरनाकुश वगैरा संसार के नजदीक नेकी वाले और धर्मात्मा मालूम होते थे, फिर उसी तरह से इन सौदागर बच्चों ने भी जादू के जुलम से तमाम जहान के लोगों की अकल ऐसी फेर दी है कि जिससे अब भी तमाम जहान के लोगों को यह सौदागर लोग भी मिसाल रावण वगैरा के धर्मात्मा मालूम होते हैं, क्योंकि "यह सौदागर बच्चे तमाम जहान को दिखाने के लिए और राक्षसी पाप प्रगट न होने के लिए जानवरों पर भी रक्षा करते हैं और धर्म पुण्य करते हैं," परन्तु जो कि यह सौदागर लोग दरियावों के ऊपर गुप्ती पाप करा रहे हैं कि जिसको दुनिया अपने मुँह से स्वर्ग-नर्क बोलती है, कि जहाँ चौरासी लाख कुण्डियाँ बनाई हैं और संसार में भी यह बात कहते हैं कि वहाँ पर राध लहू की कुण्डियाँ हैं. सो भाई मेरे, वहाँ पर तो कोई स्वर्ग है न नर्क है परन्तु इन सौदागर महाजनान ने कि जो

चौरासी लाख कुण्डियाँ रावण, हरनाकुश के मुवाफिक बनाई हैं, सो उन कुण्डियों के ऊपर तमाम दुनिया के नामका पाप कराते हैं जिससे दुनिया में बुरा होता है; सो यह सौदागर महाजन अपने कदीमी पाप को अपने कब्जे में रखते हैं और दूसरी जात के राजा - बादशाहों को थोड़ा-सा पाप करना सिखा देते हैं, जिससे वोह भूलकर यह जानने लगते हैं कि हमने राक्षसी पाप का स्वर्ग बनाया है, परन्तु यह ख्याल नहीं करते हैं कि हमारा राक्षसी पाप नहीं है, क्योंकि यह तो किसी ने हमको करके सिखा दिया है और खास महाजनान का मतलब यह है कि हम जाहिर न होवें और हमारे बच्चे न मारे जावें और दूसरों के बच्चे मारे जावें, यहीं मतलब दूसरों के सिखाने का है सो इस बात का तो ख्याल बिल्कुल नहीं करते हैं; हालांकि इस जाल ही जाल में आठ-नौ, राजा -बादशाह, हिन्दू-मुसलमानों के कौम के मारे गए, कि जिन्होंको इन सौदागर महाजनान ने थोड़ा-सा राक्षसी पाप का करना

सिखा दिया था, परन्तु यह खबर नहीं थी कि यह सौदागर लोग बुद्धि फेरके सिखा देते हैं या किसी तरह से कि जिसका पता तक नहीं लगता, क्योंकि आठ-नौ राजा हिन्दू-मुसलमान के कौम के मारे गए, परन्तु जाल का करना बंद नहीं हुआ कि जिसकी बदनामी भी उन्हीं बादशाहों के सर पे रही कि जो जाल करने के सबब से रावण वगैरा मारे गए, तो भी जाल का चलना बंद नहीं हुआ, तो यह बात काबिल ख्याल करने के है, कि जब जाल के करने वालों को गारत कर दिया तो फिर जाल का चलना क्यों कर रहा, जिसकी वजह यह है कि कदीमी जाल के करने वाले नहीं मारे गए और जिनको कि इन सौदागरान ने थोडा सा राक्षसी पाप सिखाया था वो जाल के सबब से गारत हो गए. सो खास वजह इस जाल की यह है कि कदीमी जाल इन बनियों का ही है, इससे जाल का करना बंद नहीं हुआ और पीढ़ी, दो पीढ़ी के बाद चला दिया; फिर उसी तरह से अब तक चला जाता है,

परन्तु कदीमी जाल करने वालों को अब तक किसी ने नहीं जाना, परन्तु अब मुझको इन सौदागरान ने अपने राक्षसी पाप से दुःखी किया है जिससे साफ-२ जाहिर होता है कि राक्षसी पाप रावण का नहीं था, क्योंकि यह कदीमी जाल इन बनियों का है और इन सौदागर बच्चों ने ही रावण वगैरा को छल करके, थोड़ा-सा राक्षसी पाप का करना सिखा दिया था इससे रावण वगैरा इन सौदागर बच्चों के जाल में आके राक्षसी पाप को करने लगे. इससे रावण वगैरा मारे गए, क्योंकि रावण वगैरा को थोड़ा-सा पाप का करना बुद्धि फेर के सिखा दिया था जिससे रावण वगैरा भूल के राक्षसी पाप को करते रहे, इससे रावण वगैरा थोड़ा-सा पाप का करना सीखके और अपने सर संसार के लोगों की बुराई लेके राक्षसी पाप करने से मारे गए. सो अब तुम सब विलायतों के राजा -बादशाहों को इन सौदागर बच्चों के कदीमी पाप से वाकिफ करता हूँ कि यह सौदागर बच्चे अपने

कदीमी जाल से रावण वगैरा की तरह से सातो - आठो विलायतों के लोगों को और तुम अंग्रेजों को थोड़ा-सा पाप का करना सिखावेंगे और बाद गारत होने के अपना राज करेंगे और रावण वगैरा की तरह से सातो-आठो विलायतों के लोगों को बदनामी देंगे; इससे तुम संसार के लोगों, इन सौदागर बच्चों का कदीमी जाल जानके छोड़ाओ ताकि संसार में भला होवे, क्योंकि कदीमी जाल इन सौदागरान का ही है, क्योंकि इन्होंने कदीमी जाल को छोडा नहीं और सच-२ दुनियाँ को बताते नहीं, क्योंकि गुप्ती पाप करते हैं जिसको अपनी जात के आदमियों के हाथ से कराते हैं; सो इनके वोह नौकर हैं, क्योंकि 'समुद्र हजारों कोसों में पड़ा है, नहीं मालूम कि कौन से टापू पे कराते हैं क्योंकि धरती का पेट चौड़ा है' और इन बनियों का गुप्ती पाप यह है कि जिसको तुम हिन्दू-मुसलमान स्वर्ग-नर्क कहते हो और राध लहू की कुण्डियाँ बोलते हो, वो सौदागर बच्चों के घर का

राक्षसी पाप है और इसी पाप से बुद्धि फेर देते हैं, इससे कुछ पता नहीं लगता है; क्योंकि बुद्धि राक्षसी पाप के जोर से इन सौदागर बच्चों के बस में करी हुई है और जो कि "किसी का जहाज वगैरह जावे तो उसको अपने राक्षसी पाप से जाने भी नहीं देते हैं, क्योंकि जमीन के पेट में बाएे गोले का दर्द कर देवें, तो जहाज उस चक्कर में आके डूब जावे तो फिर उनका पता किस तरह से लगे" और जो कि "समुद्र में भँवर पड़ता है और चढ़ाई करता है तो उसकी मिसाल ऐसी है कि जैसे आदमी की ओझड़ी में रोग की वजह से गड़बड़ाहट होता है" फिर उसी तरह से समुद्र को राक्षसी पाप का रोग नहीं किया होवे तो वो भी सीधा ही पड़ा रहे और भँवर वगैरह नहीं पड़े और ना चढ़ाई वगैरह करें, परन्तु यह बनिये रात-दिन जमीन माता के नाम का पाप कराते रहते हैं इससे भुंवर और आहार वगैरह हिलता रहता है और संसार के लोगों की और राजा -बादशाहों की ऐसी बुद्धि

कैद करदी है और पहले जमाने में हमेशा सूरज चन्द्रमा अपने-२ कायदे मोजिब उगते थे कि जब दिन निकलता था जब तो सूरज उगता था और जब दिन छुपता था तो चन्द्रमा उगता था, जैसा कि पूनम का उगता है उसी तरह से सदा उगता था. सो संसार में कहते हैं कि सतजग में चन्द्रमा सदा पूरा उगता था, सो जब से चन्द्रमा के नाम का पाप कराना शुरु किया है तो वदी एकम से चन्द्रमा के नामका पाप करना शुरु करते हैं तो अमावस तक पन्द्रह दिन पाप इस तरह से कराते हैं, कि वदी एकम को तो थोड़ा पाप करके चन्द्रमा को थोड़ा-सा घटाते हैं, फिर दूज से ज्यादा तीज को पाप कराते हैं, जब चंद्रमा और ज्यादा घटता है फिर तीज से ज्यादा चौथ को पाप कराते हैं जब चंद्रमा और ज्यादा घटता है और चौथ से पांचम को ज्यादा पाप कराते हैं तो और ज्यादा घटता है इसी तरह से वदी पुख में

पन्द्रह दिन तक याने अमावस तक दिन-२ ज्यादा चन्द्रमा के नाम का पाप कराते हैं तो अमावश को इस कदर पाप चन्द्रमा के नामका कराते हैं कि बिलकुल नहीं उगता है और चन्द्रमा घटते-घटते अमावश तक अंधेरी रात साफ हो जाती है और फिर एकम से पाप करना थोड़ा-थोड़ा छोड़ते जाते हैं, तो फिर चन्द्रमा बढ़ता जाता है तो सुदी एकम को थोड़ा पाप छोड़ते हैं तो चंद्रमा थोड़ा-सा बढ़ता है और दूज से पाप ज्यादा छोड़ते हैं तो दिखने लगता है और इसी तरह से दिन-दिन पाप कम करते जाते हैं, तो दिन-दिन चन्द्रमा बढ़ता जाता है, तो पूनम तक चन्द्रमा पूरा होता है तो पूनम को चन्द्रमा के नाम का पाप बिलकुल छोड़ देते हैं जब पूरी ज्योत चन्द्रमा की होती है और जो उसमें भी ग्रहण वगैरा डाल देवें, तो आधा पाप करावें तो आधा चन्द्रमा घटता है और ज्यादा पाप करावें तो ज्यादा कम दिखता है. सो यह रोग ऐसा है कि जैसे आदमी को ''आधासीसी'' का

मोजिब = जियम से/अपनी -२ रीत से

रोग होता है और सर दुखता है, इसी तरह से जमीन माता को यह आधा सीसी का रोग जादू से किया है, कि चन्द्रमा को घटाते हैं; सो यह रोग आधासीसी का बारह महीना रखते हैं एक फक्त पूनम के दिन नहीं कराते हैं, सो पूरा उगता है और दुनिया में किस्सा पहले से इस तरह से संसार में चला दिए हैं कि ''अन्धेरी रात चोरों ने माँगी है और सास की बहू ने माँगी है'' सो अनेक किस्सा इस तरह के चला दिए हैं. सो यह बनिये सूरज -चन्द्रमा को ऐसे ग्रह कराते हैं जैसे रावण, सूरज -चन्द्रमा को ग्रह करता था, उसी तरह अब भी ग्रहण वगैरा पड़ता है और चन्द्रमा वगैरा घटता है; सो टीपणों में सब लिखा हुआ है कि इस कदर कला चन्द्रमा की घटी-बढ़ी है और बारह महीना पेश्तर से ही सूरज-चन्द्रमा का ग्रहण बतला देते हैं और इसी तरह से रावण ने भी ग्रह वगैरा के टीपणे चलाए थे कि जैसे अब महाजनान के टीपणे चलाए हुए रावण के मुवाफिक मौजूद हैं. सो जब यह काफरी

पाप दफे होगा जब सतजग की तरह, सदा पूरा चन्द्रमा उगेगा; और यह खाली बादल जो होते हैं और दस-२ और पन्द्रह-२ दिन रहते हैं और मेह नहीं बरसता है और उससे आदमियों को बीमारी होती है और खेतों को नुकसान होता है, सो यह अक्सर जमीन को रोग है कि जैसे आदमी को ''गुजराती'' का रोग होता है और वादी से सब बदन अकड़ जाता हैं और पसली में दर्द होता है, इसी तरह से जमीन को खाली बादलों का रोग होता है; इसी वजह से अनाज वगैरा को 'रोली गेरु' हो जाता है और नुकसान होता है. सो टीपणों में पहले से सुना देते हैं कि 'गेरु' और 'दाय' वगैरह पडेगा जिससे धान और झाड -वनस्पति जल जावेगी, सो जब पाप जमीन के नाम का कराते हैं तो जल जाते हैं; सो ऐसे-२ अनेक तरह के रोग जमीन को करा दिए हैं जब से दुबली हो गई है, इससे खानें चाँदी-सोने की गल गई हैं जिससे दिखती नहीं हैं, कि जो जमीन माता को लाख

आधा सीसी = अर्ध मस्तक में दर्द होना.

तरह का रोग करा देवें तो कोई यह नहीं समझें कि जमीन को रोग किया है बल्कि यह जानने लगते हैं कि परमेश्वर की कुदरत है; और जो कि आदमी को सरद-गरम का रोग हो जावे तो उसका शरीर और जीव बहुत दुख पाता है और जबकि जमीन माता को दुख और रोग करते हैं तो जमीन माता का जीव और शरीर दुख पाता है, परन्तु संसार के लोगों की बुद्धि ऐसी कैद कर दी है कि जो राक्षसी पाप से जमीन को फाड़ भी देवें और दरकतों को हवा के जोर से गिरा भी देवें या समुद्र के पानी को रोग करके 'आफरा' और 'बदहजमी' कर देते हैं तो उसको सब संसार के लोग ईश्वर की कुदरत कहते हैं, परन्तु यह कोई नहीं जानता कि जमीन तो जिंदा जीव है परन्तु इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से संसार के लोगों को जमीन माता के शरीर की पहचान भुला दी है;? कि जो जमीन माता का शरीर और जीव निहायत दरजे का दुख पाता है, परन्तु इस कदर कोई भी पहचान नहीं करता कि राक्षसी

रोली गेरु = गेहूँ की खेती में एक बीमारी का नाम है जिससे गेहूँ की फसल बिल्कुल खराब हो जाती है, दाप हीम पड़ना.

पाप से जमीन को दुख दे रखा है; क्योंकि जमीन माता तो जिन्दा जीव है, सो संसार के लोगों को यह बनिये अपने राक्षसी पाप से कुछ नहीं सोचने देते हैं कि इस जमीन के ऊपर चाँदी-सोने की खानें नहीं, वो कहाँ, गई? क्योंकि जमीन तो वो की वहीं हैं. सो यह बुद्धि का सबब है कि जो नहीं सोचने देते हैं, क्योंकि चाँदी-सोने की खानें थी वो जमीन के शरीर की चरबी थी वो बीमारी के सबब से गल गई है कि अब जो चाँदी-सोने की खानें, कहीं पर दिखने को भी नहीं रही हैं और हिन्दुस्तान के लोगों को तो राक्षसी पाप के सबब से पागलों की तरह कर दिए हैं, परन्तु दूसरी विलायतों के लोग और राजा -बादशाह भी नहीं सोचते हैं कि जमीन तो वो की वही है और चाँदी-सोने की खानें कहाँ गई? इसका ख्याल नहीं करते. जिसका सबब यह है कि रावण ने तीन लोक की बुद्धि कैद कर दी थी और जमीन के शरीर की पहचान भुला दी थी, उसी तरह से इन सौदागरान ने भी सातो-आठो विलायतों के लोगों

आफरा = पेट मे वायु का बढना/खाना हजम नहीं होना.

की बुद्धि खराब कर दी है इससे जमीन के शरीर की पहचान किसी को भी नहीं रही है और जबकि खानें थी, जब किसी को भी धन की परवाह नहीं थी क्योंकि जब किसी को धन की जरुरत होती थी, तो वो मिट्टी-पत्थर की तरह से खोद -२ के ले आते थे. सो अब इस कदर धन जमीन के ऊपर नहीं रहा कि जो खोद-२ के लावें, परन्तु कहीं पर मिसाल 'जल फूके, रुपया खर्च करके निकलवाते हैं कि जिस कदर बाबत धन निकलवाने के रुपया खर्च करते हैं तो रुपया का सवा रुपया होता है इससे ज्यादा नहीं और किसी-२ जगह पर रुपया खर्च करने से बारह आने का धन निकलता है, फिर रुपया का बारह आना होने की वजह से धन निकलवाना ही बंद कर दिया है और जो कि टूटा हुआ धन था, उसको बनियों ने अपने काबू में कर लिया है और जो कि थोड़ा बहुत बाकी है उसको अब काबू में कर लेंगे; जब सब विलायतों में सेर कांसी रहेगी, जब उन

राजा -बादशाहों को दौलतमंद कहेंगे. सो देखो भाई, दौलतमंद उस सेर कांसी में से क्या तो धरम पुण्य करेंगे और क्या कारज वगैरह करेंगे और क्या फौज वगैरह रखेंगे? सो यह बात दुनिया में कहते हैं कि कलजग इस तरह का बुरा आवेगा कि जिसके घर में सेर कांसी रहेगी वो दौलतमंद कहलावेगा. यह बातें तो पहले से बनियों की चलाई हुई है और नाम अगले सती लोगों का, कि हिन्दू-मुसलमान के बुजर्ग हो गुजरे हैं उन्होंका नाम लगा दिया है और आप न्यारे के न्यारे रहे हैं; क्योंकि पहले चाँदी -सोने की खानें थी, जब मिट्टी-पत्थर की तरह से खोद -२ के ले आते थे क्योंकि जमीन का शरीर ताजा था, इस वजह से जमीन के शरीर की चरबी वगैरह नहीं गली थी और जबसे कि यह सौदागर बच्चे काल वगैरह दुनिया में डालते हैं, जबसे जमीन माता तरह-२ की बीमारियाँ पा रही है, इससे जमीन के शरीर की चरबी गल गई है इससे अब वो चरबी, कि जिसको फी जमाना

चाँदी-सोने की खानें बोलते हैं वो नहीं रही हैं और जो कि टूटा हुआ धन विलायतों में था और होगा तो उस टूटे हुए धन को किसी विलायत में भी नहीं रहने देंगे. जिसका सबब यह है कि जिस तरह से आदमी के शरीर में बीमारी के सबब से सर का खून पैरों में सूजन और वरम के सबब से आ जाता है और पैरों का खून वरम के सबब से सर में आ जाता है, फिर इसी तरह से यह सौदागर बच्चे अपने राक्षसी पाप से जमीन को बीमार कर देते हैं कि जिससे जमीन को तरह-२ के रोग होते हैं, कि जिसकी पहचान तक तुम संसार के लोगों को नहीं है कि यह सौदागर बच्चे अपने जादू के जोर से जमीन को फाड़के टूटे हुए माल को खेंच लेंगे कि जिस तरह से किसी मुल्क के मंदिर, किसी मुल्क में निकाल देते हैं; फिर उसी तरह से यह सौदागर बच्चे भी जमीन माता को तरह-२ के दुख देके टूटा हुआ माल खेंच लेते हैं. सो जमीन माता को यह एक किस्म की बीमारी है कि जैसे आदमी

के शरीर में बीमारी के फिसाद के सबब से बादी वगैरा फिरती है फिर जबकि यह सौदागर जमीन के नाम का राक्षसी पाप कराते हैं, जब जमीन माता दुख पाती हैं; क्योंकि जमीन माता का भी शरीर मिसाल आदमी के है, सो इस जमीन माता को भी वादी का रोग कर देते हैं कि जैसे आदमी के शरीर में वादी फिरती है इसी तरह से जमीन माता के शरीर में भी राक्षसी पाप के सबब से वादी फिरती है. सो ऐसे -२ जमीन माता को करोड़ों रोग हैं सो यह बनियों ने जादू के जोर से किए हैं इससे जमीन माता दुबली हो गई है; जिसकी खास वजह यह है कि जमीन माता के शरीर की चरबी गल गई है कि जो चाँदी -सोने की खाने दिखती नहीं. सो अब तुम संसार के लोग और साते- आठों विलायतों के लोग टूटा हुआ धन कहाँ से लाओगे? क्योंकि जब जमीन पर खानें ही नहीं रहेगी तो फिर टूटा हुआ धन कहाँ से लाओगे? क्योंकि खानें वगैरा होवे जब तो मिट्टी, पत्थर की तरह से खोद -२ के ले आवो और

जबकि खानें गल गई हैं तो कहाँ से लाओगे? और जो कि टूटा हुआ धन है उसको तो यह सौदागर बच्चे किसी के पास अपने राक्षसी पाप से नहीं रहने देंगे, जब तुम्हारी औलाद का काम किस तरह से चलेगा? क्योंकि जब किसी के पास दौलत नहीं होगी तो कुल विलायतों की औलाद इन सौदागर बच्चों के कब्जे में हो जावेगी, जब इन सौदागर बच्चों के दिल में जिस तरह से आवेगा उसी तरह से करेंगे. सो ऐ भाई, उस वक्त में जिन्दा रहने का भी धर्म नहीं है; अलावा इसके जब तक सातो-आठों विलायतें गारत न होगी जब तक यह सौदागर बच्चे गरीब और भक्त होके रहेंगे जब तक इन सौदागर बच्चों का जाल जाहिरात में नहीं आवेगा, क्योंकि जाहिरात में आ जावे जबतो इनके जालों को सख्तियाँ देके दफे भी करा देवें, परन्तु इन्होंके तो तरह -२ के जादू है कि जिन्होंको चोड़े नहीं आने देते हैं. जिसका सबब यह है कि पहले इन्होंने थोड़ा सा राक्षसी पाप का करना रावण वगैरा को

सिखाया था, कि जो रावण वगैरा सीख लेने के सबब से और करने की वजह से तमाम जहान के लोगों ने अपनी औलाद सलामत रहने की गर्ज से सख्त सजा देके गारत किया, फिर रावण वगैरा के मारे जाने का डर करके यह सौदागर बच्चे जाहिरात में नहीं आते हैं बल्कि दूसरी कौम के राजा -बादशाह को थोड़ा-सा पाप करना सिखा देते हैं, कि जो पाप की खबर किसी वजह से संसार में पड़ेगी तो सीखने वालों की औलाद, मय सीखने वालों के रावण वगैरह की तरह से मारे जावेंगे, इस वजह से यह सौदागर बच्चे अपने कदीमी पाप में से थोड़ा-सा पाप करना दूसरों को सिखा देते हैं, परन्तु असली पाप को आप करते रहते हैं जिससे संसार में बुरा होता है; अगर औरों को नहीं सिखावें जब तो इन सौदागरान को ही पकड़े और इनका ही पाप करना साबित हो जावे. इस वजह से यह सौदागर बच्चे पहले से दूसरों को सिखा देते हैं और यह समझते हैं कि जब तक दूसरी कौम के

राजा- बादशाह हैं जब तक इन्होंको सिखावेंगे, क्योंकि देखने वाले यह जानने लगते हैं कि राक्षसी पाप इन्होंने ही चलाया है, परन्तु सौदागर बच्चों का कोई शुभा नहीं करता है और करने वाले कुछ शुभा भी नहीं करते हैं कि हमको इन सौदागर बच्चों ने सिखाया है! सो अपने पाप के करने में से तो नहीं सिखाया है! कि जो कदीमी पाप इन सौदागर बच्चों का है कि जिसको यह सौदागर बच्चे आप करते होंगे, सो यह दुनिया के लोग बिलकुल ख्याल नहीं करते कि हमारी बुद्धि पहले से इन सौदागर बच्चों ने कैद कर दी है इससे थोड़ा-सा पाप करना रावण की तरह से हमको भी गारत करने के लिये सिखा दिया है! सो यह कुछ भी नहीं सोचते, सो यह सबब बुद्धि कैद होने का है क्योंकि जब बुद्धि कैद हो जाती है जब ऐसा ही सूझता है. सो ऐ भाइयों, इन सौदागर बच्चों का दिल इस तरह पर है कि संसार की औलाद गारत होने के लिए अपना राक्षसी पाप सिखला देते हैं और आप

अलेहदा के अलेहदा रह जाते हैं, परन्तु यह जाल सौदागर बच्चे अपनी औलाद बचने को दूसरों को सिखा देते हैं, जिसकी वजह यह है कि जब राक्षसी पाप को गरीब आदमी भी सीख लेवेंगे तो बहुत अच्छी बात है; इससे सौदागर बच्चे राजी होते हैं. सिवाय इसके जो राजा –बादशाह इन्होंके कहने से राक्षसी पाप का करना सीख लेवें तो सबसे ज्यादा राजी होवे और यह भी कहते हैं कि हम कभी चौड़े नहीं आवेंगे तो हमारी कौम के आदमी सलामत रहेंगे और दूसरी कौम के आदमी मारे जावेंगे, परन्तु जबकि पाप का करना सिखाते हैं और जो कि किताबों में देखके करने को लग जाते हैं, नहीं मालूम की साधू–फकीर का रुप धरके सिखा देते हैं; सो किताबों को देखकर राक्षसी पाप चला देते हैं, परन्तु किताबों में तो थोड़ा–सा राक्षसी पाप का करना लिखा है परन्तु दूसरी कौम के लोग यह नहीं समझते हैं कि जो किताबों में थोड़ा–सा राक्षसी पाप करना लिखा है सो हमको कही

मरवाने के लिए छल की किताबें नहीं चला दी हैं? जिसका बिलकुल ख्याल नहीं करते, जिसका सबब यह है कि बनियों ने बेईमानी करके ऐसी अकलमंदी की है कि चलाते तो आप हैं, परन्तु किताबों में दूसरी कौम के राजा -बादशाह के नाम और साधु-फकीर के नाम लिख दिए हैं, कि जिसको सब मानते हैं. चलाने वाले उन किताबों के अन्दर अपना नाम नहीं लिखते हैं बल्कि जालसाजी करके दूसरी कौमों के नाम लिख दिए हैं, क्योंकि चोरी करनेवाले अपना नाम कब बताते हैं बल्कि दूसरों का नाम ले लेते हैं, फिर उसी तरह से यह बनिये भी अपने कदीमी पाप के जाहिर न होने के लिए किताबों में दूसरी कौम के नाम लिख देते हैं और अपना नाम नहीं लिखते हैं, कि जिसकी वजह यह है कि चोर अपना नाम बता देवें जब तो चोर खुद मारे जावें, फिर इसी तरह से यह बनिये भी राक्षसी पाप की किताबों में अपना नाम नहीं लिखते हैं कि जब हमारा नाम किताबों में लिखा

होवेगा जब तो हम कुल बनिये कि जो राक्षसी पाप कराते हैं, मारे जावेंगे. इस सबब से अपना नाम किताबों में नहीं लिखा है बल्कि अपनी कौम के बचने के लिए दूसरी कौम के राजा- बादशाह और गरीब- गुरबों का नाम लिख देते हैं; सो जबकि बनिये लोग अपने राक्षसी पाप से बुद्धि खराब कर देते हैं जब किताबों को देख करके थोड़ा बहुत पाप करने को लग जाते हैं, इससे भूल ही भूल में अपनी औलाद को पीढ़ी दो पीढ़ी के बाद मरवा देते हैं, परन्तु जाल के करने वाले और सीखने वाले यह नहीं सोचते हैं कि कदीमी जाल तो किताबों के चलाने वालों का है, सो पूरा पता तो उन्हींके पास होगा कि जिन्होंने किताबें चलाई हैं; परन्तु दूसरे लोगों की ऐसी बुद्धि कैद कर दी है कि जैसे किताबों में लिखा है उसी तरह से राक्षसी पाप की किताबों में से देख-२ के करने को लग जाते हैं और यह नहीं सोचते हैं कि किताबें तो कभी की चलाई हुई हैं और अपनी चलाई हुई नहीं हैं और जिनकी

चलाई हुई हैं, सो वो न्यारे के न्यारे हैं. सो पाप का करना तो उनका, उनको ही याद होगा, क्योंकि किताबें कुछ आसमान से नहीं उतरी हैं ! यह तो किसी आदमियों की बनाई हुई हैं, इस बात का ख्याल तो कोई भी नहीं करते. हालांकि इस बदनामी में आठ-नौ राजा -बादशाह, हिन्दू- मुसलमान की कौम के रावण, हरनाकुश, कंश, कारुन वगैरा की तरह से मारे गए, परन्तु जाल तो भी नहीं मिटा कि जो अब तक चल रहा है और जिनको कि यह जाल की किताबें मिल जाती हैं, तो उनको देख-२ के ऐसे राजी होते हैं कि हमको माल मिल गया है कि कुल पृथ्वी का राज प्राप्त हुआ है, परन्तु यह ख्याल नहीं करते कि जिन लोगों ने यह जाल के जादू चलाए थे तो वो उसी हालत में पकड़ के मारे गए, फिर उसी तरह से हम जादू के करने वालों की औलाद मारी जावेगी. सो राक्षसी पाप सीखने वाले यह नहीं सोचते हैं कि जब रावण वगैरा ने राक्षसी पाप को सीख के किया

तो राक्षसी पाप की वजह से संसार के हाथों से मारे गए, फिर इसी तरह से हम भी सीख के करते हैं और किताबों को देखके करते हैं, तो हमारी भी औलाद मारी जावेगी क्योंकि यह हमारा जाल कदीमी नहीं है, क्योंकि कदीमी जाल तो रावण का भी नहीं था क्योंकि जाल तो दूसरों का ही है, रावण वगैरा ने भी सीखके किया था, इससे वो मारे गए कि जिनका पता तक भी नहीं मिला, परन्तु कदीमी पाप के करने वाले नहीं मारे गए बल्कि कदीमी पाप के करने वाले अब तक कदीमी पाप को बराबर करा रहे हैं, कि जिनका किसी को भी पता नहीं कि जो दूसरे लोग भूल ही भूल में थोड़ा बहुत पाप सीखने को लग जाते हैं और फिर सीख करके करने को लग जाते हैं. सो यह बुद्धि का सबब है, क्योंकि बुद्धि कदीमी पाप करने वालों ने कैद कर दी है जिससे कुछ खबर नहीं पड़ती है बल्कि दगा ही दगा में लोग मारे गए और अब भी दगा करके मरा देंगे, जिसका कुछ पता नहीं

लगेगा; क्योंकि यह बनिये बेईमान दुनिया में पहले से ऐसी बात चला देते हैं कि हम राजाओं की कौम में से निकले हैं और मुसलमानों से इस तरह कहते हैं कि आगे शाह और पीछे बादशाह सो देखो भाई, यह बनिये अपने मतलब से खाली नहीं, क्योंकि उनसे भी मिले रहते हैं; अलावा इसके कि जो अब अंग्रेज वगैरा राज करते हैं, तो इनसे भी मिल गए हैं, परन्तु संसार में बनिये यह कहते हैं कि हम और अंग्रेज एक है कि जिस तरह से हम बनिये हैं, उसी तरह से अंग्रेज भी बनिये कहलाते हैं, परन्तु बनियों ने संसार में यह बातें पहले से चला दी हैं कि जिससे संसार के लोग यह कहते हैं कि अंग्रेज भी बनिये हैं. सो देखो भाई, कि बनिये सबसे मिले हुए हैं और गरीब होकर रहते हैं और दूसरों को अपना भाई-बाप बना लेते हैं और फिर राक्षसी पाप से उनको गारत कर देते हैं; सो इन्होंके ऐसे २ जाल सैकड़ों हैं क्योंकि यह 'भाई-बीरा' बनाके जाल ही जाल में मरवा देते हैं और जो कि

संसार में यह बातें पहले से चलादी हैं कि अंग्रेज चार कूंट में राज करेंगे, सो यह बातें इन बनियों ने किताबों में भी लिखी होगी, सो यह बात संसार में भी कहते हैं कि अंग्रेज चार कूंट में राज करेंगे तो ऐसी-२ बातें पहले से चला देते हैं कि रावण, हरनाकुश, कंश, कारुन वगैरा चार कूंट में और चौदा भांण में राज करेंगे बल्कि राज का करना तो दूर गुजरा बल्कि वोह जाल ही जाल में मारे गए, कि जिनका अब तक नाम, बाबत जुलम करने के संसार में प्रगट है; सो देखो भाई, कि असली पाप किसी को भी नहीं मालूम हुआ, क्योंकि इन सौदागरान का दिल तो इस तरह पर है कि चार कूंट और चौदा भांण में हम राज करेंगे जिससे राक्षसी पाप चलाया है, इस वजह से यह बनिये मुद्धतों से थोड़ा-सा जाल सिखा-२ के दूसरों को गारत करा देते हैं और जो कि रावण ने और हरनाकुश ने और कंश ने और कारुन बादशाह ने राक्षसी पाप के जोर से धन जमे कर लिया था, सो राज करके जमे किया था, कि जो अब तक दुनिया में कहते हैं कि रावण ने लंका सोने

की बनाई थी और कारुन बादशाह ने चालीस डूंगरी धन जमे किया था, सो वो धन भी किसी ने नहीं लिया था और इन बनियों के पास है, परन्तु वो पाप के सीखने वाले भूल ही भूल में मारे गए, कि जो उनकी औलाद ने भी सुख नहीं पाया और न धन को भोग सके. सो देखो भाई, दुनिया में बहुत धन था, सो इन बनियों के कब्जे में ही रहा, परन्तु जो रावण ने राज करके छे अन्नी का धन जमे किया था और रैयत के पास से जुलम करके जमे किया था; सो भी रावण के पास नहीं रहा और ना उनकी औलाद के पास रहा, बल्कि रावण वगैरा अपनी मय औलाद के गारत हो गए और सबसे ज्यादा धन इन कदीमी पाप करने वालों के पास रहा कि जिनका अब राक्षसी पाप चल रहा है; सो इसी तरह से अब राक्षसी पाप करा रहे हैं और जिनको कि अब रावण वगैरा की तरह से थोड़ा राक्षसी पाप का करना सिखा दिया है और वो सीख के करने को लग गए हैं या अब करने को लग जावेंगे, तो उन सीखने वालों की भी वैसी ही गत होगी कि जैसे रावण वगैरा की हुई. सो देखो

भाई, अगर तुम मेरे कहने को सच-२ नहीं मानोगे और बनियों के राक्षसी पाप का ख्याल न करोगे, तो बनिये अपना राज करेंगे और सब विलायतों के लोगों को रावण की तरह से हौले-२ गारत कर देंगे और हिन्दुस्तान तो गारत हो गई है और जो कि बाकी रही है उसको अब तुम सातो-आठो विलायतों के लोगों को लाके गारत करा देंगे, परन्तु लालच में आके भूल ही भूल में हिन्दुस्तान गारत करोगे तो तुमको भी तुम्हारी मय औलाद के यह बनिये हिन्दुस्तान का लोभ करने से गारत कर देंगे. हाँ! अलबत्ता तुमको बनियों के पाप की किसी को भी खबर नहीं है, इससे संसार के लोग बनियों के पाप की वजह से आपस में लड़के मर जावेंगे और जो कि तुम हिन्दुस्तान के राज का लालच करते हो, सो यह लालच का करना तुम्हारे वास्ते रावण की तरह से बहुत खराब करेगा, क्योंकि यह बनिये रावण की तरह से लालच देके गारत कर देंगे; फिर इस तरह से जब कुल विलायतों में इनका अमल होगा तो विलायतें गारत हो जावेगी, जब यह बनिये अपना राज

करेंगे. इससे मेरी अर्ज यह है कि इन बनियों के राक्षसी पाप को छोड़ाओ तो कुल विलायतों की औलाद सुख पावें, अगर इस राक्षसी पाप को नहीं छोड़ाओगे तो यह बनिये हिन्दुस्तान की तरह से सब विलायतों को गारत करके धन अपने काबू में कर लेंगे और पाप की खबर किसी को भी नहीं पड़ने देंगे और सतजग में जो देवता स्वरुपी आदमी थे, उनकी बुद्धि राक्षसी पाप से कैद कर दी थी, कि जो उनको भी खबर नहीं पड़ती थी परन्तु उस वक्त में भी रावण वगैरह ने अपने राक्षसी पाप से शनिचर को निहायत दुखी किया, जब राक्षसी पाप की खबर उनको पड़ी जब शनिचर वगैरह ने तमाम जहान के लोगों को राक्षसी पाप की खबर दी, जब संसार ने एका करके इस राक्षसी पाप के दफे करने के लिए कोशिश की, जब राक्षसी पाप थोड़ा बहुत दफे हुआ. परन्तु वहीं राक्षसी पाप अब हो रहा है और मैं इसी राक्षसी पाप में कैद हो रहा हूँ परन्तु जब तक कि मुझको राक्षसी पाप से दुखी नहीं किया था जब तक मुझको राक्षसी पाप की खबर नहीं थी परन्तु जबसे कि मुझको

सौदागर बच्चों ने अपने राक्षसी पाप से शनिचर के तौर पर दुखी किया है जिससे इन बनियों का राक्षसी पाप मुझको भी मालूम हो गया है. इससे मैं तुम्हारी औलाद बचने के लिए अपने ऊपर दुख पड़ते ही इन बनियों के राक्षसी पाप से वाकिफ करता हूँ कि तुम सब संसार के लोगों परमेश्वर की रचना हो और मुझको इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से समामुख दुखी किया है और जो कि संसार के लोगों की बुद्धि राक्षसी पाप के जादू से कैद कर दी है जिसका हाल मैं कई जगह ऊपर लिख चुका हूँ कि बनिये संसार को गारत करेंगे. सो देखो भाई, कि कुल संसार गारत हो जावेगा जब तो यह काफिर ही रह जावेंगे, सो तुम सब संसार के लोगों इस बात को सोचो और ख्याल करो! कि जब मालिक की रचना ही गारत हो गई तो फिर क्या रहा? क्योंकि अगर तुम संसार के लोग और राजा – बादशाह रामचंद्रजी की तरह से इन बनियों के राक्षसी पाप को एका करके छोड़ाओ ताकि सब विलायतों की औलाद बचें; क्योंकि यह बनिये अपने राक्षसी पाप से कुल

विलायतों को गारत करेंगे, क्योंकि इन बनियों ने मुझको अपने राक्षसी पाप से समामुख दुखी किया है और मैं इसी राक्षसी पाप में कैद हो रहा हूँ, सो मुझसे यह दुख जीं सहा जाता. इससे मैं निहायत दुख पाके लिखता हूँ कि यह बनिये अपने राक्षसी पाप से न तो रिजक होने देंगे और न किसी के पास पैसा रहने देंगे और न बुद्धि दुरस्त रहने देंगे, सो देखलो कि भाई-२ आपस में लड़ के मरते हैं परन्तु आगे की खबर नहीं कि कैसी बुद्धि रहने देंगे; इससे मैं परमेश्वर के वास्ते लिखता हूँ कि यह बनिये अपने राक्षसी पाप से परमेश्वर की रचना को दुखी करेंगे इससे मैं गरीब बार-२ लिखता हूँ और अर्ज करता हूँ कि पहले दिल्ली मण्डल में राजा- बादशाह बने हुए थे और नेकी में चलते थे, परन्तु जब इन बेइमानों ने अपने दिल में कैसा जाल और कपट विचारा कि जो इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से उन राजा -बादशाहों की अकल खराब कर दी थी, जबसे राजा -बादशाह आपस में गुस्सा खाते हैं और झगड़ा करने लगते हैं और रैयत को दुख देने लगते हैं,

इससे आपसे आप तनाजा के सबब से मरने लगते हैं कि जो दिन-२ सूरत बिगड़ने की होती जाती है; परन्तु असली भेद किसी पर नहीं खुला कि यह क्या करतब हो रहा है? क्योंकि इन सौदागर बच्चों ने अपने राक्षसी पाप की किताबें इस किसम की चलादी हैं कि जैसे हिन्दू-मुसलमान के जात में ईष्ट हैं वैसा ही हिन्दू-मुसलमानों के पीरों-मुरीदों के नाम किताबों में लिख-२ के जाहिर किए हैं, जिससे हिन्दु-मुसलमान अपनी जानते हैं. सो यह हिन्दू-मुसलमानों की बड़ी भारी भूल है, क्योंकि वो किताबें हिन्दू-मुसलमानों की नहीं हैं, यह तो इन सौदागर बच्चों की बनाई हुई हैं और नाम किताबों में हिन्दू-मुसलमान के बुजर्गों के, कि जो नेक हो गुजरे हैं; इस गर्ज से लगा दिए हैं कि हमारा राक्षसी पाप किसी पर जाहिर न हो, इस वजह से मुसलमानों की किताबों में तो मुसलमानों के बुजर्गों के नाम, कि जो पहले जमाने में पीर हो गुजरे हैं और उन्होंको साथ दिल के संसार के लोग अब तक अपनी-२ जात में मानते हैं कि जिन्होंका नाम इन सौदागर बच्चों ने लगा दिया

है जिससे मुसलमान यह कहते हैं कि पीरों ने पहले जमाने में यह बद्धदुआ दी है जिससे बादशाहतें डूब गई हैं और हिन्दू यह कहते हैं कि शिवजी महाराज ने यह बद्धदुआ दी है जिससे राज डूबा है, फिर इस वजह से राज हिन्दू-मुसलमानों के डूबे हैं; परन्तु हिन्दुस्तान में जिस कदर कि राजा बादशाह हैं सबको अपने-२ ईष्ट का 'ऐब' लगा दिया है, परन्तु मारवाड़ में चामुण्डा देवी का लगा दिया है जिससे मारवाड़ के तमाम लोग पहले से यह कहते हैं कि चामुण्डा देवी का यह श्राप है कि जोधपुर का राज (५००) बरस राठौड़ों के कब्जे में रहेगा, परन्तु फिर नहीं रहेगा; सिवाय इसके जो आजकल इस हिन्द में बादशाह एडवर्ड साहब राज कर रहे हैं और जेर हकूमत बड़े-२ 'आलादरजा' और ओहदे के अंग्रेज याने 'नवाब, गवर्नर, जनरल' से राज करते हैं, इन्होंके वास्ते आम लोग संसार के यह कहते हैं कि अंग्रेज वगैरह आए तो नेकी से और जाएँगे बदी से. सो यह बातें किताबों में लिखी होगी परन्तु बुद्धि खराब होने का सबब यह है कि जब यह बनिये

अपने राक्षसी पाप से तुम अंग्रेजों की बुद्धि खराब कर देंगे जब तुम भी राजा -बादशाह और गरीब-गुरबा को दुख देने लगोगे, जब यह बनिये और किसी विलायत वाले को लाके खड़ा कर देंगे जब तुम गारत हो जाओगे; इस वजह से मैं बार-२ लिखता हूँ कि यह बनिये अपने राक्षसी पाप के जादू से हिन्दुस्तान में सब विलायतों को लावेंगे और पहले से इन बनियों ने हिन्दू-मुसलमानों और अंग्रेज वगैरह के वास्ते ऐसी-२ बातें चला दी हैं और अंग्रेजों के बाद जब और कोई विलायत के लावेंगे जब उनका बुरा होने के पहले संसार में बातें चला देंगे डूबने के वास्ते और फिर उन्हींके नाम का होम कराते हैं तो उन्हीं का बुरा हो जाता है और जो आगम भाखते हैं वेह सच्ची हो जाती है और कोई भी साहब इस बात को नहीं सोचते हैं कि यह क्या बात है? कि जो कुछ बात पहले से चला देते हैं वो सच्ची हो जाती है और जो कि हिन्दुस्तान में आवेंगे और राज करेंगे, वही राज के करने वाले हिन्दुस्तान को अपने हाथ से गारत करेंगे, गर्ज कि सातो-आठो विलायतें हिन्दुस्तान में आगे पीछे इन

बनियों के राक्षसी पाप से आवेंगे और हिन्दुस्तान के लोगों को गारत करके अपना राज करेंगे, सो जिस तरह से कि हिन्दुस्तान को गारत करेंगे, सो यह पहले से सातो-आठो विलायतों के आने वालों को थोड़ा-सा राक्षसी पाप सिखावेंगे और असली पाप को अपने कब्जे में रखेंगे और उसमें से थोड़ा-सा सिखावेंगे कि जैसा रावण को सिखाया था जब तुम भूल जाओगे और जानोगे कि हम ही कलंकी हैं. सो तुम सातो -आठो विलायतों में आपस में ही एक-२ को गारत करते जाओगे और जबकि सातो-आठो विलायतें आपस में लड़कर कमती हो जावेगी और सौदागर बच्चे यह जानेंगे कि अब हम ज्यादा हैं और हमको कोई गारत नहीं कर सकेगा, उस वक्त बनिये कलंकी राज करेंगे और जब तक कि तुम सातो-आठो विलायतों के लोग ज्यादा हो जब तक कि तुमको भी थोड़ा बहुत राक्षसी पाप सिखाके तुमको भी पाप का करने

ऐंब = टेव, आदत लगाना

वाला बतावेंगे, अगरचे नहीं बतावें जब तो खुद मारे जावें. इससे ऐसे -२ करतूत करते हैं कि जो बनियों के जादू का हाल किसी को मालूम नहीं होगा और यह बनिये अपने राक्षसी पाप के जादू से आपस में बुद्धि फेरके गारत कर देंगे और जब थोड़े से आदमी रह जावेंगे जब यह बनिये कलंकी अपना राज करेंगे, और जब तक कि संसार के लोग ज्यादा हैं जब तक दूसरों को ही राज करावेंगे और उनको कलंकी बतावेंगे और आप चोड़े नहीं आवेंगे और मिले के मिले रहेंगे और जबकि यह जानेंगे कि अब संसार थोड़ा रहा है और हम सौदागर बच्चे ज्यादा हैं जब अपना राज करेंगे सो देखो भाई, कि जैसे अब साधु -फकीर हैं इसी तरह से पहले जमाने में साधु-फकीर थे, परन्तु इन सौदागरान ने राक्षसी पाप के जादू से ऐसी अकल फेर दी है कि जो भूले हुए और बहके हुए हैं; सो संसार के लोग अगले फकीरों को ऐसा ही जानते हैं कि धरती-आसमान को

बदी = बदनामी

उन्होंने ही बनाया है और वहीं उलट-पलट देंगे, परन्तु यह बात सोचनी चाहिए कि यह रचना जो है, सो कदीम से है सो ईश्वर की कुदरत है और अगले सती लोगों के करने से कोई जमीन -आसमान नहीं बना है यह तो जाल है कि जैसे हम -तुम सब भूले हुए हैं, क्योंकि तुम लोग भी उन्हींकी औलाद हो और जो कि तुम्हारे बुजुर्ग सती हो गुजरे हैं कि जिनका नाम किताबों में लिखा है कि जिसको तुम सब मानते हो. इससे मेरी यह अर्ज है कि जब तुम्हारे बुजुर्गों ने धरती आसमान बनाया है तो अब तुम भी धरती - आसमान बनाओ, अगर तुमसे नहीं बनता है तो उनसे भी नहीं बनता था; क्योंकि यह तो मालिक की रचना है और बनाई हुई है कि जैसे आदमी के पेट में मेल खाने वाले जीव हो जाते हैं, इसी तरह से जमीन माता के पेट में भी हम तुम सब संसार के लोग पैदा हुए हैं, परन्तु मैं इस वास्ते लिखता हूँ कि तुम लोगों की बुद्धि इन बनियों ने

राक्षसी पाप से भ्रष्ट कर दी है जिससे तुम लोग इसी तरह पर हो गए हो जैसे 'भंगेड़ी' आदमी होता है, उसी तरह पर तुमको भी कर देते हैं और इन्होंने किताबों में लिख दिया है कि जमीन –आसमान की रचना शिवजी ने और देवी ने बनाई है और ब्रह्मा ने रचना रची है. सो ब्रह्मा और शिवजी और देवी वगैरा आदमी थे कि जैसे हम और तुम जमीन के पेट में पैदा हुए हैं, इसी तरह से शिवजी वगैरा हजारों भगत हो गुजरे हैं; सो शिवजी का नाम शिवनाथजी था और ब्रह्माजी ब्राह्मण था और देवी का नाम देवती था कि जैसे अब ब्रह्माण वगैरा हैं और नाम शिवनाथ वगैरा हैं. सो उन्होंने भक्ति की है इससे वो भक्त लोग अब तक नेकी के सबब से संसार में माने जाते हैं और भक्त गिने जाते हैं कि जिनका नाम संसार में अमर है, सो जब तक कि तुम संसार की औलाद जिन्दा है इससे उन भक्तों का नाम लेते हो, अगर तुम संसार के लोग नहीं

हो तो उनका नाम कौन लेवे? सो तुम संसार के आदमी सलामत हो तो उनका नाम भी सलामत है, अगर उन भक्तों की तरह से तुम भी नेकी में चलो तो संसार में उनके मुवाफिक तुम्हारा भी नाम सलामत रहे; परन्तु इन बनियों ने राक्षसी पाप से ऐसी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है कि जो किसी जीव की दया, किसी जीव के ऊपर नहीं रहती और अगले भक्त लोगों के वक्त में राक्षसी विद्या का पाप ज्यादा नहीं था इससे लोगों का दिल दया में और नेकी में बहुत था और राजाबल के बाद से बनियों ने राक्षसी पाप चलाया है, इससे अब जीव नेकी पे नहीं रहता है और यह किताबों में ऐसा लिख दिया है कि ब्रह्मा ने और देवी ने और शिवजी ने और कृष्णजी वगैरा ने जमीन आसमान और रचना रची है; परन्तु मेरे नजदीक आदमी के हाथ में रचना -रचनी नहीं है क्योंकि मालिक ने आदमी के हाथ में रचना-रचनी नहीं रखी है और न हो सकता है

और उसकी कुदरत उसी के हाथ है और इन्होंने कई किताबों में ऐसा लिख दिया है कि ''हनुमानजी ने पर्वत को उठा लिया था'' सो देखो भाई अपन आदमी क्या चीज हैं? कुछ नहीं हैं और पर्वत कितना बड़ा है; सो पर्वत तो जमीन के हाड़ हैं कि जैसे आदमी के हाड़ हैं उसी तरह जमीन के भी हाड़ हैं और यह भी कहते हैं कि ''सूरज को मुख में ले लिया था.'' सो किताबों में लिखा है कि उन्होंमें इतनी शक्ति थी, तो ख्याल करो कि पर्वत भी जादू के जोर से उड़ता है और सूरज भी जादू के जोर से नीचे उतरता है, सो जबकि जमीन के नाम का पाप कराते हैं जब जमीन का जीव दुख पाता है और जमीन के हाड़ वगैरा फाड़ते हैं जब जमीन को इतना दुख होता है; और मुसलमानों की किताबों में ऐसा ही लिखा हुआ है और मुसलमान कहते हैं कि 'आनासागर' जो अजमेर में है उसको फकीर साहब ने तुंबी में ले लिया था और यह भी कहते हैं कि जब फकीर साहब

अजमेर में आए जब घोड़े ने अपने पांव की टाप मारी, तो जमीन के सातों पड़दे फूट गए परन्तु हिन्दू-मुसलमान ऐसे मस्त हो रहे हैं कि हमारे बुजुर्ग ऐसे हो गए हैं कि जिन्होंने ऐसी-२ करामातें दिखाई, इससे फूले-फूले फिरते हैं और बात को नहीं सोचते हैं क्योंकि जल भी जादू के जोर से उड़ता है और जब जमीन जादू के जोर से फटती है तो उसको किस कदर तकलीफ और दर्द होता है! तो ऐसे-२ इन बेईमानों ने कई तरह के रोग जमीन को कर दिए हैं, और फिर उस जादू को दुनिया के लोगों को और फकीरों को करामातें सुझा देते हैं और दुनिया की बुद्धि फेरके जीमन के शरीर की भूल दुनिया को पड़ा दी है. सो वो दर्द वगैरह कोई भी नहीं समझता है और बनिये खूब कोशिश करते हैं कि हमारा जाल खूब चल रहा है और दुनिया करामातों में भूली हुई है; सो ऐसी-२ बातें तरह-२ की चलादी हैं कि जिसका

कुछ हिसाब नहीं, परन्तु मुझको इन हिन्दू - मुसलमानों की दो-चार बातें याद आती हैं वो लिखता हूँ अगर मैं पढ़ा हुआ होता तो ज्यादा बातें याद होती अब तुम सब हिन्दू-मुसलमान पढ़े हुए हो, सो ख्याल करके इस बात को समझे कि ''जो मैंने अपने अहलकार से बोल-२ के लिखवाया है उसको जरुर पढ़ना और जब तक कि मुझको बनियों ने नहीं दुखी किया था, जब तक तो मैं भी संसार की तरह से अंधा था और यह जानता था कि अगले लोग करामाती हैं और जबसे मुझे बनियों ने जादू से दुखी किया है'' जब इन्होंका जाल मुझको भी मालूम पड़ा है; क्योंकि जो किताबें हिन्दू-मुसलमान के जात की हैं और उनमें हिन्दू-मुसलमान के नाम लिखे हुए हैं, सो बनियों ने अपनी अकलमंदी से लिख दिए हैं कि जब राजा -बादशाह दूसरी विलायत के इन सौदागरान के फरेब में आकर हिन्दुस्तान के बच्चों को गारत करने के लिए आवेंगे और जब हिन्दू-मुसलमानों की

किताबों को देंखेंगे जब यह जानेंगे कि राक्षसी पाप हिन्दुस्तान के राजा -बादशाहों और साधु -फकीरों का है, क्योंकि हिन्दू-मुसलमान किताबों को पढ़ते हैं और यह समझते हैं कि हम करामाती हैं और जो कि भूल ही भूल के अन्दर दूसरी विलायत के लोग इन सौदागरान के जाल में आकर हिन्दुस्तान में आवेंगे और किताबों को देखेंगे और यह मालूम करेंगे कि जाल हिन्दू-मुसलमानों का है, जब हिन्दू-मुसलमान वगैरा मारे जावेंगे और बनिये अलाहदा के अलाहदा रह जावेंगे; परन्तु इन सौदागर बच्चों ने राक्षसी पाप के जादू से ऐसी अकल फेर देते हैं जिससे हिन्दुस्तान के लोगों को करामात ही नजर आती है परन्तु यह बनिये अपने राक्षसी पाप के जुल्म से तरह-२ की चीजें बताते हैं और दिखाते हैं कि जो हम और तुम अच्छी तरह से जानते हैं, कि मरे हुए फिर नहीं आते हैं; परन्तु यह बनिये अपने जादू के जुलम से मुर्दों को दिखा देते हैं, सो मुर्दे तो नहीं

आते हैं परन्तु जो लोग कि भक्त हो गुजरे हैं, उनके नाम का राक्षसी पाप कराते हैं, जब वो पाप से उन भक्त लोगों की शक्लें दिखती हैं, परन्तु जब हिन्दू लोग हिंगलाज में जाते हैं और आते हैं तो उन्होंमें से कि जो भक्त होता है उसको हिंगलाजजी की सूरत, अपने जादू के जोर से यह बनिये दिखा देते हैं. परन्तु वोह दर्शन करने वाले अपने देश में वापिस आते हैं तो संसार के लोगों से कहते हैं कि हिंगलाज देवी का बड़ा भारी परचा है और मैंने आँखों से देखा है; जब संसार के लोग अपनी जुबान से यह कहते हैं कि जो बड़ा भक्त होता है उसको हिंगलाजजी के दर्शन होते हैं और सिवाय इसके हिंगलाजजी में कालका देवी की पूजा है, सो वहाँ भी लोग दर्शन को जाते हैं और कालका देवी पर बकरे का खून डालते हैं. सो जबकि खून जमीन ऊपर गिर जाता है, जब तो यह कहते हैं कि देवी राजी नहीं हुई हैं अगरचे खून को देवी के ऊपर डाला और वो खून उड़ गया

अहलकार = परामर्श देने वाला, लिखनेवाला.

तो उसको परचा कहते हैं, कि देवी खूब राजी हो गई है, क्योंकि देवी ने मान लिया है और देवी सच्ची है. सो देखो भाई, संसार परचों के भरोसे भूला हुआ है कि न तो देवी ने खून उड़ाया और न पिया, वोह तो सौदागर बच्चों के राक्षसी पाप का जादू है कि जो खून वगैरा दर्शन करने वालों को उड़ा हुआ मालूम होता है, उसी तरह से मक्का -मदीना के मुसलमानों में भी बड़ा भारी पीर और दर्शन की जगह गिनी जाती है; सो मुसलमान उसके दर्शन करने को जाते हैं सो मुसलमानों की तो बादशाही जात है, सो देखो भाई, इनको भी भुला दिया है क्योंकि जब जाते हैं तो उस वक्त दर्शन करने वालों को ऊँटनी के दर्शन जादू के जोर से सुझा देते हैं जब वो यह जानते हैं कि हमारे उपर पीर-फकीर बहुत राजी हैं, इससे हमको दर्शन हो गए हैं और हिंगलाज के रास्ते पर चन्द्रकुप स्वामी हैं, सो वहाँ पर जमीन माता को जादू के जोर से रोग किया है, कि जैसे आदमी के शरीर में

रोग की वजह से नासूर हो जाता है और राध पड़के गोस्त गल जाता है और राध बाहर को आता है, उसी तरह से इन बनियों ने जमीन माता को रोग किया है. सो जबकि सब लोग जाते हैं जब यह कहते हैं कि चन्द्रकुप स्वामीजी दर्शन दे और बोल, सो जिस वक्त कि आदमी अर्ज करते हैं तो सुराख में से राध बाहर को भबकता है, जब यह जानते हैं कि चन्द्रकुप स्वामी ने दर्शन हमको दिए; सो यह हमको खबर नहीं कि वो नासूर बेरे जितना है या बावड़ी जितना है या कम ज्यादा है, सो ऐसे -२ रोग सैकड़ों कर दिए हैं, इससे जमीन माता दुबली हो गई है और चरबी तक नहीं रही, सो इस बात की तलाश करोगे जब खबर पड़ेगी, क्योंकि जमीन माता को जादू के जोर से तरह-२ के रोग कर दिए हैं कि जो तुमको जमीन के शरीर की भूल डाल दी है इससे तुमको खबर नहीं पड़ती है, चाहे जमीन को कितने ही रोग कर दिए हैं, परन्तु तुम तो परचा-२

चन्द्रकुप स्वामी = एक कुंआ या खड्डा जिसका नाम है, राध = खून मास का पीप बनना.

कहते हो और परचों के भरोसे भूले हो; और हिन्दुस्तान के जो तुम हिन्दू-मुसलमान हो, सो तुम सातो-आठो विलायतों के लोगों को और अंग्रेजों को इन सौदागरान के जाल की खबर दो और जो कि मैने बनियों के जाल की किताब लिखवाई, उसको देख-२ के अर्ज करो कि हिन्दुस्तान एक है और दूसरी विलायतें सात-आठ हैं, सो यह ज्यादा हैं और तुम्हारी एक विलायत है और यह बनिये तो 'धनीमार जात' है, सो इन्होंके छलों को मैंने अच्छी तरह से पहचान लिए हैं; इससे थोड़ा बहुत लिखता हूँ कि यह बनिये तो सातो -आठो विलायतों को हिन्दुस्तान में लावेंगे और तुमको मरवा देंगे, सो दूसरी विलायत के आनेवाले ऐसा नहीं जानेंगे कि बनिये राज करने वाले हैं और यही कलंकी हैं और यही सबको गारत करेंगे, ऐसा बिलकुल नहीं समझेंगे और बनिये जादू से नहीं समझने देंगे. सो यह बुद्धि को फेर देंगे, सो उनको भी दगा की खबर नहीं पड़ेगी क्योंकि

नासूर = शरीर की चमडी में बीमारी की वजह से बडा घाव पडना एवम वहां से खून/पीप बहार आना. बेरे = कुआँ.

बनियों का दगा और फरेब बड़ा भारी है और इन्होंने इसी तरह पर सोचा है, कि जिस तरह से हमने हिन्दुस्तान का धन अपने कब्जे में कर लिया, उसी तरह पर सातो-आठो विलायतों का धन काबू में कर लेंगे, कि जैसे रावण वगैरा ने राक्षसी पाप करके, विचार लिया था इस तरह से इन बनियों ने भी अपने दिल में विचारा है. सो दूसरी विलायत के लोगों को यह खबर नहीं है कि हमारा भी धन कब्जे में करके और हमारी औलाद को गारत करके कुल विलायतों में थोड़े-से आदमी रह जावेंगे, जब यह बेईमान हमारी औलाद के ऊपर रावण वगैरा की तरह से छल करके राज करने को करेंगे; सो यह मालूम हो वे जब तो दिल्ली मण्डल का लोभ तक नहीं करे और दिल्ली मण्डल का राज करने पर 'खाक' डालें और सौदागर बच्चों के जात तक को नहीं रक्खें बल्कि 'धांनी में पिलवा देवें,' परन्तु बनियों के कपट का भेद नहीं; ऐसे भूल ही भूल में सातों-आठों विलायतों के लोग और हिन्दुस्तान के

हिन्दू-मुसलमान के बच्चे मारे जावेंगे; इससे मैं हिन्दू-मुसलमान के बच्चों को इन सौदागरान के जाल से वाकिफ करता हूँ क्योंकि यह बनिये सबको गारत करेंगे. सो तुम हिन्दुस्तान के लोगों की औलाद में से अगर कोई भी जब तक जिन्दा रहे और किसी तरह की तकलीफ नहीं पहुॅचे, तो इनके जाल की खबर दूसरी विलायतों के लोगों को देना कि बनियों का जाल संसार की कोशिश से मिटे, अगर दूसरी विलायत के लोगों को वाकिफ नहीं करोगे तो जाल कभी नहीं मिटेगा और भूल ही भूल में सब संसार के लोग मारे जावेंगे और तुम हिन्दुस्तान के हिन्दू मुसलमान की, सातो-आठो विलायतों के लोगों के आगे और राजा -बादशाहों के आगे हाथ जोड़ के यह कहो कि इन बनियों बेईमानों के जाल तो रावण हरनाकुश के मुवाफिक हैं और हम लोग इनके जाल की वजह से आपस में लड़-२ के मरते जाते हैं और फिर यह बेईमान हमको दूसरी विलायतों के हाथों से मरवा देते हैं

और आखिर में तो भूल ही भूल में यह सौदागर बच्चे साातो-आठो विलायतों को अपने राक्षसी पाप से गारत कर देंगे और हम लोग तो इनके जालों से पागल के मुवाफिक हो गए हैं. सो ‘इसमें तुम एक रती की भूल मत समझो और इन बनियों ने हम लोगों की बुद्धि ऐसी खराब कर दी है, कि जो इनका राक्षसी जाल है उसको हम लोग करामात समझते हैं और करामात के भरोसे भूले हुए हैं और जो आप लोगों को जब यह हिन्दुस्तान में लाते हैं, तो हमको आप लोगों की नजरों में कलंकी सुझाते हैं और हमको हमारी बुद्धि फेर के हमारी नजरों में आप लोगों को कलंकी सुझाते हैं; और यह बेईमान ऐसी-२ बातें पहले से चला देते हैं कि हिन्दुस्तान की बात तो दूसरी विलायतों के आनेवालों के सामने यह चलाते हैं कि हिन्दुस्तान में हिन्दू-मुसलमान कलंकी हैं और हिन्दुस्तान के लोगों के सामने यह बात चला देते हैं कि हिन्दुस्तान में दूसरी विलायतों के आने वाले कलंकी

खाक = जिसके अन्दर कुछ भी कार्य योग्य न बाकी. राख, धांनी में पिलवा देवे = तेल निकालने का देशी उपक्रम

हैं और आप 'चोर' अलाहदा के अलाहदा रहते हैं, और हिन्दुस्तान में तो करामातों के बहाने से राक्षसी जाल की किताबें और पुस्तकें चला दी हैं और पुस्तकों में हिन्दू-मुसलमान के बुजुर्गों के नाम लिख दिए हैं, कि जब हिन्दुस्तान में दूसरी विलायत के आवेंगे और उन किताबों में और पोथियों में नाम हिन्दू-मुसलमानों के बुजुर्गों का देखेंगे, तो जाल हिन्दू-मुसलमानों का ही साबित होगा. सो यह बात आप लोगों के समझने और सोचने और ख्याल करने के लायक है कि जो चोर चोरी करेगा तो वोह अपना नाम कब प्रगट होने देगा और नाम चौड़े आने देगा? तो ऐसी बात पर ख्याल करो कि जो जाल हिन्दू-मुसलमान का होवे तो वोह जाल की किताबों और पुस्तकों के ऊपर और अन्दर नाम अपने बुजुर्गों का क्यों लिखें! और अपना नाम क्यों चौड़े आने देवें? यह तो सौदागर -महाजनान के जाल की किताबें हैं. सो इन्होंने अपना नाम चौड़े ना आने के वास्ते

अपने नाम किताबों में नहीं लिखे हैं और हिन्दू - मुसलमान के बुजर्गों के नाम लिख दिए हैं और जो किताबें जाल की इन सौदागर महाजनान के घरों में हैं, उनमें भी नाम हिन्दू-मुसलमानों के बुजुर्गों का ही लिखा हुआ है; बनियों के बुजुर्गों का किताबों में नाम भी नहीं और यह बेईमान सब संसार के बच्चों को गारत करके अपने बच्चों का राज करावेंगे और जो कि इन बनियों का जाल प्रगट हुआ है, सो सबको भुला देंगे और कहेंगे कि हमारा जाल प्रगट मत करो और आगे बादशाहों को भी भुला दिया था, क्योंकि यह बनिये बड़े काफिर हैं, कि लोभ देके भुलावेंगे सो तुम लोग इन बनियों के लालच में मत आना, अगर लालच में भूलोगे तो तुम अपने बच्चों को मरवाओगे और मैं तुम्हारे बच्चे बचने के लिए अर्ज करता हूँ क्योंकि मुझको सभी की दया आती है इससे बनियों के राक्षसी पाप से वाकिफ करता हूँ कि सबके बच्चे बचें क्योंकि इन बनियों की दुकानें दूसरी विलायतों में

पहुँच गई हैं, कि जो दरियाओं के पार विलायते हैं और वहीं पर धन को ले गये हैं, कि जैसे रावण धन को लंका में ले गया था; उसी तरह से यह बनिये भी ले गए हैं. सो अब बनिये हिन्दुस्तान में से हजारों तरह के फरेब करके निकल जावेंगे, क्योंकि धन को इन बनियों ने पहले से दरियाओं के पार पहुँचा दिया है इससे चले जावेंगे; और जब तक कि पैसा थोड़ा बहुत लोगों के पास देखेंगे जब तक हिन्दुस्तान में रहेंगे, परन्तु तुम लोगों को भुला देंगे, कि पैसा हमारे पास नहीं रहा. सो यह बात अभी से कहते हैं कि बनियों के पास पैसा नहीं रहेगा, सो यह बनिये संसार के लोगों को दिखाने के लिए देवाले भी निकालने लगे हैं. सो यह ख्याल करने की बात है कि किसने इनके पास से पैसा छीन लिया है कि जो इनके पास पैसा नहीं रहा है या नहीं रहेगा? और यह बेईमान पैसा तो रावण के मुवाफिक दरियाओं के पार खेंच के लेकर तो आप गए हैं और फिर अपने पास

पैसा नहीं बताते हैं; और जिस टापू पर यह चले जावेंगे, फिर तो गुप्ती पाप कराने वालों को कह-२ करके खूब पाप करावेंगे और सातो-आठो विलायतों में जादू से बीमारी वगैरा कराके या बुद्धि फेरके आपस में लड़ा-२ के या काल वगैरा पड़ा-२ के गारत कर देंगे और जब सब विलायतों में थोड़े-से आदमी रह जावेंगे, जब यह जान जावेंगे कि अब कुल विलायतों में हमारे से कोई लड़ने के लायक नहीं है, जब कुल विलायतों में अपना राज करेंगे, सो इसी वास्ते यह जाल इन बनियों ने चलाया है कि जो धन दुनिया का बनियों ने काबू में कर लिया था वो बनियों के पास था; परन्तु बनिये कहते हैं कि हमारे पास नहीं है, सो इन बनियों के फरेबों का ख्याल करो और पूछो कि धन कोई आदमी थोड़ा ही था जो उठके चला गया? सो यह तो इन बनियों का जाल है, क्योंकि बनियों ने संसार के लोगों की अकल अपने राक्षसी पाप से खराब कर दी है कि जिससे संसार के लोग बनियों की सी कहने को लगते हैं,

और तुम हिन्दू-मुसलमान एक ही टापू में पैदा हुए हो और भाई के मुवाफिक भाई हो, परन्तु राज तुम्हारा जाता रहा और नौकरी और मजदूरी करके खाते हो तो भी संप नहीं, सो राक्षसी पाप से ऐसी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है कि राज तक तुम लोगों का ले लिया है तो भी खबर नहीं, सो देखो भाई! हिन्दुओं ने तो मुसलमानों का क्या लिया है और मुसलमानों ने हिन्दुओं का क्या लिया है कि जो आपस में गुस्सा खाते हैं और संप नही रखते हैं? सो यह सब सबब राक्षसी पाप का है, क्योंकि राक्षसी पाप ऐसा जुल्मी होता है कि बुद्धि खराब कर देता है, क्योंकि पहले ऐसे-२ भक्त लोग थे कि जो देवता स्वरुपी समझे गए हैं वो भी इस जाल से कायल हो गये थे; फिर उन्होंने काफिरों का जुल्म देखके, उन काफिरों को मारके बिलकुल राक्षसी पाप को मिटा दिया -कि जो फिर सतजग होने लगा और आपस में संसार के संप हो गया कि जो एक को एक देखके जीते थे और हर एक के दिल में

दया और नेकी उत्पन्न होती थी, फिर अच्छे कर्म करने की वजह से सब ही संसार के लोग नेकी में चलने लगे और किसी-२ अखबारों में पहले से ऐसी-२ बातें लिख दी हैं कि फलाने वर्ष में लड़ाइयां होंगी और बड़े-२ ऑफिसर और राजा -महाराजा मारे जावेंगे, जब हिन्दू और मुसलमानों में से एक शख्स अवतारी पैदा होगा और यह देखेगा कि अब संसार के लोग आपस में कट कर मर जाते हैं जब संसार के शामिल होके वो औतारी शख्स अपना परचा दिखावेगा और अपना अमल करेगा जब संसार में अच्छी तरह से अमन-चैन होगा. सो देखो भाई, यह बातें सब लिखी हैं सो खिलाफ हैं परन्तु यह सौदागर बच्चे अपने राक्षसी पाप के जादू से ऐसा करेंगे और लोगों को सुझावेंगे कि जैसा लोग अपने दिल में औतार होने का ख्याल करते हैं, परन्तु वो शख्स बनियों के कुल का होगा; सो अपने कुल के लोगों को तो कुछ नुकसान नहीं पहुँचावेगा

और तुम हिन्दू-मुसलमानों को मारेगा और जो कि उसके हुक्म को मानेगा और उसके हुक्म के मुवाफिक चलेगा उनको नहीं मारेगा और जो कि उसकी हुक्म अदूली करेगा उनको मारेगा और जो कि तुम औतार-२ कहते हो, सो यह राक्षसी पाप का जादू है, क्योंकि जैसे हम तुम सब ही विलायतें मनुष्य औतार हैं उसी तरह से तुम्हारी औलाद भी मनुष्य औतार है; सो यह बात हमेशा से है कि जबसे रचना ईश्वर की कायम हुई है जबसे मनुष्य औतार ही है और जो कि अखबारों में मनुष्य औतारों के होने का लिखते हैं वो क्या औतार है, कि जो पहले तो आपस में लड़कर कट मरेंगे जब वो औतारी आवेगा, जब संसार में सुख प्राप्त होगा. सो यह तो नाम रखा हुआ है कि यह मनुष्य औतार है और यह चारपाये और पंखेरु औतार हैं, इससे मेरा कहना यह है कि तुम साता-आठो विलायतों के लोग आपस में हेत इरादा रखो कि तुम्हारी और सबकी

औलादें सलामत रहें और जो कि लोगों के नामका राक्षसी पाप पहले से चला दिया है, सो यह राक्षसी पाप इन बनियों ने दूसरों के नाम से इस गर्ज से चला दिया है कि हम बनिये अपने जाल से किसी पर जाहिर नहीं होंगे और अलेहदा के अलेहदा रह जावेंगे, क्योंकि '' जब हम अपने कुल में हिन्दू-मुसलमान का बेटा बनाके रख देंगे, कि जब हिन्दू-मुसलमान के कौम में किसी राजा -बादशाह के लड़का पैदा होगा तो उसको यह बनिये अपने राक्षसी पाप से छांने मार देवेंगे और उसकी शकल का लड़का यह बनिये अपनी जात के लड़कों में से बैठा देवेंगे कि जिसको तुम औतार कहते हो'' उस रोज यह बनिये ऐसी कला करेंगे और तुमको जादू से याने तुम राजा -बादशाहों का बेटा कि जैसा तुम्हारे बेटा था वैसा ही सुझा देंगे, जिसकी खबर तुमको बिलकुल नहीं पड़ेगी, बल्कि तुम यह जानोगे कि हमारा बेटा है; क्योंकि तुम्हारी नजर को राक्षसी पाप से

अदूली = आदेश का नही मानना

बंद कर देंगे जब हिन्दुओं की जात के तो यह जानेंगे कि हमारी जात का बेटा है और जब मुसलमानों की जात का बेटा बनाके रख देंगे जब मुसलमान की जात के यह जानेंगे कि हमारी जात का बेटा है, परन्तु बनिये लोग ऐसा जानते हैं कि जिस कदर जल्दी कट-२ के मरें और थोड़े रह जावें तो हम अपना राज करें, क्योंकि अखबार के लिखनेवाले और टीपणों के बनाने वाले हिन्दू-मुसलमान की जात के हैं, सो उनको तो लिखने की वजह से कुछ दोष, किसी तरह का नहीं क्योंकि न मालूम की सौदागर बच्चों की किताबों में से देख-२ के लिखते हैं या फकीरों के मुँह से सुन के लिखते हैं या उनके घट में राक्षसी पाप से सुझा देते हैं जिससे लिखते हैं, जिसकी खबर नहीं. इसकी तो वही अखबार लिखने वाले और टीपणों के बनाने वाले जानें, परन्तु अखबार के लिखने वाले और टीपणों के बनाने वाले तो इन बनियों के जाल की किताबों को इससे मानते हैं कि

बनियों ने अपनी अकलमंदी से हिन्दू-मुसलमान के बुजुर्गों का नाम उन जाल की किताबों में लिख दिया है इससे उन किताबों को हिन्दू-मुसलमान अपनी जानते हैं; देखो, इस कदर जाल होता जाता है तो भी नहीं सोचते हैं, सो ख्याल करना चाहिए कि जब हम कट-कट के मर जावेंगे जब तो निहारयत ही बुरी बात है, परन्तु इन बनियों ने यह कैसी अकलमंदी की है, कि हमारी जात का शख्स हिन्दू-मुसलमान के जात में बेटा होकर रहेगा जब हिन्दू-मुसलमान उसको अपना जानेंगे कि हमारी जात में पैदा हुआ है, इससे भूल ही भूल में रह जावेंगे और उसको परमेश्वर के मुवाफिक जानेंगे सो आदमी तो बंदा गंदा है, परमेश्वर किस तरह से हो सकता है? क्योंकि परमेश्वर की तो ज्योत सब जीवाजून में प्रगट है, सो वो क्या परमेश्वर है और वो कब परमेश्वर हो सकता है? परन्तु बनियों ने राक्षसी पाप के जादू से अकल ऐसी खराब कर दी है कि जिससे ऐसा ही सूझता है,

क्योंकि जादू के जुल्म से आदमी को परमेश्वर सुझा देते हैं, सो यह अकलमंदी इन बनियों ने इस गर्ज से की है कि जब हमारी जात का शख्स इन हिन्दुओं के जात में बेटा होके रहेगा और जबके लड़ाई और दंगा वगैरा होगा जब इन हिन्दू -मुसलमान का बेटा औतारी हमारी तरफ को देखेगा तो हिन्दू-मुसलमान हमारी जात का नाम बिलकुल नहीं लेंगे ऐसे औतार होने की बात पहले से जाल करके संसार के लोगों को राक्षसी पाप से सुझा दी है, परन्तु अखबार वालों और टीपणों वालों और बनाने वालों को इन सौदागरान के जालों की बिलकुल खबर नहीं है, वो तो जाल की किताबों को देख-देख के और लोगों की जबानी सुन-२ के लिख देते हैं वैसा ही हो जाता है, परन्तु "होता तो उसी हालत में है कि जब चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर यह बनिये पाप कराते हैं जब वो टीपणों और अखबार की बातें सच्ची हो जाती हैं" और जो

पाप नहीं करावें तो किसी का भी बुरा नहीं होता है, परन्तु यह अकलमंदी बनियों ने अखबार वालों के मराने के वास्ते की है कि जब कोई शख्स समझेगा तो यह जानेगा कि जिन्होंने अखबार और टीपणे बनाए हैं और चलाए हैं, वहीं राक्षसी पाप करने वाले हैं; क्योंकि इनको पहले से खबर पड़ी है इससे इन्होंने अखबार को और टीपणों को बनाया है, परन्तु अखबार के बनाने वालों का राक्षसी पाप नहीं है, यह तो बनियों का राक्षसी पाप है परन्तु बनिये बेईमान ऐसे हैं कि जो संसार के नाम का पाप आपस में लड़ाई कराने के करा देवें तो भाई -२ आपस में लड़कर मर जावें, अगरचे राक्षसी पाप का कराना संसार के नाम से थोड़ा बहुत छोड़ देवें तो संसार के लोगों की अकल दुरुस्त हो जाती है, जब संसार के लोग यह कहने को लग जाते हैं कि क्यों लड़ें? हरगिज-२ नहीं लड़ना चाहिए, फिर इसी तरह का ख्याल करके नहीं लड़ते हैं बल्कि लड़ना छोड़ देते हैं.

सो देखो भाई, कि जब यह बनिये संसार के नामका राक्षसी पाप का करना छोड़ देते हैं जब किसी का भी बुरा नहीं होता है और न संसार के लोग आपस में किसी के नाम का बुरा चाहते हैं और न करते हैं, परन्तु यह बनिये कुल पाप को नहीं छोड़ते हैं और जबके थोड़ा बहुत छोड़ देते हैं जब लड़ाइयाँ भी बंद हो जाती हैं, जब ही संसार के लोगों को जादू के जोर से ऐसा सुझा देते हैं कि कोई औतार पैदा हुआ है, परन्तु संसार के लोगों की अक्ल खराब कर दी है कि कुछ नहीं सोचते. हालांकि ईश्वर के घर में सिंह और बकरी शामिल चरती-ऐसा संप था, परन्तु लोगों की अकल ऐसी खराब हो रही है कि जो एक के लिए एक खाने को दौड़ता है; सो यह राक्षसी पाप का सबब है, क्योंकि यह सौदागर बच्चे आदमी को भी संसार में परमेश्वर सुझा देते हैं और परमेश्वर को संसार के लोगों से भुला देते हैं कि जिसने जमीन -आसमान बनाया है और रचना रची है, परन्तु इस बात को कोई भी

नहीं सोचता है. सो यह राक्षसी पाप का सबब है, क्योंकि राक्षसी पाप ऐसा बुरा है कि कुछ का कुछ सुझा देते हैं और भूल डाल देते हैं, सो इस बात को तुम लोग अच्छी तरह से समझो और राक्षसी पाप को मिटाओ तो सभों कि औलाद बचे, क्योंकि यह राक्षसी पाप बनियों का है और यही अपने राक्षसी पाप से संसार को कुछ का कुछ सुझा देते हैं और कुछ का कुछ कर देते हैं, जिससे संसार के लोग यह कहने लग जाते हैं और ईश्वर को भूल जाते हैं; सो संसार के लोगों को तो कुछ दोष किसी तरह का नहीं, क्योंकि बुद्धि राक्षसी पाप के जुलम से कैद कर दी है क्योंकि यह बनिये बेईमान ऐसा करते हैं कि जिसका राज डुबोना होता है तो पहले अपने राक्षसी पाप के जुलम से उस राजा -बादशाह, कि जो राज गादी पर बैठा होवे उसकी बुद्धि भ्रष्ट कर देते हैं; जब वो राजा -बादशाह दुनिया में इन्साफ नहीं करते हैं बल्कि जुलम करने को लग जाते हैं,

और जिसकी बुद्धि भ्रष्ट नहीं करें और राज खोना होवे तो उसको मार देते हैं. जब यह बनिये अपने कुल में से सलाह करके अपने कुल का आदमी उस राजगादी पर बैठा देते हैं, कि जिसको मार देते हैं, अगरचे वो भी जुल्म करने को लग जावे कि जो बनियों ने अपने कुल का बैठाया होवे तो बदनामी राजा -बादशाहों के कुल को ही देते हैं, तो बदनामी भी उनको ही लगती है; और जबकि 'राज डूबा तो कुल और औलाद डूबी जिनका कि राज होवे,' अगर यह बनिये अपने राक्षसी पाप से नजर बंद कर देते हैं कि जब तक वो राज का करने वाला बनिया जिन्दा रहवे और जो कि राजा - बादशाह मर जाते हैं जब यह बनिये अपने कुल औलाद के आदमी उस राजा -बादशाह की जगह पर, कि जो राजा -बादशाह मर गया, राज करने को बैठा देते हैं और वो राज करता है तो वो राज का करनेवाला बनिया कि जो राज गादी पर राज

करने के वास्ते बैठा, वोह राजा -बादशाह की औरतों को और उनकी औलाद वगैरा को उसकी सूरत जादू के जोर से राक्षसी पाप के करनेवाले बनिये हूबहू वैसी ही दिखा देते हैं, कि जिस शक्ल का राजा -बादशाह मार देते हैं और वैसी ही शक्ल और सूरत, मय कान और नाक वगैरा के अपने जादू के जोर से दिखा देते हैं चाहे उसकी रानी हो या माँ हो, परन्तु पहले उनकी नजरों को राक्षसी पाप के जुलम से बंद कर देते हैं कि जो उस राजा की रैयत और कुल के आदमी वगैरा और अहलकार वगैरा होते हैं उनकी नजर बंद कर देते हैं; जब उनको ऐसा ही सूझता है कि राज का धनी यह है, परन्तु उनको यह बात मालूम नहीं होती है कि हमारा धनी मारा गया और यह दूसरा छल करके और ही धनी आया है, सो मालूम नहीं होता है; क्योंकि जब नजरबंद हो जाती है जब कुछ मालूम नहीं होता है और अलावा इसके ऐसा भी कर देते हैं कि जो राजा-

बादशाह को नहीं मारे तो उसकी राक्षसी पाप से बुद्धि भ्रष्ट कर देते हैं इससे वो जुल्म करने को लग जाते हैं और राज को छूबो देते हैं और जबके जुलम करते हुए देखते हैं तो दूसरे राज को ले लेते हैं, जब वो आप ही आप डूब गया. सो इन बनियों के ऐसे-२ जाल हैं, क्योंकि जब बाजीगर तमाशा करते हैं तो 'तमाशगिर' जमे होते जाते हैं, तो उस वक्त सबकी नजरबंद हो जाती है, तो उनको बाजीगर अपने तमाशों से तरह-२ के दरकत फलदार और रुपया पैसा वगैरह दिखा देते हैं; सो सब लोग देखते हैं और सब कहते हैं कि बाजीगरों का जादू है सो इस बात की खबर तो दुनिया को अच्छी तरह से मालूम है परन्तु यह जादू भी बनियों के राक्षसी पाप से होता है, क्योंकि जब बनिये राक्षसी पाप को करते हैं जब बाजीगरों का जादू चलता है, परन्तु बाजीगरों को मालूम भी नहीं है वो तो यह जानते हैं कि हमने किसी देवता को बस में किया है,

जिससे हमारा जादू चलता है परन्तु सब काम का होना बनियों के राक्षसी पाप से है, परन्तु बाजीगर ऐसे भूल गए हैं कि जो भूत, पलीत और देवताओं के निसबत कहते हैं कि हमने बस में कर लिया है, जिससे जादू चलता है. सो सब गलत बात है, क्योंकि जिस तरह से रावण ने 'तीन लोक' की बुद्धि बस में कर ली थी, उसी तरह से इन बनियों ने भी तीन लोक की बुद्धि बस में कर ली है परन्तु बुद्धि राक्षसी पाप की वजह से बस में की है कि जिसको तुम स्वर्ग और नर्क कहते वो बनियों के घर का राक्षसी पाप है; परन्तु उसी राक्षसी पाप से बस में कर ली है, कि जो 'बाजीगर' और 'कारबेलिया' कि जो कोई संसार में जादू को सीख के सिखाता है और एक-२ के पास से सीखते हैं. सो यह रस्ता बनियों ने पहले से चला दिया है, सो सुन-२ के और देख-२ के करने को लग जाते हैं और फिर उनके घट में देवताओं और भूतों का सुझा देते हैं जिससे वो बाजीगर वगैरह यह जानते हैं

तमाशगिर = देखने वाले

कि हमने देवताओं को और भूत-पलीत को बस में किया है जिससे हमारी करामात चलती है और जो कि भूत-पलीत सुझाते हैं वो बनियों का गुप्ती पाप है कि जिसको दुनिया स्वर्ग-नर्क कहती है और चौरासी लाख कुण्डियाँ राध -लहू की बताते हैं वो बनियों के घर का अलोप पाप है. सो यह बनिये इस गर्ज से लोगों के दिल में सुझाते हैं कि जो बाजीगर और कारबेलिया और संसार के लोग सीखते हैं, सो यह बनियों ने सभों को मराने के वास्ते अकल की है कि जब कोई करेगा तो यह जानेंगे कि जादू तो यह करते हैं जिससे जादू चलता है, क्योंकि वो संसार को दिखा के करते हैं जिससे वहीं पकडे. जावेंगे; सो यह संसार को तो खबर नहीं है कि हमारे मुवाफिक यह भी जादू में कैद है, सो यह तो बिलकुल ख्याल नहीं करते कि बेचारे भूल में मारे जावेंगे क्योंकि इन्होंसे जादू नहीं चलता, वो तो बनियों का अलोप पाप हो रहा है क्योंकि

गुप्ती पाप के कराने में हजारों रुपया खर्च होता है' जब राक्षसी पाप चलता है और जो कि दुनियाँ में तमाशा दिखाते हैं उनको बनियों के भेद की खबर नही है; अगरचे खबर होवे कि बनियों ने हमारे बच्चे मराने को यह राक्षसी पाप चलाया है कि जिसको हमने खेल समझ के सीखा है, अगर यह मालूम होवे कि यह बनियों का जादू है तो कभी तमाशा वगैरा नहीं करें और न करना सीखें और न किसी को दिखावें, क्योंकि वो तो बेचारे भूत-पलीत और देवताओं के बहाने से भूले हुए हैं; क्योंकि राक्षसी पाप के करनेवाले बनिये चौड़े नहीं आते हैं, इससे संसार के ऊपर और सभों के ऊपर इन बनियों के राक्षसी पाप का छाया पड़ा है, इससे सभों की अकल फिरी हुई है जिससे यह बनिये अपने जादू से लोगों की बुद्धि फेरके और उन बाजीगरों को मराने के वास्ते ऐसा जादू करवाते हैं और जब इन बनियों को अपने कुल के आदमियों को राज कराना होवे तो

कारबेलिया = रास्थान में सांप पकडनेवाली एक जाति का नाम है

राजा -बादशाह को मार देते हैं; और जिस घोड़े के ऊपर या जिस सवारी के ऊपर राजा -बादशाह सैर करने को या शिकार खेलने को गया होवे तो उसको वहाँ पे मार देते हैं और उसी वक्त अपने कुल के आदमी को उसकी सवारी पर बनिये राजा -बादशाह की शक्ल बनकर वापिस घर आता है और राजा -बादशाह की तरह से ही सब काम करता है, जिससे कुछ मालूम नहीं होता है और वो राज करता रहता है. इस बात को तुम संसार के लोग सच-२ जानना और इस तरह से ख्याल न करना कि इस किताब में ऐसी बेहूदा बातें क्यों लिखवाई हैं, कि जैसे कोई लड़का नादान, बावला और बेवकूफ बातें करता है, इस तरह से यह बातें लिखवाई हैं; परन्तु गरीब की हाथ जोड़कर अर्ज है कि जो मैंने इन बनियों के जाल की बातें अपनी जबान से किताब में बोल -२ के लिखवाई है वो दुरस्त और सही जानता हूँ और तुम भी दुरस्त और सही जानों और बावला

और अहमक और नादान और बेवकूफ और गैले बच्चों की सी बातों पर ख्याल मत लाओ, क्योंकि मैं बनियों के राक्षसी पाप में कैद हो रहा हूँ और तुमको इन बनियों का राक्षसी पाप मालूम नहीं है. जिस वक्त में रावण ने जाल चलाया था तब सीता व रामचंद्रजी को धोखा दिया, याने जादू से भेष बदल के हिरण हुआ और रामचंद्रजी ऐसा नहीं जानते थे कि रावण ही था; असल में रावण ही था, परन्तु जादू के जोर से हिरण मालूम हुआ, यह तो शनिचरजी महाराज ने वाकिफ किया. अगर वो बात दुरस्त है तो यह भी सही समझना, तुम लोग मुझको बावला व गैला वगैरा जानोगे, क्योंकि इन बनियों ने मुझको अपने राक्षसी पाप से अगले देवताओं के चेहरे, कि जो भक्त हो-हो के मर गए हैं उनके चेहरे दिखाए हैं क्योंकि जब कहीं का राजा -बादशाह किसी मुलक में आता है तो गरीब का चेहरा सुझा देते हैं कि कोई गरीब किसी मुलक का आया है और जब कोई गरीब

किसी मुल्क का आता है तो जादू के जोर से राजा - बादशाह का चेहरा सुझा देते हैं कि राजा -बादशाह किसी मुल्क का आया है. सो इन बनियों के करतूतों को मैंने अच्छी तरह से देख लिया है और देखता हूँ कि यह बनिये बेइमान अपने राक्षसी पाप की वजह से हर एक का चेहरा सुझा देतें हैं, परन्तु मैं ऐसा गैला नहीं हूँ यह तो बनियों का जादू है सो कुछ का कुछ सुझा देते हैं; क्योंकि ''मैं अपने ऊपर बीती हुई लिखता हूँ सो इसमें बिलकुल झूठ नहीं'', इसमें झूठ होवे तो तुम संसार के लोग मुझसे कहो, कि जिसको तुम १४वीं या १६वीं विद्या कहते हो वो क्या चीज है? सो वो कहीं पर सुनी होगी और किसी-२ किताबों में और पुस्तकों में लिखी होगी. सो तुम कहते हो कि राजाभोज १४वीं और १५वीं और १६वीं विद्या सीखने को गुरु गोरखनाथजी के पास गया था और साथ में बोलिया धोबी गया था, परन्तु जबके गोरखनाथजी ने राजा

भोज को १५वीं १६वीं विद्या सुनाई जब बोलिया धोबी बाहर खड़ा था, सो बोलिया धोबी ने भी सुन लिया; सो राजाभोज ने भी सीखली और बोलिया धोबी ने भी सीख ली. सो दुनिया में इनका किस्सा भी कहते हैं सो किसी-किसी किताबों में भी किस्सा का हाल लिखा ही होगा, सो जबकि इन दोनों ने १४वीं और १५वीं विद्या सीख ली, सो जबकि राजाभोज घोड़े के पास सवार होने को आया तो बोलिया धोबी ने राजाभोज से कहा, कि अन्नदाता गोरखनाथजी महाराज ने क्या सिखाया है? सो मुझको भी बताओ जब राजाभोज ने कहा कि मुझको तो कुछ भी नहीं सिखाया, हम तो यूं ही सत-संगत करते थे; जब बोलिया धोबी ने कहा कि जो बात आपने गोरखनाथजी से सीखी है वो मैंने भी सीख ली है, क्योंकि जब गोरखनाथजी महाराज आपको सुनाते थे उस वक्त मैं बाहर खड़ा था. सो मैंने भी बाहर से सुनके सीख लिया; जब

गैला = रास्ते से भूला हुआ सख्स/मनुष्यता से हठकर काम करना

राजाभोज ने बोलिया धोबी से कहा कि जो तुमने सीखा है वो हमको भी दिखाओ, सो नहीं मालूम बोलिया धोबी ने राजा साहब को किस रुप से दिखाया सो यह तो मालूम नहीं, क्योंकि मैं पढा हुआ नहीं अगर मैं पढ़ा हुआ होता तो उसके किस्सों को, कि जिस किताब में लिखा हुआ है पढ़कर जैसा हाल होता, वैसा ही लिख देता. खैर बोलिया धोबी ने सीखा हुआ हाल राजा साहब को बताया, जब राजा साहब ने बोलिया से कहा कि तुमने भी यह सीख लिया और मैंने भी सीखा है, सो हम और तुम एक ही गुरु के चेले हैं सो हम और तुम गुरु भाई के मुवाफिक हैं जब तो राजा साहब बोले कि तुमने सीख के मेरे को दिखाया, सो मैं भी तुझे दिखाता हूँ. सो राजा साहब तोते के खोली में गए उस वक्त बोलिया धोबी राजा साहब की खोली में चला गया, सो राजा साहब बन गया और महलों में आने जाने लगा और राज पाट करने लगा. ओर मुल्कों के तोतों को पकड़वाके

मरवाने लगा, जिसकी वजह यह थी कि जिस तोते के शरीर में राजा अपने जीव को ले गए हैं, सो जबके कुल तोते मारे जावेंगे और कोई तोता नहीं होगा, जब राजा भोज भी मारे जावेंगे, इस गर्ज से तोतों को मरवाने लगा और दुनिया में यह भी कहते हैं कि राजाभोज की पटरानी राजा भोज को बोलिया धोबी जानके अपने पास नहीं आने दिया करती थी तो राजी को कह गए थे क्योंकि जिस वक्त में राजाभोज १४ वीं-१५ वीं विद्या सीखने गए थे, बाकी और सब रानियों के पास बोलिया धोबी आता जाता था. सो उन रानियों को इस छल का कुछ भेद नहीं था जिससे आता जाता था, परन्तु बोलिया धोबी के छल का भेद पटरानी को मालूम हो गया था कि अपना राजा नहीं है, कि जो और सब रानियों के पास आता जाता है; क्योंकि भोज राजा को तो किसी ने छल लिया है, परन्तु जिस तोते के अन्दर राजाभोज अपने जीव को ले गए थे, उस

तोते को किसी पातर ने या किसी और जात ने पकड़ लिया था. सो जिस जात के घर में तोता था, उससे तोते ने कहा कि मैं राजा भोज हूँ और मैं अपनी खोली को छोड़के तोते की खोली में आ गया हूँ और मेरी खोली में बोलिया धोबी घुस गया है; सो वो राजा बन बैठा है, परन्तु राजा मैं हूँ क्योंकि मैं और धोबी बोलिया १४ वीं और १५वीं विद्या और १६वीं कला सीखने को गोरखनाथजी के पास गये थे, सो उसने भी सुनके सीख लिया इससे बोलिया धोबी मेरे से दगा करके मेरी खोली में घुस गया; सो इसकी खबर तुम मेरी पटरानी को दो, कि जो बोलिया धोबी को अपने पास नहीं आने देती है, उससे कहो कि तुम्हारा राजा तोते की खोली में है, सो वो मेरे मकान पर है सो उसने पटरानी को खबर दी, जब पटरानी ने तोते को मँगवाया; जब तोते ने पटरानी से यह कहा कि रानी साहबा तुम बोलिया धोबी से यह कहना कि राजाभोज साहब जो

तोते के खोली में = मीट्ठू के शरीर में जादू से घुस जाना

तुमने १४ वीं और १६वीं विद्या सीखी है वो हमको बताओ तो हम भी सीखें, जब तुमको हम भी सब रानियों की तरह से अपने पास आने देंगे, सो पटरानी ने यह बातें कहीं, सो बोलिया धोबी ने सुनी और सुनकर अपनी सीखी हुई विद्या पटरानी को बताई. सो जिस वक्त कि बोलिया धोबी ने राजाभोज की पटरानी को अपनी सीखी हुई विद्या बताई उस वक्त भोज साहब तोते की खोली में से निकलकर अपनी असली खोली में आ गए, क्योंकि बोलिया धोबी बकरे की खोली में चला गया था, सो जबके राजाभोज अपनी खोली में आ गए और बोलिया धोबी को बकरे की खोली में देखा जब भोज राजा साहब उस बकरे के पीछे, कि जिसमें बोलिया धोबी जीव को ले गया था उसके पीछे वास्ते मारने को भागे, क्योंकि बोलिया धोबी बकरा होके बाजार में चला गया था, जब इन बनियोंने छुड़वा दिया और कहने लगे कि अन्नदाता इसको अमर करके छोड़ दो

पातर = राजस्थानी भाषा में एक नृतकी-जिसकी समाज में इज्जत नहीं होती है

और इसको मत मारो, सो इस बात का चर्चा संसार में भी करते हैं सो वो बात तो तुम सच मानते हो. सो देखो भाई, कि जिसको तुम १४वीं और १५वीं विद्या जो कहते हो, वो करामात नहीं है, वो तो बनियों के घर का जादू है परन्तु इन बनियों ने अपने गुप्ती पाप को प्रगट न होने के लिये तरह -२ के किस्से चला दिये है कि जिससे राजा -बादशाह और साधु-फकीर और रैयत भूली हुई है, अगर कोई समझेगा तो भी हम बनिये तो अलेहदा के अलेहदा रह जावेंगे और राजा -बादशाह, साधु-फकीर और रैयत वगैरा मारी जावेगी क्योंकि समझने वाले राजा -बादशाह यह जानेंगे कि राक्षसी पाप इनका ही है, जिससे यह दुनिया को बहकाते फिरते हैं. सो यह अकलमंदी इन बनियों ने उन्होंके मराने के वास्ते की है; अलावा इसके यह बनिये अपने जादू से नजरबन्द कर देते हैं और जिसको कि मारना होता है उसको

मार देते हैं, जब उसके शक्ल का दूसरा शख्स अपने कुल में से करके सुझा देते हैं, सो राजा भोज को भी इन बनियों ही ने मारा होगा क्योंकि गोरखनाथजी से और बोलिया धोबी से तो कुछ भी नहीं हो सकता था. होता तो बनियों के राक्षसी पाप से. क्योंकि राक्षसी पाप के कराने में करोड़ों रुपया खर्च होता है जब जुल्म होता है, सो गुरु गोरखनाथजी ऐसे पापी और दुष्ट थोड़ा ही थे, जो राक्षसी पाप का जुल्म चलाते? यह तो बनियों ने चलाया है और नाम लोगों के और राजा -बादशाहों के और साधु-फकीरों के, वास्ते मराने के छल करके लगा दिए हैं, क्योंकि जीव खोली में से निकलकर दूसरी खोली में नहीं जा सकता है और तमाम बातें झूठी हैं; न राजा भोज तोते की खोली में और न बोलिया धोबी राजा साहब की खोली में, न बकरे की खोली में गया, यह तमाम झूठी -२ बातें जाल की हैं. परन्तु जादू से ऐसा तो जरुर कर देते हैं कि कंगाल को राजा और राजा को

कंगाल जादू से सुझा देते हैं, जैसे कि मिट्टी का जादू से रुपया सुझाते हैं, क्योंकि जीवकला तो इस तरह पर है कि जिसको हम और तुम और सब संसार के लोग देख रहे हैं, क्योंकि "जब आदमी और चौपाया-पंखेरु वगैरा भोग विलास करते हैं जब उनकी बिंद से बेटा-बेटी पैदा हो जाते हैं." सो देखो भाई, जीवकला तो इस तरह पर है और अलावा इसके जो झाड़ वनस्पति वगैरा और रिजक वगैरा है, वो भी अपने-२ बीज से पैदा होते हैं. सो इस बात को भी हम और तुम और सब संसार के लोग देख रहे हैं परन्तु बुद्धि राक्षसी पाप से ऐसी भ्रष्ट कर दी है कि जिससे परमेश्वर की कला को भूले हुए हैं, सो मालिक की रचना जो है उसको तो बिलकुल इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से बुद्धि भ्रष्ट करके भुला दी है और जो कि राक्षसी पाप से संसार की बुद्धि फेरके दिखलाते हैं उसको मालिक की कुदरत और रचना समझते हैं; सो यह राक्षसी पाप से होता है

कि जिस तरह से जीव कला रावण ने भुला दी थी, कि जो रावण के राक्षसी पाप का वर्तमान सूझता था, सो तमाम दुनिया भूल गई थी कि जो रावण के वर्तमान को भी परमेश्वर की कला जानते थे, उसी तरह से इन बनियों ने भी रावण से कई गुणा ज्यादा राक्षसी पाप के जुल्म करके संसार के लोगों को सुझाते हैं, सो अब रावण की तरह से बनियों की कला को परमेश्वर की कुदरत जानते हैं. सो भाइयों यह परमेश्वर की कुदरत नहीं है यह बनियों का राक्षसी पाप है, क्योंकि जो परमेश्वर की रचना है वो तो हम और तुम सब ही अपनी-२ आँखों से देख रहे हैं, परन्तु यह बनिये अपने जादू से देवताओं का और भूतों का सुझाते हैं; सो यह तो कुल राक्षसी पाप है क्योंकि उसकी कुदरत तो ऐसी है कि जो उसकी कुदरत से हर एक चीज पैदा होती है कि जिसको हम और तुम सब संसार के लोग अपनी-२ आँखों से देखते हैं; क्योंकि परमेश्वर की

कला छानी नहीं है क्योंकि सब जीवाजून की और आदमी वगैरा की औलाद होती हैं, जिनको सबही अपनी-२ आँखों से देखते हैं; सो यह 'आवागवन' यही है कि जिस-२ की औलाद है और जो कि बीज है वो जीवकला है और जोकि गुप्ती पाप दुनिया के नाम का चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर कराते हैं, जब संसार को सपना वगैरा होते हैं, कि जो संसार के आदमी मर गए् हैं, उनको यह बनिये जादू से सपने में सुझा देते हैं और दिखाते हैं; सो देखो भाई, मरे हुए् कहाँ से दिखते हैं? लेकिन इन बनियों के राक्षसी पाप से मरे हुओं के चेहरे होके सूझते हैं और दिख जाते हैं, सो चेहरे तो नहीं सूझते हैं परन्तु इन बनियों का राक्षसी पाप जो है, वो मरे हुओं का चेहरा होके सूझता है और किसी-२ को जागते हुए् भी सुपने करते हैं, सो उनको जागते हुए् सुपनों में उनका चेहरा सूझाते हैं, कि जो उनके सामने मरे हैं कि जिनको जिन्दा देखा था, उनका

चेहरा सुझा देते हैं;? सो जिस वक्त कि राक्षसी पाप को करते हैं और जिस किसी को कि चेहरा सुझाना होवे तो हू-ब-हू वैसा ही चेहरा सुझा देते हैं कि जिस शख्स को जैसा जिन्दा देखा था, वैसा ही बाद मरने के उस शख्स को यह बनिये राक्षसी पाप से जागते सपने दिखा देते हैं. जब सपनों के देखने वाले संसार में सुपनों की बातें कहने को लग जाते हैं कि मैंने फलाने शख्स को देखा है कि जो मर गया है, सो इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से हजारों को भूत-पलीत वगैरा बना दिया है सो यह जागता सुपना है, कि नींद में और जागते में सुझाते हैं;? और यह सौदागर बच्चे अपने जादू के जोर से भूत-पलीत का नाम लगाकर हजारों आदमियों को मार देते हैं. सो यह संसार के भुलाने के लिए तरह-२ के बहाने और छल लगा देते हैं; और संसार में यह जो कहते हैं कि भूत-पलीत, जन परी वगैरा अमर हैं और जो कि आदमी का जीव निकलता है

जब वो जीव हर एक के जून में चला जाता है. सो जीव किसी का किसी में नहीं जाता है, यह तो बनियों का जादू है क्योंकि जिस बीज का दरकत होगा, उसी का फल पैदा होगा याने जो बीज जिस चीज का बोया जाता है, वैसा ही उगता है और दिखाई देता है; बस यही आवागवन है क्योंकि "आदमी के बीज से आदमी होता है और जानवर के बीज से जानवर होता है" फिर इसी तरह से हर एक चीज अपने-२ बीज से पैदा होती है और जो कला परमेश्वर की बनाई हुई है वो कुछ छानी नहीं है और जो कि संसार में कहते हैं कि एक-२ का जीव निकल के दूसरे की खोली में चला जाता है, सो जीव किसी का किसी के खोली में नहीं जाता है क्योंकि गुप्ती पाप से सपना वगैरह होता है और भूत-पलीत वगैरा सुझाते हैं. सो यह बनिये राक्षसी पाप को कराते हैं सो संसार को गारत करते हैं, जिससे वो सपना वगैरा होता है; सो गुप्ती पाप के भुलाने के लिए लाखों

तरह के किस्से चला दिए हैं, परन्तु यह बनिये राक्षसी पाप कराते हैं और ऐसा भी करते हैं कि जिसको मार देते हैं उसी की शक्ल का दूसरा आदमी लोगों को जादू से सुझा देते हैं और दिखा देते हैं. मिसाल इसकी यह है, कि जब बाजीगर तमाशा करते हैं तो कैसे-२ खेल उमदा दिखाते हैं, कि जो मिट्टी का रुपया करके और सब चीजें तरह-२ की दिखला देते हैं; जब तुमको मालूम होता है कि यह रुपया नहीं है और दूसरी चीजें नहीं हैं बल्कि तुम तो उनको ही रुपया और उमदा चीजें जानते हो और देखते हो, सो जबके राजा -बादशाह को और साधु-फकीरों को और गरीब -गुरबा को और अमीर - उमराव को सपना होता है, जब तुम सपनों में उनको देखते हो कि जो तुम अपने बाप-दादे और बहुत से आदमियों को जीता देखते हो, सो उनको तुम सपनों में वैसा ही देखते हो जैसा तुमने अपने बाप-दादे को जीता देखा था, वैसा ही सपनों में मरे हुओं को

देखते हो. सो जबके तुम सपना देखते हो और चेहरे सपनों में देखते हो तो कुछ फर्क सूझता है! तो कुछ भी फर्क नहीं सूझता है, हु-ब-हू वैसा ही चेहरा सपनों में सूझता है कि जैसा उनको जिन्दगी में देखा था, वैसा ही बाद मरने के सपनों में दिखता है; और दुनिया में भी कहते हैं कि जादू से मुर्दो के चेहरे सुझा देते हैं और बाजीगर वगैरा भी कहते हैं.सो परमेश्वर की कला को तो भूल गए हैं और जादू की कला को ही परमेश्वर की कला समझते हैं, ऐसी बुद्धि बस में कर ली है ; सो बाद मरने के सपनों में जो चेहरे दिखते हैं सो बनियों के राक्षसी पाप से ही दिखते हैं वो पीछे नहीं आते हैं, यह तो बनियों का गुप्ती पाप है, सो यह गुप्ती पाप तुम संसार को मरे हुओं का चेहरा होके सूझता है; सो यह सपने तो तुम संसार को राक्षसी पाप से करते हैं, सो सपनों की तो संसार को खबर ही है कि जैसे २ सपने कराते हैं कि रात में सोते हुओं का सपना करें तो दिन दिखा दें और

जो दिन में सोते हुए होवे तो उनको सपना करें तो दिन की रात सपने में सुझा देवें, इसी तरह से मरे हुओं का भी सपना करके सुझा देते हैं. सो तुमको मालूम ही है क्योकि चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर चौरासी लाख जीवाजून को ऐसे दुख देते हैं जिससे वो बेहोश होकर अपने जीव को भूल जाते हैं, सो यह बनिये ऐसे-२ जुल्म करके जीवाजून को सता देते हैं जिससे ऐसे-२ सपने होते हैं सो जबकि बनियों के राक्षसी पाप का साया संसार के लोगों पर पड़ता है जब संसार को ऐसे जुलम के सपने होते हैं, कि जो दिन की रात सूझती है और रात का दिन सूझता है सो इसी तरह से करोड़ों तरह के सपने होते हैं जिसका कुछ अंदाज नहीं, अगर एक बात होवे तो मैं लिखूँ; और आगे किसी राजा -बादशाह को या गरीब -गुरबा को सपना होता था, तो वो उसी वक्त जान जाते थे कि हमको और संसार को कोई राक्षसी पाप से गारत किया चाहता है जिससे सपना

वगैर होते हैं, सो इस बात को सोचकर राक्षसी पाप की तलाश करते थे, परन्तु इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से ऐसी बुद्धि कैद करदी है कि जो राजा -बादशाह गरीब -गुरबा तक नहीं समझते हैं चाहे लाखों तरह के सपने और बिगन करें तो भी नहीं समझें, क्योंकि इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से संसार के लोगों की ऐसी बुद्धि कैद करदी है कि जो समझाये से भी नहीं समझते हैं; जिस तरह से कि राजाभोज और बोलिया धोबी की विद्या कहते हैं सो तो सब दुनिया ने सुना ही है. सो देखो भाई, खोलियों में किसी का भी जीव नहीं जाता; हाँ जिसको मार देते हैं उसका शरीर तो जादू से सुझा देते हैं, सो जिसकी शक्ल का सुझाना होवे उसी की शक्ल का जादू से सुझा देते हैं. सो यह तो सपने होते हैं, सो मरे हुओं के चेहरे सपनों में सुझा देते हैं सो यह तो तुम संसार के लोगों को मालूम ही है; सो इसी तरह से जागने में नजरबन्द कर देवें तो वो जागता सपना है परन्तु

जीव तो किसी के खोलियों में नहीं जाता है, परन्तु शरीर उसका जरुर जादू से सुझा देते हैं. सो जिस तरह से कि बोलिया धोबी को और राजभोज को मारा होगा, उसी तरह से इन सौदागर बच्चों ने दिल्ली के बादशाह को मार दिया होगा और दिल्ली के बादशाह की जगह सौदागर बच्चों ने अपनी जात का बैठा दिया होगा और अलावा इसके यह जो हिन्दुस्तान में कहते हैं कि जिस वक्त दिल्ली का बादशाह तख्त पर बैठा था और राज करता था उस वक्त में बादशाह ने राजाओं से नो रोजा लिया था और राजाओं की बेटियों को माँगता था, सो बादशाह ने राजाओं को इस तरह से दुख दिए थे सो खबर नहीं, कि इन सौदागर बच्चों ने अपने जादू के जुल्म से बादशाह की बुद्धि भ्रष्ट कर दी होगी, इससे बादशाह जुलम करने को लग गए होंगे; परन्तु इस बात का असली हाल मुझको मालूम नहीं, कि बनियों ने दिल्ली के बादशाह को मारके अपनी जात का तख्त पर

बैठा दिया होगा. सो इस बात को तो बनियों ही की जात के जानें, सो इसका भेद संसार के लोगों को और राजा –बादशाह को बिलकुल मालूम नहीं है, परंतु दिल्ली के बादशाह ने इस कदर ख्याल नहीं किया कि मैं राजाओं पर इतना जुल्म करता हूँ; सो मेरे जुल्म करने की खबर दूसरे बादशाह को होगी जब दूसरी बादशाहत के लोग मेरी बादशाहत को जुलम करने की वजह से ले लेवेंगे, जब तो हम कुल मुसलमानों की औलाद डूब जावेगी. सो इस बात का ख्याल बिलकुल नहीं किया और ना पहले बादशाह ने किया, सो बनियों ने जादू के जुलम से बुद्धि भ्रष्ट कर दी होगी इस वजह से कुछ भी ख्याल नहीं किया होगा और जो बुद्धि को भ्रष्ट नहीं किया होगा तो बनियों ने दिल्ली के बादशाह को मार करके अपनी जात का शख्स, तख्त पर बैठा दिया होगा; जिससे राजाओं के ऊपर जुल्म करने को लग गया होगा. क्योंकि जब बनियों के कुल का

तख्त पर बादशाह बनके बैठ गया जब तो राजाओं को और संसार के लोगों को डुबाना ही चाहते हैं; इस वजह से ऐसा फरेब किया होगा, सो जबके इस बात को किया होगा जब संसार के लोगों की और बादशाह के भाइयों की और अहलकारों की और बादशाह के बेगमों की नजरों को जादू के जुल्म से बंद कर दी होगी, जिससे सब अहलकारों को और भाई-बेटों को और बादशाह की बेगमों को बनियों के कुल का बादशाह ही सूझा होगा; और जो राजा -बादशाह जुल्म करने लगे तो उनके भाई-बेटे उन राजा -बादशाहों को तख्त से उतार देते हैं और राजा -बादशाहों के बेटों को तख्त पर संसार के लोग बैठा देते हैं और जो राजा -बादशाह के औलाद नहीं होवे तो संसार के लोग उनके भाई-बेटों में से बैठा देते हैं. परन्तु नेकी के करने वालों को बैठाते हैं और जो किसी को भी नहीं बैठावें जब राजा -बादशाह खुद जुलम करके अपने हाथ से अपने राज को डुबो देते हैं; और

जो कि बादशाह के पास हजारों आदमी काम करनेवाले होते हैं तो उनकी बुद्धि जादू के जुल्म से भ्रष्ट कर देते हैं जिससे वो भी जुल्म करने को लग जाते हैं और दूसरों को यह बनिये जादू से ऐसा सुझाते हैं कि जो जुलम करता है उसको ऐसा जानते हैं कि राज का धनी है, सो जुलम करे तो करने दो सो धनी का जुल्म करना और धनी का मार्ग सर के ऊपर हैं, और यह कहते जाते हैं कि अब इनका राज जानेवाला है. सो राज को जुल्म करके डुबो देवेगा, तो ऐसा जुल्म क्यों करने देवें? परन्तु कहने से जुल्म करने वाले माने कब! क्योंकि जब बुद्धि भ्रष्ट कर देते हैं जब वैसा ही सूझता है और जो भलाई के वास्ते कहें उसको जहर के बराबर सूझता है; सो इसमें झूठ नहीं हैं क्योंकि बनिये राक्षसी पाप से बुद्धि भ्रष्ट कर देते हैं जिससे ऐसा ही सूझता है और दुनिया में कहते हैं कि कलू का साया है, सो भला कहते बुरा मानते हैं; सो कलजग क्या चीज है? ख्याल करो, परन्तु

तुमको मालूम नहीं इससे कलजग-२ कहते हो परन्तु कलजग बनियों के पाप का नाम है; क्योंकि यह बनिये दुनिया के नामका पाप कराते हैं जिससे दुनिया की बुद्धि भ्रष्ट हुई है, क्योंकि पहले कलजग के तौर पर रावण, हरनाकुश, कंश, कारुन वगैरा ने राक्षसी पाप चलाया था; उसी तरह से इन बनियों ने भी राजाबल के बाद से राक्षसी पाप चलाया है जिसको सब संसार के लोग और राजा -बादशाह कलूकाल कहते हैं, वो सौदागर बच्चों के घर का अलोप पाप-जादू रावण की तरह से हो रहा है. इस वजह से सभों की बुद्धि बनियों के राक्षसी पाप के सबब से भ्रष्ट हो रही है, सो सौदागर बच्चे दूसरी विलायत के राजा -बादशाह को बुलाके और उनके हाथों से जुल्म करवाके बादशाह को मरवा देते हैं कि जुल्म करता है परन्तु दूसरी विलायतों के लोगों को और राजा-बादशाहों को भी यह बनिये ही बुलाके लाते हैं, जिसकी वजह यह है कि इन बनियों को कुल

विलायतों में अपना राज करना है और यही दिल है, कि जिस सूरत से हो सके हम अपना राज करें; इससे राक्षसी पाप चलाया है और दूसरी बादशाहत के लोगों को और बादशाहों को इस वास्ते लाते हैं. सो दूसरे बादशाहों को इन्होंके फरेबों का भेद नहीं है, क्योंकि यह बनिये उनको भी गारत करने के लिए और धन ले लेने के लिए बुला-२ के लाते हैं; जब उन्होंसे कहते हैं कि हमारे ऊपर जुल्म करते हैं, सो जबकि दूसरी विलायत के राजा -बादशाह जुल्म करते हुए देखते हैं जब उनको और उनकी औलाद को मारकर राज ले लेते हैं, परन्तु दूसरी विलायत के आनेवालों को यह खबर नहीं है कि बनियों ने जादू से बुद्धि भ्रष्ट कर दी है जिससे ऐसा जुल्म करते हैं. सो इस बात को तो दूसरी विलायत वाले भी नहीं सोचते हैं, सो जबकि उनको ऐसे अंदर के भेद की मालूम नहीं है तो क्या सोच? अगर

मालूम होवे तो सोचें भी, कि जिस तरह से दिल्ली के बादशाह की बुद्धि भ्रष्ट करके गारत किया है, उसी तरह से हमको भी हमारी बुद्धि भ्रष्ट करके गारत करेंगे; सो यह हाल मालूम होवे जब तो इनके जाल का बंदोबस्त हो जावे, परन्तु मालूम नहीं इससे कुछ नहीं करते, परन्तु मुझको इन बनियों के जाल का भेद मालूम हो गया है; सो मैं सब संसार के और सब विलायतों के बच्चे बचने के लिए यह किताब लिखता हूँ कि सब संसार और राजा -बादशाह हेत करके इन बनियों कलंकियों का जादू छोड़ाओ जब सबकी औलाद बचेगी और जो नहीं छुड़ाया तो यह बनिये कलंकी चार कूंट में और चौदा भांण में अपना राज करेंगे. क्योंकि यह बनिये बेइमान ऐसे करतूतों के खोटे हैं कि जिस राजा - बादशाहों ने या संसार में से किसी अमीर-गरीब ने बहुत सा रुपया-पैसा कमाके जमे किया होवे तो उन्होंको कच्ची उमर में जादू से मार देते हैं

और जो उनके बच्चे छोटे होवें और उनको रुपया पैसा ज्यादा होवे तो यह बनिये जादू के जुल्म से उनके औलाद वगैरा भी नहीं होने देते हैं. परन्तु ईश्वर ने तो सबको ही औलाद दी है, किसी को बे औलाद नहीं रखा है, परन्तु यह बनिये जादू के जुल्म से मांई-बाई के पेट में रोग कर देते हैं जिससे बे-औलाद रह जाते हैं; परन्तु ''बे औलाद जबसे रहने लगे हैं कि जबसे राक्षसी पाप चलाया है इससे औलाद नहीं होती है,'' जिससे वो भाई बिरादरों में से खोले व गोद लेते हैं परन्तु उसको गली कूंचे की मालूम नहीं, परन्तु पैसे के लालच से क्या तो राजा -बादशाह और गरीब व अमीर और क्या दूसरे लोग सबको कच्ची उमर में मार देते हैं! और रजवाड़ों में देखो तो 'कांमेती' यही है और गरीब-अमीर में देखो तो 'कांमेती' यही है और जब उन छोटे बच्चों का बाप मर जावें तो यह बनिये उनका रुपया

पैसा अपने काबू मे कर लेते हैं, तो राजा -बादशाह होवे तो वो भी टूट जाता है और गरीब-अमीर होवे तो वो भी टूट जाता है. सो जबकि रुपया पैसा नहीं होवे तो उसका घर आप ही टूट गया, फिर दुनिया में इस तरह से बात चला देते हैं कि नहीं मालूम यह पैसा कहाँ गया? सो ''पैसा कोई आदमी नहीं है सो घर से उठके चला जावे, वो तो बनिये जादू के जुल्म से खेंच लेते हैं'' और ऐसी-वैसी बातें लोगा दिखाऊ दुनिया में चला देते हैं और जिसके औलाद जादू से नहीं होने देते हैं तो उनको देवताओं का सुझा देते हैं कि देवताओं ने दोष किया है और देवता नाराज हो गया है या मालिक की सुझा देते हैं, कि मालिक ने औलाद नहीं लिखी, ऐसा घट में सुझा देते हैं; और मालिक ने जिस दिन रचना रची है जबसे किसी को बे-औलाद नहीं रखा है, परन्तु यह बनिये जादू के जुल्म से नहीं होने देते हैं और देवता वगैरा का सुझा देते हैं. सो देवताओं का सुझाना यह बनियों के घर का राक्षसी पाप

है, क्योंकि जब राक्षसी पाप का साया पड़ता है जब संसार को दुःख होता है, सो जबके बहुत से जीवड़ों को मारते हैं जब पाप लगता है. सो यह बनिये अलोप पाप कराते हैं कि जिसको तुम संसार के लोग स्वर्ग-नर्क कहते हो वो बनियों के घर का अलोप पाप है, सो वहाँ पर संसार के नामका अलोप पाप कराते हैं जब देवताओं और भूतों -पलीतों और तरह-२ के जाल सुझाते हैं, सो यह बनिये गुप्ती पाप कराते हैं. सो 'जबकि करोड़ों जीव मारते हैं जब एक बाल खण्डित होता है और जो कि तुम संसार के लोग सुनते हो और कहते हो कि स्वर्ग-नर्क में चौरासी लाख कुण्ड़ियाँ राघ लहू की हैं, सो वहाँ पर चौरासी लाख जीवाजून संसार को भुगतनी पड़ती हैं; यह बात संसार में प्रगट है, सो जून तो यह है कि जो अपने -२ कुल से पैदा होते हैं. सो मालिक ने तो इस तरह से रचना बनाई है सो हम और तुम सबही देखते हैं और जो कि तुम सब संसार के लोग भूल से चौरासी लाख कुण्डियाँ

बताते हो सो वो बनियों के घर का राक्षसी पाप रावण, हरनाकुश, कंस, कारुन बादशाह वगैरा की तरह से है; सो जिस तरह से कि रावण वगैरा ने राक्षसी पाप चलाया था और स्वर्ग-नर्क बनाया था, उसी तरह से इन बनियों ने भी राक्षसी पाप का स्वर्ग-नर्क बनाया है; सो जबके जीवाजून संसार के नाम से दुःखी करते हैं जब जाके संसार में बुरा होता है, सो सुनने में आता है परन्तु खेती-पाती वाले और राजा -बादशाह और रेबारी, गूजर और कुम्हार वगैरह गधों के ऊपर और अनबोलों के ऊपर कमाके पेट भरते हैं. सो भी सुन लो कि जो अनबोलों के वसीले से कमाके खाते हैं इन कुलों को हम और तुम सभी देखते हैं, सो राजा -बादशाह के घर में हाथी, घोड़ा, ऊँट, बैल वगैरह और गाय-भैंस वगैरह काम आते हैं और खेती-पाती वालों के बैल-भैंसा काम आते हैं और गायें, भैंस खेती-पाती वालों को दूध पिलाती हैं और रेबारियों के घर में बकरी, भेड़ और ऊँटनियों के टोले

और कुम्हार बैलदारों के घरों में गधा-गधी काम देते हैं. सो सातो -आठो अनबोलों की कुलों और औलादों के ऊपर, कि जो संसार को कमाके देते हैं, सो हम और तुम सभी संसार के लोग देखते हैं सो सब संसार को सात-आठ कुलों के कमा के देते हैं सो माई-बाप के बराबर हैं; सो इनका गुण नहीं भूलना चाहिए, क्योंकि जिसके घर में हाथी, घोड़ा, ऊँट, बैल वगैरह हैं और पीठ के ऊपर उठाकर फिरते हैं इससे इनकी करनी ज्यादा है, इससे माई बाप के बराबर हैं; और जिनके घर में बकरी और भेड़, ऊँट वगैरह हैं और कमाके देते हैं तो उनके घर में यह बकरी वगैरह माई-बाप के बराबर हैं और जिनके घर में गधा-गधी कमाके देते हैं, उनके घर में गधा-गधी, माई-बाप के बराबर हैं और जिनके घर में बैल वगैरा खेती-पाती करके कमाके देते हैं, उनके घर में बैल वगैरा माई-बाप के बराबर हैं; क्योंकि वो तो बेचारे अनबोले हैं, सो वो कब बोलते हैं और कब

कहते हैं कि हम दुःखी हैं कि सुखी हैं? परन्तु आदमी, बंदा को समझना चाहिए कि जो कुल कमाके देती है वो सदा अपने बच्चों से ज्यादा है, क्योंकि बच्ची-बच्चों को यह पालते हैं. सो साते -आठो विलायतों में इन साते-आठो कुलों के वसीले से कमाके खाते हैं, सो तमाम जहान में साते-आठो कुलें दुःखी होती हैं; सो यह दुःख अनबोलों पर जबसे पड़ा है कि जबसे यह बनिये काल पड़ाने लगे हैं और जबसे ही खेती-पाती का पाप चला है और सतजग में काल वगैरह नहीं पड़ता था तो मेवा, मिष्ठान, रिजक, वनस्पति वगैरह अच्छी तरह से वगैरह बोये हुए के ही पैदा होता था. क्योंकि राक्षसी पाप नहीं चले तो सदा सतजग ही है और जल की ही माया है क्योंकि जिससे आपही तरह-तरह के मेवा, मिष्ठान, रिजक वनस्पति वगैरह हो जाती थी और जबसे बनियों ने राक्षसी पाप चलाया है जबसे मेवा, मिष्ठान, रिजक वनस्पति वगैरह को गाल देते हैं और

कुलों = कुल/वंश/तंबा

गला दिया है; जिससे अनबोलों के ऊपर यह खेती पाती का पाप चलाया है सो बीज ले लेके बोते हैं और जो नहीं बोवें तो खावें क्या? इससे बोतें हैं और आगे वगैरा बोए हुए के कुल चीजें पैदा होती थीं, जिससे अनबोलों को कोई दुखी नहीं करता था; फक्त गाय, भैंस, बकरी का दूध काम में आता था और अनबोलों को बिलकुल दुख नहीं था और अब तो संसार के देखने में आठ-सात कुलें पेट भरने के खातिर से दुखी होती हैं और तमाम जहान के काम में सात-आठ कुलें सब विलायतों में काम आती हैं; और बनियों के राक्षसी पाप में चौरासी लाख कुलें काम में आती हैं सो संसार में तो सात -आठ कुलें और जून दुखी होती हैं और बनियों के राक्षसी पाप में चौरासी लाख जून दुखी होती है; और जो कि तुम संसार के लोग कहते हो कि वहाँ पर स्वर्ग है और स्वर्ग-नर्क में चौरासी लाख जून भुगतनी पड़ती है और जून भुगत के दुख पाना पड़ता है. सो इन बनियों के पाप में चौरासी

लाख जून कलपती है सो वो पाप ज्यादा है कि संसार में सात-आठ जून दुखी होती है सो वो ज्यादा है? सो यह बात सोचनी चाहिए, कि यह बनिये बेईमान दरियाओं के ऊपर पाप कराते हैं कि जिस तरह से रावण ने लंका दरियाओं के बीच में अलोप बनाई थी, उसी तरह से "इन बनियों ने भी दरियाओं के ऊपर पाप करने की जगह अलोप बनाई है, कि जहाँ सिवाय बनियों के और किसी की जात का आदमी नहीं जा सकता है." और दुनिया में यह बात चलादी है कि वहाँ पर नारगी स्वर्ग-नर्क है, सो वहाँ तो बनियों के घर का पाप है जिसकी रावण के मुवाफिक शोभा चलाई है और स्वर्ग-नर्क तो यह जमीन माता ही हैं; और रावण के वक्त में तो शनिचर को रावण ने दुखी किया था जिससे शनिचर ने रावण के राक्षसी पाप की तलाश की और रावण से कहा कि- तुम्हारे कुल में अलोप जादू हो रहा है सो मेरे नाम का जादू कराया, सो

मेरा भी ब्रह्म तुम्हारे राक्षसी पाप में कैद है जब शनिचर की बात को विभीषण ने अपने दिल में सोचा कि जो रावण के राक्षसी पाप को हम सच - २ नहीं बतावेंगे जब तो मय मेरी औलाद के मुझको भी गारत करा देगा और जो रावण छल करेगा तो रावण भुगतेगा, इससे रावण के जाल को बताने से उभरेंगे और रावण ने कोई राक्षसी वेद और टीपणा वगैरह और स्वर्ग -नर्क बनाके चलाए थे, सो शनिचर को राक्षसी पाप से दुखी किया जिससे शनिचर रावण के पाप को अच्छी तरह से समझ गया और रावण की चोरी को संसार में प्रगट किया. सो संसार भी समझ गया और रावण ने लंका अलोप बनाई थी और वहीं पर स्वर्ग–नर्क राक्षसी पाप का बनाया था, सो पाप कराता था; सो शनिचर को विभीषण ने लंका जो आलोप थी, बता दी परन्तु रावण कराता तो पाप था और शोभा चला दी स्वर्ग की; और रावण के पाप को रावण और विभीषण का कुल ही जानता था

और संसार के लोगों को बिलकुल भेद मालूम नहीं था. सो जबके शनिचर को राक्षसी पाप से कलपाया था, जब रावण की चोरी शनिचर को मालूम हुई जब शनिचर ने रावण की चोरी को प्रगट करके संसार के हाथों से जाल को छोड़ाया जब संसार उभरा है; और अब मुझ साध अनोपदास को शनिचर की तरह से बनियों ने अपने राक्षसी पाप से कैद किया है और मेरे नामका पाप कराया जिससे मेरा भी ब्रह्म कैद किया है, जब मैं भी इन बनियों की चोरी को लिख गया और समझ गया. सो यह बात मैं बनियों से कहता हूँ कि जैसे शनिचर ने रावण के कुल को कहा था, उसी तरह से मैं भी बनियों के कुल से कहता हूँ कि जहाँ पर इन बनियों का मेला भरता है तुम और बहुत से बनिये जमे होते हैं वहाँ मैं जाता हूँ और कहता हूँ कि तुमने रावण की तरह से और हरनाकुश वगैरह की तरह से राक्षसी पाप चलाया है; सो जबसे कि तुमने राक्षसी पाप

चलाया है जबसे काल वगैरह भी डालना तुमने ही शुरु किया है और इसी पाप में तुमने मुझे दुखी किया है जिससे मैं तुम्हारी चोरी को पहचान गया और संसार को और गरीब-अमीर को और राजा - बादशाह को और साधु-फकीरों को तुम्हारे जाल की मालूम नहीं है, क्योंकि उनके देखते तो तुम नेकी में चलते हो और गुप्ती पाप अपने आदमियों के हाथों से कराते हो. सो सच-२ बताओ कि जिस तरह से विभीषण ने लंका बताई थी, उसी तरह से तुम्हारी जात में भी पाप हो रहा है सो बताओ, सो तुम भी विभीषण की तरह से उभरो और जो कि तुम बनियों ने रावण, हरनाकुश वगैरह की तरह से राक्षसी पाप का स्वर्ग-नर्क बनाया है कि जिसकी शोभा दुनिया में हो रही है, कि जो तुमने कई तरह के राक्षसी वेद और ग्रह चाला के टीपना वगैरह चलाए हैं, सो भी शोभा दुनिया में तुम्हारे पाप की हो रही है. सो दुनिया स्वर्ग और वेदों के भरोसे भूली

हुई है, क्योंकि संसार के लोगों को तुम बनिये अपने राक्षसी पाप से दुःखी मत करो और मुझको गरीब देखके तुमने दुःखी किया है; सो मैंने तुम्हारी चोरी को पहचान लिया है, सो मैं लिख गया, सो यह पाप तुम संसार के सामने और मेरे जीते जी छोड़ दो तो उभर जाओ और संसार को तो मालूम नहीं है यह तो मेरे को दुखी किया है सो मेरे जीते जी नहीं छोड़ोगे जब तो तुम संसार को और साधु-फकीरों को और गरीब-अमीरों को भुला दोगे और पाप साफ नहीं छोड़ोगे सो मेरे जीतेजी नहीं छोड़ोगे तो संसार तुम्हारी औलाद तक गारत कर देगा और जो मेरे जीते जी छोड़ दोगे तो तुम भी उभर जाओगे और मेरे मरने के बाद तो तुम क्या छोड़ोगे? क्योंकि संसार के लोगों को तो तुम्हारे पाप की खबर नहीं, सो कोई तो यह कहने लगते हैं कि जो बेईमान होंगे जिन्होंने चलाया होगा और कोई यह कहता है कि हमको खबर नहीं.

जब मैं कहता हूँ कि राक्षसी वेद और ग्रह चाला के टीपना किसने चलाए हैं? और राध लहू की कुण्डिया बनाई हैं जिसकी शोभा संसार में किसने चलाई हैं? और मरी और काल और जानवरों और मनुष्य देह को रोग किसने चलाए हैं? और सभों को बीमार तो करते हो जादू से और सुझा देते हो देवताओं का; सो देवताओं के ऊपर भी रावण की तरह से पाप करना शुरु कर दिया है और कच्ची उमर में आदमी और अनबोले मरते हैं और टीपणों में छे महीने पहले सुनाते हैं, सो यह किसने चलाए? और मैं तो तुम्हारे राक्षसी पाप में अच्छी तरह से कैद हूँ, सो मैं वाकिफ हूँ क्योंकि जाल तुम्हारे कुल ने चलाया है यह जाल तुम राजा –बादशाह और सब संसार के आगे मेरे जीतेजी छोड़ दो सो तुम भी उभरो और जो कि तुमने पाप अपने कुल में संसार के गारत कराने को चलाया है, सो तुम्हारी तुम भुगतोगे; मैं तो तुम्हारे जाल को संसार में प्रगट करता हूँ सो संसार को

भी अपने बच्चे प्यारे लगते हैं और संसार भी अपने बच्चों को गारत करना अच्छा नहीं समझते हैं. परन्तु तुम बनिये तो यह समझते हो कि चार कूंट और चौदा भांण में संसार को गारत करके अपना राज करेंगे, कि जब संसार के आदमी थोड़े रह जावेंगे और हम बनियों के कुल के आदमी ज्यादा रह जावेंगे जब रावण की तरह से चार कूंट में राज करेंगे. सो 'रावण भी चार कूंट में राज करने नहीं पाया और बीच में ही मारा गया,' सो मैं तो शनिचर की तरह परमेश्वर के वास्ते और संसार के बच्चे उभरने के वास्ते तुम को राक्षसी पाप करने से मना करता हूँ कि पाप का करना छोड़ दो, सो तुम मेरे जीतेजी छोड़ दो तो तुम भी उभरो, तो बनिये बेइमान मुझ पर गुस्सा होकर गालियाँ देने लग जाते हैं और कहते हैं कि राजा - बादशाह से कह और पुकार. सो इनकी यह बातें तो मैं इन्होंके मेलों में जा-जा के और समझा-२ के

सौदागर महाजनान को कहता हूँ कि तुम यह पाप छोड़ दो तो तुम भी उभरो और पुस्तक भी सौदागर महाजनान को बताता हूँ, और पढ़वाता हूँ, तो मेरी बात को सुनकर और किताब को पढ़कर और मतलब समझ के दुनिया को यह कहने लग जाते हैं; कि बाबा गैला हो गया है; यह बात यह बनिये संसार को कहते हैं कि यूं ही किताबें बनाता है और पोथियों में क्या रखा है? सो तुम संसार के लोग इस बात को अच्छी तरह से गौर करो कि जहाँ-२ इन सौदागर महाजनान के मेले भरते हैं, तो यह बेइमान अपने मेलों में इस वास्ते जमा होते हैं कि दुनिया के नामका पाप कराने की सलाह आपस में सब मिलके करते हैं कि अबके साल में पाप कराके काल पड़ावें या संसार में रोग बीमारी करके मरी डालें या किसी का राज गुमावें या और किसी तरह का पाप करावें कि जिससे अनेक तरह के बिगन संसार में फैल जावें और यह ऐसी-२ सलाहें

करके, करने के वास्ते मेलों में जमा होते हैं; फिर इस बात को संसार में छे-२ महीने पहले, बल्कि बारह महीना पहले टीपणों में सुना देते हैं कि अबके बरस में ऐसा होगा, फिर गुप्ती पाप करने वालों को लिख भेजते हैं. जब वो इस तरह गुप्ती पाप बनिये कराते हैं तो वैसा ही हो जाता है और यह बात भी ख्याल करने के लायक है, बल्कि तुम संसार के लोग हमेशा देखते हो कि इन बनियों के मेले जहाँ-२ भरते हैं तो इनके किसी मेलों में तुम संसार के लोगों ने कभी किसी तरह की बीमारी नहीं देखी होगी ना सुनी होगी, यहाँ तक कि बनियों के जात के हजारों आदमी जमा होते हैं परन्तु किसी तरह का रोग बीमारी व बाका वास्ता नहीं होता! और बाकी हिन्दू -मुसलमानों के जिस कदर मेला और तीर्थ होते हैं यानी हरिद्वार और काशी व पराग और पुष्कर और द्वारका वगैरा और अक्सर मेला;

चौदा भांण = आकाल पाताल/पूरी धरती पर

घोड़ा, ऊँट, बैल वगैरह के बहुत जगह होते हैं और मुसलमानों के मेला और तीर्थ अजमेर और मक्का वगैरह में, बल्कि बहुत-सी जगह होते हैं. और मुसलमानों के जो तीर्थ हैं सो देखलो कि सब मेलों मे यह बनिये महाजन बेइमान पाप करा-२ के रोग बीमारी करा देते हैं कि जिससे हजारों आदमी कच्ची उमर में मेलों में मर जाते हैं और यह बनिये ही जादू से मरी डाल के मार देते हैं और जादू से संसार को यह सुझाते हैं कि मुसलमानों में तो यह कहते हैं कि अजमेर या मक्का वगैरह में मर जावें तो यह कहते हैं कि उसके बहुत अच्छे भाग हैं और हिन्दू यह कहते हैं कि हरिद्वार और पुष्कर वगैरा में मर जावें तो इससे बेहतर कोई बात नहीं है सो तीर्थो की जगह मर जाने को अच्छा जानते हैं, सो संसार की बुद्धि फेरके यह बनिये जादू से ऐसा सुझाते हैं; सो संसार यह नहीं सोचता कि ''तीर्थों की जगह जावें तो वहाँ मालिक को याद करने

जाते हैं, वहाँ पर बीमारी और रोग क्यों होना चाहिए? वहाँ तो सब तरह का चैन-आराम होना चाहिए, बीमारी होवे तो भी दफे हो जानी चाहिए! क्योंकि मालिक के याद करने को जाते हैं, सो मालिक तो कृपा और मेहरबानी रखता हैं.'' परन्तु यह महाजन लोग संसार को कम करने के वास्ते जादू से रोग-बीमारी करके मार देते हैं; अपना राज करने के वास्ते संसार को कम करते हैं, और संसार में जो रोग बीमारी करते हैं तो बेचारे हकीम व डॉक्टर व वैद्य वगैरा इलाज करते हैं. सो पहले तो संसार में पैसा बहुत था, जब तो पुण्य लेखे अपने पास से दवा वगैरह देकर इलाज करते थे; उपकार के वास्ते कि संसार को फायदा पहुँचे, अब इन महाजनान ने जबसे पाप कराना शुरु किया है यानि पाप करा-२ के और काल पड़ा -२ के पैसा संसार में से खेंच लिया; इससे संसार में पैसा नही है तो हकीम, डॉक्टर, वैद्य वगैरह इलाज करते हैं तो जिसको इलाज से आराम हो जाता

बाका = वायु गैस की बीमारी/ऐसिडीटी, हरद्वार = हरिद्वार शहर, पराग = पयागराज शहर

है तो उसे राजी करके अपना इलाज करने का हक लेते हैं, सो उसमें तो कुछ बुराई नहीं है; परन्तु यह बेइमान ऐसा समझते हैं कि हकीम, वैद्य, डॉक्टर दवा करके किसी को भी कच्ची उमर में नहीं मरने देवेंगे, तो फिर पाप कराके ऐसे करते हैं कि उनकी दवा से और इलाज से किसी को आराम नहीं होने देते हैं और जब यह बेइमान सब देशों में मरी बीमारी वगैरा डालते हैं तो फिर तो किसी-२ को ही इलाज से आराम होने देते हैं कि जिसके नाम का पाप नहीं कराते हैं, वरना बहुत से लोगों को जादू से मार देते हैं और फिर संसार में यह कहने को लग जाते हैं कि हकीमों व वैद्यों व डॉक्टरों की दवाइयों से और इलाज वगैरह से कुछ नहीं होता है. सो इस बात की हकीमों और डॉक्टरों को बिलकुल खबर नहीं है कि जिन-२ दवाओं से पहले आराम होते थे, अब क्यों नहीं होते हैं? सो ऐसी बातों को सोचनी

चाहिए कि दवा तो वो की वही है फिर अब आराम क्यों नहीं होता है? परन्तु महाजन लोग रावण के मुवाफिक अपने राक्षसी पाप से दवा और इलाज नहीं चलने देते हैं. सो ऐसे पाप की हकीम और डॉक्टरों को बिलकुल खबर नहीं कि रावण के मुवाफिक पाप से दवा नहीं चलने देते हैं, तो यह बेइमान हकीमों और डॉक्टरों की रोटी भी खो देंगे; क्योंकि बेइमान जादू से दवा चलाने भी नहीं देते हैं क्योंकि यह समझते हैं कि जो हकीमों और डॉक्टरों के इलाजों से लोगों को आराम होता रहेगा तो संसार किस तरह से ओछा होगा और बहुत कम घटेगा क्योंकि जब संसार कम होगा जब ही हमारा कुल विलायतों में राज होगा, इससे दवा वगैरह नहीं चलने देते हैं; सो भाई मेरे, अमर तो कोई नहीं है, बुड्ढे होकर तो सब ही मरते हैं परन्तु यह बेईमान संसार की कुल कम होने के वास्ते जादू से कच्ची उमर में मारते हैं, इससे मैं लिखकर तुम संसार के लोगों

को वाकिफ करता हूँ कि जिनके नाम का जहाँ गुप्ती पाप कराते हैं तो मरने के जितना पाप करावें जब उसको वो दवाइयाँ देने से भी आराम नहीं होता है, चाहे कुछ दवायें दो; क्योंकि डॉक्टर, हकीम तो एक दवा दें और यह कई रोग शरीर में कर देते हैं और जिनका जितना मरने का पाप नहीं करें याने पाप उसके नाम का छोड़ देवें तो वो बच जाते हैं. सो यह भी दुनिया के डरते हुए कि संसार को मालूम हमारे जाल की नहीं होवे जिससे थोड़े बहुतों को आराम दवा से होने देते हैं, वरना यह तो गारत करना ही चाहते हैं याने संसार कम हो जावे और जब इनके जाल की संसार में भूल पड़ जावेगी तो यह संसार को बहुत कम कर देंगे और बुद्धि भी भ्रष्ट कर देवेंगे जब तो किसी को बिलकुल समझने नहीं देवेंगे. इस वास्ते अब मैं समझाता हूँ तो कोई मुझको पागल कहते हैं और कोई कहते हैं कि सिरड़ी हो गया है, जिससे बानिये ही बानिये पुकारता है.

सो संसार को कुछ दोष नहीं है यह तो संसार को जादू के जुलम से मुझको पागल ही सुझाते हैं, सो इनकी गर्ज यह है कि "जहाँ गुप्ती पाप कराते हैं वहाँ पर कागज भेजकर यह समाचार लिख भेजते हैं कि राजा -बादशाह के नाम का पाप या गरीब-गुरबों के नामका पाप कराओ सो सबकी बुद्धि भ्रष्ट हो जावे." सो साध अनोपदास की बात को कोई नहीं समझे और यह कहते हैं कि आप ही कुकते-२ और बकते -२ मर जावेगा, सो फिर अपने जाल को कोई नहीं छोड़ावेगा, क्योंकि दूसरों को भेद नहीं; और मेरे को तो इन्होंने दुखी किया है जब इन्होंके जाल का भेद मुझको मिला है परन्तु रावण ने तो थोड़ी बुद्धि भ्रष्ट की थी. सो शनिचर के समझाने से संसार के लोग फौरन समझ गए, परन्तु इन बनियों ने संसार के नामका पाप कराके सबकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है सो समझाने से भी नहीं समझते हैं और जिस किसी के नाम का थोड़ा पाप किया है सो वो थोड़ा समझते हैं

और कहते हैं कि जो बात साध अनोपदास कहते हैं वो दुरस्त है. क्योंकि पहले भी इसी तरह से रावण वगैरह ने राक्षसी पाप चलाया था और बुद्धि भ्रष्ट कर दी थी, उसी तरह से अब भी हो रहा है क्योंकि जो साध अनोपदास कहते हैं वो सच है क्योंकि आगे रावण भी कच्ची उमर में मारता था और धन को और मेह को और मौत को कब्जे में कर लिया था, सो मैं जिन लोगों को बनियों के जाल को वाकिफ करता हूँ और समझाता हूँ तो थोड़ा बहुत समझते हैं, परन्तु कुल को नहीं समझते हैं और न उनको कुल जाल की खबर पड़ती है, क्योंकि उनको समामुख दुखी नहीं करते हैं इससे इनको इन्होंके जाल की खबर पड़े सो जाल की तो उन्होंको किसी तरह खबर पड़े! परन्तु जिस कदर मैं मुँह जबानी कहूँ वो याद रखे और संसार में चर्चा करते रहे कि जो बाबा कहता है उसका

बन्दोबस्त करो तो ठीक है और सब उभर जावें और जो मेरे मुवाफिक दुखी किया होवे जब तो उनको भी भेद मिल जावे, परन्तु समामुख तो कलपाते नहीं और सपना और वहम करें, तो होवे कुछ और सुझा देवें कुछ. सो इन्होंकी गर्ज यह है, सो समामुख तो कलपाते नहीं; अगर समामुख कलपावें जब तो इनकी चोरी मालूम हो जावे, सो अपनी चोरी को कौन मालूम होने देवें? और चोरी भी बहुत खराब की है, जो सब संसार को गारत करना; सो मेरे को तो ‘अनासूरती, कलपाया है जिससे इन्होंकी चोरी मालूम हुई है, सो भी यह बनिये ऐसा जानते हैं कि जो बाबा की कही हुई बात को नहीं समझे और किताब भी गायब हो जावे तो ठीक है, क्योंकि हमारा जाल संसार में प्रगट न हो जावे! और जो यह बनिये किताब को गायब कर देवेंगे तो यह बनिये होले-होले संसार को गारत कर देंगे, सो यह बनिये कलंकी अपना राज करेंगे कि जब संसार के

सिरडी = सिड सिडीला

आदमी थोड़े से रहें जब अपना राज करेंगे. सो "क्या तो हिन्दू और क्या मुसलमान और क्या अंग्रेज और क्या सातो–आठो विलायतों के लोग इस किताब को अपने जीव के मुवाफिक रखना और किताब को पढ़कर वाकिफ होना और पुरानी होने पर नई किताब छपवाकर इसका नमूना पास रखना और किताबें छपवाके बहुत–सी जारी करा देना ताकि संसार भूले नहीं" ताकि सब संसार के लोग हेत करके इन बनियों के जाल को रावण वगैरा की तरह से छोड़ावे. सो मेरे जीतेजी सब संसार के लोग एक दिल होकर इन बनियों बेइमानों के राक्षसी पाप को रावण की तरह से छोड़ाओगे तो छूट जावेगा, नहीं तो फिर तुमसे नहीं छूटेगा; क्योंकि तुम लोगों ने देखा नहीं हैं. इससे तुमको इनके जाल की मालूम नहीं है और यह बेइमान ऐसे हैं कि अपने पाप के प्रगट न होने के लिए सब संसार के लोगों को भुलावेंगे क्योंकि पहले इन

बनियों बेईमानो ने झूठी-सच्ची कसमें खा -खा के राजा -बादशाहों को भुला दिए थे, जिसका सबूत और हाल यह है कि जिस वक्त में बादशाह ने मंदिर गिरवाये थे और पुतलियों के नाक व कान कटवाये थे और बनियों की औलाद को भी गारत करा देते थे, जब इन बनियों ने गाय-सुअर की कसमें खाई थी. सो तवारिखों से साबित होता है फिर बनिये जुल्मी झूठी कसमें धर्म -ईमान की खा-खा के और झूठ बोल-२ के उभर जाते हैं, सो अब पाप को मेरे जीतेजी छोड़ा दिया, जब तो छूट जावेगा और बनिये भी उभर जावेंगे, नहीं तो फिर नहीं छूटेगा; क्योंकि आप लोगों को इनके जालों की मालूम नहीं है और मेरे को तो इन बनियों ने समामुख दुखी किया है इससे मैं समझ गया. सो आप लोगों को तो इन्होंके जाल का भेद नहीं है, क्योंकि सबकी बुद्धि कैद कर दी है, सो होगा तो कुछ और सुझा देवेंगे कुछ,

और जब तक कि पाप नहीं छूटेगा और न बनिये छोड़ेंगे और तुमको थोड़ा बहुत बतावेंगे कि यह चौरासी लाख कुण्डियाँ हैं और यह चौरासी लाख जून हैं. सो ऐसे फरेब को औरों के ऊपर भी लगाके बतावेंगे और अपने ऊपर भी इसी तरह से करोड़ों तरह के फरेब करके बतावेंगे, परन्तु ''मेरे आगे इनका झूठ नहीं चलने पावेगा'' क्योंकि मुझको तो समामुख कलपाया है, सो इन्होंका जाल देखा हुआ है; सो मेरे जीतेजी छूट जावे जब तो मैं सबको वाकिफ कर दूँ सो खुद ही छुड़वा दोगे और बन्दोबस्त कर लोगे, परन्तु यह बनिये जान के तो कभी किसी को समामुख नहीं कलपाते हैं, अगर जानके कलपावे जब तो मारे जावें और मुझको भूल से कलपाया है जिससे मुझको चोरी की खबर पड़ी है, सो मैं लिख गया और जो कि तुम संसार के लोग स्वर्ग-नर्क कहते हो और राध -लहू की कुण्डियाँ बताते हो सो वो पाप तो दरियाओं के ऊपर

अपनी जात के आदमियों से कहीं अलोप कराते हैं, सो इन्होंके पाप का भेद सिवाय बनियों की जात के और किसी जात को मालूम नहीं है. इसी पाप से संसार के लोगों की अक्ल भ्रष्ट हो गई है जिससे पाप और पुण्य में नहीं समझते हैं, परन्तु जो कि इन सौदागरान का पाप है वो बहुत ही है और संसार से बुद्धि फेरके कराते हैं, सो वो प्रगट पाप है कि जो मैं आप लोगों को वाकिफ होने के लिए लिखता हूँ जिसकी तारीफ सुनो; परन्तु संसार के लोगों की ऐसी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है कि जो संसार के लोग पाप करते हैं उसको ही धर्म समझते हैं और वैसे ही इनको सुझा देते हैं कि कोई ऐसा भी धर्म होगा! सो उनको भी नहीं समझने देते हैं कि यह जुल्म का पाप है कि पुण्य है, सो उनकी बुद्धि भ्रष्ट कर देते हैं कि जो पाप को और पुण्य को भी नहीं समझते हैं कि यह जुल्म का पाप है कि पुण्य, सो सबकी बुद्धि भ्रष्ट कर देते हैं इससे नहीं समझते हैं क्योंकि पाप है वो

तवारिखों = दिनाँक-ऐतिहासिक दिनांक

तो पाप ही है और जो पुण्य है वो पुण्य ही है और इन्द्रजाल एक जना करे तो नहीं चलता है, परन्तु इन बनियों ने बुद्धि भ्रष्ट करके थोड़ा-२ पाप भूतों के मुवाफिक संसार को सिखा दिया है जिससे पाप दुनिया में फैल गया है, सो इस बात का इन्साफ किया चाहिए, क्योंकि इन्साफ के करने से खुद मालूम हो जावेगा कि जिस कदर पाप इन सौदागरान ने चलाया है कि जो रिजक तक नहीं रहने दिया है काल वगैरा डाल-२ के; सो तो सभी जानते हैं कि जो आदमी और जीव जन्तु दुख पाते हैं, सो भी सब जानते हैं सो इसके सिवाय और क्या पाप होगा? सो दुनिया को पाप से भुला के जादू खोरा बना दिया है और जादू खोरा देव बन गए हैं और दुनियाँ को भूत पलीत बना दिया है और 'जमीनदेव' और 'रिजकदेव' और 'जलदेव' किसी की अक्ल को भ्रष्ट नहीं करते हैं, यह तो दुनियाँ में भूल डाल दी है कि जो दुनिया को भुलाके देवताओं

के ऊपर दुनिया के हाथों से जीव मरवाते हैं. सो यह सब सबब बनियों के जादू का है, क्योंकि रिजक खाने से तो अक्ल ठिकाने आवें, सो अक्ल को तो यह बनिये जादू से फेर देते हैं और ईश्वर किसी की अक्ल को नहीं फेरता है क्योंकि उसके घर में तो सिंह और बकरी शामिल चरी हैं, ऐसा संप और इरादा है. सो जबकि राक्षस विद्या का पाप चलता है जब दुनिया की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, जब ही दुनिया में खार-ऐंखार अनेक प्रकार का बढ़ जाता है, सो जब जुलम करने को लग जाते हैं और कई दफे बेइमानों ने पाप चलाया है और बुद्धि भ्रष्ट की है; जबकि बेइमान पाप करने वाले पकड़े गए वैसे ही पाप को छुड़वाते गए. सो जिस तरह से कि पाप को छुड़वाते गए उसी तरह से बुद्धि दुरस्त होती गयी, क्योंकि मालिक के घर में सबकी बुद्धि ही है परन्तु जाल बनियों का है, सो यह बनिये अपने राक्षसी पाप से अकल फेर देते हैं और जानवरों को

झूठ बोल-२ के मरवा देते हैं; सो सबकी इन बनियों ने ऐसी अक्ल को फेरदी है कि जो लाखों साधुओं का और फकीरों को और संसार के आदमियों को जादू के जुल्म से पागल कर दिए हैं; और जिस साधु-फकीर को, कि पागल किया है सो उनको क्या सूझता है! कि जो " वोह भीष्टा व पेशाब को खाते-पीते हैं और फिर वो अपने आप यह कहते हैं कि हम सिद्ध होने के वास्ते ऐसा काम करते हैं और कोई मरे हुए जानवरों के हाड़ और आदमियों की खोपड़ियाँ वगैरह जमे करते हैं और उन हाड़ों वगैरह के अन्दर पड़े रहते हैं और उनके दिल में जादू से ऐसा सुझाते हैं कि हम 'औलिया' हो गए हैं." सो उनको जादू से ऐसा सुझाते हैं, सो दुनिया देखती है कि साधु पागल हो गया है या किसी साधु ने फिटकार दी है या किसी देवता की साधना करता था, सो उसमें चूक पड़ गई है इससे पागल हो गया है, तो संसार को ऐसा सुझाते हैं जब

दुनिया यह कहती है कि पागल हो गया है और जबके संसार में बहुत दिन गुजर जाते हैं और शराब पीते हुए देखते हैं सो संसार को जादू से ऐसा सुझाते हैं कि शराब का दूध बना दिया और गोस्त होवे तो उसका गुड़ सुझा देवें और गोस्त को और शराब को और किस्म-२ की चीजें जादू से सुझा देते हैं. सो साधु-फकीरों को खबर नहीं कि जो एक चीज का रुप था उसने दूसरे रंग का स्वरुप किस तरह से कर लिया होगा, याने किस तरह से रंग बदल लेते हैं; और वो यह जानते हैं कि हमारा परमेश्वर बेली आया है इससे ऐसा हुआ है कि गोस्त का गुड़ हो जाता है, परन्तु काफिर विद्या से ऐसा हो जाता है तो समझें नहीं, सो नजर बन्द हो जाती है जब शराब का दूध सूझता है; सो यह काफिरी पाप है जिससे गोस्त का गुड़ सूझता है वरना गोस्त का गोस्त ही रहता है और शराब का शराब ही रहता है, सो इस तरह से और सब चीजें हैं और बेइमान बनियों के

जादू से जिस रंग की चीजें होती हैं वैसे ही स्वाद लगने लगता है सो बुद्धि भ्रष्ट कर देते हैं, सो जबके बुद्धि भ्रष्ट कर देते हैं जब फिर वैसे ही स्वाद लगने लग जाता है कि जिस रंग की चींजे होवें, सो नजर बन्द हो जाती है जिससे कुछ का कुछ सूझने को लग जाता है. सो साधुओं का कुछ दोष नहीं है और संसार के लोगों को जादू के जुल्म से बीमार कर देते हैं और जिसको कि पागल किया होवे उससे उस बीमार के ऊपर हाथ फिरवा देवें कि जिसको पागल किया होवे और जिसको कि बीमार किया है उसके नाम का पाप चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर छोड़ देवें तो वह बीमार आदमी उस पागल फकीर वगैरह के हाथ फेरने से अच्छा हो जावे और संसार में किसी को कच्ची उमर में मार देवें और साधु जादू से पागल हुआ होवे उनको रोते हुए देखके यह

कह देवें कि जा तेरा बेटा जिन्दा हो जावेगा, तो वो गुप्ती पाप को छोड़ देवें कि जहाँ उनके नामका गुप्ती पाप कराते हैं, तो वो जिन्दा हो जावे; क्योंकि मालिक ने तो सबको पूरी उमर दी है और जो कि कच्ची उमर में मरते हैं वो राक्षसी पाप से मरते हैं, सो करोड़ों को पाप से मार देते हैं और संसार को भुलाना होवे तो किसी -२ को पागल के हाथ फेरने से एक -दो को जिन्दा हो जाने देते हैं और जिन्दा हो जावे, सो यह भी मालिक को ज्यादा भुलाने के वास्ते इनके जाल के परचे दुनियां में चला दिए हैं जिससे कच्ची उमर में मारते हैं, कि जो गुप्ती पाप का करना उनके नाम का छोड़ देवें कि जिसको जादू से मारा होवे, सो जबके वो पीछा जीता हो जावे, तो संसार के लोग यह कहने को लग जाते हैं कि यह तो बड़ा औलिया है जब उस पागल को संसार में किसी को जिन्दा करते देख के कोई कोई सत-संगत करने को लगते हैं और

जानते हैं कि हम भी उनके मुवाफिक सिद्ध हो जावें; सो सत-संगत करते हैं और उसी तरह से हाड़ वगैरह और भीष्टा वगैरह देखा -देखी करने को लग जाते हैं और जानते हैं कि हम भी उसके मुवाफिक सिद्ध हो जावें. सो भीष्टा व मैला और हाड़ व पेशाब तो कदीम से ही मैला व खराब काम है सो सबको दिखता है, सो दुरस्त कहते हैं सो सही है और यह बेईमान जादू से परचा सुझाते हैं जब दुनिया भूल जाती है कि जो मैली चीज को अच्छी जानने लगते हैं और संसार में यह भी कहते हैं कि ब्राह्मणों को बीकानेर राजा साहब ने ब्रह्मभोज दिया था सो खबर नहीं कि ब्रह्मभोज में शीरा बनाया था या मिठाई बनाई थी, सो बीकानेर में कोई साधु -फकीर था सो उसने ऊँट का हाड़ अपने कंधे पर उठाया और उठाके आया और उस ब्रह्मभोज वाली कड़ाई में उस ऊँट के हाड़ को घुसेड़ दिया, जब सब ब्राह्मण कहने लगे कि इस पागल फकीर -साधु ने

हमारा धर्म भ्रष्ट कर दिया जब ब्राह्मण कूकते-कूकते राज में गए और उस फकीर को भी पकड़कर ले गए. जब उस फकीर से राजा ने दरियाफ्त किया कि तुमने ब्राह्मणों के ब्रह्मभोज में ऊँट का हाड़ क्यों घुसेड़ दिया, जब साधु-फकीर ने कहा कि आपने जीमण दिया है और हमने दक्षिणा दी है सो वो हाड़ नहीं है, वो तो सोना है. सो जादू के जुल्म से उसी हाड़ को सोना सुझा दिया और वो था ऊँट का हाड; सो जब तक कि राक्षसी पाप का साया उस हाड़ पर रखा होगा, सो जिस तरह से संसार को हाड़ का सोना दिखा होगा, जब तक वो हाड का सोना ही दिखा होगा, उसी तरह से साधु-फकीर को हाड़ का सोना दिखा होगा जब साधु-फकीर ने उस ब्रह्मभोज के अन्दर उसको घुसेड़ दिया होगा, सो साधु-फकीर को और अतीत को कुछ दोष नहीं और जो कि ईश्वर ने सोना-चाँदी बनाया है वो कदीम से ही सोना चांदी है सो तो सोना-चांदी ही रहेगा और जादू से

कहो तो चाँदी-सोने के कंकर, पत्थर और कोयला वगैरा सुझा दें, सो जिस तरह से रावण ने और कंश वगैरा ने ऋषिश्वरों को और संसार को भुलाया था और दिशासूल कर दिया था, कि जो कुछ का कुछ जादू से सुझाते थे, इससे ज्यादा अब बनिये अपने राक्षसी पाप से तरह-२ के परचा सुझाते हैं सो दुनियाँ मुँह से परचा-२ कह रही है और बनिये बेईमान ब्राह्मणों के उत्तम कुल को भ्रष्ट करने के लिए साधु -फकीरों की बुद्धि भ्रष्ट करके उनके हाथों से ऊँट का हाड़ ब्रह्मभोज की कड़ाई में धुसड़वा दिया और लोगों को जादू से सोना दिखा दिया. सो ऐसे-२ परचे चालाकी करके लाखों चला दिए हैं, सो दुनियाँ मुँह से परचा-२ कहती है परन्तु बनियों ने जादू से भुलाके उनका धर्म भ्रष्ट कराया सो जबके उन्होंने हाड़ का सोना देखा जब उन्होंने ब्रह्मभोज कर लिया और जीम लिए; सो वो तो परमेश्वर की कला से भूले, जब बिचारे जीमण को जीम लिए. सो उन्होंको

जादू की खबर नहीं और न संसार को खबर, कि राक्षसी जाल है और मेरे को तो एक दो बात याद आती है सो लिखता हूँ और परचे अनेक तरह के चलाए हैं कि जिसका कुछ पार ही नहीं है. सो ऐसे परचों के भरोसे से घर्म भ्रष्ट हुआ है सो यह समझें नहीं, सो राक्षसी पाप से ऐसी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है कि जो समझाये से भी नहीं समझते हैं और जिस मुल्क में ऐसे परचे चलाए हैं और जादू से कुछ का कुछ सुझा देते हैं, सो जिस मुल्क में ऐसे-२ परचा हिन्दुस्तान के हिन्दू-मुसलमानों को और दूसरे राजा-बादशाहों को दिखाके भुला देते हैं और यह हिन्दू-मुसलमान के धर्म-ईमान को भ्रष्ट कर देते हैं और करामातों के भरोसे भूले हुए हैं सो जब ही तो हिन्दुस्तान की बादशाहत को और रिजक को करामात के सबब से डुबो दिया है और दूसरी विलायतों में इनकी दुकानें जावेगी तो उनका भी वही हाल होगा कि जैसा हिन्दुस्तान का हुआ है; और उनको भी

करामातों के जुल्म से भुलावेंगे. सो यह राक्षसी पाप मिटाना चाहिए, क्योंकि बीमारी तो राक्षसी पाप के जुल्म से कराते हैं और सुझा देते हैं देवताओं का; सो कोई साधु-फकीर उस बीमार के ऊपर हाथ फेर देवें तो वो अच्छा हो जावे या और कोई साधु-फकीर पागल नहीं होवे और वो हाथ फेर देवें और कह देवे कि जा तेरा बेटा अच्छा हो जावेगा सो जबके वो अच्छा हो जावे तो परचा -२ करते हैं; सो और भी कई परचा चला दिए हैं कि जो धूनी में आग होवे और उसको कोई झोली में डाल के चला जावे तो संसार को ऐसा सुझा देते हैं कि पूरा औलिया है, सो जबके आग के ऊपर पाप का साया पड़ता है जब उस आग का तेज चला जाता है इससे झोली का कपड़ा आग से नहीं जलता है. सो उन फकीर साधुओं को भी खबर नहीं और कोई-२ यह भी बद्धदुआ देते हैं कि जा तेरा घर जल जावेगा, सो जल जाता है; परन्तु जलता तो है राक्षसी पाप के

जादू से और सुझा देते हैं परचा. सो साधु-फकीरों को राक्षसी पाप की खबर नहीं और वो तो यह जानते हैं कि हमको परमेश्वर ने वचन सिद्ध किया है और संसार को भी राक्षसी पाप से ऐसा ही सुझा देते हैं कि इस साधु-फकीर का वचन सिद्ध है; सो बनियों ने राक्षसी पाप से भुला रखा है कि रावण ने ऋषिश्वरों को जादू के जुल्म से परचों के भरोसे भुला रखा था, उसी तरह से इन बनियों ने भी राक्षसी पाप के जुल्म से साधु-फकीरों को और संसार को भुलाया है और जादू से किसी -२ साधु वगैरा के दिल में ऐसा सुझाते है कि हम सिद्ध हो गए हैं और शेर बन जाते हैं और संसार को भी ऐसा ही सुझा देते हैं कि जिससे संसार के लोग यह जानते हैं कि कोई-२ साधु शेर बन जाते है सो यह करामाती हो गया है और मालिक के घर में पहुँच गया है. सो देखो, यह शरीर किसी का भी नहीं पलटता है जब तक जिन्दा रहता है; क्योंकि मालिक ने जिस तरह का बनाया है वैसा ही रहता है.

सो संसार की और साधुओं की, बुद्धि को ऐसी भ्रष्ट कर दी है जिससे वैसा ही सूझता है और सुझा देते हैं, और कई आग में परचों की चला दी है कि ''नामदेवजी महाराज द्वारका गए थे, सो द्वारका नाथजी ने अपना मंदिर फेर के दर्शन दिए और सवाई गिर बाबा ने घोड़ा छोड़ मस्जिद दौड़ाई और बादशाह से मुलाकात की'' और यह कहते हैं कि ''रामापीर रणूंजा में थे और चौसर खेलते थे, उस वक्त बनियों का जहाज समुद्र में डूबता था. सो रामापीर ने गाँव रणुंजा से बाहें लम्बी करके डूबते हुए जहाज को पकड़ लिया, सो जहाज के पकड़ते वक्त रामापीर के अंगरखे की बाहों से समुद्र के झाग लगे, सो रामापीर के साथ उनका भाई वीरमदेवजी चौसर खेलते थे, सो वीरमदेवजी ने रामापीर के अंगरखे की बाहों से समुद्र के झाग लगे हुए देखे, जब वीरमदेवजी ने कहा कि तुमने समुद्र तक बाहें पहुँचा दी, सो ऐसे सिद्ध हो'' सो ख्याल करने की बात है कि रणुंजा से

सेंकड़ों कोसों पे जाके समुद्र है, सो वहाँ पर रामापीर की बाहें किस तरह से गई होगी? क्योंकि रामापीर तो इस तरह से हुए हैं कि जैसे हम और तुम संसार के आदमी, उसी तरह से रामापीर भी आदमी थे; परन्तु उन्होंने भक्ति की है जिससे उनका नाम रहा है और यह कहते हैं कि बलराजा के घर कृष्ण महाराज 'वामन' रुप धरके और ब्राह्मण की शक्ल बनाके आए और झोपड़ी करने के वास्ते बलराजा से जमीन माँगी और कहा कि मुझको ढाई कदम जमीन दो, तो मैं अपने लिए झोंपड़ी बना लूँ, जब बलराजा ने कहा कि जमीन लो और झोपड़ी बनाओ, जब कृष्ण महाराजने बलराजा से कहा कि वचन दो, जब हम ढाई कदम जमीन अपने वास्ते लेके झोपड़ी बनावें; जब बलराजा ने वचन दिया और वचन देके और जल की झारी लेके ढाई कदम जमीन का संकल्प कृष्ण महाराज को देने लगे, उस वक्त शुकराचार्यजी बलराजा के गुरु भौंरा होकर

झारी की टूंटी में घुस गए. सो पानी टूटी के रास्ते से बाहर नहीं आता था, जब कृष्ण महाराज ने झारी की टूटी के अन्दर सलाई डाली, सो वोह सलाई शुकराचार्यजी के आंख में लगी; इससे शुकराचार्यजी काणे हो गए और घबराके झारी की टूटी में से बाहर को निकले, जब झारी में से पानी बाहर निकलने लगा जब बलराजा ने कृष्ण महाराज को ढाई कदम जमीन का संकल्प दिया और वचन दिया और कहा कि कृष्ण महाराज ढाई कदम जमीन नापो. जब कृष्ण महाराज ने अपना शरीर बढाया, सो आकाश में सर गया और पाताल में पाँव गए और जमीन को नापने लगे जब कुल जमीन को दो कदम की इस कदर देह को बढ़ाई जब कृष्ण महाराज ने बलराजा से कहा कि हमको आधा कदम जमीन और दो, क्योंकि यह तो दो ही कदम जमीन हुई, नहीं तो वचन हारो. जब बलराजा ने देखा कि इतना शरीर किस तरह से बढाया है कि जो

दो कदम जमीन की है और कहते हैं कि आधा कदम जमीन और दो. सो इस बात को देखके बलराजा बहुत घबराए कि अब जमीन तो और कहीं दिखती नहीं है, अब आधा कदम जमीन कहाँ से दूँ, जब बलराजा पर कृष्णजी ने कोप किया और कहा कि आधा कदम जमीन और दो, नहीं तो वचन हार दो; जब बलराजा की माँ ने बलराजा से कहा कि कृष्ण महाराज के आधे कदम जमीन में अपनी देह दे दो, जो पूरी ढाई कदम जमीन कृष्णजी के हो जावे, जब बलराजा ने अपनी माँ के वचन को सुन करके कृष्णजी महाराज के पाँव के नीचे गिर गए. जब कृष्ण महाराज ने बलराजा के शरीर में लात मारी तो लात के लगने से जमीन फट गई; सो बलराजा पाताल में चले गए. जब बलराजा कृष्णजी के पाँव को चाटने लगे, जब कृष्णजी महाराज ने बलराजा से कहा कि बोल क्या माँगता है? जो तू माँगे वहीं दूँ; जब बलराजा ने कृष्णजी से कहा कि मुझको वचन दो जब

मैं माँगू, जब कृष्णजी ने वचन दिया जब बलराजा ने कृष्णजी से कहा कि तुम हमारे घर बारह मास रहो जब कृष्णजी ने कहा कि जो हम तुम्हारे घर पड़े रहेंगे जब तो सब दुनियाँ मर जावेगी, जब बलराजा ने कहा कि तुम वचन हारो, जब कृष्णजी ने कहा कि वचन तो नहीं हारुँ मैं तुम्हारे घर पड़ा रहूँगा. जब कृष्णजी महाराज बलराजा के घर पड़े रहे सो संसार में बरसात होना बंद हो गया. जब दुनियाँ दुख पाने लगी, जब राधिकाजी ने कुल संसार में कृष्णजी की तलाश की, तो ढूँढते -२ बलराजा के द्वारे मिले; जब बलराजा के हाथ में राधिकाजी ने डोरा राखी बाँधी और धरम भाई बनाया और बलराजा से कहने लगे कि बलराजा जी हमको वचन दो, जब बलराजा ने राधिकाजी से कहा-वचन ही है और वचन दिया, बोलो तुम क्या माँगती हो? जब राधिकाजी ने बलराजा से कहा कि कृष्ण महाराज को हमारे घर भेजो; जब बलराजा ने राधिकाजी से कहा कि

कृष्णजी महाराज को तो हम नहीं भेजते, क्योंकि कृष्ण महाराज ने हमको हमारे घर रहने का वचन दिया है इससे नहीं भेजते, जब राधिकाजी ने कहा कि तुम नहीं भेजते, जब राधिकाजी ने कहा कि तुम नहीं भेजो वो ठीक है, परन्तु कृष्ण महाराज तो परमेश्वर हैं सो जबसे कि तुम्हारे द्वारे आये जबसे कृष्णजी महाराज ने संसार में बरसात नहीं होने दिया है, सो सारी दुनियाँ दुखी है सो सारी दुनियाँ बरसात बगैर मर जावेगी, सो तुम नहीं भेजो तो वचन हारो. जब बलराजा ने कहा कि तुम्हारे घर में चार महीना कृष्णजी को भेजूँगा और आठ महीना मेरे घर रहेंगे, जब राधिकाजी चार महीने का हुकम लेके और बलराजा से रुखसत होकर कृष्णजी को लेके घर आए जब चार महीना संसार में बरसात होता है; परन्तु पहले बारह मास बरसात होता था. सो कहते हैं कि कृष्ण महाराज वचनों में आए हैं जिससे आठ महीना तो कृष्णजी बलराजा के घर रहते हैं और चार महीना राधिकाजी के घर आते हैं,

जब संसार में चार महीना मेह होता है और पहले सतजग में बारह मास याने एक महीने में एक दफे अच्छी तरह से बरसात होता था और दूसरे महीने में फिर अच्छी तरह से, कि जिससे जमीन खुस्क नहीं होने पाती थी याने महीने की महीने बरसात होती थी और जमीन तर रहती थी, जिसको लोग 'बारह मेघ माला' कहते हैं. और इस जमाने में तो मुश्किल से चार महीना मेह बरसता है, वो भी जादू से थोड़ा बरसने देते हैं और पूरा नहीं बरसने देते हैं और ऐसी बातों का किस्सा चला दिए हैं कि कृष्ण महाराज राजबल के वचनों में आए हैं इसी वास्ते और महीना, याने आठ महीना नहीं बरसता. किस्सों से तो कुछ नहीं होता यह तो संसार की बुद्धि जादू से भ्रष्ट कर दी है इससे उनको ऐसा ही सूझता है और यह बनिये भी ऐसा ही ख्याल करते हैं कि इनको इतनी ही समझ है, इस वजह से यह जादू के जोर से थोड़ा महीना बरसने देते हैं. सो इस बात का बखान बड़े-२ पण्डित लोग ही करते हैं और संसार के

लोग भी करते हैं; और इस बात को ज्यादा तो मैं क्या कहूँ? कि पढ़े हुए राजा लोग भी कहते होंगे और जब तक मुझको इन बनियों ने अपने जादू से दुखी नहीं किया था जब तक मैं भी यही जानता था कि कृष्ण महाराज ही संसार में मेह बरसाते हैं और आठ महीना कृष्णजी बलराजा के घर रहते हैं इससे चार महीने मेह होता है. ऐसा मैं भी जानता था, इसमें एक रती झूठ नहीं है. मेरा जीव भी यही गवाही देता था कि ''कृष्ण महाराज ही मेह बरसाते हैं और कृष्ण महाराज ही परमेश्वर हैं और घड़न भंजन हैं और जमीन आसमान के घड़ने वाले हैं और रचना को रचने वाले हैं।'' ऐसा मैं भी जानता था और मेरे जीव में ऐसा ही सूझता था, कि जब तक मुझको राक्षसी पाप में दुखी नहीं किया था जब तक मैं कृष्णजी को ही परमेश्वर जानता था कि कृष्ण महाराज ही पैदा करन्ता हैं. जब कोई हिन्दू-मुसलमान, बुद्धिमान शखस मुझसे कहता कि वह तो अपने

मुवाफिक आदमी था, तो मैं उनसे लड़ने को लग जाता था और मैं कहता था कि कृष्ण महाराज तो घड़न भंजन हैं. जब कोई बेचारा बुद्धिमान कहता कि वो बेचारा राजा था और उसने भक्ति की थी इससे उसका नाम संसार में अमर रहा है, तो उससे मैं गुस्सा होकर लड़ पड़ता और कहता कि कृष्णजी तो घड़न भंजन हैं; सो वो तो बेचारे सच-२ कहते थे और मैं उसको ऐसा जानता था कि बेवकूफ हैं और मूर्ख हैं; और संसार में इस कदर कृष्ण महाराज की शोभा करते हैं और कृष्णजी तो घड़न भंजन हैं. सो संसार में कृष्ण महाराज की झूठी बात थोड़ी ही करते हैं परन्तु वो थी सच्ची बात, सो सच्ची बात के कहने वालों को मैं मूर्ख जानता था; क्योंकि मैं राक्षसी पाप में कैद था और अंधे आदमी की तरह से था, जिससे मैं उन सच्चे आदमियों को मूर्ख कहता था. सो मैं यह किस्सों के सुनने की वजह से कहता था कि जो शख्स कृष्णजी को

संसार के मुवाफिक आदमी कहें वो मूर्ख ही हैं, सो मैं मूर्ख उनसे ऐसा कहता था; क्योंकि इन बनियों ने रावण के मुवाफिक राक्षसी जाल के किस्सा चलाये हैं जिसका कुछ पार ही नहीं है, परन्तु संसार में यह कहते हैं कि जो भक्ति करता है उसको कृष्ण महाराज मिलते हैं, क्योंकि जिसको मिलते हैं उसके जीव का सब निस्तारा करते हैं कि जो भक्ति करता है उसको कृष्ण महाराज मिलते हैं. ऐसे-२ किस्सा सुन-२ कर मैं भी अंधा था और भजनों को सुनता था तो वही बात और ब्राह्मणों के पास कृष्ण महाराज की बातें सुनता था तो वो भी यही बातें कहते थे; जब जानता कि कृष्णजी ही घड़न भंजन हैं सो 'मैं साधु तो हुआ परमेश्वर के वास्ते और परमेश्वर सूझते कृष्ण महाराज.' सो मैं जंगल में कृष्ण के वास्ते रोता फिरता, कि जो आँखों का पानी तक नहीं टूटता था और जंगल ही में रहता था और जंगल में ही सोता था और वनस्पति के फूल और

फल वगैरह खाता था और कृष्ण को ढूँढता फिरता था, जिसमें पन्दरह-२ दिन और बीस -२ दिन खाना भी नहीं खाता, भूखा पड़ा रहता और कहता कि मर जाऊँ तो बला से; परन्तु कृष्ण महाराज के दर्शन हों क्योंकि आगे बहुत से साधु हुए हैं उनको दर्शन दिए हैं और उनकी 'मुरादे' पूरी की हैं, इससे मेरी भी 'अबलखा' कृष्णजी से मिलने की है, कुछ माया के वास्ते साधु नहीं हुआ, फक्त आपके दर्शन के वास्ते हुआ हूँ. सो ऐसी चाहना रहती थी कि कृष्णजी महाराज मुझको मिले जब बचूँ नहीं तो यह शरीर कृष्ण पर अर्पण है और संसार के आदमियों को भी अपने पास नहीं आने देता और पहाड़ों में रहता, याने पहाड़ आबू, आड़ावला और मालवे के भाकरों में और सिवाणा के और जालौरी के भाकरों में भागता फिरता और आदमियों को नहीं मिलता था और न उनको अपने पास आने देता, अगर मेरे

पास आदमी आता तो मैं भाग के चला जाता और 'दबक' जाता. सो संसार के लोगों से दरियाफ्त करो तो वोही लोग कह देंगे कि "जिनको देखके मैं भागता था कि यह साधु वहाँ-२ भागता फिरता था और आदमियों से बात नहीं करता था और जंगल में ही रहता था, जब मुझको पन्द्रह या बीस दिन भूखे मरते और प्यासे मरते हो जाते और यह जानता कि अब मेरी जान निकल जावेगी, जब यह बेईमान जादू से कृष्ण महाराज का चेहरा सुझाते." जब मुझको ऐसा मालूम होता कि कृष्ण महाराज मेरे पास खड़े हैं सो कृष्णजी का चेहरा मुझको तरह -२ का सुझाते थे, सो कभी तो विकराल रुप और कभी और तरह का; सो जबके विकराल रुप सुझाते थे, सो किस तरह का सुझाते थे कि कृष्ण महाराज गाय का गोस्त अपने कंधे के ऊपर उठाए खडे. हैं और मेरे से यह दरियाफ्त करते हैं कि तू इस जगह पर क्यों पड़ा है? सो जबके मैं कृष्णजी का स्वरुप ऐसा देखता तो कहता कि ऐसा

अपराधी आदमी कौन खड़ा है! गाय का गोस्त लिए? और मैं हिन्दू हूँ. जब मैं उससे गुस्सा होकर कहता कि तुम चले जाओ, जब वोह कहता, कि तेरी जान तो निकलने को हुई है और तू भूखा-प्यासा यहाँ क्यों पड़ा है? जब मैं ज्यादा गुस्सा होकर यह कहता कि तुम चले जाओ तुम हमारे पास क्या पूछते हो? जब फिर वोह मुझे पूछता कि तू क्यों पड़ा है? जब मैं फिर गुस्सा होकर कहता कि तू अपराधी क्या मुझको गाय का गोस्त देवेगा? सो यह चीज तो मुझ हिन्दू के नजदीक भिष्टा के बराबर है और मैं तो यू ही पड़ा हूँ तुम चले जाओ तुमको क्या काम है? जब न मालूम कि गाय का गोस्त तो कहाँ अलोप हो गया; सो इन बनियों बेइमानों ने राक्षसी पाप कृष्णजी के नामका कराके कृष्णजी का चेहरा सुझा दिया और इसी तरह से चारभुजा और मोर-मुकुट और गोपियाँ वगैरा भी जादू से उसी वक्त सुझा दी. सो जैसे नींद में सपना होता है उसी तरह से वोह जागता सपना था और बहुत आदमियों को दुनिया में

मुरादे = भावनाये, अबलखा = अन्दूरूनी इच्छा, दबक = एकाएक उनकी नजरों से ओजल होना, अबलखा - अभिलाषा, इक्षा,

जागता सपना किसी को भूत का और किसी को देवतों का कराते होंगे; सो वोह कुल तमाम जागता सपना है क्योंकि ऐसा बुरा पाप है कि मरे हुओं का पाप से चेहरा सुझा देते हैं, सो "खैर कृष्ण महाराज तो मुझको क्या सूझते, परन्तु बनिये जो राक्षसी पाप कराते हैं, जिससे बनियों का राक्षसी पाप कृष्ण का चेहरा होके सुझता था." उसी तरह से और भक्तों के नामका पाप कराते हैं तो उनका चेहरा होके सूझता है कि जिस-२ के नाम का पाप करावें उसी का चेहरा दिखे. जब कृष्ण महाराज कहने लगे कि माँग क्या माँगता है? जब मैंने कृष्णजी से सीधे भाव कहा कि "दुनियाँ में काल पड़ता है इससे सारी सृष्टि दुखी है, सो एक तो काल दुनिया में नहीं पड़े और दूसरा कच्ची उम्र में कोई नहीं मरें और तीसरा रोगचाला वगैरा सृष्टि में नहीं होवें और चौथा सतजग की तरह से सब गरीबों-अमीरों के पास द्रव्य और माया होवे, और कोई भूखे नहीं मरे और सतजग की तरह से अमन

सिवाणा = कब्जा है, आडावला = अरावली, मालवे = मध्यप्रदेश का भाग, भाकरों = डूंगर, विकराल = विराट

अमांन रहे और सतजग की तरह से सबकी बुद्धि दुरस्त रहे और किसी में खार-ए-खार नहीं रहे.'' सो मैं तो संसार के वास्ते कहता हूँ और सब सुखी होवें तो उपकार होवें, वोह उपकार रहे जब इतनी बात सुनकर कहा कि ''तुमको क्या काम है संसार मर जावे तो तुझको क्या और रह जावे तो तुझको क्या?'' जब मैंने कहा कि ''संसार मर जावेगा जब आपका भी नाम कौन लेवेगा!'' जब कृष्ण महाराज ने कहा कि ''संसार तो महादुष्ट है, तू माँग, जो तुझको मागना हो.'' जब मैंने कहा कि ''मैने संसार में से निकलके अपना घर ही छोड़ दिया, सो अब मैं क्या माँगू?'' मेरे तो जीव का भला होना चाहिए, मुझको कुछ धन नहीं चाहिए और तुम परमेश्वर कहलाते हो और संसार कहता है कि हमारी बुद्धि परमेश्वर ने भ्रष्ट कर दी है सो संसार को तो कुछ दोष नहीं, वोह तो कहते हैं कि हमारी परमेश्वर ने बुद्धि भ्रष्ट की है सो आप परमेश्वर हो, सतजग में तो संसार की

चारभुजा = मेवाड भूमी बडे महापुरूष हुए उनकी आज भी पूजा होती है

बुद्धि तुमने अच्छी तरह से रहने दी थी और अब तुमने भ्रष्ट की है सो अब तुम्हारे हाथ क्या आता है? सो बुद्धि भ्रष्ट होने से तो गरीब-गुरबा दुःखी होते हैं और गरीबों का तो तारने वाला परमेश्वर होता है; सो अब गरीबों को ऐसा दुःख नहीं देना चाहिए, इतनी मेरे ऊपर कृपा करो; क्योंकि आगे-२ भी तुम्हारी शोभा संसार में हो रही है कि भक्तों के कहने से संसार में बहुत -२ सुख दिए हैं तो 'अब भी मेरी यही अर्ज है कि जैसे सतजग में सुख थे वैसे ही अब होना चाहिए और जब चाहूँ जब मुझको आपके दर्शन हुआ करें.' जब मुझसे कहा. कि तुम ऐसा करो कि तुम सरभंगी के मुवाफिक हो जाओ और कुत्तों के साथ खाना खाया करो, जब संसार के लोग तुमको बुरा कहा करेंगे जब हम तुमको मिला करेंगे और तुम्हारे जीव का भला होगा सो तुम हिन्दू हो तो गाय और सूअर का भी गोस्त खा जाओ तो तुम्हारी आवागवन

मिट जावे; जब मैंने कहा कि " गाय तो हम हिन्दुओं की माता हैं क्योंकि हिन्दू–मुसलमान को दूध पिलाने वाली हैं इससे सब संसार के नजदीक माता के बराबर हैं," सो इस बात में तो मेरा धर्म भ्रष्ट होता है. तो कहने लगे कि "तेरा स्वर्ग में भला करेंगे कि जहाँ पर राघ लहू की कुण्डियाँ हैं वहाँ पर तुझको राघ लहू की कुण्डियों मे नहीं डालेंगे." जब मैं ऐसी बात सुनके कुत्तों के साथ और भंगियों के घर का टुकड़ा खाने लग गया और अपना धर्म भ्रष्ट किया और जो कि उन्होंने कहा था वोह सब चीजें खाली और खाने पीने लगा, "सो गाय के गोस्त की प्रसाद ली, ज्यादा तो नहीं खाया परन्तु मेरा धर्म जाता रहा." सो मैंने जाना कि कृष्ण महाराज परमेश्वर हैं सो यह कहते हैं सो कर लो; सो मुझको तो इस बात की बिलकुल खबर नहीं कि बनियों का जाल है कि जिस तरह से रावण ने ऋषिश्वरों की बुद्धि भ्रष्ट कर दी थी, क्योंकि रावण इन्द्रजाल के

पाप से लोगों का धर्म भ्रष्ट करता था. सो मेरे को यह मालूम नहीं था कि रावण के मुवाफिक धर्म भ्रष्ट करते जाते हैं और रावण और उसके कुल केलोग साधु वगैरह का रुप धर-२ के संसार को बहकाते फिरते थे; और रावण वगैरह ने साधुओं का ही रुप धर-२ के सीताजी को बहका लिया था, उसी तरह से यह बनिये भी डूंड़िये -पण्डितों और साधु -फकीरों का रुप धर-२ के और भाकरों वगैरह में मिल-२ के बहकाते हैं; कभी शिवजी का रुप, कभी गोपीचन्द का, कभी भरतरी और गोरखनाथ का रुप धर-२ के. जो हिन्दू -मुसलमानों ने आगे अनेक साधु -फकीर हुए हैं, उन मरे हुए साधु -फकीरों का रुप धर-२ के बहकाते फिरते हैं और इन डूंड़ियों वगैरह ने ही तरह-२ के रुप धर के संसार में राक्षसी पाप चलाया और राक्षसी वेद के टीपणें और पोथियाँ वगैरह चलाई हैं; और इन्होंने ही पहले से ऐसे-२ किस्से 'भरतरी' और 'गोपीचन्द' और 'गोरखनाथ'

आवागवन = पुर्नजन्म-आना जाना

वगैरह के चलाए हैं कि यह साधु अमर हैं और जीते हैं, सो उनका भक्ति के सबब से नाम अमर रहा है. सो इन बनियों ने ऐसी-२ बातें संसार में चला करके संसार की बुद्धि भ्रष्ट कर दी है और संसार को भुला दिया है और कारबेलिया और सांप पकड़ने वालों की तरह से मरे हुए साधु-फकीरों का रुप धर-२ के पहाड़ों वगैरा में बहकाते फिरते हैं, इसी तरह से मुझको यह ढूंढ़िया वगैरह मिल-२ के बहकाते रहे और कई तरह की आगम मुझको बताई; कोई काल पड़ने की और कोई रोग चाले की और कोई मरी पड़ने की आगम मरे हुए साधु -फकीरों की सूरत में और रुप में होकर मुझको बताई, जब मैंने इन बनियों का जाल पकड़ा है. और मरे हुओं का जागता सपना जो कराते हैं वोह तो और बात है परन्तु बातें तो मुझको खुद रु-ब-रु रुप तरह-२ के धर-२ के बताई थी मरे हुओं के सपने कराने का तो मैं किताब में कई जगह लिख चुका हूँ, सो वोह तो यह है कि पाप मरे हुओं के

नाम का करावें तो सपना सूझ जाता है और जो पाप छोड़ दिया तो सपना नहीं सूझता है, सो इसकी मुझको बिलकुल खबर नहीं थी; मैं तो यह जानता था कि कृष्ण महाराज हैं, सो मुझको यह खबर नहीं कि कृष्ण माहारज के नामका जागता सपना किया है कि जैसे नींद मे सपना करते हैं जैसा यह जागता सपना किया है. जब मैं कृष्णजी के कहने से सब चीजें खानें लगा तो मुझको जादू से बावला कर दिया, सो कृष्णजी तो नहीं था, था तो जादू का फैल; सो जादू से कृष्णजी का स्वरुप सुझा दिया क्योंकि कृष्णजी तो मर गए और जो उनहोंने भक्ती की है तो उन्होंका नाम अमर रहा है क्योंकि वोह भी अपने मुवाफिक और संसार के मुवाफिक आदमी थे, सो जब मुझको जादू के जुल्म से बावला किया तो ऐसा किया कि कुछ कहीं नहीं जावें और माई-बाई और आदमी आपस में सुख-दुख की बातें या कमाने खाने की बातें करते और जो मैं गाँव में जाता और उनकी बातें सुनता तो उनकी बातें मुझको उल्टी मालूम होती

ढूंडियो = सफेद वस्त्र धारी जैन साधु

और कानों से उल्टी सुनाई देती थी, कि यह मुझको गालियाँ देते हैं कि जो आपस में बातें करते थे, वोह मुझको जादू के जुल्म से ऐसी सुझा देते थे कि यह मुझको डाकी और भूत कहते हैं. जब ऐसे जागते सपने किए, जब मैं सोचा; कि कृष्ण महाराज और कोई भी अमर तो नहीं है फिर यह जंजाल क्या और मैं पागल कैसा हो गया हूँ! मालिक के नाम से तो और बत्तीस लक्षण आते हैं और बुद्धि ठिकाने रहती है फिर मैं पागल के मुवाफिक कैसे हो गया? ऐसे-२ जाल तो जागते सपने मेरे को जादू से इन बनियों ने दिखाए, जब मैं वाकिफ हुआ और ढूंढ़िये लोग बहरुपियों के मुवाफिक साधु-फकीर का रुप तरह-२ का धर-२ के मेरे को बहकाते कि अबके काल पड़ेगा या मरी पड़ेगी और हजारों तरह के बिगन बतलाते. जब मैं ने मालूम किया कि यह तो रावण की तरह से जाल है, जब मैं इन बनियों के जाल से वाकिफ हुआ कि रावण की औलाद

कारबेलिया = एक जाति जो सांप को पकडने में माहिर, आगम = भविष्यवाणियां, काल पड़ना = सूखा पड़ना

में से भी ऐसे-२ साधु-फकीरों का रुप धर-२ के ऋषिश्वरों को और संसार को बहकाते थे, बल्कि यह डूंड़िये जीते जागते मिलते थे, यह कोई सपना नहीं था. यहाँ तक तो यह बातें मुझको जादू से सुझा दी क्योंकि जादू से मुझको बावला कर दिया था, जिससे ऐसा सूझने लगा था. सो जो कोई गरीब बातें भी करें तो ऐसा ही मालूम होता था कि जैसे गाली देवें हैं, सो वोह तो बेचारे सीधी बातें करते थे और मुझको जादू से जो बावला कर दिया था इससे मुझको उल्टा सुझता था, जब मैं उनको गालियाँ देता कि बेईमानों तुम हमको गालियाँ देते हो और भूत डाकी कहते हो, और मैं तो परमेश्वर का भक्त हूँ और तुम हमेशा तुम्हारी मौज आवे उसी तरह से मुझको कहते हो. जब मैं किसी-२ को पत्थरों से मारने लगता और बुरी- २ गालियाँ देने लगता, सो मैं तो अकेला और संसार बहुत और में शरीर में बहुत कमजोर और आँखों में दम आ रहा, सो मैं जादू के जुल्म से

दुखी हुआ था. सो जब मुझको गालियाँ देते हुए लोग देखे जब मुझको मारे और कहें कि यह बावला हो गया है सो जिस गाँव में जाऊँ वहाँ यहीं हालत करें और वहीं मारे और कहें कि आगे बहुत समझदार था और अब किसी ने फिटकार दी है; सो बावला हो गया है. सो जिस गाँव में जाऊँ वहाँ पर वहीं हाल मेरा करें, याने गुजरात और मालवा में और मारवाड़ वगैरा याने जिस मुल्क में जाऊँ तो उसी मुल्क में बावला-२ कहें और मारे, कि जो मेरा बुरा हाल हो गया सो मैं यह विचार करूँ कि कुवें में गिर जाऊँ या फांसी या अमल खाके मर जाऊँ ताकि मेरा दम निकल जावें, तो ठीक बात है ऐसा दुखी हुआ था, सो इस तरह के दुख सहते-२ दस-बारह बरस गुजर गए तो यह विचार करूँ कि अब मैं कहाँ जाऊँ? ऐसा दुखी हुआ था, जब इन बनियों ने एक गाय को कच्ची उमर में जादू से गाँव बालोतरा में मार दी, सो वोह रात भर मरी

डाकी = मरने के बाद फिर जिन्दा दिखाई देना, बत्तीस लक्षण = बत्तीस गुण.

हुई पड़ी रही, सो मैं जहाँ रहता था, वहाँ पर भंगी की तरह से रहता था और मजदूरी करके और झाड़ू-बुहारु देके रोटी खाता था और जब मैं मरी हुई गाय के पास गया तो लोग कहने लगे कि, ऐ बावले गाय के पास मत जा, यह तो मरी हुई है, जब मेरे को जादू से ऐसा सुझाया कि कान हिलाती है, जब मैंने कहाँ कि बेईमानों गाय तो जीती है और तुम मरी हुई कहते हो, कुछ मैं बावला थोड़ा ही हूँ? यह तो कान हिलाती है, सो मैंने कान हिलाते देखा, जब मैंने जाना कि जीती है और थी मरी हुई और जादू के जुलम से गैला था सो मेरे को ऐसा सुझा कि कान हिलाती है, सो जीती है जब मैंने गाय के पीठ पर हाथ मारा जब गाय बैठी हो गई, जब वही लोग कहने लगे कि इस बावले को मत मारना, यह तो सिद्ध हो गया है और मालिक के घर में पहुँच गया है, सो इसको मारना अच्छा नहीं है, यह तो भक्त है इससे लोगा दिखाऊँ बकता है; और मैं जादू में

दुखी था और लोगों को जादू से ऐसा सुझावें कि यह भक्त है सो अपने को भुलाने के वास्ते और संसार के भुलाने को बकता है और संसार को दिखाने के वास्ते सिरड़ी बन गया है, सो संसार के आदमी अपने आप यह कहें कि यह बावला तो नहीं है, यह तो भक्त है परन्तु इस वास्ते बावला बन गया है कि, कोई मुझको भक्त नहीं कहे और मेरे पीछे संसार के लोग नहीं लगें, इस सबब से सिरड़ी की तरह से बकता है, सो संसार को जादू के जुल्म से ऐसा सुझावें और मैं तो दुखी था और संसार ने आप से आप बातें चलादी थीं, जब ऐसे-२ परचे मेरे हाथ से चलाने शुरु किए, सो बालोतरा में बनियों का सेवक था और बनियों के मंदिरों की पूजा करता था, सो उसको भी जादू से अंधा किया था, सो गाय का परचा देखके सेवक मेरे पाँव में पड़ गया और पाँव को छोड़े नहीं, और "मैं जादू के जुल्म से महा दुखी कि जो आदमी का कपड़ा लग जावे तो वोह भी सुहावे नहीं," ऐसा दुखी था और

अमल = अफीस, बालोतरा = कहबा

सेवक मेरे पाँव को छोड़े नहीं जब मैंने गुस्सा होके कहा कि बेईमान, तुझको नहीं सुझे तो मैं क्या करुँ मेरे नजदीक अपनी आँखों में धूल डाल, सो उसने सुनते ही इस बात के, आँखों में धूल डाल ली, सो उसकी आँख खुल गई सो मैं कौन सा जानता था कि धूल डालने से आँख खुल जावेगी? मैंने तो गुस्सा होके कहा था जब सेवक ने माना कि इनका वचन धूल डालने का हो गया है जब उसने धूल आँखों में डाली तो उसकी आँख खुल गई और सूझने लगा और कहने लगा कि जिसको तुम मारते थे और बावला कहते थे उसने तो हमारी आँख खोल दी, सो वोह तो हमारा गुरु है इसी तरह पर एक गांव खेडा परगने मालानी में है, सो वहाँ पर चमारों यानी मांवियों का गुरू रहता था, सो उसकी औरत का दूध जादू के जुल्म से सुखा दिया था, सो उसके चार-पाँच बच्चे बगैर दूध के भूखे रह-२ के मर गए, सो मैं अपने फकीरी की हालत में वहाँ पर चला गया

बावले = कोई तरह का गम नही, गैला = नासमझ

तो वह औरत परचों का हाल सुन के मेरे पाँव को पकड़के माँई बैठ गई और कहने लगी कि बाबाजी मेरे चार-पाँच बच्चे बगैर दूध के मर गये हैं सो हाल इस तरह से है कि जो ऊंगलियों में दूध होवे तो मेरे थनों में दूध होवे, सो वचन कहो, सो मेरे दूध आवे; "जब मैंने कहा की मैं तो संसार का बाल -बच्चा हूँ और संसार माता-पिता है, सो मैं क्या जानूँ दूध आवे या नहीं आवे? सो मैंने उसके थन बच्चों के मुवाफिक चूंसे, सो दूध आ गया कि जिस तरह से मांई-बाई के दूध होता है उसी तरह से उसके भी दूध आ गया, तो उसने भी जाना कि यह तो बड़ा वचन सिद्ध है और चले परचे और मुझको खबर नहीं," और फिर गाँव पादरु इलाके सिवाना में जो है उस जगह मैं गया, तो क्या देखता हूँ कि मर्द और बाल -बच्चे कूअें के हौज में स्नान कर रहे हैं और तेल, मेट और साबून दे रहे हैं और गाय-भैंस खेली में पानी पीती हैं, सो मैंने यह काम देखके बाल बच्चों को और मर्दों को स्नान करने से

बकता = बडबड करना, बालोतरा = कस्बा, सेवक = बनियों के मन्दिर का पुजारी, परचा = चमत्कार

मने कर दिया, सो मेरे कहने से बाल बच्चे और दूसरे आदमी तो हट गए और ठाकुर का आदमी नहीं हटा, जब दूसरे लोग और बाल बच्चे कहने लगे कि यह बाबा तो बड़ा सिद्ध है और बावला-सा दिखता है सो यह मने करता है सो हम तो नहीं नहाते, जब उस ठाकुर के आदमी ने कहा कि ऐसे साधु बावले तो बहुत फिरते हैं हम तो नहावेंगे, इस पागल के कहने से हम क्यों रुक जावें? जब मैंने कहा कि तुम मत नहाओ और मैं लड़ने लगा तो ठाकुर का आदमी मुझ पर गुस्सा होकर कहने लगा, जब मैं डरा कि मुझको मारेगा, जब मैंने खेली के सर मारा और खेली से सर फोड़ के दूसरे गाँव चला गया और ठाकुर का आदमी स्नान करता रहा, जब वोह बाहर निकला तो कोढ़ी हो गया और उसको बड़ा रोग हो गया, जब मैंने ठाकुर के आदमी को हौज में नहाने से मने किया कि इसमें मत नहाया करो, क्योंकि इसमें गाय

वगैरा पानी पीती हैं, इस वजह से मने किया था, सो ठाकुर तक और रैयत तक कोई उस रोज से हौज के अन्दर नहीं नहाते, सो उसकी बुद्धि भ्रष्ट करके जादू से बनियों ने नहलाया और जादू से बड़ा रोग कर दिया, जब उसने साध अनोपदास के नाम की प्रसाद बोली और कहा कि अब मैं कभी भूल के भी इस हौज में स्नान नहीं करूँगा, मेरा यह गुनाह माफ करो, तो उसके नाम का पाप चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर करना छोड़ दिया तो वोह अच्छा हो गया और मेरे को खबर ही नहीं और मेरे नामका दुनियाँ में परचा सुझावें और मेरे नाम का पाप दिन-२ ज्यादा करके बावला कर दिया कि, जो मैं दिन -२ बावला होता जाऊँ कि, जो दिन-२ लकड़ी के मुवाफिक सूख गया कि, जो मेरा जीव अन्दर से बहुत दुखी और फिर वहाँ से भागा-२ सिवाणा के इलाके मे गाँव बिजलिया के भाकर में गया और वहाँ जाकर बैठा और महा दुःखी

और यूँ कहूँ कि, मेरा दम निकल जावे तो बहुत अच्छी बात है, इस दुख में बैठा-२ सोच-विचार करता था कि, वहीं भाकर में जहाँ बैठा था वोह जादू से बनियों ने फाड़ा, सो मैं डाकोरजी के रास्ते में लाल गुवाड़ी के हद में पहुँचकर कि, जहाँ पर नौ-दस कोस के उजाड़ में झाड़ी पड़ती हैं वहाँ पर जमीन ही जमीन में जाकर बाहर निकाला, सो जिस तरह से कि, जादू से देवताओं की पुतलियों को जमीन फाड़ के निकालते हैं उसी तरह से इन बनियों ने जमीन माता को रोग करके और जमीन को फाड़के मुझ गरीब साधु को निकाला, तो मैं हवा और गरद के जोर से बेहोश हो गया, सो खबर नहीं दस या बारह रोज पड़ा रहा या कम ज्यादा, उसकी मुझको खबर नहीं है और जबकि मैं होश में आया तो मैने बहुत सोच किया कि, मैं किस मुल्क में आ गया? यह क्या जुल्म हुआ कि जो आवाज आदमियों की सुनूँ तो दूसरे मुल्क की और मुल्क देखू तो दूसरा? जब

मैंने दिल में सोचा कि, मैं आदमियों से यह कहूँ कि मैं जमीन के अन्दर से निकला हूँ, तो मानेंगे नहीं, इससे मैंने उन आदमियों से यह कहा कि मारवाड़ यहाँ से कितनी दूर है और किधर है? जब उन्होंने मुझको बड़े-२ शहर बताए कि जो जोधपुर के राज के रास्ते में आते थे, जब मैं दरियाफ्त करते-२ मारवाड़ में वापिस आया, सो मुझको जादू के जुल्म से दूसरे मुलक में निकाला और लोगों को जादू के जुल्म से क्या सुझावें कि बाबा ने समाधि ली थी सो कहाँ जाके निकला? सो तो बाबा की बाबा जाने और मैं तो जादू के जुल्म से महा दुखी और ऐसा चाहूँ कि जीव निकल जावे तो अच्छा हो और दुनियाँ को जादू के जुल्म से ऐसा सुझावें कि सिद्ध हो गया है, परन्तु मैं लाल गुवाड़ी की तरफ से वापिस आते वक्त गाँव चोटीला इलाके पाली में आया और वहाँ पर बैठा और मेरे नामके परचे-२ तो पहले से पुकारते थे, कि ठाकुर का आदमी

अपनी औरत समेत मेरे पास आया और उसने और उसकी औरत ने मेरे पाँव पकड़ लिए और उस आदमी के और उस औरत के कोई बाल बच्चा जादू के जुलम से नहीं हुआ था और शादी किए को भी बीस या तीस बरस हो गए थे, सो मांई-बाई के पेट में रोग कर देते हैं जिससे बे-औलाद रह जाते हैं, सो जब उस आदमी को और उसकी औरत को मेरे आने की खबर चोटीला में हुई तो ठाकुर का आदमी अपनी औरत समेत मेरे पास आया और मेरे पाँव पकड़े और छोड़े नहीं, जब मैंने गुस्सा होके उन दोनों से कहा कि हम तुमको क्या दें, हमारे पास बेटा कहाँ से आया, जो देवें? तुम चले जाओ सो वह नहीं गये और पांव पकड़े हुए बैठे रहे! जब मुझको बहुत गुस्सा आया और कहा कि क्या तुमको गू याने-चरकीन देवे? सो मैंने गुस्सा होकर उनको गू का कहा और मुझको यह खबर नहीं थी कि इसके बच्चा होगा, सो गू ही गू हो जावेगा, सो उसके

डाकोरजी = गुजरात में एक शहर जहां कृष्णजी का बडा मन्दिर है-
लागवाड़ी = मुल्क का नाम, गरद = शरीर से पसीना निकलना,

नौवें महीने बच्चा पैदा हुआ, क्योंकि मैंने जब गू का कहा तो दोनों औरत-मर्द यह सोचे कि महाराज का वचन हो गया सो घर में बेटा-बेटी होंगे सो गू ही गू हो जावेगा, महाराज के पाँव छोड़ दो, सो यह ख्याल करके पाँव छोड़ दिए, सो फिर तो उसके दिल में सिधाई जम गई सो वोह भी यह कहने लगा कि बाबा वचन सिद्ध है क्योंकि हमारे को गू का नाम लिया था सो हमारे बेटा हो गया, सो इन बनियों ने मांई-बाई के नामका पाप छोड़ दिया सो उसके पेट में जो रोग थे वोह मिट गए, सो उसके बेटा हो गया और फिर बच्चे होने लगे, सो आप लोगों को और सब लोगों को इस बात की खबर देता हूँ कि ईश्वर ने किसी को भी सतजग में बे-औलाद नहीं रखा है क्योंकि सतजग में सबके ही औलाद होती थी क्योंकि परमेश्वर ने आदमी के हाथ यह बातें नहीं रखी हैं, बेटा-बेटी वगैरा देने की, यह तो जिस दिन से राक्षसी पाप चाला है उस दिन से

बे-औलाद किसी-२ को रख देते हैं और जिस किसी को कि, बे-औलाद रखा हो और उसके नामका पाप छोड़ देवें तो उसके औलाद हो जावे तो फिर संसार यह कहने लगे कि देवतओं ने दिया है या फकीरों ने दिया है, सो दुनियाँ को भुलाने के लिए राक्षसी पाप की सिधाई चलाई है, सो यह सिधाई परमेश्वर के भुलाने के वास्ते संसार में बनियों ने जादू के जुल्म चलाए हैं, सो संसार के लोग सिधाई के भरोसे से परमेश्वर को भूले हुए हैं और बनियों के राक्षसी पाप को परमेश्वर की कुदरत जानते हैं, यह परचा बनियों ने इस वास्ते चलाए हैं कि, दुनियाँ परचों के प्रताप से भूली हुई रहेगी तो हमारे राक्षसी पाप की पहचान किसी को भी नहीं होगी, तो हमारे राक्षसी पाप की शोभा संसार में बनी रहेगी, सो दुनियाँ को तो खबर नहीं कि राक्षसी पाप में बाबा का ब्रह्म कैद है, इससे बाबा दुःखी है; सो दुनियाँ की बुद्धि जादू से भ्रष्ट कर दी है जिससे

दुनिया को ऐसा ही सुझा दें कि बाबा जान के गैला बन गया है और जब तक मैने बनियों के जाल का हाल किताब में नहीं लिखा था जब तक तो मेरे ऐसे-२ परचे लोगों को भुलाने के वास्ते सुझाते थे और जब से मैंने इनके जाल को संसार में जाहिर करना शुरु किया है और किताब में लिखवाया है जबसे मेरे कहने से किसी का भी भला-बुरा नही होता है, सो मैं तो पहले भी किसी के भलाई के और बुराई के वास्ते नहीं कहता था और अब भी किसी को कुछ नहीं कहता हूँ, परन्तु यह महाजन खुद ही अपने राक्षसी पाप से जो चाहते थे, वोह करते थे और जो चाहते हैं वोह अब करते हैं, परन्तु पेश्तर लोगों की नजरों में मुझको वचन सिद्ध सुझा देते थे और संसार के लोग मुझको कहते थे कि बाबा गैला बावला बना फिरता है और वचन सिद्ध है, सो मैं तो भ्रमजाल में दुखी, सो मैं दुनियाँ से कहूं कि जैसे रावण के पाप में शनिचर कैद था

उसी तरह से बनियों ने भी भ्रमजाल में मुझको कैद किया है जिससे मैं दुःखी हूँ, सो संसार की बुद्धि जादू के जुल्म से कैद की हुई है, सो उनको क्या सुझावें कि सिद्ध हो गया है, इससे गैला होके बहकाता है और मैं समझाऊँ कि जैसा रावण का जाल था, उसी तरह से इन बनियों का जाल फैल रहा है सो इस जाल को भी रावण की तरह से छोड़ाओ तो सब उभरो, क्योंकि तुम सिधाई के भरोसे भूले हो, सो मैंने इन्द्रजाल की सिधाई बहुत देखी है और उसी जाल में कैद हूँ और दुःखी हूँ और जो कि मैंने नामदेवजी छीपा का हाल ऊपर लिखा है कि नामदेवजी को द्वारकानाथजी ने मंदिर को फेरके दर्शन दिए थे, सो मंदिर तो जादू के जुलम से फिरता है और यह कहते हैं कि सवाईगिर बाबा ने घोड़ा छोड मस्जिद दौड़ाई, सो उन्होंने नहीं भी दौड़ाई होगी तो भी यह पहले से ही संसार में किस्सा चला दिए हैं सो यह अकल की है कि जब हम कभी जादू से

मस्जिद और मंदिर वगैरा फेरेंगे कि अगले करामाती थे वैसे ही अब भी हैं, सो इस तरह से हमारे राक्षसी पाप की खबर किसी को भी नहीं पड़ेगी, सो यह बातें जो लिखी गई हैं जादू की हैं, क्योंकि संसार में कहते हैं कि कृष्ण महाराज ने अपना शरीर बढ़ाके कुल पृथ्वी के दो कदम जमीन की, सो कृष्णजी भी अपने मुवाफिक आदमी थे सो इतना लम्बा शरीर किससे हो सकता है कि जो आसमान से सर लगे? क्योंकि नारायण ने जिस कदर आदमी की देह बनाई है उतनी ही रहती है और आसमान से सर लगे इतनी लम्बी देह किसी से भी नहीं होती है, होता तो जादू से है, सो यह भी राक्षसी विद्या की शोभा है और कृष्णजी कोई जल थोड़ा ही थे सो चार महीना संसार में बरसते, सो दुनियाँ कृष्ण महाराज का और बलराज का किस्सा कहते हैं कि कृष्णजी आठ महीना तो बलराजा के घर पर रहते हैं और चार महीना राधिकाजी के घर रहते हैं, सो जबके राधिकाजी

गैला = पागल

के घर रहते हैं जब चार महीना मेह बरसता है, सो कृष्णजी थोड़ा ही बरसते हैं यह तो सब राक्षसी विद्या की शोभा है; क्योंकि जब जल बरसता है जब जमीनमाता पानी पीती हैं, क्योंकि पहले बारह मास पानी बरसता था जब जमीनमाता महीने की महीने पानी पीती थी, जिससे जमीन माता का शरीर महीने तक तर रहता था और जबके जमीनमाता का आहार गल जाता है और पेशाब के रास्ते और पायखाना के रास्ते होके निकल जाता है तो जमीनमाता को फिर भूख लगती है, तो महीना के बाद फिर जमीनमाता पानी पाती, सो जिस तरह से कि आदमी वगैरा को प्यास लगती है और वोह खाना दाना खाता है और पानी वगैरह पीता है और खाना वगैरा हजम होके पायखाने के और पेशाब के रास्ते से निकल जाता है और फिर भूख लगती है, जब फिर खाना वगैरह खाता है जिससे शरीर को दुःख वगैरह नहीं पहुँचता है तो उसी तरह से जमीन माता भी पानी पीके

नामदेवजी धीपा = एक भक्त, सवाईगिर बाबा = एक भक्त

आहार करती हैं, क्योंकि अपने मुवाफिक जमीनमाता का भी शरीर है, सो जब इसका आहार गलता है जब पेशाब और पायखाने के ही रास्ते निकलता है, जब रत्नागर सागर नीचे को उतर जाता है, सो "रत्नागर सागर जमीनमाता की ओझड़ी है" और जो कि "सात सायर कहते हैं वोह जमीनमाता के शरीर में ओझड़ी के मिसाल सतपुडा है सो यह सतपुडा ओझडी के मुवाफिक है और जमीन माता तो सदा जल का ही आहार करती है और जिस तरह से कि आदमियों और चौपायों-पंखेरुओं के पेट में ओझड़ी के पास सतपुडा की सतपुड़ा ओझड़ी होती है, उसी तरह से जमीन माता की ओझड़ी के पास सतपुडा ओझडी होती है और यह बनिये बेईमान जादू के जुल्म से जमीनमाता को आठ महीना रोग रखते हैं, सो गरमी के महीनों में तो चार महीना गरमी का रोग रखते हैं कि जो लूएं वगैरा ज्यादा चलती हैं यह जमीन को गरम

राधकाजी = राधिकाजी-कृष्णजी की पत्नी, किस्सा = कहानी, आहार = भोजन/खाना

ताव का रोग है जब आदमियों को और चौपायांन पंखेरुओं को गरम ताव की वजह से बीमारियाँ होती हैं और सरदी के महीनों में चार महीना सरदी का रोग रखते हैं, कि जो सरदी की वजह से जानवरों वगैरह को और आदमियों वगैरह को ठण्डा ताव चढता है, सो जबकि जमीनमाता को ठण्डा ताव चढता है और जादू के ठण्डे ताव का रोग करते हैं जब अनाज और वनस्पति वगैरह सरदी के रोग की वजह से जल जाती है, जैसा कि आदमियों को ठण्डा ताव चढ़ता है और कलेजे में से भी और पेट में से भी ठण्ड उठती है, उसी तरह से जमीन को भी सरदी की मौसम में ठण्डे ताव का रोग जादू से किया है और जो गरमी के दिन आते हैं और लूएं वगैरा ज्यादा चलती हैं तो जादू से जमीन माता को गरम ताव का रोग किया है और जो आदमी को यह सर्दी और गरमी के रोग नहीं हो तो हमेशा तन्दुरुस्ती से शरीर रहता है और तबियत खुश रहती है;

रत्नागर सागर = समुन्द्र

तो सतजग में जमीन माता को कोई तरह का रोग नहीं था जब सबको हवा सुहाती थी और जमीन माता का जीव खुश रहता था और आदमियों को और अनबोलों को और चौपायों व पंखेरु वगैरह को भी जब सरदी का रोग हो जाता है और फैल जाता है, सो राक्षसी पाप के जुल्म से सरद गरम के रोग करके जमीन माता को दुबली कर दी है इससे जमीन माता की चर्बी गल गई है कि जिसको संसार में सोने रुपे की खांने कहते हैं वोह बीमारी के सबब से गल गई हैं और बनियों ने संसार में किस्सा चलाकर यह प्रगट कर रखा है कि, सरदी-गरमी की रितु है और बनिये बेईमान अपने कुल में सब जानते हैं कि सरद -गरम का रोग है और हमने जादू से रोग जमीन को किया है और संसार के लोगों की बुद्धि राक्षसी पाप से ऐसी भ्रष्ट कर दी है कि, जो जमीन के शरीर की पहचान भुला दी है, कि जो बे-गिनती जमीन को सरद - गरम के रोग करें तो उसको पहचाने भी

नहीं और सरद–गरम के रोग को भी रुत–२ कहते हैं, सो जिस तरह से कि अपना शरीर है और वोह बारह मास अच्छा रहता है और रोग नहीं होता है तो कैसी अच्छी तबियत रहती है और जो सरद –गरम का बुखार आदमी को चढ जावे तो कैसी तबियत बिगड़कर खराब हो जाती है और शरीर भी दुबला हो जाता है, फिर इसी तरह से जमीन माता भी जीवता जीव है, सो जमीनमाता को भी सरद–गरम के रोग जादू से किए हैं इससे जमीन माता भी रोग के सबब से दुबली हो गई है परन्तु इन बनियों ने संसार के भुलाने के लिए लाखों तरह के किस्से चला दिए हैं कि जो मैं ऊपर अनेक तरह के भक्तों का हाल लिख चुका हूँ कि जिन्होंके नामके किस्से चला दिए हैं उससे कुल हाल बनियों के राक्षसी जाल का मालूम होता है, कि जो संसार में राक्षसी पाप के किस्से बनियों ने चला दिए हैं कि जिससे संसार के लोग करामात को समझकर भूले हैं और

ताव = बुखार, लुऐं = गर्म हवा के झोंके

है बनियों का जाल, सो राक्षसी पाप के जुल्म से काल वगैरा डालते हैं और जाल से ही कच्ची उमर में मारते हैं, सो जाल तो सामने ही दिखता है; सो यह शंकराचार्यजी तो आदमी थे सो उन्होंने तो भक्ति की थी इससे उन्होंके नाम अमर रहे हैं कि फलाने ने भक्ति की और यह बेईमान जागते सपने करके जादू के जुल्म से देवताओं वगैरह को सुझा देते हैं, कि जिससे सपने की भी बातें करते हैं उसी तरह से जागता सपना करें जब वोह बातें करने को लग जावें, सो जब जिस देवता का सुपना करें तो कहते हैं कि अब के बरस में काल पड़ेगा या दुनियाँ में रोग होने का सपना करें और जहाँ मरी पड़ने का सुझावें और जहाँ यह सुझावें कि अब के बरस में तलवार चलेगी या किसी का राज डूबेगा, सो जिसका बनियों को राज डुबोना होवे या किसी का बुरा करना होवे, सो यह बनिये मरे हुओं के जंजाल करके कई राज डुबो देते हैं और तमाम जहान को भूल ही भूल पड़ाके

डुबोवेंगे; और जो कि संसार में यह कहते हैं कि शुकराचार्यजी भौंरा बना था, सो आदमी से किस तरह से भौंरा बन गया होगा! और किस तरह से भौंरा बनके बलराजा के झारी की टूटी में घुसकर बैठ गया होगा? परन्तु संसार की बुद्धि जादू से भ्रष्ट कर दी है इससे जानते हैं कि सच भौंरा ही हुआ होगा और यह कहते हैं कि अजेपाल जोगी अब तक जिन्दा है और किसी -२ को दर्शन देता है, सो जब किसी को अजेपाल जोगी के नामका पाप कराते हैं जब बनियों के घरका राक्षसी पाप कि जिसको सपना किया होवे उसको अजेपाल का चेहरा होकर सूझता है, सो वोह जागता सपना है सो जब किसी को जागता सपना करके सुझा देवें जब वोह दुनियाँ में बातें करता है कि हमको अजेपाल जोगी मिला, सो न तो उनको खबर कि जिसने अजेपाल जोगी को जागते सुपने में देखा, सो उनको यह भी खबर नहीं कि यह जागता सपना है और न

रूत = मौसम/ऋतु

दुनियाँ में बात के सुनने वालों को यह खबर कि यह जागता सपना है, बल्कि वोह जागते सपने को करामात-२ करते हैं और अनेक भक्त हुए हैं जिन का भी चेहरा राक्षसी पाप के जुल्म से सुझा देवें, जब दुनियाँ कहती है कि देवी-देवता चेतन हैं और परचा वाले हैं जब दुनियाँ को दर्शन देते हैं और दुनियाँ में यह नहीं समझते हैं कि जैसे नींद में सपना राक्षसी पाप के जुल्म से कराते हैं वैसे ही यह जागता सपना है, सो यह सब इन्द्रजाल है और यह जाल बनियों ने चलाया है और इन्द्रजाल का जो गुण है वोह सब बुरा ही है, सो गुप्ती पाप से तो हमेशा ही बुरा होता है और राजा -बादशाह और चोर -चण्डाल और साधु-संत, पण्डित-फकीर और गरीब-गुरबा होवे तो वोह भी यह काम करना नहीं चाहते हैं क्योंकि पापों से तो बुरा होता है और खेती-बाड़ी का पाप और राजा -बादशाह के पाप से और चोर -चण्डाल के पाप से इन्द्रजाल का पाप ज्यादा है और इन्द्रजाल में तो लाखों आदमी गुप्ती पाप

करते हैं सो वोह तो संसार में अलोप है और जो कि चौरासी लाख कुण्डियां हैं और संसार में स्वर्ग -नर्क कहते हैं वोह रावण की तरह से बनियों ने गुप्ती पाप का स्वर्ग-नर्क किया है, वोह प्रगट नहीं है, सो खेती-पाती के काम का भी पाप जबसे चला है जबसे बनिये काल पड़ाने लगे हैं और चोर -चण्डाल भी जबसे हुए हैं कि जबसे इन बनियों ने इन्द्रजाल का पाप चलाया है और जबसे ही बनियों ने धन को काबू में कर लिया है जबसे भूखे मरते हैं, इससे चोर-चण्डाल चोरी करते हैं और आगे काल वगैरह नहीं पड़ता था, जब धान वगैरह बगैर बोए हुए के भी बहुत था और धन भी हर एक के घर में बहुत था कि जब चोर -चण्डालपना बिलकुल नहीं करते थे और परमेश्वर के ध्यान में रहते थे, परन्तु दुनियाँ देवकला के भरोसे भूली हुई है कि जैसे रावण ने भुलाए थे परन्तु इन बनियों ने तो ज्यादा भुलाया है, सो यह सब जादू खोरों का प्रताप है और गुप्ती पाप से

सपने होते हैं और मरी पड़ती है और दुःख भी करते हैं; लेकिन यह खबर नहीं है कि, एक-२ के नाम से बुरी तरह से जीवड़े मराते हैं जिसका कुछ अंदाजा नहीं और दुनियाँ में यह जो कहते हैं कि, मालिक नारगी में डालता है, सो जिसको कि चौरासी लाख कुण्डियाँ कहते हैं और यह कहते हैं कि कीलों की मार देते हैं और बहुत से यह कहते हैं कि गुरजों की मार देते हैं और बहुत से यह कहते हैं कि चमड़ों की मार देते हैं और चमड़ों को उतारते हैं और यह कहते हैं कि गरम थम्बों से बाँधकर मारते हैं और बहुत से यह कहते हैं कि स्वर्ग-नर्क में अर्क निकालते हैं और खून उतार देते हैं और बहुत से यह कहते हैं कि कुण्डियों के नीचे जाते हैं जब तो कीड़े खाते हैं और जबकि बाहर आवें जब कागले और चीलें चोचें मारती हैं और बहुत से यह कहते हैं कि वहाँ पर लहू की कुण्डियाँ हैं और राध की कुण्डियाँ हैं, सो उन कुण्डियों पर ऐसा पाप होता

है कि, पहले तो जीवड़ों के शस्त्रों से चोट देते हैं जब उन शस्त्रों की जरब से खून निकलता है और जख्म होते हैं और फिर उन जख्मों में कीड़े पड़ जाते हैं, जब वोह कीड़े उन जीवडों को खाते हैं तो फिर उनको दर्द बहुत होता है; जब वोह जीवड़ें उस तकलीफ से कूण्डियों में ऊँचे-नीचे तड़पते हैं, सो यह बेईमान ऐसा तो रावण के मुवाफिक संसार के नामका पाप कराते हैं और शोभा चलादी हैं कि, स्वर्ग-नर्क में कुण्डियाँ नारगी डालने की हैं, सो तो सारी दुनिया भी शोभा कर रही हैं सो इन सजाओं का कुछ पार नहीं है और जिसको कि, तुम हिन्दू-मुसलमान स्वर्ग-नर्क कहते हो वोह बनियों के घर का रावण के मुवाफिक अलोप पाप है और स्वर्ग-नर्क तो यह जमीनमाता ही हैं और गुप्ती पाप से अनबोले जानवरों को मारते हैं, सो तुम हिन्दू-मुसलमान खुले दिल से बखान ही कर रहे हो और गुप्ती पाप में तो अनबोले जानवर काम आते हैं

और चौपाये और पंखेरु और जल के रहने वाले जानवरों के कुलों को दुख करके और कलपाके संसार के नाम से मारते हैं, सो उस स्वर्ग को तो तुम सारे संसार के लोग बखानते हो और सुनते हो सो वोह तो बात छानी नहीं, सो तुम सभी लोग कहते हो कि वहाँ मालिक की दरगाह है सो जहाँ कि मालिक की दरगाह में स्वर्ग-नर्क की कुण्डियाँ हैं सो मालिक नारगी डाल के सजा देता है, सो मालिक ने तो तुम, हम और जीवाजून और जमीन -आसमान की इस तरह से रचना बनाई है कि, मालिक कहीं एक जगह थोड़ा ही बैठा है? वोह तो सबमें व्यापक है और मालिक की रचना तो यूं है, सो तुम, हम सभी देखते हैं सो अब तुम लोगों इस बात को गौर करके देखो! और सोचना चाहिए कि जहाँ राध लहू की कुण्डियाँ हैं, सो वहीं तो जीवड़ों को मारते हैं जब राध खून होता है, सो इतनी बात तो आप सब संसार के लोगों को सोचना चाहिए! क्योंकि, रावण ने

कीलों = लोहे की कील, गुरजों = लोहे का बना हुआ हथियार.

राक्षसी पाप के स्वर्ग बनाके मालिक की दरगाह सुझाया था और सब संसार में राक्षसी पाप के स्वर्ग का बखान चलाया था सो रावण दुनिया से मेला थोड़ा ही कहता था कि मैंने राक्षसी पाप का स्वर्ग बनाया है वोह तो जादू से बुद्धि फेरके ऐसा सुझाता था कि, मालिक की दरगाह है और मालिक की दरगाह के किस्से गुप्ती पाप के चला दिए थे, सो यह बात सारे संसार में प्रगट है सो संसार के लोगों ने राक्षसी पाप का स्वर्ग तुड़वाया सो रावण को रावण की मय औलाद के दुख देकर तुड़वाया, जब संसार बचा है और जैसा कि रावण के पाप का बखान संसार के लोग पहले ही कर रहे थे, उसी तरह से अब इन बनियों के राक्षसी पाप का बखान और शोभा संसार के लोग कर रहे हैं, सो बनिये कब कहेंगे कि हमने रावण के मुवाफिक राक्षसी पाप का स्वर्ग बनाया है? सो बनियों ने रावण की तरह से बुद्धि फेरके ऐसा सुझया है और सुझाते हैं कि राक्षसी माप का जो स्वर्ग है वोह मालिक की दरगाह है, ऐसा सुझाते हैं और रावण की

तरह से लाखों किस्से गुप्ती पाप के बनियों ने चला दिए हैं, सो दुनियाँ में शोभा हो रही है, सो इन बनियों का भी रावण की तरह से राक्षसी पाप का स्वर्ग तुड़वाओ जब, सब संसार की औलाद बचेगी और जो कि दुनिया में राक्षसी पाप फैल रहा है वोह सबको मालूम है परन्तु भुलाए हैं बुद्धि फेरके, सिर्फ मालिक के भरोसे और संसार को यह भेद नहीं, कि बनियों ने भी रावण के मुवाफिक राक्षसी पाप से भुलाए हैं, सो यह भेद संसार को बनियों के कपट का नहीं है और चौरासी लाख जून को जो कलपाते हैं तो संसार के नाम का अलाहदा -२ पाप कराते हैं और संसार भी कहता है कि चौरासी लाख जून भुगतनी पड़ती हैं, यह तो संसार के नाम का पाप कराते हैं और संसार में इनके नाम के किस्से चला दिए हैं कि, चौरासी लाख जून भुगतनी पड़ती हैं, सो जून तो मालिक ने बनाई हैं, सो तुम हम सबको ही दिखता है सो इस बात का किस्सा पूछने का भी काम नहीं क्योंकि जो मालिक ने रचना बनाई है वह छानी नहीं है, सो

यह तो सबकी कुलें और औलादें न्यारी-न्यारी दिखती हैं, सो जिस दिन से कि रचना इस जमीन माता के पेट मे रची है, जिस दिन से आदमी की औलाद से तो आदमी याने आदमी के बीज से तो आदमी होता है और गाय-बैल की औलाद से गाय- बैल होता है और भैंस-पाड़े की औलाद से भैंस-पाड़ा होता है और घोड़ा-घोड़ी की औलाद से घोड़ा-घोड़ी, गेहूँ से गेहूँ होता है और आम की औलाद से आम होता है, इसी तरह से लगाए झाड़ वनस्पति और लगाए आदमियों और अनबोला सब अपनी-२ औद से पैदा होते हैं, सो तुम हम सबको ही दिखता है, सो सबकी कुलें और जात न्यारी-२ हैं, सो बनिये चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर चौरासी लाख जीवाजून को संसार के नाम से कलपाते हैं उसका लेखा बनियों को ही है याने गुप्ती पाप का, कि जो गुप्ती पाप में जितनी कुलें काम आती हैं जिसकी

शोभा दुनियाँ में चलाई हैं कि, मालिक चौरासी लाख जून भुगताता है, सो संसार भी सुनने से ऐसा जानने लगता है कि इतनी जून होगी और इतनी ही भुगतनी पड़ती है, सो भुगतनी तो क्या पड़ती होगी यह बनियों ने राक्षसी पाप चलाया है और इन्होंने भूल डालने के वास्ते ऐसे किस्से चला दिए हैं और पैदा तो सब अपनी-२ औद से होते हैं सो सबको दिखता है परन्तु यह चौरासी लाख कुण्डियों के ऊपर चौरासी लाख जीवाजून को कलपाते हैं और उनका दुनियाँ में लेखा चलाया है सो सबकी कुल के पीछे कुण्डियाँ न्यारी-२ हैं और चौरासी लाख जीवाजून से कुलें बहुत हैं, सो सब संसार इसका शुमार करें तो शुमार तक नहीं होवें क्योंकि जीवाजून का कुछ अंदाज नहीं, क्योंकि आदमी और अनबोला और चौपाया और पंखेरु वगैरह और रिजक घास वनस्पति भी जून में गिनी जाती हैं, इसी वजह से जूनों का हिसाब नहीं हो सकता है, जो चौरासी लाख

किस्सा = वस्तुस्थिती

कुण्डियों के ऊपर चौरासी लाख जीवाजून को कलपाते हैं, सो इसका हिसाब-किताब बनियों के घर में हैं, सो चौरासी लाख जीवाजून के कुलों को कलपाते हैं और मारते हैं, सो वोह पाप तो बनियों के कब्जे में हैं, सो किसी को नहीं दिखाते हैं, परन्तु इन बनियों के पाप की तो मुझको इस तरह से खबर पड़ी है कि, जैसे शनिचर को रावण के जाल की खबर पड़ी थी क्योंकि रावण ने शनिचर को अपने राक्षसी पाप से समामुख कलपाया था, जब खबर पड़ी थी, सो अब इन बनियों ने मुझको भी अपने राक्षसी पाप से शनिचर की तरह से समामुख कलपाया है और कलपाते हैं, जिससे बनियों के जाल की मुझको खबर पड़ी, सो तुम हिन्द-मुसलमान, अंग्रेज सब ही सुनते हो और कहते हो कि वहाँ पर नारगी की कुण्डियाँ हैं, सो गुप्ती पाप है, सो इन बनियों ने भी रावण की तरह से राक्षसी पाप का स्वर्ग बनाया है, सो मुझको राक्षसी पाप से दुःखी किया है और

जहाँ कि गुप्ती पाप करते हैं वहाँ पर मेरे नाम की जीवाजून को दुःखी करते हैं जिससे मेरा भी ब्रह्म दुखी हुआ है, सो मैं बनियों के पाप को प्रगट करता हूँ कि रावण ने देवता स्वरुपियों की बुद्धि राक्षसी पाप से भ्रष्ट की थी, सो उसका सबूत वेद शास्त्र में और किताबों और पुरानों में लिखा हुआ है इससे जाहिर होता है, सो जबकि शनिचर को दुखी किया जब शनिचर ने सती लोगों को और राजा - बादशाहों को वाकिफ किया, जब उन्होंकी आँखें खुली वरना दुनियाँ को तो ऐसा ही सूझता था कि रावण बड़ा भक्त है, सो रावण ने दुनियाँ की ऐसी बुद्धि भ्रष्ट की थी, सो इन बनियों ने रावण से भी ज्यादा लोगों की बुद्धि ऐसी भ्रष्ट कर दी है जिससे ऐसा ही समझते हैं कि जहाँ बनिये नहीं वहाँ राज नहीं और बनिये तो माई-बाप हैं और जो खेती-बाड़ी करके और कमाके राजा -बादशाहों को देते हैं सो जिनकी तो बेचारों की कुछ गिनती ही नहीं

शुमार = गिनती

है और जो कि दूसरी विलायतों के लोगों से मिलके मरवाते हैं, जिसका कुछ पता भी नहीं लगने देते हैं और प्यारे हो-होके सबसे हिले -मिले रहते हैं सो दूसरी विलायतों का भी धन ले लेने की गर्ज से हिन्दुस्तान के हिन्दू -मुसलमान को मराते हैं, सो जब उनका भी धन काबू में कर लेंगे जब उनको भी आपस में लड़ा के मरा देंगे और जब थोड़े से आदमी रहेंगे और बनियों की जात ज्यादा रह जावेगी, जब बनिये अपना राज करेंगे सो जब सातो -आठो विलायतें गारत हो जावेगी और सबका धन काबू में कर लेंगे जब इन बनियों का ही राज हो जावेगा जिससे यह पाप हिन्दुस्तान में बनियों ने बलराजा के बाद से चलाया है, कि जो दिल्ली मण्डल से याने हिन्दुस्तान से उठकर दरियाओं के पार चले गए हैं और हिन्दू-मुसलमान के बच्चे कि जो हिन्दुस्तान में हैं उनको यह बनिये अपने राक्षसी पाप से

मराते हैं और आप गरीब होके और दूसरी बादशाहतों से मिलकर मराते हैं सो दूसरी बादशाहतों के लोगों को खबर नहीं कि इन बनियों ने रावण के मुवाफिक चार कूंट में राज करने के वास्ते जाल चलाया है, इस वास्ते हम दूसरी विलायतों के लोगों को हिन्दुस्तान का लोभ बताके हिन्दुस्तान के लोगों को मरवाते हैं और हमको हिन्दुस्तान के लोभ में डालके हमारी विलायतों के गली -कूंचों को देखते हैं और वाकिफ होते हैं, सो सातो-आठों विलायतों को इन बनियों के दगा की बिलकुल खबर नहीं है, कि इन बनियों के जाल से कुल राजा -बादशाह आपस में लड़कर मर जावेंगे क्योंकि जिनके नाम का पाप करावें उनकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, सो जबकि बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है जब आप से ही दिल में लोभ उठता है सो जबके जहाँ तक सातो-आठो विलायतों के लोग सलामत हैं जब तक तो आपस में लड़ा

कर मारेंगे, क्योंकि बनिये गरीब होके रहते हैं और सब से हिले-मिले रहते हैं और लोगों दिखाऊँ धर्म पुण्य करते हैं सो यह बनिये राज करना चाहते हैं, इस बात की खबर अगर राजा -बादशाहों को होवे तो राजा -बादशाह इन बनियों के औलाद तक रावण की तरह से गारत कर देवें और पाप को छोड़ा देवें, परन्तु उनको यह खबर नहीं कि बनिये अपने राक्षसी पाप से सभों की अक्ल को फेरके हिन्दुस्तान का लोभ बताते हैं, जिससे दूसरी विलायतों के लोग भी भूल जाते हैं और चले आते हैं, जब हिन्दुस्तान के हिन्दू-मुसलमानों के बच्चों को दुखी करते हैं और बनियों से मिले रहते हैं और बनिये उनसे मिले रहते हैं और दूसरी विलायतों वाले यह नहीं सोचते हैं कि रावण - हरनाकुश वगैरा की तरह से हमारी सब विलायतों और हिन्दू-मुसलमानों के बच्चों का यह बनिये काल हैं, यह बात कहाँ से जाने क्योंकि उन्होंको तो मालूम नहीं और जबके रावण ने जाल चलाया था जब दूसरी बादशाहतों में

रावण मिला रहता था और मिल्लत ही मिल्लत में हिन्दुस्तान के लोगों को दूसरी विलायतों से दुखी कराता था और महरावण से भी मिला रहता था इससे रावण को संसार के लोग सती कहते थे, क्योंकि रावण लोगों दिखाओ धर्म पुण्य करता था; उसी तरह से अब बनिये भी लोगों दिखाओ धर्म-पुण्य करते हैं और दूसरी विलायतों के बादशाहों से मिले रहते हैं और दूसरी विलायतों के हाथों से हिन्दुस्तान के लोगों को मिल्लत ही मिल्लत में मराते जाते हैं परन्तु रावण ने शनिचर को दुःखी किया जब शनिचर ने रावण के राक्षसी पाप को दुनियाँ में प्रगट किया, जब महरावण ने और सब विलायतों ने समझा कि रावण सब विलायतों को राक्षसी पाप से बुद्धि भ्रष्ट करके गारत करेगा. सो इस बात को सब विलायतों ने और संसार ने और राजा -बादशाहों ने समझ के और एक दिल होके रावण को मारा और रावण के राक्षसी पाप को छुड़ाया, जब संसार की औलाद रही हैं;

और उसी तरह से अब संसार के लोग इन बनियों के जाल को मिटाओ तो सब संसार की औलाद बचे. और यह जो दुनियाँ कहती है कि चौरासी लाख कुण्डियाँ राघ लहू की हैं और स्वर्ग-नर्क की हैं सो वोह रावण के मुवाफिक इन बनियों के घर का गुप्ती पाप है, सो वोह गुप्ती पाप बनिये अपनी जात के आदमियों के हाथों से कराते हैं सो वोह पाप सिवाय बनियों की जात के और किसी के जात में मालूम नहीं है, सो वोह पाप नहीं छोड़ाओगे जब तक संसार नहीं उभरेगा सो वोह इस तरह से छूटेगा कि जैसे रावण, हरनाकुश वगैरा की संसार के लोगों ने औद ही निकाल दी थी और जो उन्होंने राक्षसी पाप का स्वर्ग बनाया था, सो वहाँ पर चौरासी लाख जून को कलपाते थे; सो वोह सब संसार ने दुख देके हिसाब पूछा कि तुम चौरासी लाख जून कलपाते हो सो सब पाप हमको दिखाके छोड़ोगे जब तो तुम भी बच जावोगे, परन्तु बताके नहीं छोड़ा; जब संसार ने

रावण वगैरा को मार के पाप छोड़ाया. सो अब उसी तरह से इन बनियों का राक्षसी पाप है और चौरासी लाख जून संसार के नाम से कलपाते हैं, सो उसी तरह से इन बनियों को भी सजा देके चौरासी लाख जून पूछो कि जहाँ यह बनिये पाप कराते हैं सो मेरे जीते जी इन बनियों की चतुराई नहीं चलेगी, अगर मेरे जीते जी यह बनिये सब संसार को दिखाके गुप्ती पाप को छोड़ देवें तो यह भी उभर जावेंगे, अगर मेरे जीते जी नहीं छोड़ा तो यह फिर संसार की बुद्धि फेर देंगे और मुझको रात-दिन समामुख कलपाते हैं जिससे मैं इनके जाल से वाकिफ हूँ और दूसरे राजा-बादशाह और दुनियाँ को इनके जालों की खबर नहीं, इस वास्ते भुला देवेंगे, क्योंकि मैं संसार को बनियों के जाल से वाकिफ कर रहा हूँ कि जो संसार को चौरासी लाख जून दिखाके नहीं छोड़ेंगे जब तो नहीं छूटेगा और जो मेरे जीते जी छोड़ दिया जब तो छूट जावेगा, नहीं तो तुम संसार के

लोगों! बनियों को शक्ती देके दरियाफ्त करना कि तुम बनिये चौरासी लाख जून हम संसार के नाम से कलपाते हो, कि जहाँ राध लहू की कुण्डियां हैं और हमको भुलाये हैं; सो बुद्धि फेरके भुलाये हैं, सो स्वर्ग के भरोसे से भुलाते हैं सो यह बात तुमने आँखों से तो नहीं देखी, परन्तु कानों से स्वर्ग-नर्क की शोभा सुनते हो कि जैसे जीवड़ों को सजा देते हैं. सो उसके दुख की शोभा सभी हिन्दू-मुसलमान के लोगों तुम सुनते हो सो इस किताब के देखने से तुम सब वाकिफ होकर जाल को छोड़ओ और यह बनिये थोड़ा बहुत राक्षसी पाप तुमको छोड़के भुला देवेंगे, सो आगे भी राजा -बादशाहों को इन काफिरों ने भुलाये कहते हैं, और अब मेरे जीते जी नहीं छोड़ाओगे जब तो संसार को भुलावेंगे, क्योंकि इन बनियों बेईमानों का दिल मेरे जीते जी पाप छोड़ने का नहीं है, क्योंकि यह संसार को गारत करके अपना राज किया चाहते हैं इससे दुनियाँ में

बुद्धि भ्रष्ट करके मुझ साधु को संसार के नजदीक पागल सुझाते हैं, सो इन बनियों की गर्ज यह है कि जो साधु के जीते जी राक्षसी पाप को संसार के लोगों ने हेत करके छोड़ा दिया जब तो छूट जावेगा, क्योंकि यह साधु हम बनियों से पाप को छुड़वा देगा; क्योंकि साधु को समामुख दुखी किया है इससे मालूम पड़ा है, इससे संसार के लोगों की बुद्धि भ्रष्ट करते हैं और समझने नहीं देते हैं. फिर मैं अकेला क्या करूँ, क्या अपना सर फोड़ूँ? मैं तो दुनियाँ के वास्ते दुख पाके शरीर से भी ना ताकत हो गया हूँ और बनिये बेईमान दुनियाँ को सुझाते हैं बावला. सो दुनियाँ को क्या दोष, वोह तो काफिरी पाप से संसार को बावला सुझाते हैं; सो दुनियाँ को क्या दोष? सो मेरी जान में तो दुनियाँ बावली और दुनिया के जानने में, मैं बावला. सो मेरे को तो ऐसा दुख हो रहा है, सो दुनियाँ नहीं समझती है इससे मैं निहायत ही हैरान हूँ कि जो दुनियाँ नहीं समझेगी तो

यह जाल किस तरह से छूटेगा, इससे दुख पा रहा हूँ और संसार के नजदीक मुझ गरी साधु को बावला सुझाते हैं, और जिन-जिन गरीबों ने आगे राक्षसी पाप को दुख पा-पा के संसार के उभरने के वास्ते पकड़ा हैं, और संसार ने वाकिफ हो-हो के राक्षसी पाप को छोडाया हैं जिसका गुण संसार के लोग अब तक जानते हैं, कि जिन्होंने राक्षसी पाप को प्रगट किया और फिर संसार ने छोड़ाया और रावण, हरनाकुश और कंश, कारुन बादशाह ने राक्षसी पाप से थेड़ी बुद्धि भ्रष्ट की थी जिससे संसार के लोग जल्दी समझ गए थे, परन्तु इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से संसार के लोगों की और राजा बादशाहों की ऐसी बुद्धी भ्रष्ट कर दी हैं कि जो समझाने से भी नहीं समझते हैं, कि राक्षसी पाप से हमारी औलाद को गारत कर देंगे. जो पाप को नहीं छोड़ावेंगे तो बगैर छुड़ाये के कैसे उभरेंगे ? क्योंकि जिसको तुम स्वर्ग-नर्क कहते हो, वोह बनियों के घर का अलोप

पाप है और स्वर्ग-नर्क तो यह जमीन माता ही है, सो सारी सृष्टी स्वर्ग में ही बसती है; और खेती बाड़ी का पाप भी जबसे चला है जबसे बनिये राक्षसी पाप से काल पड़ाते हैं जब रिजक वगैरा थोड़ा रहा है और थोड़ा होता है, जबसे खेती बाड़ी का पाप चलाया है और जब तक कि राक्षसी पाप नहीं चला था तो काल भी नहीं पड़ता था, क्योंकि बरसात होने से आप ही तरह-२ के मेवा, मिष्ठान, रिजक, वनस्पति वगैरह हो जाती थी, क्योंकि सब जल ही की माया है और जल ही सबका बीज है और जब बनिये काल पड़ाते हैं, जब जमीन बीमार होती है और काल नहीं पड़ावे तो जमीन माता को सर्द-गर्म का रोग करके बीमार कर देते हैं तो मेवा, मिष्ठान, वनस्पति वगैरह गल जाती हैं और जब मेह बरसता है जब जमीन माता पानी पीती है जैसे कि आदमी खाना-पीना खाता-पीता है जब सारे शरीर में और अंग-२ में असर पहुँचता है जब देह हरी रहती

है इसी तरह से जमीन माता का भी आदमी के मुवाफिक शरीर है, जब सारे देश में मेह होता है जब जमीन का भी शरीर हरा और ताजा रहता है; सो ऐसी बिरखा जब होती थी कि जब यह बनिये महाजन काल नहीं पड़ाते थे और अब तो बिरखा का ऐसा हाल है कि दस गाँव में होवे और बीस गाँव में नहीं होवे, याने एक परगने में बारिस होवे और दूसरे में नहीं, सो यह जादू से ऐसी बिरखा होने देते हैं. सो यह जमीन के नाम का पाप कराते हैं जिससे जमीन की नाड़े जादू से बंद हो जाती हैं, सो जिधर बंद हो जावें उधर बरसे नहीं; और जिधर रोग नहीं होवे उधर मेह बरसता है और पहले से इन्होंने ऐसी-ऐसी बातें चला दी हैं कि "कलजग ऐसा आवेगा कि गाय का एक सींग भिजेगा और एक सींग नहीं भिजेगा", सो देख लो, कि अब ऐसा वक्त है कि एक खेत में मेह हो और उसके बराबर के खेत में होवे ही नहीं; सो जिस वक्त में यह जमाना आवेगा कि मेह से

एक सींग भिजेगा और एक नहीं भिजेगा तो उस वक्त में क्या हालत होगी, सो जमीन का कलेजा और फैफड़ा और दिल के ऊपर रोग कराते हैं जब जमीन की नाड़े बंद हो जाती हैं, जब ऐसा मेह बरसता है कि एक खेत में बरसे और एक में नहीं बरसे; और उन चौरासी लाख कुण्डियों पे जो सर दुखने का पाप करावे तो सर दुखने को लगे और कलेजा-फैफड़ा और दिल और पेट दुखने का पाप करावें तो यह चीजें दुखने लगें, जैसे कि आदमी के पीड़ा होती है उसी तरह से जमीन के नाम का पाप करावें जब उसके भी पीड़ा होती है इससे ही जमीन दुबली हो गई हैं जिससे सोने रुपे की खानें गल गई हैं और सारे देश मेह होवे तो वोह बरस अच्छा होता है. जब यह जानना कि जमीन माता ने पानी अच्छी तरह से पिया, अगर सारे देश में भी मेह हो जावे और आफरा बदहजमी का रोग जादू से कर देवें तो अनाज वगैरह गल जाता है जब संसार के लोग कहते हैं

कि खारे समुद्र का मेह बरसा है. इस तरह के किस्सा पहले से बनियों ने चला दिए हैं, सो संसार को खबर नहीं कि राक्षसी पाप से जमीन माता को रोग किये हैं और जबके आफरा बदहजमी की बीमारी होती है तो जमीन का आहार खारा पड़ जाता है कि जैसे आदमी बीमार होता है और बदहजमी से आहार खारा पड़ जाता है और वोह आफरा बदहजमी की वजह से थोड़ा खाता है, उसी तरह से जब जमीन माता को बदहजमी का रोग कराते हैं कि जिससे अनाज वगैरा गल जाता है और फिर जमीन पर रोग की वजह से अनाज, मेवा, मिष्ठान वगैरा थोड़ा होता है; क्योंकि जमीन माता भी जीवता जीव है. सो जबके जमीन माता के नाम का पाप कराते हैं जब जमीन माता बीमार हो जाती है याने पाप के सबब से और जो आदमियों के नामका पाप कराते हैं तो आदमियों को बीमारी हो जाती है और इसी तरह से सबको; और जो कि चाँदी-सोने की

खाने संसार के लोग कहते हैं वोह जमीन माता के शरीर की चरबी है, सो जिस तरह से कि आदमी का शरीर है उसी तरह से जमीन माता का भी शरीर है, सो मैं क्या लिखूँ और क्या मेरी चतुराई, सो तुम हम सभी देखते हैं कि जो हम तुम सभी जीवाजून इस जमीन माता के पेट में हैं, सो सबही देखते हैं सो जबके जमीन का पेट है सो शरीर भी है परन्तु इन बनियों बेईमानों ने राक्षसी पाप से सातो-आठो विलायतों के लोगों की बुद्धि कैद कर दी है कि जैसे रावण ने तीन लोक की बुद्धि भ्रष्ट करके जमीन माता के शरीर की पहचान भुलादी थी, उसी तरह से इन बनियों ने भी तीन लोक की बुद्धि भ्रष्ट करके जमीन के शरीर की पहचान भुला दी है जिससे संसार के लोग सोने-चाँदी की खानों को भूल गए हैं. सो जब तक के मुझ गरीब साधु को इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से समामुख नहीं दुखी किया था जब तक तो मैं भी संसार के लोगों की तरह से अन्धा

आफरा = पेट फुल जाना

बना, था परन्तु जबकि इन सौदागरान ने अपने राक्षसी पाप से समामुख कलपाया कि जहाँ पर यह बनिये अलोप पाप कराते हैं और जीवाजून के नामका कराते हैं, सो जबसे कि मुझको कलपाया है जब मैं समझा कि जमीन माता का भी शरीर है और जमीन जीवता जीव' है; सो " जमीन माता के शरीर में पहाड़ जो हैं वोह तो हाड़ हैं, और मिट्टी जो है वोह गोस्त है, और चाँदी-सोने की खानें जो हैं वोह चरबी है, और जो कि बड़े-२ दरियाव हैं वोह जमीन के शरीर की आंतड़िया हैं, और जो छोटे-२ नदी-नाले हैं वोह जमीन माता के शरीर की नाड़े हैं, और जो रत्नागर सागर और सात सायर हैं वोह जमीन माता के शरीर की ओझड़ी है" सो जबकि मेह बरसता है जब जमीनमाता जल का आहार करती है तो जल आंतड़ियों के रास्ते होके ओझड़ी में जाता है जब जमीनमाता जल का आहार करती हैं; और जबसे कि यह बनिये लोग काल पड़ाने लगे हैं

जबसे जमीनमाता बीमारी के सबब से दुबली हो गई हैं इससे जमीन माता के ऊपर धन नहीं रहा है और न किसी को दिखता है. इस वास्ते कि टूटा हुआ धन बनियों ने पहले से काबू में कर लिया है जिससे राजा -बादशाह भी दुनियाँ के ऊपर लोभ करने को लग गये हैं और सब संसार भूखा होने की वजह से चोर चण्डाल हो गये हैं और संसार के लोग भी चोरी करने को लग गए हैं; परन्तु इस बात का कोई भी ख्याल नहीं करते कि संसार में इस कदर धन था वोह कहाँ गया? सो टूटे हुए धन को रावण के मुवाफिक इन बनियों ने बुद्धि भ्रष्ट करके ले लिया है, सो इस बात की खबर किसी विलायत के राजा -बादशाह और रैयत वगैरा तक को नहीं है कि खाने कहाँ गई? परन्तु इतना कोई भी साहब ख्याल नहीं करते, कि इन बनियों ने जादू के जुलम से जमीन माता को ना ताकत कर दिया है जिससे जमीन के शरीर की चरबी गल गई है इससे धन नहीं रहा; सो अब हम

दुनियाँ का कारोबार कहाँ से करेंगे? क्योंकि जमीन के शरीर की पहचान संसार के लोगों को इन बनियों ने भुलादी है सो जमीन माता को जादू के जोर से निहायत दरजे का दुःख देते हैं. सो दुनियाँ में भी कहते हैं कि राक्षसी पाप से जमीन दुख पाती है और रावण-हरनाकुश के वक्त में और किसी-२ वेद शास्त्र में भी लिखा हुआ है कि राक्षसी पाप से जमीन दुख पाती थी, सो यह बनिये भी रावण -हरनाकुश के मुवाफिक जमीन के नामका पाप कराके जमीन को बीमार करके दुःख देते हैं जिससे खानें तक नहीं रहीं हैं और जबसे कि काल पड़ने लगे हैं जबसे जमीन माता दुख पा रही हैं; और जो कि ग्रहण पड़ता है और जमीन कांपती हैं और जमीन फट जाती है, सो यह बनियों के जादू से फट जाती है. सो यह तरह-२ के रोग जमीन माता को बलराजा के बाद से करने लगे हैं, इससे जमीन माता दुबली हो गई हैं इससे चाँदी-सोने की खानें अब नहीं रही हैं; सो जिस तरह से

कि आदमी के शरीर में चरबी बीमारी के सबब से गल जाती है, उसी तरह से जमीन माता के शरीर की भी चर्बी जादू के जुलम से गल गई है और जबसे कि इन बनियों ने जादू का करना शुरु किया है जबसे ही काल पड़ाते हैं, जब से ही जमीनमाता थोड़ा पानी पीती हैं और बीमारी से सूख गई हैं और इन बनियों ने रावण की तरह से मुझको भी दुःखी किया है जिससे इनके जाल की खबर पड़ी है, जिससे मैं आप लोगों को शनिचर की तरह से वाकिफ करता हूँ, क्योंकि संसार के लागों को और राजा -बादशाहों को जादू के जुल्म से सपने के मुवाफिक कर दिए हैं और बुद्धि भ्रष्ट कर दी है जिससे तुम नहीं समझते हो कि बनिये रात-दिन पाप कराते हैं और संसार के लोगों को इस पाप से खराब कर देते हैं. सो दुनियाँ के लोग मेरी कही हुई बात को दुरस्त नहीं मानते हैं सो यह बुद्धि फेरने का सबब है और जो कि यह लोग कहते हैं कि रामचन्द्रजी

और बलराजा वगैरह अमर हैं और जिन्दा हैं, सो अमर तो कोई नहीं, अमर तो उनका नाम है; परन्तु कोई लोग मेरी कहीं हुई बात को मानके कहते हैं कि हाँ, बलराजा वगैरह अमर नहीं हैं, तो यह बनिये जादू के जुलम से सोते-जागते सपने करके उसको दिखा देते हैं. सो यह बनियों का पाप मरे हुए का चेहरा होके दिख जाता है, सो जिन-२ के नामका पाप करा दें उसी का चेहरा सुझ जाता है याने भरतरी और गोरखनाथ और शिवजी महाराज वगैरह के नामका पाप करा दें और चेहरा सुझाना होवे तो बनियों का पाप उन्ही भक्त लोगों का चेहरा होके सुझ जावे, कि जो मर गए हैं उनका तो नाम अमर है और जो देवी-देवताओं के नामका चेहरा होके सुझ जावे, और जो भूत-पलीत और डाकन, डाकी, चुड़ेल-खबीस और देव, परी व जन वगैरह के नामका पाप करावें तो बनियों का पाप इन्हीं भूत बला वगैरह का चेहरा सूझ

जावें, जिससे दुनियाँ यह कहती है कि जो औरत मरी है वोह चुड़ेल हुई है और जो कि आदमी मरा है वोह भूत हुआ है. इसी तरह से किसी को कुछ और किसी को कुछ सुझा देते हैं, सो संसार के लोगों की बुद्धि कैसी कैद की हुई है कि जो झूठी बात को सच्ची ख्याल करके बैठे हुए हैं और मैं सच्ची और सही बात कहता हूं उसको खिलाफ समझते हैं; और यह जो कि बनियों ने पाप चलाया है सो संसार के गारत करने के वास्ते चलाया है और जो कि तुम बुद्धि भ्रष्ट होने के सबब से स्वर्ग-नर्क बताते हो और चौरासी लाख कुण्डियाँ कहते हो वोह बनियों के घर का पाप है और यह पाप है कि सब विलायतों के मरे हुए लोगों का चेहरा होके सुझ जाता है, क्योंकि जब रावण ने राक्षस विद्या चलाई थी जब रावण भी कुछ का कुछ सूझता था. सो तो संसार कुछ ख्याल नहीं करते थे और जिस तरह से कि शनिचर को रावण ने दुःखी किया था, उसी तरह से इन बनियों ने राक्षसी पाप से मुझको

दु:खी किया है. इससे मैं आप लोगों को शनिचर की तरह से वाकिफ करता हूँ और लिखता हूँ कि यह बनिये जादू के जोर से मुर्दों को सुझाते हैं, इस वास्ते लिखने में आता है कि करोड़ों आदमियों को भूतों के और चुड़ैलों के बहाने से मारते हैं और किसी को देवताओं के बहाने से और किसी-२ को किसी के बहाने से. सो न तो जन हैं और न भूत हैं और न पलीत वगैरह हैं, परन्तु जादू चाले से मार देते हैं और जो थोड़ा पाप जिस किसी के नाम का करावें वोह तो बीमारी पाता है कि जिसके नामका पाप कराते हैं; और जब कि पाप को छोड़ देवें तो फिर वोह बीमार, कि जो जादू से बीमार किया था अच्छा हो जाता है कि हमको फलाने साधु या फकीर ने बीमारी से बचा लिया, क्योंकि फकीर ने हाथ फेरके आराम कर दिया. सो अच्छा तो इससे हो गया कि, बनियों ने उस बीमार के नामका पाप करना छोड़ दिया और फकीर को यह सुझा दिया

कि तू इस बीमार के ऊपर हाथ फ़ेर जो आराम होगा; फिर फकीर ने हाथ फेर दिया और बनिये जो बीमार के नाम का पाप छोड़ दें तो वोह बीमार बच जावे; सो हाथ के फेरते ही आराम हो गया जब तो फकीर के परचे-२ दुनियाँ में करने लगे और हैं बनियों का जाल! सो यह जब के देवताओं के नाम से बीमारी करावें तो जब उनके नाम बकरा और पाड़ा वगैरा मारें और वहाँ पर फिर बीमार के नामका पाप छोड़ देवें तो बीमार अच्छा हो जावे, तो फिर देवताओं का परचा-२ करने को लग जावे और चौरासी लाख कुण्डियाँ राध लहू की बनाई हैं सो वहाँ पर ज्यादा पाप करें जब तो मर ही जावें और पाड़ा बकरा मारने से भी नहीं बचें सो ऐसे काम पर न तो किसी का झाड़ा चले और न परचा; और अमर तो कोई भी नहीं है; यह तो बनिये बलराजा के बाद से कच्ची उमर में मारने लगे हैं, क्योंकि पहले कोई कच्ची उमर में नहीं मरता था, सो

कच्ची उमर में इस वास्ते मारते हैं कि सब दुनिया में थोड़े आदमी रह जावें तो हम बनियों की जात के ज्यादा रह जावें जब तमाम दुनिया में हमारा राज हो जावे, जबके राक्षस विद्या चलाते हैं जब ही कच्ची उमर में मरते हैं, नहीं तो परमेश्वर के घर में तो सबकी उमर पूरी है और पूरी उमर पाकर ही मरते थे; और जो बनियों के जाल से कच्ची उमर में मरने लगे हैं सो सब संसार के लोगों को दिखता है और लगाए आदमी से और जीव -जन्तु से कोई भी पूरी उमर नहीं पाते हैं और कच्ची उमर में मर जाते हैं, यह सब बनियों के जादू से मरते हैं कि रावण -हरणाकुश वगैरह ने राक्षसी विद्या के पाप से आदमियों को और जीवाजून को कच्ची उमर में मारना शुरु किया था और मारता था. सो रावण ने और हरनाकुश वगैरा ने भी भूत-पलीत के सर और जन और देवी -देवता वगैरा के सर बदनामी लगा दी थी

और रावण वगैरह ने लोगों की बुद्धि भ्रष्ट कर दी थी जिससे संसार के लोग देवताओं के ऊपर बकरा पाड़ा वगैरह मारने लगे थे और उसका हाल दुनियाँ को मालूम नहीं था, इससे रावण के वक्त में भी रावण के पाप की वजह से कच्ची उमर में लोग और जीव जन्तु वगैरा मरते थे; और ईश्वर ने तो सबको ही पूरी उमर दी है, परन्तु कम उमर में जो मरे वोह कच्ची उमर में मरते हैं; सो जादू से मरते हैं. सो जबके कच्ची उमर में कोई किसम का जीव मरे तो जानना कि किसी ने राक्षसी पाप चलाया है और इस वक्त तो राक्षसी विद्या का पाप प्रगट है, कि देवताओं के ऊपर जानवर मारते हैं रावण की तरह से; सो जो किसी को यकीन नहीं हो, सो देख लो, कि जिस मुल्क में जानवरों को देवताओं के ऊपर मारते हैं सो मराते तो जादू से बनिये और सुझाते हैं देवताओं का. सो यह बनिये भी जादू से बीमार वगैरा करते हैं और बदनामी देवताओं के सर पे लगा देते हैं और संसार के

लोगों के घट में देवताओं ही का सुझा देते हैं जिससे संसार के लोग बुद्धि भ्रष्ट होने के सबब से देवताओं के ऊपर जानवरों को मारते हैं और यह काम जानवरों के मराने को देवताओं के ऊपर बुद्धि भ्रष्ट करने के वास्ते चलाया है कि जिससे तमाम संसार की बुद्धि जादू से भ्रष्ट हो जावेगी, इस सबब से यह बनिये जादू से सुझाके बकरे-भैंसे देवताओं के ऊपर मराते हैं और बनियों के जादू से कच्ची उमर में हर किसम के जीव मरने का पाप सब विलायतों में फैलावेंगे कि जैसा आजकल हिन्दुस्तान में बलराजा के बाद से फैला हुआ है, इसी तरह से दूसरी विलायतों में फैला देंगे. सो जबके कोई राजा- बादशाह 'दयावन्त' जागेगा कि जो देवताओं के ऊपर जीव चढाते हैं, वही राक्षस विद्या करने वाले और उनकी राक्षस विद्या है और यह ख्याल नहीं करेंगे कि यह तो भूल से देवताओं के ऊपर जीव चढ़ाते हैं; क्योंकि बनियों ने राक्षस विद्या के पाप से बुद्धि भ्रष्ट कर दी है और राक्षस विद्या है बनियों के

घर की. सो ख्याल नहीं करेंगे यह बनियों ने अक्लमंदी की है कि हमारा जाल किसी पर प्रगट न हो और हमको कोई भी इन्द्रजालिया नहीं जाने, इस वजह से डाकनों वगैरा के सर और देवी -देवताओं के सर बदनामी लगा दी है और मुलकों-२ में मरी और काल वगैरह जो पड़ जाते हैं वोह सब बनियों के जादू से, हो जाते हैं और संसार को सुझाते हैं कि ''मंगल भारी था और शनिचर के ग्रह बहुत तेज थे, और शुक्र निहायत खराब है.'' सो मंगल व शनिचर व शुक्र वगैरह भी आदमी थे, सो वोह तो अपनी उमर पाके मर गए, सो वोह तो इस जमीन पर अब कहाँ से आवें? और इसी तरह से कभी-२ देवी-देवताओं का भी सुझाते हैं कि देवी स्वर्ग से उतरेगी वोह 'खप्पर' भरेगी; सो जब बनिये तमाम मुल्कों के नाम का पाप कराते हैं तो तमाम मुल्कों में मरी पड़ जाती है और जो थोड़े-से गाँवों के नामका पाप करावें तो थोड़े से गाँवों में मरी पड़ जावे.

सो इसका हाल तुम संसार के लोग हर बरस टीपणों में सुनते हो, परन्तु मैं तो एक-दो बात लिखता हूँ और जो कि टीपणों में जिस कदर हाल राक्षस विद्या का लिखा आता है वोह सब हो जाता है सो सुनते ही हो कि जो अनेक तरह के ग्रह गोता दुनिया में लगा दिए हैं. सो तुम हिन्दू -मुसलमान और अंग्रेज वगैरा टीपणों वगैरा में सुनते ही हो, सो यह टीपणें बनियों ने पहले से चला दिए हैं और ब्राह्मणों को पकड़ा दिए हैं, जिस तरह से कि रावण ने राक्षस विद्या चलाई थी और रावण ने ऋषीश्वरों की बुद्धि भ्रष्ट करके राक्षस विद्या के टीपणें पकड़ा दिए थे, सो अब इसी तरह से इन बनियों ने भी राक्षस विद्या के टीपने ब्राह्मणों की बुद्धि भ्रष्ट करके ब्राह्मणों को मराने के लिए पकड़ा दिए हैं, परन्तु इन बनियों ने ऐसी अकलमंदी की है कि इन्होंने राक्षसी पाप की खबर किसी को भी नहीं पड़ने दी है और जओ संसार के लोग और राजा बादशाह समझ भी

गये तो यही जानेंगे कि राक्षस विद्या ब्राह्मणों के घर की है और टीपणें भी इन्होंने ही चलाए हैं इससे ब्राह्मणों के बच्चे मारे जावेंगे. सो जिस तरह से कि सब संसार के लोग भूले हुए हैं उसी तरह से यह ब्राह्मण भी भूले हुए हैं, सो यह बात काबिल ख्याल करने की है कि बगैर छल तो ब्राह्मण किस तरह से भूले! जिससे बनियों ने राक्षसी पाप से बुद्धि भ्रष्ट करके भुलाये हैं कि जैसे रावण ने तमाम जहान के राजा -बादशाह और रैयत वगैरा की बुद्धि खराब करके भुलाया था; उसी तरह से इन बनियों ने भी बुद्धि खराब करके और ज्यादा पाप करके भुलाया है, क्योंकि इन बनियों ने तरह-२ के जाल करके भुलाया है और अनेक तरह का जाल चला दिया है और कई किताबों में ऐसी-२ बातें पहले से लिख दी हैं कि देवता, जिन्दा स्वर्ग में बैठे हैं और यह किताबें बनियों की बनाई हैं और नाम उन किताबों में इन बनियों ने अपने बचाव के वास्ते और जाल

टीपणों = पंचाग, ग्रह गोता = ग्रहण, विगन

अपना जाहिर न होने के लिए अगले भक्त लोगों के लिख दिए हैं. सो यह बात ख्याल करने के काबिल है कि देवताओं ने अच्छे काम किए हैं जिससे उन्होंके नाम अमर हैं और यह बनिये जादू से लोगों को बीमार कर देते हैं और उनके दिल में देवताओं का सुझाते हैं जब उन्होंके हाथ से उन देवतों की समाधियों के ऊपर जीवड़ों को इस वजह से मारने लगे हैं और बनिये जादू से उन्होंके दिल में देवताओं का सुझाते हैं कि देवताओं ने बीमार किया है और राजा रावण ने भी देवता स्वरुपी लोगों की बुद्धि भ्रष्ट कर दी थी; परन्तु रावण ने पाप थोड़ा चलाया था जिससे बुद्धि थोड़ी भ्रष्ट हुई थी और इन बनियों ने तो साफ बुद्धि भ्रष्ट कर दी है कि जो बीमार तो जादू से करते हैं और उन्होंके घट में ऐसा सुझाते हैं कि देवता जीव माँगता है. सो जब देवताओं के नाम का जीव मारे जब तो बीमारी से अच्छा

हो जाता है, सो जादू खोरा जब उसके नाम का पाप छोड़ देवें तो वोह बीमारी से अच्छा हो जावे और संसार के लोगों को ऐसी-ऐसी करतूतों से भुलाये हैं, कि भक्त लोगों को भी अपने जाल की खबर नहीं पड़ने देते और लोग यह ख्याल कहने से भी नहीं करते कि पाप बुरा है या भला है और जो किसी साधु-फकीर को किसी देवता पर, किसी जानवर को मारते हुए देखकर दया आवे और गुस्सा होकर यह कहने लगे कि तुम तो अन्धे हो गये हो, कि जो देवताओं के ऊपर जीव को मारते हो; सो तुम जीव को मत मारा करो, सो उस साधु को भी जादू से बीमार कर देते हैं और फिर साधु -फकीरों के दिल में भी इसी तरह से सुझाते हैं कि तुमने हमारे भोग को बंद करा दिया और तुम साधु होके हम देवताओं की निन्दा करते हो जिससे हमने तुमको बीमार किया है. सो इन बनियों ने साधु-फकीरों की बुद्धि ऐसी कैद कर दी है कि जो यह नहीं समझते हैं कि जो देवताओं का सुझा दें

तो साधु भी देवताओं के ऊपर जीव मारना अच्छी बात जानते है और यह ख्याल में नहीं आता है कि रावण के मुवाफिक यह तो जादू का कुछ और ही छल है, सो यह सो ऐसा तो यह बनिये अपने राक्षसी पाप से नहीं समझने देते हैं और जादू से बीमार कर देते हैं जिससे साधु भी यह जानने लगते हैं कि देवता सच्चा है और मैं झूठा हूँ, जिससे देवताओं ने बीमार किया है जिससे साधु भी देवताओं के भरोसे से भूले हुए हैं; सो भूले तो बनियों के पाप से हैं, क्योंकि बनियों ने बुद्धि भ्रष्ट कर दी है सो देवताओं का सुझा देते हैं तो उसी को सच मानने लगते हैं और जो और किसी को सुझा देवें तो वोह भी मानने लगे, फिर इसी तरह से साधु भी भूलकर सच मानने को लग जाते हैं कि भूत-पलीत, देवी-देवता बड़ा है, सच जीव माँगता है; क्योंकि साधु-फकीरों को भी जादू चाला से बीमार कर देते हैं जब वोह जीव मराना सच समझते हैं और कहते हैं

कि देवता के ऊपर जानवरों का देना दुरस्त है और मैं झूठा हूँ. सो उन्होंको यह बात मालूम नहीं है कि रावण की तरह से इन बनियों ने जादू चलाया है सो हकीकत में असल पाप इन बनियों का है, अगर बनियों के जादू की खबर संसार के लोगों को पड़ जाये तो संसार के लोग बनियों के घर में ही जीवड़ों को मारके डाल देवें, परन्तु संसार के लोगों को इनके जाल की मालूम नहीं है वोह तो देवकला के भरोसे भूले हुए हैं, क्योंकि रावण वगैरा देवताओं के ऊपर जीवड़ों को मरवाता था, परन्तु जबके रावण के पाप की खबर पड़ी जब संसार के लोगों ने रावण, हरनाकुश वगैरह की औद ही निकाल दी थी. फिर रावण की तरह से इन बनियों का भी जाल चल रहा है, सो अब रावण की तरह से इन बनियों के जाल की खबर मुझको पड़ी है, जिस तरह से कि पहले पाप के चलाने वालों को सजा दी गई है, उसी तरह से इन बनियों का भी पाप छोड़ाओ तो संसार का भला

होवे. और रावण, हरनाकुश वगैरह ने तो थोड़ा पाप चलाया था, जिस पर ही उनकी तो औद निकाल दी थी और इन बनियों ने तो इतना पाप चलाया है कि जिसका कुछ अंदाज नहीं है, क्योंकि करोड़ों आदमियों को यह बनिये जादू के ज़ुल्म से मार देते हैं और नाम देवताओं का लगा देते हैं, कि देवताओं ने दोष किया है; जिससे मरे हैं. इसी तरह से करोड़ों जानवरों को अपने जादू से देवताओं का नाम लगाके मरा देते हैं, सो तुम संसार के लोगों की बुद्धि राक्षसी पाप से भ्रष्ट कर दी है जिससे तुम देवताओं के ऊपर अपने हाथ से जानवरों को मारते हो, सो यह राक्षस विद्या का पाप प्रगट है; सो तो जिस मुल्क में देवतों के ऊपर जीव मराते हैं, सो तलाश करके देखो क्योंकि यह बात प्रगट है सो संसार को कुछ दोष नहीं है; क्योकि संसार के लोगों को राक्षसी पाप से अन्धों की तरह पर कर दिए हैं सो वोह देवकला के ही भरोसे भूले हुए हैं. सो बनियों ने राक्षसी पाप से

ऐसी बुद्धि खराब कर दी है कि जो उनको मने किया होवे तो लड़ने को लग जावें, सो यह जाल मिटेगा जब बुद्धि दुरुस्त होगी; और अब तक तो बनिये लोगों ने बुद्धि खराब करके और इनके हाथों से जीवड़ों को मरवाके और उनके खाल की चीरें बारीक-२, नरम-२ दरकतों के डालियों में लपेटते हैं. सो जिस कदर कि खाल सूखती है उसी कदर दरकतों को दुख होता है, सो दरकतों में भी हम तुम आदमियों की तरह से जीव होता है जिससे वोह दरकत हरे रहते हैं और यह दरकत ऐसे सती हैं कि अपने सबको फल-फूल देते हैं, और इन दरकतों की लकड़ी काम में आती है; परन्तु इन बनियों ने अपने राक्षसी पाप से ऐसी अकल खराब कर दी है कि जिससे ऐसा ही सूझता है कि जैसा यह बनिये अपने राक्षसी पापसे सुझाते हैं, सो यह राक्षस विद्या का प्रगट पाप है; सो तुम हिन्दू - मुसलमान, अंग्रेज वगैरा को और तमाम जहान की

खलकत को दिखता है और यह बनिये लोग तो पाप में समझते हैं जिससे ऐसा पाप चलाया है, क्योंकि झाड़ -वनस्पति अपने को फल फूल देते हैं सो वोह बेचारे बड़े करनी वाले और सती हैं जिससे इन बनियों ने राक्षस विद्या का पाप चलाया है, कि जो अगले सती लोग हुए थे तो देवता स्वरुपी कहलाते थे, परन्तु इन बनियों ने ऐसी अकलमंदी की है कि तमाम संसार के लोगों की अक्ल राक्षसी पाप से भ्रष्ट कर दी है, जिससे संसार के लोगों को दया-धर्म नहीं है; क्योंकि देवताओं के नामका धर्म -पुण्य करें तो ठीक है, क्योंकि तुम्हारे बाल-बच्चों के आड़े आवेगा और साधु-संत और फकीर-फुकरा और ब्राह्मणों वगैरह को देवताओं के नाम का जीमण जिमाओ तो वोह धर्म का काम है और पुण्य है और देवताओं की समाधियों के ऊपर जीव मारना पुण्य नहीं है, क्योंकि देवताओं की समाधियों के ऊपर जीवड़ों को मराना बहुत बुरा पाप है. वोह

तो जीते थे जब कीड़े के ऊपर भी दया पालते थे, परन्तु यह बेईमान ऐसे हैं कि जादू का पाप संसार के नामका कराके संसार को बीमार करते हैं और फिर देवताओं वगैरा का सुझा देते हैं, जब संसार के लोग बेचारे लाचार होके देवतों के ऊपर जीव मारने लगते हैं और जब बनिये बेईमान संसार के नामका पाप छोड़ देते हैं तो वोह अच्छे हो जाते हैं, जब संसार को जादू से ऐसा ही सुझा देते हैं कि देवता ऐसा ही भोग माँगते हैं जिससे हमको बीमार किया था और कभी जीव मारने से भी अच्छा नहीं होवे तो संसार को यह सुझा देवें कि देवतों ने पाड़ा और बकरा माना नहीं और बेईमान जिस-२ मुल्क में जीव मरवाते हैं तो मेह बन्द करके देवताओं के ऊपर जीव मरवा देते हैं और लोगों के दिल में ऐसा सुझा देते हैं कि अबके देवताओं के ऊपर पाड़ा बकरा चढाया नहीं जिससे मेह नहीं बरसा है. जब लोग गाँव-२ में जीव मारने लग

जावें, जब यह बनिये जमीन के नामका पाप कराना छोड़ देवें तो फिर उन गाँवों में मेह बरस जाता है और जो पाप करना जमीन के नामका नहीं छोड़ें तो जीव मारने से भी नहीं बरसता. सो वोह जीव मराने को कब राजी हैं? सो वोह तो मर गये सो वोह कहने के वास्ते कहाँ से आवें? और दुनियाँ को यह खबर नहीं कि राक्षस विद्या के पाप से हमारी बुद्धि को कैद कर दी है जो हम नहीं समझते हैं, कि जो हमारे बुजुर्ग पहले भक्त हो गुजरे हैं और उनको हम सब लोग मानते हैं, जिनकी समाधियों के ऊपर हमारी बुद्धि को राक्षसी पाप से फेर कर और हमारे हाथों से जीवड़ों को मरवाते हैं, सो यह तो बड़ा जुल्म है. सो यह खबर नहीं क्योंकि वोह तो देवकला के भरोसे भूले हुए हैं सो संसार को और राजा -बादशाह को कुछ दोष नहीं, कि इन्होंकी राक्षस विद्या के पाप में बुद्धि कैद है जिससे बुरे कामों को ही अच्छा

समझते हैं और आगे राजा रावण ने राक्षस विद्या का पाप चलाके सब ऋषीश्वरों की, और संसार की बुद्धि भ्रष्ट कर दी थी; सो उसकी सजा रावण को और रावण की औलाद को मिली, सो रावण की तरह से इन बनियों के राक्षसी पाप को अपनी-२ औलाद बचाने के लिए छोड़ाओ कि जैसे रावण वगैरा के पाप को छोड़ाया था, उसी तरह से छोड़ाओ. और जो मैं बार-२ रावण वगैरा का हाल लिखता हूँ सो तो राजा -बादशाहों ने लड़ाइयाँ करके पाप को छोड़ाया था, सो यह बातें दुनियाँ में प्रगट हैं सो जब मैं रावण वगैरा का नाम लेता हूँ जब दुनियाँ यह कहती है कि हाँ, उन बेईमानों ने तो पाप चलाया था; सो जब दुनियाँ मानती है और कहती है कि बात तो सच्ची है, परन्तु कदीमी पाप तो बनियों के घर का है और रावण का नाम तो मैंने इस वास्ते लिखा है और मैं संसार के लोगों से बनियों के जादू का कहता हूँ तो संसार कहता है कि

जादू क्या चीज होती है? हम तो जादू को मानते ही नहीं हैं. सो भाइयों! तुम तो मानते भी नहीं हो और न पाप को समझते, परन्तु चाँद-सूरज को पाप लग जाता है याने ग्रहण कर देते हैं सो तुम सब संसार के लोग देखते हो सो तुमको ब्राह्मण लोग टीपणों में आए बरस छे-२ महीने पहले से सुनाते हैं और "पाप तो चाँद और सूरज को और जमीन माता व मेह को, व मौत को, व पवन पानी को लग जाता है तो तुम्हारी हमारी कौन चलाई!" क्योंकि तुम कहते हो कि जादू हम समझते ही नहीं, परन्तु आगे बड़े-२ सती लोगों को पाप लग गया था तो हमारी तुम्हारी कौन चलाई और तुम कहते हो कि जादू हम समझते ही नहीं, और मैं कुल विलायतों की औलाद बचने के लिए लिखता हूँ क्योंकि मेरे ऊपर बीती हुई बात है, सो इस पाप को छोड़ाओगे तो संसार उभरेगा, सो तुम तो पाप को मानते ही नहीं हो; परन्तु तुम्हारे नामका होम और

पाप कराते हैं, सो वोह पाप लग जाता है और रावण वगैरह के जमाने में भी रावण वगैरह का पाप संसार को लग गया था, उसी तरह से अब इन बनियों के जमाने में भी बनियों का पाप सबको लग रहा है. परन्तु संसार के लोग समझते नहीं क्योंकि पाप को आँखों से देख लेवें, जब तो समझ जावे; परन्तु यह बनिये दिखाके नहीं करते हैं वोह तो रावण के मुवाफिक अलोप कराते हैं, सो संसार को तो भुलाते हैं क्योंकि स्वर्ग और देवकला के भरोसे भूले हुए हैं और जिस-२ ने दुख पा-पा के संसार के लोगों को राक्षसी पाप से उभारा है उनका गुण दुनियाँ अब तक मानती है और मुझ गरीब साधु को संसार के लोग उल्टा पागल ही कहते हैं, सो दुनियाँ का कुछ दोष नहीं, कि उनको यह बनिये जादू से ऐसा ही सुझाते हैं जिससे संसार के लोग मुझे पागल कहते हैं, क्योंकि बनिये अपने कदीमी पाप को अपने पास रखते हैं उसको चौड़े नहीं आने देते हैं और

मुझको तो इन बनियों ने भूल से दुखी किया है जिससे मैं लिखता हूँ और यह बनिये संसार में गरीब होके रहते हैं, सो यह बनिये पाप में से थोड़ा -२ सबको सिखाते जावेंगे और गारत करते जावेंगे और आप चौड़े नहीं आवेंगे और जब कुल विलायतों में थोड़े-से आदमी रह जावेंगे जब यह बनिये कलंकी अपना राज करेंगे. जब तो यह बनिये ऐसा जुल्म करेंगे कि जिस तरह से इन बनियों के दिल में आवेगी उसी तरह से संसार के बच्चों पर जुल्म करेंगे. सो ऐसी-२ आग में इन बनियों ने पहले से संसार में चला दी हैं कि सौ कोस के ऊपर जाके एक गाँव बसा हुआ मिलेगा, जब ऐसा कलजग आवेगा कि हाथ को हाथ खाने लगेगा, जब तो आप ही कट-२ के मर जाना अच्छा है; क्योंकि जब संसार थोड़ा रहेगा जब यह बनिये कुल विलायतों में अपना राज कर लेंगे और जो इनका पाप नहीं मिटाओगे तो सबको गारत कर देंगे, क्योंकि जब बुद्धि कैद हो जाती है

जब भाई-२ आपस में लड़कर मर जाते हैं. क्योंकि इन बनियों ने देवताओं पर ऐसा जुल्म चलाया है कि जो अर्ज नहीं किया जाता है बल्कि तुम सब ही देखते हो और जानते हो कि जो बनियों ने अनबोलों पर और झाड़ वनस्पति पर पाप चलाया है सो तो प्रगट पाप है, सो संसार के लोग तुम देखते हो और सुनते हो क्योंकि जिन-२ मुल्कों में इन बनियों ने जुल्म का पाप चलाया है सो आप लोगों में से जिस-२ ने नहीं देखा हो तो तुम हिन्दू-मुसलमान और अंग्रेज मेरी बात को गौर करके और इन बनियों के जाल को तलाश करके देखो! तो तुमको भी काफिरी जाल की खबर हो जावेगी, क्योंकि इन्होंने इतने-२ देवतों के ऊपर अनबोला जीव मराये हैं और मराते हैं और दरकतों में कीले गड़वाते हैं, सो चुड़ैल और खबीस और भूत-पलीत और जन वबैरा के नाम से करवाते हैं और संसार के लोगों को जादू से बीमार करते हैं और लोगों के घट में सुझाते हैं भूत-पलीत वगैरा का, और कहते हैं कि इस

झाड़ में भूत-पलीत वगैरह रहता है वोह लग गया हैं; सो झाड़ में कीलें वगैरा गड़वाओ, सो भूत कील दिया जावे. इसी तरह से अनेक दरखतों में कीलें साधु-फकीरों के हाथ से और संसार के हाथ से गड़वाते हैं और कीलें गाड़ने वालों को जादू से ऐसा ही सुझा देते हैं कि हम बड़े करामाती हैं और समझदार हैं जिससे भूत-पलीत को बस में कर लिया है और आदमी को अच्छा कर लिया है और जब वोह भूत-पलीत के निकालने वाले झाड़ वगैरा में कीलें गाड़ देवें और जब उसके नाम का पाप छोड़ देवें जब वोह अच्छा हो जावे. सो कीलें गड़वा के पाप को छोड़ देते हैं जब उनको आराम हो जाता है, जब लोग जानते हैं कि भूत-पलीत और जिस-जिस मुल्क में डाकनियाँ बनाई हैं और जो बड़ा गाँव है उनमें डाकने बनाई हैं जिसका हाल सुनो कि जो छोटा गाँव है उसमें भी दस-बारह डाकनियाँ और जो बड़ा गाँव है उसमें पचास या सौ और जो बड़े शहर हैं वहाँ और ज्यादा बनाई हैं, परन्तु बूढ़ा-बूढ़ी होवें वो

कीलें = खिला, कील = खिला गाडने का, चुडैल = डायन, खबीस = जिसका सिर नही होता है

तो तीर्थ स्वरुपी हैं. सो वेद शास्त्र में कहते हैं सुनो, इन बेचारों को डाकन-डाकियों की बदनामी दी है और तीर्थ स्वरुपियों को संसार के हाथों से मरवाते हैं कि जिन मुल्कों में डाकनें बनाई हैं उन्ही मुल्कों के आदमियों के हाथों से मरवाते हैं और डाकनियों के दिल में जादू से ऐसा सुझाते हैं कि हम डाकी-डाकनें ही हैं; सो बीमार तो करते हैं जादू से और सुझाते हैं डाकनियों का, कि जिन्होंको डाकनियों की बदनामी दी है. सो डाकनियों का भी ब्रह्म बुद्धि फेरके राक्षसी पाप से कैद कर दिया है सो उनको यही सुझा देते हैं कि हम डाकने हैं, क्योंकि जैसा संसार में नींद में खाने-पीने का सपना करते हैं या और अनेक तरह की लड़ाई-भिडाई वगैरा का होता है; सो डाकनियों को भी सपना उसी तरह से होता है, सो जबके डाकनियाँ बनाई हैं उनको भी जागता सपना या नींद का सपना करके सुझाते हैं कि हम डाकने हैं, और आदमी को खा रह हैं इससे वोह भी यह जानने लगते हैं, कि हम डाकी-डाकनियाँ और 'डायन' हैं और संसार को जो सब मुल्कों में सपने हुआ करते हैं

और आगे राक्षसी पाप नहीं था, तो सपना भी नहीं होता था और जिस मुल्क में कि बहुत-सी डाकनियाँ बनाई हैं और संसार के लोगों को जादू से बीमारी करें तो संसार के लोग यह कहने लगे कि आजकल डाकनियों ने बड़ा भारी फैल मचाया है, सो डाकनियों को और संसार के लोगों को बनिये जादू से ऐसा ही सुझावें कि हमको डाकन ने मारा है और डाकन भी यह समझें कि हमने ही मारा है और सब संसार कहे कि अब तो अच्छे -२ आदमियों को खाने लगी है याने जिस-२ मुलक में डाकनें बनाई हैं उसी मुलक के आदमियों को जादू से सुझा दें कि अब तो अच्छे-अच्छे आदमियों को डाकनें खाने लगी हैं, जब उसी मुल्क के आदमी, कि जिस मुल्क में डाकनियाँ बनाई हैं उन डाकनियों को संसार के लोग हेत करके और पकड़ करके नीले कांटो में जलवा देते हैं और बहुतसियों को पिटवा के मरवा देते हैं. सो जब के डाकनों को अनेक तरह की तकलीफें करके संसार के हाथों से मरवा देते हैं, तो फिर यह बेईमान जानते हैं कि तीर्थ स्वरुपियों को संसार

के हाथों से ही मरवाये हैं और गरीबों को बहुत दुःख दिला दियौं तो फिर संसार के नामका पाप छोड़ देते हैं जब वोह अच्छे हो जाते हैं तो उस मुल्क के आदमी, कि जिन मुल्कों में डाकनों की बदनामी दी, वोह यह कहने को लग जावें कि डाकनियों को मारा, जिससे अब दूसरी डाकनें डरने लगी हैं; सो अब दूसरी डाकनें अपने को नहीं खावेंगी. और जबसे कि अंग्रेज आये हैं जबसे डाकनियों का फैल थोड़ा है और जब तक कि अंग्रेज नहीं आए थे जब तक इन्होंका फैल बहुत था, कि जिस मुलक में डाकनियों की बदनामी चलाई है उस मुल्क के आदमियों को यह बनिये जादू से करोड़ों फैल करके मार देते हैं और सुझा देते हैं डाकनियों का. सो डाकनियाँ भी किसको बनाई हैं कि जो बनियों की जात के सिवाय दूसरी जात के हैं और ऐसी-ऐसी बुड्ढी डाकनें बनाई हैं कि जिनके मुँह में दाँत तक नहीं हैं और बनाई भी उन्हींके माँ और दादी और नानी बुआ और मामी काकी वगैरह को

डाकनियों की बदनामी दी है. सो यह ख्याल करने की बात है कि यह तीर्थ स्वरुपी है कि नहीं? और, बेटों के हाथों से डाकनियों की बदनामी लगाके मरवा देते हैं; सो यह बहुत बुरी बात है परन्तु डाकनियों के बेटे तो भूले हुए हैं वोह यह जानते हैं कि यह 'बिजनस' डाकनें ही हैं, परन्तु डाकनें और भूत वगैरा तो कुछ भी नहीं हैं और झूठी बदनामी देके मरवा देते हैं; और वेद पुरानों में लिखा हुआ है कि रावण गरीबों को मरवाता था, परन्तु बनिये तो अपने पाप को खूब समझते हैं क्योंकि गरीबों को दुःखी करेंगे तो आपसे ही संसार में बुरा हो जावेगा, इस वास्ते ऐसा पाप चलाया है सो बुड्ढे डोंकरों को डाकनें बनाके मरवाते हैं, सो क्या है? गरीबों का मरवाना पाप है या नहीं ? तो इसी तरह से बनिये भी रावण के मुवाफिक गीरीबों को डाकनियों के बहाने से मरवाते हैं और कामरु देश का भी दुनियाँ के लोग कहते हैं कि वहाँ जादू बहुत है. सो कामरु देश मैंने अब तक देखा नहीं, अगर देखा होवे जब तो

सब हाल वहाँ का लिख दूं, परन्तु सुनता हूँ कि वहाँ पर भी इन बनियों ने बुद्धि फेरके उनको कुछ का कुछ सुझा दिया हए और सुझाते होंगे, सो कामरु देश के आदमी भी इन्हीं जाल में भूले हुए होंगे; सो उनको भी उनकी बुद्धि फेरके भैरु या पीर का या वीर का या देवी वगैरा का सुझाते होंगे जिससे वोह भी भूले हुए होंगे, क्योंकि वोह जानते होंगे कि हमारे बस में देवी देवता हैं; सो हमारी करामत चलती हए, सो बनियों ने यह कैसी अकलमंदी की हए कि जब राजा –बादशाह जाल को समझेंगे और दरियाफ्त करेंगे तो कामरु देश के भी मारे जावेंगे और दरियाफ्त के करने वाले यह जानेंगे कि जादू कामरु देश वालों का हए और डाकनियों के ऊपर और देवतों के ऊपर और भूत –पलीत के ऊपर जीव मरवाने के लिए बदनामी लगा दी है, परन्तु अकलमंदी बनियों की है और जाल तो बनियों का है और बदनामी और जात के ऊपर लगा दी है भुलाकर; सो इस वास्ते यह अकलमंदी की है

कि हमारा जाल प्रगट नहीं हो, इस सबब से मुल्कों-२ में इन बनियों ने चोरों की तरह से खोज मालूम न होने के लिए मुल्कों-२ में डाल दिए हैं और संसार के लोग भूले हुए हैं-देवताओं के भरासे और डाकनियों के और देवी देवताओं के भरोसे भूले हुए हैं और है राक्षसी पाप, और मुझको तो इन बनियों ने राक्षसी पाप से दुःखी किया है जिससे इन्होंकी चोरी मुझको मालूम हुई है, जिससे मैं आप लोगों को वाकिफ करता हूँ और मेरे को नहीं कलपाया होता तो इस बात का क्या भेद मिलता! क्योंकि इन्होंने तो जाल के पड़दे डाल दिए हैं कि जो संसार को पता ही नहीं लगे, तो पाप किस तरह से मिटे! परन्तु यह बनिये तमाम संसार को गारत करेंगे और सब विलायतों में थोडे से आदमी रहेंगे, जब यह बनिये अपना राज जाल ही जाल में कर लेंगे; जब तो कुल आदमियों की औलाद को बहुत दुख होगा, जो इन्हों का राक्षसी पाप नहीं छुड़ाओगे और बाजीगरों को भी भुलाए हैं संसार के मुवाफिक ही,

और बाजीगर यह जानते हैं कि हमने किसी देवता की साधना की थी सो देवता बस में हो गया है, जिससे हमारा जादू चलता है. सो बाजीगरों को भी कुछ का कुछ सुझा देते हैं सो जादू से कामरु देश में भी जागते सपने और नींद में सपने करके तरह-२ के खेल जादू के दिखाते हैं और डाकनें और चुड़ेलें सुझाते हैं, फिर इसी तरह से नजर का फैल संसार में जादू से चलाया है कि जो अच्छा मकान होवे तो गिर जावे या अच्छा घोड़ा होवे या अच्छा ऊँट होवे वोह मर जावे. इसी तरह से गाय, भैंस वगैरा अच्छा होवे तो मर जावे नजर के फैल से और अच्छा नर -नारी होवे तो वोह भी मर जावें; सो मारते तो कच्ची उमर में जादू से हैं और बदनामी देते हैं नजर की, और जिस तरह से कि आदमी तमाम संसार में जादू से भूले हैं उसी तरह से कि जिसको नजर की बदनामी दी है, वोह भी यह जानते हैं कि मेरी नजर बहुत करड़ी है, और '' आँखें तो नारायण ने देखने के वास्ते दी हैं; सो मालिक ने आँखें तो सब शरीर में अनमोल हीरा

बनाई हैं, सो नजर किसी को किसी की नहीं लगती है, नजर कौन सी बरछी-भाला या गोली-तीर है जो लग जावे?'' यह तो नारायण ने देखने के वास्ते बनाई हैं, क्योंकि आँखे नहीं होवे तो शरीर किसी काम का नहीं है. इसी तरह से 'छींक' के ऊपर बदनामी दी है, क्योंकि बुरा तो करते हैं जादू से; इसी तरह से किसी को यह बात लगादी है कि आज सुबह को फलाने आदमी का मुँह देखा था, सो सारा दिन दुख पाया है, सो उस दिन उस शख्स के नाम के ग्रह जादू से करड़े कर देते हैं कि जिस शख्स ने उस फलाने शख्स का मुँह देखा था, जिससे वोह देखने वाला आदमी सारे दिन जादू के ग्रह से दुख पाता रहे, सो तो उसको मालूम नहीं कि मुझको जादू का ग्रह है जिससे दुख पाया है, क्योंकि मुँह के देखने से तो कुछ भी नहीं होता है क्योंकि 'आत्मा सो परमात्मा' और सबमें परमेश्वर का रुप है. सो संसार में भी कहते हैं कि सब में 'पूरण ब्रह्म' है और सबके अन्दर मालिक की रोशनी है और

करडी = खराब, बुरी.

कुदरत है, सो "सतजग में क्या मालिक दूसरा था? और अब क्या दूसरा हो गया?" मालिक तो वोह का वही है. सो सतजग में तो एक-२ को देखके जीते थे, और एक-२ पर बहुत हेत रखते थे, सो लगाये झाड़ वनस्पति से और अनबोलों से और लगाए आदमियों से ऐसा संप और हेत था कि सब में परमेश्वर ही था, परन्तु जबसे इन बनियों बेईमानों ने ऐसा राक्षसी पाप चलाया है कि जो सबकी बुद्धि भ्रष्ट करके कुछ का कुछ संसार में वहम चला दिया है कि जिसकी कुछ गिनती भी नहीं है, अगर कुछ गिनती में आवे तो लिखूं, सो वहमों का तो संसार में पार ही नहीं है और संसार के नामका पाप कराके कुछ का कुछ बुरा कर देते हैं; और संसार में नुकसान पाप से करा देते हैं जिससे वहमों को सच्चा जानने लगते हैं. सो जिस दिन से राक्षसी पाप चलाया है उस दिन से वहम करके और कुछ का कुछ सुझा के और संसार के नाम का पाप कराके बुरा करा देते हैं,

इससे संसार में वहम चला है; सो सब संसार गुप्ती पाप को छुड़ाओगे जब सबको आराम मिलेगा कि जैसा सतजग में था, वैसा ही हो जावे जबकि पाप को छोड़ा दोगे जब पीछे सतजग हो जावेगा और सदा सतजग ही रहेगा; और तुम जो यह कलजग-२ कहते हो, सो कलूकाल कोई चीज नहीं है, यह तो बनियों ने राक्षसी पाप चलाया है सो रावण, हरनाकुश के मुवाफिक पाप चलाया है, सो इनका नाम बनियों ने कलुकाल रख दिया है. सो जिस तरह से कि रावण ने संसार के नामका पाप कराके सबकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी थी, उसी तरह से इन बनियों ने भी चकवे राज करने की वजह से सबकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है, सो इस कलुकाल के पाप को सब मिलके छोड़ाओगे तो सदा सतजग ही है, अगर पाप को फिर कभी नहीं चलने दोगे और पूरा-२ बंदोबस्त सब विलायतों में रखोगे तो सब संसार में सुख रहेगा. सो यह 'जाल कदीम से बनियों का ही है और हिन्दुस्तान में से ही चला है, सो हिन्दू-मुसलमानों ने इन बनियों के शामिल ही

वहम = शक

जन्म पाया है और एक ही टापू के रहने वाले हैं, सो सब संसार के लोग भी कहते हैं कि एक मुल्क वाले शख्सों के हेत इरादा बहुत होता है कि जो आपस में लाज-शरम रखते हैं और गैर के पास अपनी लाज-शरम को नहीं जाने देते हैं; सो एक मुल्क के रहने वाले, एक-२ की शरम संसार में सदा रखते आए हैं परन्तु इन बनिये बेईमानों ने अपने मतलब के वास्ते क्या जाल किया है कि जो कदीमी पाप है उसको अपने पास रखते हैं और उस कदीमी पाप में से थोड़ा-सा हिन्दू-मुसलमानों को छल करके और सिखा के रावण, हरनाकुश, कंश, कारुन वगैरह को छल के अन्दर डाल के गारत कराया और भुलाया कि तुम चार कूंट में राज करना; सो राज का करना तो किधर ही को गया, बल्कि अपनी-२ औलादों को जाल ही जाल में मरवा दिए, परन्तु यह बनिये शामिल ही के शामिल रहे हैं और उन्होंको अपने जाल की इन बनियों ने जरा भी खबर नहीं पड़ने दी, हालांकि उन्होंने इन बनियों के

शामिल ही जनम पाया था, परन्तु जाल ही जाल में हिन्दुस्तान के लोगों को गारत कर दिया, उसी तरह से अब यह बनिये दूसरी विलायतों से मिलने लगे हैं. सो आप लोगों को और अंग्रेजों को और 'रूम-सूम' को और दूसरी विलायतों को रावण, हरनाकुश वगैरह की तरह से छल करके चकवे राज करने के लिए यह बनिये आप लोगों को छल के अन्दर डालेंगे, कि जिस तरह से हिन्दुस्तान के लोगों को जाल में डाल के गारत कर दिया है, उसी तरह से आप लोगों को बहका-२ के और कदीमी पाप में से थोड़ा -२ सिखा के और कुल विलायतों में राज करने के वास्ते तुमको भी बहका के थोड़ा बहुत पाप सिखा देंगें, सो चार कूंट में राज करने के वास्ते तुमको भी बहका देंगे, सो आप लोग भी भूल जाओगे; क्योंकि रावण, हरनाकुश ने शामिल ही जन्म पाया था, सो उनको भी बनियों ने जाल ही जाल में मरवा दिये, परन्तु हिन्दुस्तान के लोगों को अब तक इन्होंके जाल की खबर नहीं कि बनियों का

चकवे = चक्रवर्ती

जाल है और हिन्दुस्तान को तो परचों के भरोसे भुलाई है और जाल को ही परचा जानते हैं और कहते हैं कि मालिक के घर की कुदरत है और देवताओं के परचा वगैरह हैं. इस-२ तरह के जाल बनियों ने चला रखे हैं कि जिसका कुछ अंदाज नहीं है, सो आप लोगों को ख्याल करना चाहिए कि जिस तरह से हिन्दुस्तान तबाह हो गया है और जो किसी कदर बाकी रहा है उसको आप लोगों को लालच देके तबाह करा देंगे; इसी तरह से कुल विलायतें तबाह हो जावेंगी, जब सब विलायतों में थोड़े-से आदमी रह जावेंगे तो यह बनिये सब विलायतों में राज करेंगे, इस वास्ते यह जादू का पाप चलाया है जब यह बनिये राज करेंगे कि जब एक-आध विलायत बाकी रहेगी जब यह बनिये राक्षसी पाप से उनकी भी बुद्धि भ्रष्ट कर देंगे, जब आपस में लड़कर भाई-भाई मर जावेंगे. सो इसमें झूठ होवें तो हिन्दुस्तान में देख लो, कि जो हिन्दू -मुसलमान के त्यौहार बनाए हैं कि ताजिया और रेवाड़ी कृष्ण महाराज की निकला

करती हैं, सो ''त्यौहार तो अगले लोगों ने धर्म के वास्ते बनाए हैं.'' सो फकीरों को और साधु-संत को खाना खिलावें तो यह धर्म की बातें हैं और जो आपस में खाना खिलाया-पिलाया करें तो वोह हेत इरादा है; सो त्यौहार तो हेत इरादे के वास्ते अपनी-२ जात में न्यारे-२ बनाए हैं, सो हिन्दू-मुसलमान की बुद्धि राक्षसी जाल से ऐसी भ्रष्ट कर दी है कि जो त्यौहार में भी आपस में ही लड़कर मरते हैं, सो सब विलायतों के राजा -बादशाह इस बात को गौर करके देखो और ख्याल करो कि हिन्दुस्तान के लोगों की बुद्धि कैद करदी है कि जो भाई -२ की बुराई करते हैं और आपस में कट-२ के मर जाते हैं इसी तरह से, जबकि रावण वगैरा ने बुद्धि खराब कि थी जब भी संसार के लोग आपस में कट-२ के मर जाते थे; और रावण ने छल करके शिवजी और रामचंद्रजी और ऋषिश्वरों वगैरह को भुला दिया था और जब शनिचरजी ने रावण का छल शिवजी, रामचंद्रजी और ऋषिश्वरों वगैरह को वाकिफ किया था फिर वोह छल में नहीं

पड़े, जब ही हम तुम आप-२ के बुजुर्गों की औलाद और राजा -बादशाहों की औलाद और ऋषिश्वरों की औलाद और सब संसार की औलाद जीती हैं; अब यह बनियों का जाल प्रगट हुआ है सो यह छल बहुत कुछ करेंगे, पहले तो बादशाहों को छल करके भुला दिया था, क्या जाने क्या छल किया था? सो तो इनकी यही जाने, जिसका सबूत यह है कि अगले बादशाहों ने इनके मंदिरों की पुतलियों वगैरा के नाक और कान कटवाकर मंदिरों को गिरवा दिए थे और यह बनिये बेईमान गाय-सूअर की कसमें खाकर बच गये; और उन बादशाहों के मरने के बाद फिर इन्होंने जादू चलाके उनकी बादशाहतों को और औलाद को गारत कर दिया. सो यह हिन्दुस्तान में देखलो और पैसा वगैरा जो बादशाहों ने इनसे लिया होगा, वोह भी फिर उनको गारत करके ले लिया होगा और उनकी औलाद को बिलकुल खराब कर दिया और दुनियाँ को दिन-२ खराब करके कम करते जाते हैं.

क्योंकि पहले दुनियाँ में आदमी बहुत थे कि "जब रामचंद्रजी महाराज ने रावण का जाल मिटाने को लंका पर चढाई की थी उस वक्त फौज में 'अठारह पदम' आदमी थे और फौज में लड़ने वाले जवान-२ आदमी गए होंगे और बुड्ढे-डोकरे और औरत- बच्चे पीछे भी रहे होंगे;" तो ख्याल करो कि उस वक्त आदमी कितने होंगे और अब 'मरदम शुमारी' में देखो कि हिन्दुस्तान में कितने आदमी हैं? तो पहले से बहुत थोड़े हैं, परन्तु कोई भी ख्याल नहीं करते और बनिये अनेक तरह से संसार को मारते हैं और गुरुनानक ने अपनी पोथी में ऐसा लिखा है कि "इन काफिरों का ऐतबार कभी नहीं करना चाहिए, चाहे यह इस कदर कसमें क्यों न खावें, कि जैसे कोई आदमी भरे हुए घी के कुप्पे में हाथ घुसेड़ देवें और फिर उस हाथ को निकाल के तिलों में घुसेड़े, तो घी के भरे हुए हाथ में बेशुमार तिल लग जावें, इस कदर कसमें खावे तब भी काफिरों का ऐतबार न करना चाहिए," इसी तरह से कृष्ण महाराज के वक्त में संसार कंश राजा और

हरनाकुश और कारुन वगैरह के छल में नहीं पड़ा; क्योंकि शनिचरजी, कृष्ण महाराज और नरसिंघजी महाराज और गुरुनानकजी महाराज ने वाकिफ कर दिया था इस वास्ते छल में नहीं पड़े, इससे अपने-२ बुजुर्गों की औलाद बची है, अगर सब संसार राक्षसों के छल में पड़ जाता तो गारत कर देते. इसी तरह से जो मेरे जीते जी बनिये अपना जाल छोड़ देवे तो बनिये भी उभर जावें क्योंकि जैसे तुम संसार माई-बाप की तरह से हो, उसी तरह से बनियों को भी अपना माई-बाप जानता हूँ; परन्तु यह बेईमान तुमको छल करके भुला देंगे, क्योंकि तुम लोगों को इनके जाल की खबर नहीं और मेरे को इन बनियों ने समामुख कलपाया है जैसे कि रावण ने शनिचरजी को कलपाया था; इस वास्ते मुझको इनके जाल की मालूम है अगर इनको जाल छोड़ना होवे तो तुम लोगों से छल क्यों करें ? परन्तु यह तुमको छल करके भुला देंगे और बाद तुम्हारे मरने के तुम्हारी

मरदम शुमारी = जनगणना.

औलाद को गारत करेंगे; मेरे को यह बहुत फिकर है, क्योंकि "मैं भी अकेला नहीं हूँ, मेरी भी जात बिरादरी है जिस कदर चाकर की औद है, मैं भी कोई अकेला नहीं हूँ; क्योंकि हमारी, तुम्हारी, सब ही की औलाद जादू से डूबती है," इससे लिखता हूँ कि इनका छल है और इसी वास्ते यह छल चलाया है कि सब विलायतों को गारत करके यह कलंकी राज करेंगे जो तुमको अपनी-अपनी औलाद प्यारी हैं तो तुम अंग्रेज और हिन्दू-मुसलमान इनके छल में मत पड़ना, नहीं तो मुल्क में पैसा नहीं रहने देंगे और औलादों को दुखी करके गारत कर देंगे और जो यह मेरे जीते जी जाल छोड़ देवें तो यह भी उभर जावें और जाल भी मिट जावें; और बार-२ कहता हूँ कि हरगिज-२ इनके छल में मत पड़ना कि हमारी, तुम्हारी जात और औलाद कायम रहे! चाहे यह कितना ही छल करें परन्तु जाल को छोड़ाना जो सुख प्राप्त हो।

-समाप्त

पंचम बार ई. सन् २००७

विक्रम संवत् २०६४

श्री अनुप स्वामीजी महाराज जगतहित मंडल, वसई.

रजि. नं. महा/१९९/९५/थाने.

मारीया अपार्टमेन्ट, समर्थ रामदास नगर, वसई रोड (इस्ट)

जि. थाने, महाराष्ट्र (भारत)